(2)

हुगली ऊपर बहैत गंगा

कथा-संग्रह



(2)

कथाकार

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

हुगली ऊपर बहैत गंगा

(कथा-संग्रह)

रामभरोस कापड़ि
'भ्रमर'

प्रकाशक
रामानन्द युवा क्लब
जनकपुरधाम-8

देहसँ धरती दिस

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क साहित्य यात्रा मिथिला मिहिर (पटना)क स्थायी स्तम्भ नेना भूटकाक चौपाड़िमे प्रकाशित इमानदार बालक (अप्रैल 26, 1964)सँ प्रारम्भ भेल अछि । भ्रमरक प्रथम कथा द्वितीय श्रेणीक एकटा डिब्बा (मिथिला दर्शन, 1973) थिक । पहिल कविता संग्रह बन्न कोठरी औनाइत धुआँ 1973 ई.मे प्रकाशित भेल । एहि पोथीक भूमिकामे डा. धीरेन्द्र कापड़िक सर्जनात्मकताक प्रति आस्था व्यक्त करैत लिखल अछि– मैथिली कविताक नवीनतम आयामक संग तँ छथिहे, मुदा नव अन्वेषक सेहो होएताह । नेपालक धरतीपर रहनिहार मैथिलीक नव कविलोकनिमे दू गोट नामके ँ समस्त मैथिली संसार महत्त्वपूर्ण मानि रहल अछि– पाथेय (भुवनेश्वर पाथेय 1945-1991 ई.) आ भ्रमर (अप्रैल 06, 1951 ई.) । एही अवधिमे भ्रमर अर्चना (1974 ई.) नामक पत्रिकाक सम्पादन आ प्रकाशन कएल । पुनः आंजुर एवं गामघरक सम्पादन प्रकाशन कएल । भ्रमरक एहि सक्रियतासँ सम्पूर्ण मैथिली जगत लाभान्वित भेल । बन्न कोठरी औनाइत धुआँक अतिरिक्त हिनक अन्य प्रकाशित महत्त्वपूर्ण कृति थिक 'नहि, आब नहि' (दीर्घ कविता), 'अप्पन अनचिन्हार' (कविता संग्रह), 'तोरा संगे जयबौ रे कुजबा' (कथा संग्रह), 'नेपालक मैथिली पत्रकारिता' (सम्पादन), रानी चन्द्रावती (सम्पादन) 'एकटा आओर वसन्त' नाटक, 'महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक', 'ठेकानपर', 'लोकनाट्य : जट-जटिन', 'राजकमलक कथासाहित्यमे नारी' आदि । षष्टम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य समारोहक अवसरपर आयोजित (1991 ई. विराटनगर) नाट्य लेखन प्रतियोगितामे पुरस्कृत भए भ्रमर एक नाटककारक रूपमे अपन परिचय बनाओल ।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पहिल कथा-संग्रह 'तोरा संगे जयबौ रे कुजबा' मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित अछि । शेष कथा असंगृहीत अछि । भ्रमरक अधिकांश कथा नारी जीवन पर केन्द्रित अछि । ओ नारी कथा सभ देहक चारू कात चकभाउर दैत अछि । एह चकभाउरमे नारीक शोषण, अशिक्षा, अत्याचार आ नारी समाजमे व्याप्त अंधविश्वास, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवनमे ओछ होइत नारीक स्थान तथा संघर्षशीलता कम अछि । बेसी अछि भौतिक सुख सुविधाक प्रति नारीक आकर्षण एवं नारीक वंचकताक चित्रण ।

भ्रमरक कथाक नारी पात्र शोषण आ अत्याचार सहैत अछि, उत्पीड़न आ अभावमे जीवन गुजर लेल विवश अछि, डेगडेग पर अपमान आ लांछना सहैत अछि, परंच अपन त्रासद वर्तमानसँ बाहर होएबाक चेष्टा नहि करैत अछि । सुगबुगाइत नहि अछि । कहि सकैत छी सभ केओ अपन देह नेरा देने अछि । रेखा (भगजोगनी) आ रेखा (पाँक)मे यद्यपि किछु चेष्टाक दर्शन होइछ । ओ अपन गहना-गुड़िया बेचि ग्लेमरक जीवनके ँ त्यागि देबाक प्रयास करैत अछि, किन्तु साकार होएबासँ पहिने निष्क्रिय भए जाइत अछि। रेखाक मुक्तिक चिन्ता समाजिक स्वरुप ग्रहण करबासँ पूर्वहि भहरि जायत छैक । धूमकेतुक कथा कुलटाक फुलिया बाबू-भैयासँ थानाक हाकिम धरिके ँ प्रसन्न करैत अछि । अपन देहे धुना कए दू पाइ कमाइत अछि, मुदा वचनक प्रतिकूल होइतहि ओ टामी के ँ तेना हबकैछ जे गोलीसँ छलनी भेलेपर छूटैत छैक ।

भ्रमरक किछु कथा वर्णित मूलगोत्रक कथासँ भिन्न स्वादक अछि । सामाजिक जीवनमे व्याप्त भूख, अभाव, बेकारी तथा लोकक यंत्रणाके ँ व्यक्त करैत अछि । खट्टर मरड़ (माटिक दरद)के ँ अपन परिश्रम पर भरोस छैक । एहन अभाव आ उपेक्षामय जीवनक स्थितिमे शोषण आ अत्याचारक विरोधमे लुत्ती उड़ि सकैत अछि । परंच, खट्टर मरड़ भयभीत अछि । आक्रांत अछि । बड़बड़ाइत रहैत छैक– 'ओहीठाम, जीवछ' कापड़िके ँ की हाल भेलैक, से गौंआ नहि देखल कैक । धनिकसँ अखरपना करैत घर घराड़ी सभ बिला गेलैक, धनिकके ँ की भेलैक ?बिलटि गेलै बेचारे गरीब ।' ई असहायता एक व्यक्तिक नहि, एक वर्गक थिकैक, समस्त समाजक थिकैक । शासन व्यवस्था रचनाकारके ँ प्रभावित करैत अछि । रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' अपन देशमे कतेको प्रकारक शासन व्यवस्थामे रचनात्मक रूपे ँ सक्रिय रहलाह अछि । हिनक माटिक दरद शीर्षक कथा पंचायती शासन व्यवस्थामे लिखल गेल छल तथा कामरेड बहुदलीय शासन व्यवस्थामे लिखाएल अछि । माटिक दरदमे खट्टर मरड़ आतंकित अछि, परंच कामरेडमे अधवयसूक प्रतिक्रिया छैक– राणा कालमे जमीनदार सभ हुकुम चलबै, बेगारी खटबै । पंचायतमे गिरहत सभ मनमानी करै छल । बड़का धनिक सभके ँ राज चलैत छल । आब हमरा सभक युग अएलै हे । तब एना कए बिना देखले-सुनले पीट देनाइ नीक बात नहि भेलै । कथाक पात्र सभ इहो चर्च करैत अछि, 'जे जमीन जोततै तकरे जमीन रहत ।' शासन व्यवस्थाक परिवर्तनक संग मानसिकतामे भेल परिवर्तनक ई परिचायक थिक । एहि क्रममे बहुदल आयो रे उल्लेखनीय अछि ।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क कथा यात्रा अवलोकनसँ स्पष्ट अछि जे कथाकारक दृष्टिमे चहटगर कथाक स्थान पर समाजमे व्याप्त भूख, अशिक्षा, शोषण, व्यभिचार, प्रशासनिक भ्रष्टाचार एवं शोषित वर्गक प्रति सहानुभूतिक महत्त्व दिस प्रयाण भेल अछि । परदुखकातरता (तरबोरा) बढ़ल अछि । वैयक्तिक कुंठाक सीमाके ँ पार कए सामाजिक दृष्टि सम्पन्नताक क्षेत्रमे प्रवेश कए गेल अछि । ई कथा सभ भ्रमरके ँ पूर्वक अपनहि कथासँ विलग करैत अछि । युग-युगसँ शोषित-प्रताड़ित पक्षधरक फाँटमे ठाढ़ (कामरेड) सेहो देखैत अछि । कथाकारक दृष्टिक एहि दिशामे बढ़ब निश्चिते शुभ लक्षण थिक ।

नेपालमे सबसँ पहिने रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क कथा संग्रह 'तोरा संगे जयबो रे कुजबा' छपल, सेहो पड़ोसी देशक राजकीय संस्था मैथिली अकादमी, पटना द्वारा । एहि जमातिक कतेको कथाकार वर्षक वर्ष लेखन विरत वा मौन रहलाह अछि, भ्रमरक लेखनमे निरंतरता अछि । एकटा तेसर बिन्दु जे भ्रमरक योगदानके ँ रेखांकित करैत अछि, से थिक पत्र-पत्रिकाक सम्पादन एवं प्रकाशन तथा ओकर माध्यमे मैथिलीक सभ तूरक रचनाकारकेँ सक्रिय बना कए रखबाक साहसिक प्रयास ।

–डा. रमानन्द झा 'रमण'



श्री रामभरोस कापड़ि "भ्रमर" (1951) जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल) सम्प्रति-जनकपुरधाम, नेपाल । त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम.ए., पी.एच.डी. (मानद) ।

हाल : प्रधान सम्पादक: गामघर साप्ताहिक, जनकपुर एक्सप्रेस दैनिक, आंजुर मासिक । पूर्व प्रधान सम्पादक आंगन अर्द्धवार्षिक (प्रकाशक नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी ।)

मौलिक कृति : बन्नकोठरी: औनाइत धुँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), तोरा संगे जएबौ रे कुजबा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, 1984), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, 1983), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, 1990 ई.), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर बसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), हुगली ऊपर बहैत गंगा (कथा-संग्रह), राजकमल चौधरीक कथा साहित्यमे नारी (शोध), ठेकान पर (विचार संकलन), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्गस), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान) ।

नेपाली कृति : आजको धनुषा, जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरु (आलेख-संग्रह), भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु (अनुवाद) ।

सम्पादन : मैथिली पद्य संग्रह (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान), लाबाक धान (कविता संग्रह), माथुरजीक "त्रिशुली" खण्डकाव्य (मथुरानन्द चौधरी "माथुर"), नेपालक मैथिली लोक नृत्य: भाव, भंगिमा एवं स्वरुप (आलेख संग्रह) । गामघर साप्ताहिकक 27 वर्षसँ सम्पादन-प्रकाशन, "अर्चना" साहित्यिक संग्रहक 15 वर्ष धरि सम्पादन-प्रकाशन । "आँजुर" मैथिली मासिकक सम्पादन प्रकाशन, "अंजुली" नेपाली मासिक/ पाक्षिकक सम्पादन-प्रकाशन, अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल ।

अनुवाद : भयो, अब भयो ("नहि आब नहि"क मनु ब्राजाकीद्वारा कयल नेपाली अनुवाद)

सम्मान : नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा पहिल बेर 1995 ई.मे घोषित 50 हजार टाकाक मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कारक पहिल प्राप्तकर्ता । प्रधानमंत्रीद्वारा प्रशस्तिपत्र एवं पुरस्कार प्रदान । विद्यापति सेवा संस्थान दरिभङ्गाद्वारा सम्मानित, मैथिली साहित्य परिषद, वीरगंजद्वारा सम्मानित, "आकृति" जनकपुर द्वारा सम्मानित, दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाद्वारा सम्मानित, जिल्ला विकास समिति धनुषा द्वारा दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल पुरस्कृत एवं सम्मानित, नेपाली मैथिली साहित्य परिषद द्वारा 2059 सालक वैदेही प्रतिभा पुरस्कारसँ सम्मानित, अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्बई द्वारा "मिथिला रत्न" द्वारा सम्मानित, शेखर प्रकाशन "पटना" द्वारा "शेखर सम्मान", मधुरिमा नेपाल (काठमाण्डौ) द्वारा 2063 सालक मधुरिमा सम्मान प्राप्त । काठमाण्डूमे [illegible] कवि गोष्ठीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधित्व ।

हुगली ऊपर बहैत गंगा

(कथा–संग्रह)

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रकाशक

रामानन्द युवा क्लब

जनकपुरधाम-8

हुगली ऊपर बहैत गंगा

(कथा-संग्रह)

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रकाशक : रामानन्द युवा क्लब
जनकपुरधाम- 8

प्रकाशन वर्ष : 2008/2065

प्रति : 500 प्रति

मोल : 160/- भारु
251/- नेपाली

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर चौक, दरभंगा

पुस्तक प्राप्तिस्थान : रामानन्द युवा क्लब, जनकपुर
शेखर प्रकाशन, पटना
गामघर साप्ताहिक कार्यालय, जनकपुरधाम

HUGALI UPER BAHAIT GANGA
(Stories collection)
by Ram Bharos Kapari 'Bhramar'

समर्पण

जनिक अबोध आ निर्दोष संगति हमरा
किछु लिखबा लेल आ विषय-वस्तुकेँ
सहेजबाक लेल छिछिअएबा धरि
पूर्ण स्वतन्त्रता देलनि
हुनकहि लेल

—'भ्रमर'

एहि संग्रह मादे...

एखनका सामाजिक संरचनामे एकटा क्लबक काज करबाक सिमित क्षेत्र होइत छैक । रामानन्द युवा क्लब एहि क्षेत्रक सीमाकेँ सदैब सम्मान करैत समाजक आनो क्षेत्र प्रतिक अपन गंभीर दायित्वबोधसँ फूट रहबाक कोनो बहन्ना नहि खोजलक । ओ भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक अभियानमे सभ मैथिली प्रेमी सभक संग कान्हमे कान्ह मिला क' चलबामे गौरवक अनुभूति कएलक । तकरे परिणाम छैक एकर नियमित साहित्यिक आयोजन, अन्तराष्ट्रिय नाट्य महोत्सवक आयोजन, सांस्कृतिक कार्यक्रमक प्रस्तुतीकरण आदि । एही क्रममे हाले 'रामानन्द पुस्तकालय एवं शोध केन्द्रक स्थापना कएलक अछि जे मैथिली पुस्तक एवं मैथिली, मिथिला विषयक आकर ग्रन्थ सभक व्यवस्था करत ।

प्रकाशनक क्षेत्रमे क्लब पूर्वोसं सक्रिय रहल अछि । एहि क्षेत्रक प्रतिभा सभक रचना पाठकक समक्ष लएबाक अभियान अन्तर्गत किछु पुस्तक प्रकाशनाधीन अछि । ई कथा-संग्रह ताही अभियानक अगिला कड़ी थीक ।

हमर अनुरोधकेँ स्वीकार क' मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृतिक क्षेत्रमे स्थापित साहित्यकार राम भरोस कापडि 'भ्रमर' जे ई कथा संग्रह 'हुगली ऊपर बहैत गंगा' उपलब्ध करौलनि अछि, तकरा लेल हुनका प्रति अनुगृहीत छी । नेपालमे निरन्तर मैथिलीक बढैत डेगक संग रचना सभक समृद्ध भण्डारक खोजी हयबे करत । तकरा पूर्तिक हेतु क्लबक ई छोटछीन उपक्रम जं कनियो सहायक भेल तं हम सभ अपनाकेँ धन्य बूझब ।

अन्तमे हमर एहि प्रकाशनक हेतु अपन अमूल्य समय द' प्रेस व्यवस्थापन सं ल' प्रकाशित होएबाधरि जे सहयोग दरिभंगाक साहित्यकार मित्र चन्द्रेश देलनि अछि, हम सभ हुनका प्रति आभार व्यक्त कर' चाहैत छी ।

–जीवनाथ चौधरी

अध्यक्ष

रामानन्द युवा क्लब,

अगहन, 2065

जनकपुरधाम

अपने कथा....

लगभग पांच दशक पूर्व हम गामसँ जनकपुर आएल रही पढबाले'। गामक सम्पन्न परिवारक बेटा, तहिया गाम विकास कार्यकर्त्ताक रूपमे खटल एक गोटे कर्मचारीक आग्रह पर बाबू, जनकपुरमे बनल अपन कोठामे पढबा लेल भैयाक संग हमरा सेहो पठौने रहथि। हं, भानस-भात करबा लेल एकटा नोकर सेहो संग लगा देने रहथि। स्थानीय सरस्वती मा. वि. क विद्यार्थी रही। जखन हम सातम-आठ्म वर्गमे गेलहुं त सम्भवत: तहिये हमरा कोठाक पुबारि कातक कोठामे प्रो. धीरेन्द्र आयल रहथि। हमरा घरमे तहिया प्रो. आर. एल. सिन्हा रहथि भाड़ा पर। धीरेन्द्रजी सहपाठीक हैसियतसं हुनका लग आबथि-जाथि। ताही क्रममे कहिया परिचय भेल, गुरु-शिष्यक भाव प्रकट भेल, साहित्यमे रुचि जागल हमरा लग से तिथि-मिति नहि अछि। हं, हम पहिल कथा 'ईमानदार बालक' हिन्दीमे लीखि हुनका देखौने रहियनि। हिन्दी पत्र-पत्रिका हम बच्चेसं पढबाक सौखीन रही। ओ मैथिली आ हिन्दी भाषाक सम्बन्धमे नीक लेक्चर सुनौलनि आ ओहि कथाकेँ मैथिलीमे अनुवाद क' क' अनबाक बात कहलनि। हम तकरा हिन्दीमे कएल आ हुनका देलियनि। ओ जे ओहि अनुवादकेँ ललका कलमसं दकचलन्हि से हमर आत्मज्ञानकेँ झकझोड़ि देलक आ हम फेरसं तकरा मैथिलीमे क' देख' देलियनि। तकरा बाद ओ सन्तुष्ट भेलाह आ ओ 1964 ई.मे 'मिथिला मिहिर'क नेना-भुटकाक चौपाडिमे छपल।

हमर कथा यात्राक शुभारंभ बिन्दु सएह भेल। 'मिहिर' लगायतक मैथिलीक सभ प्रतिष्ठित पत्र- पत्रिका सभमे दर्जनों कथा छपल। हमर पहिल कथा-संग्रह ''तोरा संगे जएबौ रे कुजबा'' (1980 ई.) विहार सरकारक प्रतिष्ठान मैथिली अकादमी छपलक। से एतेक हड़बड़ीमे छपल, हमर लेखकीय धरि लेबाक जरूरति अकादमी पदाधिकारी लोकनि नहि बुझलनि। आन वस्तुक त' कथे नहि।

हम जाहि गति आ तन्मयतासँ कविता लिखैत रहलहुँ अछि, कथा लिखबामे कष्ट होइत अछि। हम अपने पात्रक मायाजालमे ओझरा जाइछी। कहियोकाल अपने गढल पात्र हमरा रोमांचित कऽ दैत अछि तँ कखनो काल नोर डबडबा दैत अछि। अपन पात्र सभक संग हमर ई साक्षात्कार आ सम्वेदनशीलता हमरा कथा कहबामे बाधक बनैत आएल अछि, तएँ हमर थोडे कथा लिखल अछि। ओना डा. मेघन प्रसादजी मैथिली कथा कोषमे किछु बेसी कथा लिखनिहारमे हमरो नाम शामिल कएने छथि।

बहुत दिन भ' गेल छल पहिल कथा संग्रहक। तीन दशकक ई कथायात्रा कतेक आगां, कतेक फरिछाएल किंवा कतेक सक्षम खोजक विषय बनल एकर आकलन करब जरूरी छल। एहने समयमे मैथिली अकादमीक निर्देशक रघुवीर मोचीजीक आग्रह आएल, पाण्डुलिपी पठाओल। तकर कोनो अत्तापत्ता नहि देखि जनकपुरक अतिउत्साही, मैथिली भाषा, साहित्य प्रति समर्पित युवा व्यक्तित्व एवं रामानन्द युवा क्लबक स्वनामधन्य अध्यक्ष जीवनाथ चौधरी कोनो पाण्डुलिपीक आग्रह कएलनि। कथाक पाण्डुलिपी तैयार रहय, ओहो द' सकैत छलहुँ। मुदा, भेल जे हम अपना ढंगसँ अपन कथा सभ मध्य किछु कथा छांटी आ हुनका नव रूपें पाण्डुलिपि दियनि। सएह भेल, किछु पूर्वमे संग्रहित कथा, किछु बनल पाण्डुलिपीक आ किछु नव कथा सभकेँ मिला ई 'हुगली ऊपर बहैत गंगा' संग्रह तैयार कएल आ हुनका देलियनि। ओ एकरा नीकसँ नीक जकाँ, वहुरंगी आवरण सहित छपएबाक व्यवस्था क' हमर मोनक इच्छा अनुकूल काज क' हमरा कृत्य-कृत्य क' देलनि अछि। हिनकेँ प्रसादे ई कृति अहाँक सभक हाथमे अछि।

हम अपन तथाकथित व्यस्ततामे ओझरायल रहने प्रकाशित एकगोट सामग्रीकेँ सहजेबासँ वंचित रहि जाइत छी। कथा सभक प्रसंग सएह भेल। किछु हमरा जनैत नीक कथा भोतिया गेल। खोजबाक प्रयास निरर्थक भेला पर दू गोटेकेँ एकरा लेल कष्ट देबाक निर्णय कएल। भाइ डा. रमानन्द झा 'रमण' केँ आ भाइ चन्द्रेशकेँ। 'रमण' किछु कथाक फोटो कॉपी, एक-दूटा हाथोसँ उतारि पठा सहयोग कएलनि तँ हड़बड़ीमे भाइ चन्द्रेश अपन गत्ता बान्हल संग्रहसँ कथाक मूल प्रकाशित प्रति फाड़ि क' हमरा उपलब्ध करौलनि। हम दूनू मैथिली अनुरागीक ऋणी छीयनि।

एकटा प्रसंग आर। हम जहिया सरस्वती हाइस्कूलमे पढ़ैत रही तँ मैट्रिकके फॉर्म भरबाकाल अपन नाममे जखन 'भ्रमर' लिखि देलिऐक तत्कालीन प्र.अ. गंगाघर दत्तजी देखलनि तँ अपने हाथे कलमसँ 'भ्रमर' उपनाम कटैत डंटने रहथि– 'सभ कहता है, कविये हो जायेंगे। 'हम चुपचाप हुनक प्रताड़ना सुनैत रहलहुँ। ओहुना ओ बड़ कड़क प्र.अ. मानल जाइत छलाह। हम चुप त' रहलहुँ, मुदा हमर मनोमस्तिष्क पर तकर गहींर प्रभाव पड़ल रहय... । पता नहि हमर लेखन दिस पूर्वेमे बढ़ि चुकल कलम तकराबाद आर प्रखरता पौलक कि की ? मुदा आइ जे किछु हम लिखि रहल छी, ओ पक्कें लौल त' नहिए छल हयतै !

आ जखन ई कथा-संग्रह एहि रूपमे अहां सभक हाथमे आबिए गेल अछि तं कहि छी जे ई किन्नहु नहि एहन छपितए जँ भाइ चन्द्रेश एकर सम्पूर्ण प्रेस सम्बन्धी कामक बीड़ा नहि उठबितथि।

विवाहपञ्चमी 2065, जनकपुरधाम

–रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

अनुक्रमणिका



भगजोगनी

आ रेखाक आँखि डबडबा गेलै ।

हमरा अफसोच होइत अछि हम किए पुछि देलिऐ किछु । सभक अपन-अपन व्यथा होइत छैक, कथा होइत छैक । कियो ककरो व्यथा थोड़े बाँटि लैत छैक ।

हम पुछितिऐक नहि । डेरामे अयलापर गुम-सुम पड़लि रेखाकेँ देखि हमरा आश्चर्य भेल रहय । दिन भरि बक्-बक् करैत माथ खयबापर उतारू जन्तु एखन एना गुम्म भेल पड़लि अछि– हमरा ठीके अजगुत लागल रहय आ तेँ पूछि देने रहिऐ– ''की बात छै रेखा ? मोन उदास छौ ।''

''किछु नहि ! ओहिना किछु सोचा गेल । हँ, अहाँ एत' बैसब की ? हम कनेक 'नयाँ सड़क'सँ भेने आबैत छी'' –ओ बातकेँ टारैत हाथमे राखल पर्समे किछु ठिकियाबैत बाजलि ।

''नहि, हम एत' नहि रहब एसकरि ।'' हम अनुमान करैत छी, ई 'दिल्ली बजार'सँ नयाँ सड़क जा फेर औतीह तँ एक घंटासँ उपर हमरा एत' बैस' पड़त, जे हमरा लेल नितान्त मोश्किल अछि । तेँ नकारि देलियनि । मुदा, फेर पूछि बैसैत छियनि– ''नयाँ सड़क की काज अछि ? हम तँ ओम्हरे जायब । कयने आयब !''

''ई काज अहाँ बुते नहि होयत । हम स्वयं करब'' –पर्सकेँ सम्हारैत बजैत अछि ।

बजैतकाल पर्सकेँ छुअब हमरा किछु सन्देह लगैत अछि । रेखाक संगे हमर आत्मीयता पर्सकेँ जबर्दस्ती छूबाक अधिकार द' देने अछि । से हम पर्स हाथमे लोकि लैत छी आ पेँच घुमा ओकरा खोलिक' देखैत छी । पर्समे सोनाक दूटा चूड़ी अभरैत अछि । आन बस्तुमे ककही, ऐना लागल झड़नी, सेफ्टीपीन, लिपस्टीक सभ छैक । मुदा,

चूड़ी किए ? मोनमे किछु शंका होइत अछि आ हम पूछि दैत छिऐक– ''ई चूड़ी पर्समे किए छौ ?''

''एकरे काज अछि– बजारमे । एकरा...'' हम बात लोकैत बजैत छी– ''दुत, एकरो डिजाइन कोनो बेजाय नहि छैक । किए तोड़बहिक । नीक लगैत छौक ।'' हमरा पता अछि । रेखा गहनाक सभदिन सौखीन रहलि अछि । पचास हजार टाकासँ उपरक गहना छैक ओकरा लग । लेटेस्ट डिजाइन की तँ कीनैत अछि अथवा तोड़िक' बना लैत अछि । आ तेँ पुछने रहिऐ ओ प्रश्न ।

मुदा, सएह बात पुछब रेखाक हेतु दुखद भ' गेलै । ओकर आँखि डबडबा गेलै । भरल आँखिए ओ हमरा दिस तकलक आ कोठलीमे टांगल अपन अत्याधुनिक फैसनमे खिचाओल फोटो दिस टकटकी लगाक' ताक' लागलि ।

हम बात बूझि नहि सकलिऐ । पुनः पुछैत छिऐ– ''ठीके, तोँ तखन चूड़ीकेँ करबही की ?''

''हम एकरा बेचबै'' –ठोरपर दाँत जमबैत रेखा बाजलि ।

''अयँ, बेचबेँ ! गय कथी लय ? तोरा कथीक कमी भ' गेलौ ? मजाक नहि कर ।''–हम आश्चर्यमे डुबल बहुत रास प्रश्न पुछबा ले' उताहुल भ' गेल छी । मुदा, रेखाक अनुहारक कठोरता तकर अनुमति नहि दैत अछि ।

''घरक भाड़ा पाँच सय टाका देबाक अछि । घरमे तरकारी नहि अछि । सिंहजीकेँ (पति) बनारस पठयबाक अछि । नोकरी करबा ले' फार्म सब अनबाक अछि । पाइ एक्को टा संगमे नहि अछि, खाली छी । कत'सँ औतैक ई सभ । तेँ ई चूड़ी बेचिक' काज चला लेब... ।'' हिचुकि उठैत अछि रेखा आब । कतेक कालसँ जाँतल भाव हिलोरि उठैत छैक । आँखिसँ नोर झहर' लगैत छैक ।

हम अकबक भेल छी । साँचे हम सुनलहुँ अछि ई बात ? ई रेखा स्वयं बाजि रहल अछि । रेखा... एकटा अति ऐय्यास किसिमक जनानी । जकर दैनिक पहिरना साड़ी तीन-साढ़े तीन सय टाकासँ कमक नहि होइत छैक । पचास टाकाक लिपस्टीक, पच्चीस टाकाक नेल-पालिस, डेढ़ सयक सैंडिल– ओकरा लेल साधारण छैक । बेडरूममे ड्रेसिंग टेबुलपर राखल पाँच सय टाकासँ ऊपरक श्रृंगार-प्रसाधन एकर आर्थिक आ मानसिक उच्चताक पहिचान भेल करैत छैक ।

आ, से रेखा आइ... ।

हम किछु मास पाछाँ चल जाइत छी । काठमाण्डूसँ एकटा पत्र जनकपुर पहुँचल रहय– ''जनकपुरसँ किछु तरकारी पठा दिय' । एत' उपलब्ध नहि ।'' हम विमानसँ

पन्द्रह-बीस टाकाक तरकारी कोनो अपेक्षित हाथे पठा देने रहिऐ । मुदा, ओ अपेक्षित तरकारी गलतीसँ त्रिभुवन विमान-स्थलपर छोड़ि डेरा चल गेल रहय । चारि दिनक बाद रेखाकेँ विमान-स्थलसँ फोन गेल रहै जे अहाँक तरकारी आयल अछि । ओ रानीपोखरिसँ टैक्सी भाड़ाक' विमान-स्थल जाक' तरकारी लेने रहय । ओ तरकारी अनबामे ओकरा तीस टाका टैक्सी-भाड़ा लागल रहै । पन्द्रह टाका तरकारी आ तीस टाका भाड़ा ।

हम तकरा बाद जखन काठमाण्डू गेल रही तँ डँटने रहिऐ– ''एह, ई कोन बुधियारी भेल ! छोड़ि दितिऐक । एतेक महग ।''

बात लोकैत बाजलि रहय– ''अरे, अहाँ की बजैत छी ? की भेलै तँ ! तरकारी हम सभ बड़ प्रेमसँ खयने छलहुँ । आखिर प्रेमसँ पठाओल छलै किने !''

हम किछु बाजि नहि सकल रही । बकर-बकर मुँह तकैत रहि गेल रहिऐ ।

तहिना एकबेर जनकपुरसँ हम अपन एक मित्रकेँ रेखाकेँ कहि देबा ले' कोनो समाद देने रहियनि । आ, टेलिफोन नम्बर सेहो जे ओ फोनक' दिह'थिन । से, ओ काठमाण्डू जा फोन कयलकनि, मुदा ओ नहि छलीह । घरक मालकिन सुना देलकनि जे जनकपुरसँ फोन आयल छल– काठमाण्डूसँ अयबा ले' ।

से जनकपुरमे हम अवाक् भ' गेल रही जखन ओकरा प्लेनसँ उतरि सोझे हमरा डेरामे भेँट करबा ले' अबैत देखने रहिऐ । पुछलापर ओ, प्रायः गामक कोनो समाद होयतै तेँ ट्रंककाल आयल होयतैक, से बूझि जनकपुर, गाम जयबा ले' आबि जयबाक बात बाजलि रहय । हमर मित्रक फोनकेँ ट्रंककाल बूझि लेने रहय आ आबि गेल रहय अति सहज भ'क' । काठमाण्डूसँ जनकपुर आ जनकपुरसँ गाम । पुनः काठमाण्डू । छौ-सात सय टाकासँ कमक खर्च नहि । आ, से तकर कोनो चिन्तो नहि ।

हम काठमाण्डूए रही । गाम जयबाक रहैक ओकरा । जयबासँ एक दिन पूर्व ओ हमरा पकड़िक' बजार ल' गेलि छलीह । स्वीटर, पेंटक कपड़ा । बेटी ले' फ्राक (60 टाकाक फूल मात्र काढ़ल), घरबला ले' पेंट-शर्ट । अपना ले' तीनटा साड़ी– बारह सय टाकामे । ऊनी ब्लाउज । दू हजार टाकासँ बेसीक सामान छल होयतैक । आ, डेरामे कपड़ा सैंतैत काल भारू नमरीक एक इंच मोटाइक गद्दी आ ई सभ चीज रेखा जानि-जानिक' हमरा देखयबाक प्रयास कयने रहय । ई हम बेर-बेर नोट करी । ओकरा रईसी खर्चपर हम शंका नहि करी तेँ ई सभ पृष्ठभूमि रहैक । हम ओकर खर्च देखी आ मोनमे पूछी जे ई कत'सँ लबैत अछि ।

मुदा, एतेक देखलाक बादो हम किछु पुछि नहि सकल रहिऐ । किए पुछियौक कथू । काठमाण्डूक छौंड़ी सभक डिजाइन आ ओकर ऐय्यासी देखि ओकर आमदनीक स्रोत पुछब अपराध मानल जाइत छैक । हमरामे ई अपराध करबाक साहस नहि अछि ।

आ से बुझायल, रेखा गमि गेल रहय । बाजलि रहय मूडमे– ''देखू अभि ! ई सभ जे खर्च देखैत छी ओ हमर छोट दरमाहामे की पूरा भ' सकैत अछि ? हम जनैत छी, अहाँ ई सोचल करैत होयब । त' हम साफ बता दी जे विबाहसँ पूर्व हमर एकटा अभिन्न मित्र छलाह– शेखरबाबू । कामाण्डूक इन्द्र चौकक प्रसिद्ध व्यापारी । सोल्टी हमरा सभकेँ लग अनलक । आ, हम सभ बड़ नीक मित्र बनि गेल रही । आइ धरि हमर मित्र हमरा समय-समयपर आर्थिक सहायता देल करैत अछि । दुखक समयमे देल हुनक ई सहयोग एखनो हम 'नहि' नहि कहि पबैत छी । तेँ हुनकेपर हमर सभ शान-शौकत । आ पति... । ओ त' बनारसमे पड़ल छथि । हुनका हमरे कमाइ चाही । हम कत'सँ लाबी, तकर हुनका कोनो फिकिर नै । मात्र चाही हुनका टाका, कपड़ा ।''

रेखाक भाषण आर बड़ी काल धरि चलैत जँ एकटा लम्बूसन मरद ओकर कोठलीमे बेधड़क नहि पैसि गेल रहितैक, इशारासँ ओ बता देने रहय जे इएह ओकर मित्र छैक । हम सामान्य शिष्टाचार निभा कोठलीसँ सरकि गेल रही ।

काठमाण्डू सन ठाममे साढ़े तीन सय टाका मासिक भाड़ापर घर ल' क' रहनिहारि रेखाक रईसी, मोनमे तँ कचोट भरैत गेल, मुदा किछु बाजि नहि सकल रही ।

दोसर दिन भेने एयरपोर्टपर हमरा भेँट भेल रहय रेखासँ । हपसिक', हमरा देखिते, लगमे आबि गेलि रहय । अपना प्रेमीकेँ एयरपोर्ट नहि आबि सकबाक कारण कह' लागलि रहय । ओकर भाइ आब'बला रहैक बीरगंजसँ, नहि तँ ओ सभ बेर ओकरा एत' छोड़' अबैत छैक । बड़ भला आदमी छैक ओ... । एहू बेर जरूरे अबितै ।

हम ओकर उत्साह देखि जरि गेल रही । पुछलिऐ– ''ई अनकर सहयोगपर कतेक दिन धरि जीवन चला सकबैक रेखा ? आइ नहि तँ काल्हि ओ अहाँसँ छुटबे करत । तखन ई बिगड़ल ऐय्यासीक जीवन की अहाँ भोगि सकब ? बाल-बच्चा भेल आब । पढ़ल-लिखल पति भेटल अछि । सामाजिक मर्यादा छैक... । किछु सोचलिऐक अछि...?'' हम तहिया ओकरा 'अहाँ' सम्बोधन करैत रहिऐक । हमर बात सूनि रेखाक मुँह जेना कड़ुआ गेलै' । भावावेशमे अपन सोहनगर क्षणक वर्णन करैत काल भविष्यक ई कटु उपदेश सुनबा ले' ओ एकदम्मे तैयार नहि बुझायल । हमर मुँह ओ चंठ जकाँ देखने रहय, जेना हम की कहि देने रहिऐक ।

बमकि उठलि रेखा– ''हुँह' सामाजिक मर्यादा ! कथीक मर्यादा ! सतरह-अठारह वर्षक काँच उमेरमे काठमाण्डू एसकरिये आबि नोकरी करबाले' बाध्य कयल गेल । लड़कीक जीवनमे सामाजिक मर्यादा नामक कोनो वस्तु नहि होइत छै अभि ! हम स्वयं जीवनक बाट बनौने छी, स्वयं चलब । भविष्यक कल्पना हम कर' नहि चाहैत छी । वर्तमानकेँ खूब नीक जकाँ भोगबाक हमर लालसा अछि– खूब भोगैत छी । साठि

टाकाक घरमे टुटलाहा खाटपर कोनो साँझ खाय, कोनो साँझ भुखले सुतबापर बाध्य कोनो लड़कीक जीवनमे किछु क' देबा ले' अयलैक ? पैदल ताहाचल जायब आ पैदल आयब । घंटा भरिसँ उपर काठमाण्डूक उभर-खाभड़ सहरजमीन । कल्पना करू तँ, हमरा कतेक कष्ट भेल होयत । एकेटा कपड़ा सप्ताह-सप्ताह पहिरिक' रहल छी हम । तखन के आयल अछि समाजक मर्यादाक रक्षा ले' । धन्य इएह शेखर, जे हमरा नवीन जीवन देलक । आइ जे किछु छी, ओकरे बदौलत... । जाधरि ओ रहत आ हमरामे बुद्धि रहत, हम एहिना जीबि लेब । नहि चाही ककरो उपदेश... ।'' आ उठि गेल रहय सीटसँ । फिल्ड दिसक सीसावला खिड़की लग जाक' आकाशमे उड़बाले' तैयार जहाज दिस टकटकी लगा देख' लागलि छलीह रेखा... ।

हम स्तब्ध भेल ठाढ़ भ' गेल रही, वेटिंग कोचपर । की सभ बाजि देने रहय रेखा । समाजक प्रति ई विरक्ति... एकरा नीक-बेजाय सोचबाक बुद्धि घीचि लेने छैक । के कहओ एकरा... । हम तखनो सोचने रही– आइ ने काल्हि ओ सोचती जरूर... ।

आ, से रेखा आइ हमर आगाँमे कानि रहलि अछि । संगमे एकोटा पाइ नहि । पाँच सय टाकाक भाड़ाक लेल मकान, पति, बच्ची आ घरक खर्च । नोकरी छुटि गेल छैक । फिराकमे अछि । तकर सभ खर्च । मांगओ ककरासँ ? से चूड़ी बेचतीह । सोनाक छै, तीन हजारसँ उपर देतै । गहना तँ बड़ छलैक । हाथमे औंठी पाँच हजारसँ उपरेक रहैक– हीराक ।

हम रेखाक आँगुर तकैत छी । आहि रे बा ! ई की ! औंठी नहि छैक । कानमे बालीयो नहि । गरदनिमे नेकलेश सेहो नहि छैक । पैंतीस सय टाका दाम एक बेर रेखा कहने छलि । ई सभ तँ बरोबरि पहिरैत छलि ? तखन ? दुत् ! की सोचैत छी हम ! पेटीमे बन्न कयने होयत । समयसाल तेहन ने छै । तखन ई चूड़ी ? हमरा मोन पड़ि जाइत अछि पछिला बात सभ, आ रेखाक उक्ति– ''भविष्यक कल्पना हम कर' नहि चाहैत छी । वर्तमानकेँ खूब नीक जकाँ भोगबाक हमर लालसा अछि, खूब भोगैत छी ।''

मोन करैत अछि, मोन पाड़ि दिऐक ओ बात सभ । आ तेँ कहैत छिऐक– ''मोन छौक रेखा ओ बात सभ, जे तों हमरा...''

''नहि मोन पाड़ू अभि, ओ बात सभ ! टीसैत अछि हियामे हमरा । हमरा सभ मोन अछि । समाजक द्वारा मात्र शोषित हम घृणासँ घेरलि रही तहिया । हमरा जीवनमे जे भेटल रहय सभ भेड़िया बनि हपस' चाहय । नोरसँ बेसी हमर जवानीमे रुचि रहैक लोकक । एतेक विशाल महानगरमे भूखल आँखिसँ बचिक' रहब– तपस्या रहल हमराले' । मुदा, पुरुषक ई रूप हमरा हृदयमे घृणा उत्पन्न करा देलक । आ से बदला लेबाले' हम दर्जनो पुरुषकेँ बेबकूफ बनौने रही । एखनो पचीसो लोक हमरापर दीबाना

भ'क' बौआ रहल अछि । हमरा ओकर विरक्ति आकि दुखद स्थिति देखि खुशी भेल करैत अछि । जीवनकेँ खूब नीक जकाँ जीबाक हमर लालसा साँचे हमरा आन्हरक' देने रहय । हम भविष्य नहि सोचने रही । ककरो समयपरक आर्थिक सहयोग किंवा आत्मीय सिनेहकेँ जीवनक आदर्श बुझैत रहलिऐक– आ बाटक निर्माण तेहने कयने रही । से आब बुझलिऐक अभि, ओ हमर धोखा छल । भ्रम छल । जीवनमे बहुत कम एहन क्षण अबैत छैक जखन एकर सार्थकताक अनुभव लोक करैत अछि । हम बुझैत छी– हम गलतीक' रहलि छलहुँ । ई महानगर हमरा भोतिया देलक । मृगतृष्णाक पाछाँ बेहाल रहलहुँ ।

''की तोँ गलती सुधारि सकैत छेँ ?'' हमहूँ कनेक बेसिए कटु भ' गेलहुँ ।

''हँ, हम ताहि दिस प्रयासक' रहलहुँ अछि, तेँ तँ नोकरी नहि रहनो आइ कोहुना गहनापर खेपि रहल छी । देखैत छिऐक– कानमे बाली, आँगुरमे औंठी आ गरामे नेकलेश किछु छैक ? सभ बन्हकी राखल छैक । माँ आयलि छलीह । मौसी गेलीह गाम, सभकेँ पठयबाक रहय । अपने पहाड़– सासुर जयबाक रहय । घरक भाड़ा, खयबाक सामान सभ । घरबलाक खर्च । एही सभमे बन्हकी ध' ध'क' काज चलाओल अछि । की अहाँ एकरा पुरनका बातकेँ विस्मृत करबाक लक्षण नहि बुझैत छी ?'' –रेखा आँचरसँ आँखि पोछैत बजैत अछि ।

''तखन की शेखरसँ आब...'' हम कनेक नरम होइत छी ।

बीचेमे लोकैत रेखा तड़पि उठैत अछि– ''नहि लिय' नाम ओकर । ओ हमर जीवन तबाहक' देने अछि । शुरुएमे यदि ओ हमरा खर्च नहि दीत, सहायता नहि करैत तँ हम नहि बहसितहुँ । हमर बर्बादीमे ओकरे हाथ अछि । जानिक' भलेँ ओ किछु नहि कयने होअय, मुदा हम आब बुझैत छी, ओ बिगाड़ि देलक हमर चालि । आइ डेढ़ माससँ उपर भेँट भेला भेल ओकरासँ । हम नहि चाहैत छी, भेटय । तेँ ने ई कर्ज सभ...।'

''की एखनो ओ सहयोग करतौ...?''

कनेक काल रेखा देबालपर एकटक देखैत अछि । जेना कतहु भसिया गेल हो । पुनः सम्हरिक' बजैत अछि– ''हँ, एखनो जँ हम ओकरा अपन हालत कहियौक तँ ओ सहायता करत । मुदा, से हम चाहैत नहि छी । बीतल क्षणक दर्दकेँ आब आर जियाब' नहि चाहैत छी हम । पति छथि, बेटी अछि । एकरे देखि जीवन निबाहि लेब हम । हम नहि चाहैत छी, आब पति हमर बीतल जिनगीक पाछाँ अपस्याँत रहथि... ।''

''तखन शेखर...?''

''शेखर आब हमरा लेल भगजोगनीसँ बेसी महत्त्व नहि रखैत अछि अभि ! हमर अन्धकारपूर्ण भविष्यमे टिमटिमाइत एकटा अति क्षीण इजोत । जकर नियति आब हमरा

ले' स्पष्ट नहि । जकरा सहारासँ हम अपन दाम्पत्य जीवनक बाटकेँ देखि नहि सकब । ओ आर भोतिआ देत– भकचोन्ही लागि जायत हमरा । ओ ज्योति एकटा भ्रम छोड़ि किछु नै भ' सकैछ हमरा लेल । आ जीवन भरि जिनगीक गलत मिथकक पाछाँ बेहाल रहनिहार हम– आब आर भ्रममे पड़' नहि चाहैत छी अभि... ।'' आँखिमे उतरि आयल नोरक बुन्नकेँ फेर साड़ीक कोरसँ पोछैत बजैत अछि– ''चलू, अहूँ ओम्हरे चलब ने ! साँझो पड़ि सकैत छैक । आ आइए काज होयब जरूरी अछि । अहाँकेँ बुझले अछि...।'' पर्सकेँ सम्हारैत रेखा उठैत अछि । आइ बहुत दिनपर रेखाक अनुहारपर एकटा शांति देखि पड़ैत अछि । बाहरी दुनियाँमे अपन चालि-ढालि, पहिरन-ओढ़न, बोली-बानीसँ अत्याधुनिका, 'ग्लैमर गर्ल'क रूपमे जानल जाइत रेखा हमरा आगाँमे गम्भीरता आ शांतिक प्रतिमूर्ति भ' ठाढ़ि अछि । बुझाइछ, सौंसे दुनियाँक घर-गृहस्थीक चिन्ता एकसरे रेखे उठा लेने हो ।

हम यंत्रवत् रेखाक पछोड़ धयने डेरासँ निकलि जाइत छी ।

■

अन्हारमे भोतिआयल एकटा सिपाही

आखिर गणेश मरिये गेल । ओकर लोक-वेद कहाँदन ओंघराइत-ओंघराइत देह-हाथ फोड़ि लेने रहैक । कोना ने ! जीबाक एक्कोटा वएह आसरा रहैक । ओकर पन्द्रह रुपैया महिनापर बड़ सन्तोष रहैक बुढ़िआके । कमौआ बेटा जुआनीमे कात भ' गेलै बहु ल'क' । आ बुढ़बा-बुढ़िआपर सगरो संसारक भार पड़ि गेलै । धिया-पुता एही ले' जनमबैए– गणेश बरमहल कहल करैक ।

कातो भेने गणेशकेँ कल्याण नहि रहैक । एक्के आंगनमे रहबाक कारणे सभदिन जेना एकबेरक' गारि-हुज्जति दुनूकेँ देबे करैक बेटा-पुतहु । मारबो-पिटबो करैक । एह ! एक दिन कूहल देह ल'क' घरबला लग पंचायतमे आयल रहय बुढ़िया । भरल पंचायतमे हाक लगा गेल रहय बुढ़िया– 'तोरा अछैत हमर ई दुर्दशा !' गणेश कहुना मनाक' घर ल' गेल रहैक आ बेटा-पुतहुकेँ डाँटि देने रहैक । मुदा आब ? आब तँ ओकर परोक्ष भ' गेलै । कुहल देह ल'क' ओ आब कत्त' जायत ? ककरा कहत ओ– तोरा अछैत हमर ई हाल ! आब तँ ओकर परोक्ष भ' गेलैक !

से जखने जे सुनलक गणेशक परोक्ष भ' गेलै, उदास भ' गेल । बड़ कचोट होइत अछि । ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व हमरा आँखिक आगाँ नाचि जाइत अछि । ओकर वाक्‌पटुता, कर्त्तव्यनिष्ठा सम्पूर्ण गौंआकेँ मोहि लेने छलैक । सत्ते, ओ कर्मयोगी छल– काजुल छल ।

गामक 'पीन' रहैक गणेश । सम्पूर्ण गामक सिपाही । कोनो पंचैती बैसयबाक हो तखन, कोनो मेलाक आयोजन हो तखन, कोनो एकाह-नवाह हो तखन गणेशक उपस्थिति अनिवार्य बूझल जाइत छल । आ ओहो अपन लगनसँ एहि सभमे भीड़ल रहल करय ।

पन्द्रह रुपैया मासिक पंचायत दैत छलै ओकरा । आजुक समयमे एतेकसँ परिवार चलायब बड़ कठिन नहि, असंभव थिक । मुदा, ताहूमे बूढ़ सन्तुष्ट रहैत छल । ओकरा

दशक काज करबामे बड़ आनन्द अबैक । ओकर इएह परिश्रम ओकरा गाम भरिमे लोकप्रिय बना देने रहैक ।

तेँ गणेशक मरि जायब मामूली बात नहि छलैक । सौंसे गाममे शोर भ' गेलै । लगले पसरि गेल रहैक जंगलक आगि जकाँ । सभक करेज जेना चहकि गेलै । क्लांत भ' गेल रहय गौंआक अनुहार । एकटा अथक सहयोगीकेँ चलि जयबाक दर्द सभक आँखिमे सहजेँ देखल जा सकै ।

गोर दप-दप । पचास-पचपनक उमेर । काज करबामे हठगर । हाथमे एकटा पातर लाठी रहल करैक, जकरा कैक बेर लोक चोरा लेल करैक ! ठेहुन धरिक धोती, जे अंगपोछा सेहो बनि जाइक । ठोरतर दबने खैनीक जूम । आ किछु उचकिक' चलबाक अभ्यासी गणेश । हमर गणेश सौंसे गौंआक सिपाही, जे आब नहि रहल ।

सत्ते ई अनुभूति मोनकेँ पीड़ा दैत अछि । बड़ संसर्ग छलैक हमरा ओत' ओकरा । प्रधान होयबाक कारणेँ आ हमर पुरान गोराइत होयबाक कारणे सेहो । कोनो टहलकेँ बजयबा ले' सदैव तत्पर । ओकरा लेखेँ जेहन आंगन तेहन बाहर । मजकियो बड़ । फगुआ दिनक ओकर पहिरन देखि अनायास हँसि पड़बाक मोन होइक । हमरे हरिपुरवला बट्टीदारसँ माङल दाउरा, सुरवाल, टोपी आ बाबूक पुरना जूता पयरमे आ आँखिमे टूटल बाँहिबला चश्मा, जकरा ओ डोरीसँ बन्हने रहैक । हाथमे वएह पतरका लाठी । छौंड़ा सभ देखि-देखि किछु कहि दैक आ ओहिपर गणेश ताल तोड़' लगैक ।

जहिया हम बड़ छोट रही तँ देखिऐक एहिना बड़े अबैत ओहि बूढ़केँ । सभ क्यो ओकरा गोराइत कहैक । हमर जमीन छै किछु उत्तरभर पहाड़मे । बटैआ लागल । ओतहि ओ गेल करैत छल आ उपजाक आधा भाग लबैत छल– मकै, गहूम, तोरी आ बहुतरास रब्बी-राइ सभ । तहियासँ एकरा देखि मोन गर्वित भ' गेल करय जे ई हमर गोराइत अछि । छौड़ा सभक बीच हमर सीना तनल रहैत छल– अपन खास सिपाही होयबाक कारणेँ । आ, आइ हम वएह दृश्यकेँ मोन पाड़ि चिहुँकि उठैत छी । आइ हमर सिपाही हेरा गेल अछि । हम असुरक्षित भ' गेलहुँ अछि मने !

पता लागल अछि, वाबू हरिपुर गेलाह अछि । रब्बी-राइक सम्बन्धमे खोज करय । सोचैत छी, हुनक आत्माक छटपटाहटि क्यो नहि देखि सकैत अछि । सदैव संग आ जी-हजूरीमे रहनिहार हुनक अभिन्न सहयोगी गणेश आइ हुनका संगे नहि गेल छनि । आब कहियो जाइयो नै सकतनि ।

किछु दिनसँ एम्हर गाम नहि नीक लगैत अछि । गामक प्रत्येक प्रवासक संग जोड़ल अछि गणेश बुढ़बाक संस्मरण । जे रहि-रहिक' हमरा विचलित क' दैत अछि । बजारक दिन तँ आर उदास लगैत अछि । आंगनमे जाइत छी तँ सुनैत छी– 'तेल लयबाक

छै। प्याजो घटले छैक। जीर, मरीच-तरकारी सेहो लाबहि पड़तैक। हँ, आइ तँ बजारो छैक- माछो तँ आनहि पड़तैक। कत' गेलथिन माय ! पठौथिन ककरा ? सत्ते सभक आगाँ आब एकटा प्रश्नचिन्ह जागि जाइत छैक- पठौथिन ककरा ?

हमरा नोकर-चाकरक कमी अछि से बात नै। सभ अछि, मुदा विश्वासी नहि। बिसबासी छल गणेश बुढ़बा। एकदम फिट। मिरचाइ-प्याजुसँ ल' माछ-मासु धरिक वएह कीन-बैसाह करैत छलैक। आ, साँझखन आंगनमे मायक आगाँ गमछाक खोँइछ बना ठाढ़ गणेशक भाव मायकेँ बुझबामे भाङठ नहि होइत छलनि। किछु-चूड़ा आ एहने सन खाय-पीब'बला किछु द' देल करथिन। गणेश तृप्त भ' गेल करय।

गामक बजार आब उदास लगैत अछि। ओतेक भीड़मे भोतिआयल हम अपन गोराइतक अनुहार तकैत रहैत छी। मुदा नहिं भेटबाक रहैछ, नहि भेटैछ। अपन बतहपनीसँ स्वयं हमरा कचोट होइत अछि। मुदा...।

हमहीँ किए ? गामक बहुत रास लोक ओकर अनुपस्थितिसँ खिन्न रहैत अछि। छौड़ा सभक हेतु तँ जेना बज्रपाते भ' गेलैक। ककरा कहतैक ओ- "फतुरी" आ के अभ्यस्त हाथेँ लाठी उठा मारबाले' छुटतैक। गणेशक मुँहसँ गारि सूनि लोक आर किचकिचा दैक। आ ओकर 'मूड'पर आर जोर-जोरसँ हँसय। थपड़ी पाड़य। आब ओकरा ले' गणेश एकटा टीस भ' गेलैक अछि। ओकर फतुरी ओकरासँ बहुत दूर चल गेलैक, जकर पूरी खयबाक लालसा आ जकर गारि पढ़बाक मुद्रा ओ कतहु ने देखि सकत।

ओकर फतुरी आब नहि रहल। बड़ सुधुआ लोक रहय गणेश। सुपत-कुपत सभकेँ कहि दैक। क्यो दुखो नै मानैक ओकर बातकेँ। बरु केहनो क्लांत अनुहार ओकर बात सूनि बिहुँसि उठैत छल। ओकर परोक्ष भेलापर बहुत रास घटना सभक स्मृति अनेरे मोनकेँ भारी बना दैत अछि ! ओकरा संगे बिताओल नेनपन, ओकर देल मान-स्नेह एकटा हूक बनि भीतर खटकि रहल अछि। अव्यक्त वेदना सत्ते बड़ दुखदायी होइछ !

मरैत अछि सभ क्यो, मुदा गणेशो मरि सकैछ, हम सोचने नहि छलहुँ। नहि मरैत कहियो से बात नहि- एखन मर'बला स्थितिमे ओ नहि छल। खूब काम-काज करैत। ने कोनो दुख, ने कोनो तकलीफ। लोक तँ सएह देखैत छलैक आ तेँ ओकरा ठीक बूझब सभक हेतु स्वाभाविक।

से एक दिन एतहि केओ गोटे हमरा कहलक जे गणेश मरि गेलै तँ हम सन्न रहि गेल रही। की पुछियौक जे कोना ? हमरा अपन कानपर विश्वास नहि भेल रहय, आ जखन आश्वस्त भेलहुँ तँ ज्ञात भेल जे आइ ओकरा दारू पीबि गेलैक। ओकरा दारूक सेहो लति रहैक। पाव-आधपाव कहियोक' पीबि लैत छल। आ, से कोनो ओकरा शारीरिक कष्ट नहि पहुँचबैक। ई स्वभाविक भ' गेल रहय ओकरा लेल। मुदा, वएह स्वाभाविक दारू ओकरा मारि सकैछ- सोचियो ने सकैत छलहुँ। पाव भरि, आध पाव पीलासँ केयो मरैत नहि अछि आ एहिसँ बेसी पीबाक ओकरा सामर्थ्य नहि छलैक। तखन ? कतेक पीबि गेल ओ दारू ? की ओ मरबा ले' मात्र पीने छल ? की दुख छलैक बुढ़बाकेँ ? प्रश्न अछि। के देअओ उत्तर ?

ओना लोककेँ एहि प्रश्नक उत्तर देबाक कोन प्रयोजन ? ओकरा तँ दिन-राति जी-हजूरीमे ठाढ़ एकटा गोराइत चाहिऐक। नीक-बेजायमे रंग देनिहार एकटा सिपाही चाहिऐक। अपन व्यथासँ व्यथित कयनिहार पारिवारिक दुख-दर्दमे फँसल गणेश नहि। तेँ सोचैत छी जे लोक एहि प्रश्नक उत्तर एखन द' सकबाक स्थितिमे रहैत तँ गणेश मरबो ने करितय। गणेश मरल अपन खातिर नहि, अनका खातिर। अनकर दर्दकेँ समेटनिहार बुढ़बा स्वयंकेर दर्दसँ हारि गेल। के बुझत एहि मर्मकेँ ?

दिनमे भोरे भट्ठीमे बैसल तँ साँझ धरि कनेक-कनेक पिबिते रहि गेल। ओ अपन पाइसँ पीलक वा केओ ओकरा पिऔलक, कहि नहि। मुदा ओ पीलक जरूर आ से खूब पीलक। कहल जाइछ, दारू लोकक मोनक दुख-दर्दकेँ बिसरबाक अचूक साधन होइछ। मुदा, के पुछितैक ओहि बूढ़केँ जे ओकर केहन दुख छैक। जे सदाक हेतु ओकरा सभ किछु बिसरबाक हेतु बाध्यक' देलकैक। ओकर दुख-दर्दसँ लोकक कोन काज। ओ तँ गामक गोराइत छल- सिपाही छल। काज तँ ओकर जिनगी छलैक। काज आ प्रशंसा !

ओहि दिन पीलाक बाद साँझखन घर जा सूति रहल। कहाँदन निकालबाली बेटी आयल रहैक पूरी ल'क'। कहने रहैक उठाक' -'बाउ, पूरी खा ला न'।' -'काल्हि भोरे दीहे' कहि करोट फेरि बुढ़बा सूति रहल रहय से सुतले रहि गेल। पुनः कहियो नहि उठबाक हेतु।

कखनोकाल वायुमण्डलमे खट् खट् खट् खट् शब्द सूनि चौंकि उठैत छी- कतहु गणेश बुढ़बा लाठी टेकैत तँ नहि आबि रहल अछि ! मुदा, नहि, आगाँमे एकटा विराट अन्हार छोड़ि आर किछु नहि देखाइ पड़ैछ।

■

असक्क

''जय सियाराम-जय सियाराम'' । थानतर रामरीझक दलानमे कीर्त्तनियाँ सभक भजन बुढ़िया कतेक देरसँ सुनि रहलि अछि । कैकबेर मोन भेलैक जे ओहो ओहि ठाम चल जाय आ भगवानक भजन सुनय, मुदा ओ अपनाकेँ असमर्थ पबैत अछि । बुढ़िया किछु दूर टघरैत अछि तँ सौंसे देह फक-फक कर' लगैत छैक । जाहिसँ ओ ओहिठाम नहि जा सकैत अछि । नहिएँ जा भेलै तँ की होयतैक, ओ ओहूठामसँ सूनि सकै अछि– बुढ़िया आश्वस्त होइत अछि ।

बाप रे ! बुढ़ियापर टुटलाहा पटियाक दोगमे बैसल उड़ीस लुधकि जाइत छैक ! ओ छिलमिला उठैत अछि । कतेक बेर लखनाकेँ ओ भगवानपट्टीसँ दवाइ आनि छीटि देबालेँ कहने छलैक... मुदा, के सुनैए ओइ बूढ़-असक्कक बात । ककरा पलखति छैक । ओ पटियापर पड़ल-पड़ल कुहरैत अछि । ओ आब सत्ये भार भ' गेल छैक अइ अँगनापर–बुढ़िया माथ पकड़ैत अछि । भगवान बैरी भ' गेल छथि, जल्दिए उठा लितथि तँ ई दिन देख' नहि पड़िते । हमरा सभकेँ ई चोला छुटिए गेने आब नीक ! गाममे ओकर तुरिया एक-आध आदमी मात्र बाँचल होयत, सेहो एकरे जकाँ घिघरी कटैत अछि । नहि तँ कतेक 'सरंग'मे चल गेल– मुदा हमर ई बज्जर शरीर...–बुढ़िया एकटा भरिगर गारि अपना मुँहपर लाधि लैत अछि ।

बुढ़ियाक नजरि सीकापर टाँगल भातक बाटीपर जाइत छैक । भूख पुन: धधकि उठैत छैक । दिन भरि भूखले ओ पटियापर पटोटन देने अछि । क्यो अयबो ने कयलैक जकरा ओ सीकापरसँ भात उतारि देबाले' कहितैक ।

ई सभ ओकर पुतहुक किरदानी छैक– बुढ़ियाक मोन जहरतीत भ' जाइत छैक । घोकचल मुँह आर घोकचि जाइत अछि । ओ उठि बैसैत अछि । ओकरा आब खाली भूखे लागल बुझाइत छैक । सीकापर टाँगल ओ पाबि नहि सकैत अछि । आ ककरो एखन धरि आँगनमे देखि नहि पौलक अछि !

बुढ़िया अकानैत अछि... ।

किछु घमघमाइत छैक । प्राय: धनिकक खेतसँ रोपिक' सभ आबि गेलै । बुढ़िया अनुमान लगबैत अछि । आशासँ हल्ला करैत अछि– घहबा छेँ रे, घहबा !!

बुढ़ियाक क्षीण स्वर आँगनमे चकभाउर मारि पुन: बुढ़िया लग घूमि जाइत छैक । बुढ़िया पुन: एकबेर हल्ला करैत अछि । मुदा, केओ उत्तर नहि दैत छैक । बुढ़िया पुन: एकबेर पिड़ायल मोनसँ पटियापर ओलरि जाइत अछि ।

एह, बाप रे ! एखन तक नहि अयलै ई सभ । की करैत होयतैक एखनि तक । कोह तँ कोनो कम दूर नहि छैक जे घर-दुआर छोड़ि एतेक निश्चिंतसँ बैसल जाय... । अबिते-अबिते... बुढ़िया एहिसँ आगाँ किछु नहि सोचि सकैत अछि । ओकर मोन सीकापर टाँगल बाटीक चारूकात नाच' लगैत छैक । आब ओ सहाज नहिक' सकत... । भुखे अँतरी ऐंठने जा रहल छैक, की करी– बुढ़िया गुनधुनमे पड़ि जाइत अछि ।

बुढ़िया एकबेर चेहा उठैत अछि । एह, काल्हिए तँ गामक बजार छलैक । देखने छलिऐक खेलौना माइकेँ अल्हुआ किनने । राति भेलैक आ आरो तँ राखले होयतैक । बुढ़ियाक मुँह हरियर भ' उठैत छैक । जरूर होयतैक– उसनल । मुदा, होयतैक कत्त' ? –बुढ़िया बिधुआ जाइत अछि । ओ कोन-कोन घरमे खोजने घुरौक । एक तँ ओ चलि नहि सकैत अछि, दोसर घर सभ बन्दोक'क' गेल छैक । बुढ़िया पुन: मोन मारिक' पड़' चाहैत अछि ।

भूख सूत' नहि दैत छैक । ओ उठैत अछि । कोठीक गोरातर हथोड़िया दैत अछि । उहूँ... कहाँ छैक । बुढ़िया गुरकैत-गुरकैत कैकटा गोरा हथोड़ि लैत अछि ।

...''यैह तँ छैक...'' बुढ़िया खुशीसँ बेहाल भ' जाइत अछि । छोटका भौकीमे राखल अल्हुआ बुढ़ियाकेँ अमृतफल बुझाइत छैक । हब्बर-हब्बर अधखरुए सोहि मसकूरसँ पीस' लगैत अछि । ओहुना गुलगुलाक' घोंटि जाइत अछि । भौकी सुन्न भ' जाइत छैक । गुरकैत-गुरकैत बुढ़िया अपन पटियापर आबि जाइत अछि । आब मोन कनेक हल्लुक सन बुझाइत छैक ।

बुढ़िया पटियापर ओलर' चाहैत अछि कि बुझाइत छैक जेना कंठ कुचकुचाइ । हुक्काक अमल लगै' छैक । नजरि खिरबैत अछि। कनिए दूर हटिक' हुक्का आ चिलम राखल छैक । आ पीनी...? बुढ़िया पुन: सोचमे पड़ि जाइत अछि । कत' खोजौक ? हँ... बखरिया कोठीक गोरातर तामामे ओ पीनी देखने छल भोरे !... कहूँ पी ने लेने होइक ! ओ गुरकैत अछि । गोरातर अभ्यस्त हाथ दौड़ैत छैक । तामा भेटि जाइत छैक । पीनी तँ छैहे... बुढ़िया पीनी गोलिआक' चीलममे राखि लैत अछि । पुन: ससरैत ओसारापर अबैत अछि । चुल्हि कतौ पझा ने गेल होइक । ...बुढ़िया चिलममे लागल चुट्टासँ आगि कोड़ैत अछि । एह ! आगि तँ बुझाइत छैक । दू-चारिटा जीवैत गोइठाक आगि चिलममे रखैत अछि । पुन: गुरकि बिछाओनपर चल अबैत अछि । बुढ़िया एकबेर हुक्काकेँ फूकि पानि कनेक बहार क' दैत छैक आ गुरगुराब' लगैत अछि ।

हुक्का पीबैत काल बुढ़ियाक नजरि बखरिया कोठीपर कयबेर चल जाइत छैक । पचास-साठि मनसँ उपरेबला छैक ई कोठी... । बुढ़िया अपना जुआनीमे एकरा बनौने रहय । बड़ कष्टसँ घर अरजने रहय बुढ़िया । गामक सभसँ नम्हर धनिकमे ओकर नाम रहैक । बुढ़िया अपन अतीतमे भसिआ जाइत अछि । कैकटा बखारी छलैक ओकरा दूरापर । जन-बनिहार, नोकर-चाकर । दरबज्जा भरल रहैक । ई बखारी आ कोठी पुरना चाउरसँ ऊमटाम भेल करैक । कतेक-कतेक सालक पुरान । मुदा, जहियासँ एकर पुतहु घरमे अयलैक, सभ बिलाय लगलैक । खेत-पथार सभ बिकाय लगलैक । बड़का अगिलग्गीमे थानतरक बखारी सभ जड़िक' छाउर भ' गेलैक । आ ओ सब दरिद्र भ' गेल । आब बोनियोपर आफत होइत छैक ।

एहि बखरिया कोठीमे भुस्सो नहि भरि सकैत अछि ओ... । बुढ़ियाकेँ बकौर लागि जाइत छैक । आँखिमे नोर डबडबा अबैत छैक । साड़ीक आँचरसँ नोर पोछैत अछि । आ हुक्कापरसँ चिलम उतारि कनेक हटिक' अधजरुआ झाड़ि दैत छैक । हुक्काकेँ चिलमपर राखि पटियापर ओंघरा जाइत अछि ।

'की भेलैक, एखन तक ककरो सबद नहि पबैत छी– बुढ़िया अकानैत अछि । धीयापूता सभ कतहु बौआइत होयतैक– अपने सभ निफिक्किर भेल छै । केनाक' भगवान एकरा सभकेँ पारघाट लगओतैक, कहि नहि... ।

बुढ़िया पटियातरमे राखल गुदरी-चेथरीक सिरमाकेँ कनेक आर अलगा लैत अछि । ओ आब पड़' चाहैत अछि । क्यो अबौक कि नहि अबौक । ओ तँ आइ पुतहुक राखल अल्हुआ जीवटक'क' खा लेलक अछि ।... भरिसक ओकरे लय रखने छलैक होइक । बुढ़िया सोचैत अछि । ओहो तँ एकरा नहि खयने रहै । धुर ! कतेक मनकेँ छिछिऔलक ओ– सत्ते ओकरे ले' राखल छलैक होइक– बुढ़िया आब निश्चित भ' सुतबा लेल मोन मारैत अछि ।

''जै सियाराम-जै जै सियाराम''–थानतरक छौंड़ा सभ एखनो टेरने अछि । बुढ़ियाक आँखि रामधूनि सुनैत कखन लागि जाइत छैक, ओ नहि जनैत अछि ।

जनैत अछि तखन जखन क्यो ओकरा झकझोरिक' जगबैत छैक– ''ऐ ! अहाँकेँ भरि दिन खधम्मरि धयने रहैत अछि । ओतेक नीक-बेजाय भरि दिन खाइत छी तैयो ने सन्तोष होइए । देखू, ! ओनाक' लटुआले' अल्हुआ बचाक' रखने छलिऐक से कोनाक' खा गेली । इह, ! असन्तोषी नहितन !'' लखनाक मतारि आर कतेक रास बात ओकरा कहैत छै । ओ गबदी लधने रहैक । की छै सक्क जे बाजओ किछु ! अभ्यस्त जकाँ चुपचाप सुनैत अछि आ करौट फेरि जी-जान जाँति गबदिया दैत अछि ।

■

माटिक दरद

खट्टर मड़र डटाकेँ जोरसँ तानि दहिना पयरसँ करीनकेँ जँतैत अछि । करीन पानिमे गोँता जाइत छैक । आ ओहिमे हहाक' पानि भरि जाइत छैक । तखन ओ डटाकेँ बाम हाथसँ पकडि दहिन हाथसँ करीनक लोलकेँ पकड़ि ऊपर ठेलि दैछ । पानि हरहराक' आगाँमे बनल पैनमे खसि पड़ैत छैक आ भरल मुँह पानि खेत दिस ससरि जाइछ । ओ पुनः दहिना दिस एकबेर गहीँरगर आँखिसँ तकैत अछि । एह, एखन धरि सुगिया नहि आयलि अछि । दसक अमल होयतै... खट्टर अन्दाजैत अछि । आबि जयबाक चाही । रातिएसँ एत' मरल जा रहल छी, मुदा... । माथपर आयल बहुत रास घामकेँ आङुरसँ पोछि नदीक किन्हेरमे चल जाइत अछि । माथपर बान्हल चरखानाक गमछाकेँ खोलि पंखा जकाँ घुमब' लगैत अछि । कनेक हवा अबैत छैक–'ह-ह-ह' । ओ कनेक आश्वस्त होइत अछि ।

आब ओकरा घरक चिन्ता होब' लगैत छैक । एहि ठाम तँ सभक जलखै आबि गेलै, मुदा ओकर किएक नहि अयलै । ओ त' सभ व्यवस्था क'क' आयल छल । खट्टरक मोन कनेक कालक हेतु शंकामे पड़ि जाइछ । फाँड़सँ चून-तमाकुल निकालि रगड़' लगैत अछि । ओ किए एहि झरकौआ रौदमे एत' मरैत ? नदीमे बान्ह पहिने बन्हा गेल रहितै तँ सोझे खेतमे पानि एखन खसैत रहितै । मुदा, हमरा गामक लोककेँ तँ अन्तमे बुद्धि फुराइ छै । ओकर टटायल ठोरपर कनेक कालक हेतु हँसी दौड़ि जाइछ । ईहो बान्ह सभ तँ कोना ने कोना बन्हायल । बेचारा जनक सहनी, जकरा मुश्किलसँ चारि-पाँच कट्ठा जमीन छै पट'बला, से भरिदिन बेतौना बन्हने रहैत अछि एहि ले' । तीन सयबला बान्ह होइक वा मझकोठिया वा नहरिसँ पैनि खुनयबाक होइक, ओ सभसँ गारि सुनैत खुशामद करैत रहैत अछि । अढ़ाइ-तीन सय विघा जमीन पटब'ला ले' ओ चरिकठिया अनेरे बेहाल रहैत अछि– एकटा बड़का छिट्टा लेने, पत्ती असुलैत । ओकरा ओहि मरदेपर हँसी लगैत छैक । ओकरो ताँजबरदस्ती बान्हपर ओहि दिन लैये गेलै ।

बान्हे-पैन की करतै । इन्नरे भगवान रीझत तँ दू धार पानि... नहि तँ... । आ ताहूमे जुलुम होइ छै । बाँकी देब' जाउ तँ पानि-पोत चाहबे करी । चाहे खेत पटौ वा नहि । ओकरा श्रेस्तासँ मतलब । गिरहत जनकपुर दौगैत-दोगैत तंग भ' गेल । ई हरदीनाथ हमरा सभक हेतु कोनो लाभकारी नहि । बरू एखन एकरा रहने पटौ– पानि-पोत दीही पड़ैत छैक । के सूनत ?

खट्टरक नजरि पुनः एकबेर दक्षिण दिस उठैत छैक । दुखरन ककाक पोखरि धरि नजरि गोट-गोटक समाङकेँ तलाशैत छैक । मुदा, सुन्न देखि मुँह बिचका हाथपर राखल खैनीकेँ झाड़ि चुटकीसँ ठोरक गहमे राखि लैत अछि ।

भूख बड़ जोर लागल छैक । कैक दिनसँ नीक जकाँ खाइयो ने सकल अछि ओ । अरुचि जकाँ भ' गेल छै ओकरा । ओना आन साल समयपर बरखा भ' जाइत छलैक । लोक धान कमैनी करैत छल, रबी-राइ छिटैत छल । मोनसँ काज करैत छल, मोनसँ खाइत छल । अरुचि भेलापर चचरी कोयना खेतमे लगा किछु ने किछु माछ मारि लैत छल । आ ओहि संगे तँ रोटी खाइते बनैत छलै । मड़ुआकेँ रोटी, पोठी मछरिया । मुदा, एहि बेर सभ 'लक्षत्र' जेना बाँझ भ' गेलै । एक्को बुन्न पानि नहि पड़लै । धान जरैत छैक । गरै-गरचुन्नीक बाते कोन, डेढ़बा-पोठीकेँ देखब दुर्लभ भ' गेलै । बजारमे तँ युग उनटै छै । छोटकी माछ आठ रुपैए सेर । के खाय ?

ओकरा बुझयलै जे आब ओ पुनः नहि उठि सकत । चानी फोड़ने जाइत रौद आ पेटमे अन्नक लसेरो नहि । ओ खसि पड़त आब । खट्टर सोचैत अछि । एखन ओ गिरहतमे रहैत तँ कीसँ की बाजि गेल रहैत । टेमपर जलखै ने भेटतै तँ हमसभ की काम करबै । हमसभ आदमी छी कि बड़द । एहिना होइ छै जनक कमयनाइ । पिड़ायल मोने गिरहतकेँ फज्झति करितै– मुदा,... ।

खट्टर हाथक गमछाकेँ ओहि नवगछुलीक छाहरिमे बिछा ओतहि ओलरि जाइत अछि । मुदा, ओ सुतैत नहि अछि । ओकरा मगजमे बहुत रास बात अपने मने आब' लगैत छैक । पचास-पचपनक उमेर छै ओकरा । बहुत किछु, रंग-हवा ओ देखलक अछि आइ धरि । सातम सालक रौदी, एगारहम सालक रौदी । सभ ओ भोगने अछि, मुदा ओ ओकरा एतेक नहि मोन दुखयलकै । ओकरा बुझइ छै जेना आजुक समयमे बरक्कति नहि छैक । कतबो कमाइत अछि, पेट नहि भरैत छैक । पाँच कट्ठा खेतमे धीयो-पूताकेँ नहि पालि पबैत अछि ओ, मेहनते कयने की होइत छै ।

उपजो तँ कोनो खास नै होइ छै– खट्टर गुनैत अछि । एतेकटाक परिवार आ कम उपजा, खयनाइयो ने पुरैत छैक । बीच-बीचमे ओ जनोमे चल जाइत अछि, सेहो सभ गोटे चाटि जाइत अछि । पुरान करजा ओ एखन धरि चुका नहि सकल अछि । फेर, ओहि

दिन मनमोहनबाली मालिकसँ एक मन धान कर्जा आन' कहने छलीह । अनठा देल । कतेक तीरौ वर्खसवाइ । एहिना किछु दिन खेपि लेत । फेर देखल जयतै । छठि एखन आबिए रहल छै– ओहिमे नहि लेने कोनो परकार नहि– खट्टर माथ डोलबैत अछि । मुदा, चोट्टे ओकरा बुझाइ छै जेना एकटा मेंही लोलबला सूइ अँतरीमे केओ भोँकि देलकै, जकर पीड़ा सौंसे पेटकेँ उनटौने जाइत होइक । ओ पेटकेँ दबा पेटकुनियाँ दैत अछि । कनेक कालक बाद ओकरा ठीक बुझाइत छैक । ओ खूब नीक जकाँ जनैत अछि, ई भुक्खे भेलैक अछि । मुदा, आब ओकरा गाम दिस तकबाक साहस नहि होइत छैक । ओ आब कनेक आँखि मून' चाहैत अछि ।

कतेक नेहोरा-मिनतीक'क' गूजन झासँ ओ ई करीन मंगलक अछि । ताहूमे गोरा-छीप, डंटा, लतमारा सभ जोड़बामे आँचर-पाँजर ढील भ' गेलै । सभ तँ आनेसँ माँग' पड़ैत छैक । किछु दिन डोलसँ उपछलक । मुदा, ओहिसँ की होउ । पानिक कोन ठोकान । इएह नदी आइ भरल छैक, काल्हि सुखा जयतै । पचासो करीन ठेकायल अछि आ से रातिएसँ । ओहो भिनसरबेमे आयल । ओकरा विश्वास छै जे एको घड़ी आइ आरो चला देत तँ ओकर खेत पटिए जेतै । तखन किछु आशा छलै ।

जनोमे आइ नहि गेल ओ एहि पटौनीक चलते । मालिक पितायले होयतै । मुदा, तै सँ की ओ अपन काज छोड़ि देअओ ? खट्टरक मुँह जेना बिचकि जाइत छैक । भरि साल तँ ओ कमाइते रहैत अछि अनकेमे । किछुओ दिन तँ अपन खेतमे खटओ । आइ-काल्हि गिरहत सभक कोन ठेकान । कनेको 'डिपाइट' भेल कि पुछबो नै करैत छैक । तखन इएह खेत ले जे एको पेट भरैत अछि । खेत ओकर जीवन छै– माय-बाप छै । एतेक दिन जँ खेपि लेलक तँ आबहु कोहुनाक' खेपिए लैत छी । बिसबास रहल ताकै !

ठीके बिसबास बड़ भारी 'बौस' छै । भूमिसुधार अयलैक तँ लोक बाप-बापक' धनीकक खेत मोहियानी लिखा लेलक । कतेक ठाम तँ बटैया नहियो रहने लिखा देलकै । ओकरो खेत ला लोकसभ की कम तंग-पीठ देने रहैक– हाय लरायण लिखाइए ले । मुदा, ओ टससँ मस नहि भेल । मालिकपर बिसबास रखने रहल । अपन चारिये-पाँच कट्टा ठीक छैक । अनकापर कोन लोभ ? लोक लड़ल, अखरपना कयलक आ ओ निचैनसँ खेत जोतैत रहल । लोक सभ बरू ओकरा बुड़िबके कहौ । से बुड़िबको बनि ओ चारिटा धीया-पूताकेँ गुजर-गुजरान चलबैत त' अयलै आइ धरि । आ ओही ठाम जीबछ कापैड़केँ की हाल भेलै से गौंआ नहि देखलकै ? धनिकसँ अखरपना करैत घर-घराड़ी सभ बिला गेलै । धनिककेँ की भेलै । बिलटि गेल बिचारे गरीब ।

'बिलटब' शब्द खट्टरक देह घुरघुरा दैत छैक । एह, ओहो आइ लोकक बात कयने रहैत तँ नहि जानि आइ केहन हालतमे रहैत । धीया-पूता बिलटि जेतैक । एतेकमे तँ ई हाल । सभ भगवानक लीला छै ।

खट्टरकेँ भगवान मोन पड़िते आँखिक आगाँ जुआन बेटी सुगिआक निश्छल, कचाह, निर्दोष अनुहार नाचि उठैत छैक । साँचे, कखनो-काल भगवानो हदक' दैत छथि । कतेक मेहनतसँ बियाह कयलक बेटीकेँ, मुदा भगवानकेँ ओकर सुख मंजूर नहि छलै । बड़ धराहक घरमे बियाहि देलक बेटीकेँ । पौस मङने रहै, मड़बापर । गरजे मानि लेने रहैक । सामर्थ्यहीन । परुकाँ एहि बात ल'क' खटपट भ' गेलै आ आइ ओकरा बेटीकेँ छोड़ि देने छै । कोनाक' ओ अपने मने पहुँचा अबौक । गरीब भेल तँ ओ इज्जतियो गमा लेलक । नहि, एतेक भार छैहे, एकटा आर !

आब खट्टर आर सोचि नहि सकत । भूखे पेटमे पुनः मरोड़ देब' लगैत छैक । नहि जानि की भ' गेलै । इसर, लखना, महन्था सभ तँ घरेमे मरैत होतै । अपने हूरि लेने होत आ हम एत' छटपटा रहल छी !' -खट्टर तँ दगधल मोने बेटाकेँ बात-कहिनी कहै छै ।

नहि जानि, कखन ओकरा आँखि लागि गेलै । जखन ''बाउ हौ, बाउ !'' क आवाज ओ सुनलक तँ धड़फराक' उठल । मोन भेलै, गीड़ि जाइ उठब'बलाकेँ, मुदा आगाँमे सुगियाकेँ देखि मोन मारि लैत अछि । सुगिया बाम हाथसँ पकड़ल रोटी खट्टरकेँ पकड़ा दहिन हाथक लोटा आगाँमे राखि दैत छैक । आ चुपचाप एक कातमे बैसि रहैत अछि । खट्टर नमहर-नमहर रोटीक खण्ड तोड़ि नोनक संग अविचलित गिड़ने जाइत अछि ।

■

मनःस्थितिक दंश

निसबद्ध रातिमे क्यो फटक हड़बड़बै छैक । बहुरियाक कचाह निन्न टुटि जाइत छैक । एखने कनेक काल पूर्व तँ ओ सूति सकल छल । अयना छौ माससँ ऊपर भेल होयतैक, मुदा घरबला एखन धरि नीक जकाँ दू-चारियो राति सूति नै सकल छै । कहांदन सिकरेटीमे कमाइत छैक । से डिपटी के कोनो ठेकान नै । रातियो-बिराति होइत छैक । आइ-काल्हि त' सुकुर छैक- शनिक' घरेपर रहैत देखल करैत आयल छै । से काल्हि ओ जरूरे रहतैक । तखन कल्हुका राति... ! एहने सन कल्पनाक संग ओ गुनधुन करैत रहलीह । आ किछुए काल पूर्व सूतल छलीह कि फटक खड़खड़ाइत छैक ।

ओ चौंकि उठैत अछि । की आइ सिकरेटी नै गेलै ? बहुरिया बिचारैछ- नै, मायकेँ त' कैक बेर कहने रहैक जे 'खायक बान्हि दे, जनकपुरमे हम खायब । तखन जरूर गेल होतै ।

बहुरियाक सौंसे देह घमा जाइत छैक । कातिक-अगहन जड़ाओन मासमे बहुरिया जेठ-बैसाखक अनुभव करैत अछि । ओकरा किछु नै फुराइत छै- ''ई के हय ?''

'दुत्, ओहे होतै ।' बहुरियाकेँ जेना मोन पड़ैत छैक । 'आइ सुक्कर हइ किने । आ सुक्कर के सिकरेटी अदहे होइत छै । आ कैकटा संगी-साथी रहै हइ आब'बला, से चलि आयल होतै ।' -बहुरियाक सौंसे देह गुदगुदा जाइत छैक ।

मुदा, पुनः बहुरियाक मोन गुनधुन कर' लगैत छैक । 'एतेक रातिक' त' कोनो सुक्कर के नहि आयल हइ- आइए कैला अयतै ! दिन कराक' लयला छौ माससँ ऊपर भेल होतै, मुदा घरबला संग निचैनसँ सुतबाक इच्छा मोनेमे रहि गेल छै । देखैत अछि एम्हर, तँ टरि जाइत अछि ओम्हर । दुत्, एहन कमजोर लोक एतेक रातिक' नहि आबि सकैत हइ । तखनी ?'

बहुरिया सर्द भ' जाइत छैक । फटक आब खूजि चुकल छैक । अन्हरिया रातिमे

एकटा आकृति मात्र मुहारपर देखैत अछि । फटक पुन: बन्द भ' जाइत छैक । आकृति चिन्हब ओकरा हेतु असंभव छै । घरोबला तँ एहिना चोराक' अबैत छैक । अपने फटक खोलैत छैक आ चुप्पे राति बिता अन्हरोखे घुरि जाइत छैक । माय-बापक लाजे ओ सोझसँ सुतियो ने सकैत अछि ।

घरो पूरा अन्हार छैक । डिबियो नहि जानि कखन मिझा गेलै । ओ त' बारिक' सूतल छल । तेले घटि गेल होतै । बहुरियाकेँ ई अन्हार आर डेरा दैत छै । लया-लया आयलि हइ । घरोबलाकेँ ठीकसँ ठेकानि नै सकल छै । फेर की करओ ?

किछु नै फुराइ छै ओकरा । आकृति ओकरा हथौरैत-हथौरैत लगमे आबि जाइत छै । बहुरियाक छाती भाथी जकाँ हौंकाय लगैत छै । आकृतिकेँ ओ नीक जकाँ ठेकानैत अछि– ई निश्चय ओकर घरबला नहि छै । ओकर त' एहिसँ पातर काया छै । ई त' कनेक खरगर आ मोटो बुझाइत अछि ।

कहुँ ! नै-नै, ई कोना भ' सकै छै । ऊ नै हइ । छी: । की-की सोचि लेलक ऊ । मुदा, जे होय, आन मरदाबा तँ जरूरे हइ । बाप रे, आइ ओकर धरम भरस्ट हो रहल छै, आ ऊ चुप हइ ! नै, हल्ला कर' पड़तै । सोर नहि कयने आइ सत्त चल जायत । बहुरियाक छाती भाथी जकाँ उपर-नीचाँ करैत छैक ।

ओकरा मोन करै छै जे ओ आब चिचिया उठय– 'दौग' हो, घरमे कोइ पैसल हय !' मुदा आवाज जेना गरदनिमे फँसिक' रहि जाइत छैक ।

ओहि आकृतिक हाथ ओकरा देहसँ भीड़ैत छैक । ओ सिहरि जाइत अछि । ओ चिचिया नै सकल त' अनठाक सूति रहब नीक बुझैत अछि । जे होतै, देखल जयतै ।

पटियापर आकृति बैसि जाइत छैक । ओकर दहिन हाथ देहकेँ हिलबैत छैक– कतहु जागल त' नहि अछि ! मुदा बहुरिया आर अन्ठा दैत अछि– मरल मुर्दा जकाँ ।

बाम हाथ ओकरा गालपर ससरैत छैक आ दहिन हाथ पयर दिसि बढ़ैत छैक ।

बहुरियाक अन्तर फेर एकबेर हाहाकारक' उठैत छैक– नै-नै, ई अधरम छै । परपुरुख संगे सुतब बड़का पाप छै । माय एकबेर बाजल रहै । ओ नै कर' दैतै किछु । आब चिकरही पड़तैक– के हय ? भाग एत'सँ । मुदा, पुन: काँट जेना गरदनिएमे अटकि जाइत छै ।

आकृति ओकर सम्पूर्ण शरीरकेँ हँसौथैत छैक । आ, ओ देह उघारि दैत छैक । ओकर भय आब सनसनाहटिमे बदलि जाइत छैक । साँसे देहमे एकटा सुरसुरी घुरघुराय लागल छैक ।

बेनग्न शरीरपर आकृतिक हाथकेँ चलब ओकरा बड़ नीक लाग' लगैत छैक । दू-तीनबेर घरोबला ओकरा संगे सुतल छैक । अबै छै, बगलमे सूति रहैत छै । ओ मलियामे राखल तेल ल'क' सौंदे देह ससारि देल करैत छै आ तखन ओ गाय-महीस जकाँ... !

अइ मरदाबाक हथोरिया बड़ नीक लगैत छै । ओकरा इच्छा होइत छै, ई मरदाबा एहिना करैत रहितै त' नीक ! मुदा से मुँहझौसा बेसीकाल नै करै छै । ओ फानिक' देहपर चढ़ि जाइत छै । ओ शांत पड़ल रहैत अछि ! मुँहसँ एकोटा शब्द बहरायब ओकरा जगले हेबाक संकेत हेतैक, ते ओ आर अनठाक' पड़ल रहैत अछि, निढाल भ' जाइत अछि ।

''हे बहुरिया ! बहुरिया !'' –बाहरसँ क्यो शोर पाड़ैत छैक । बहुरिया घबराक' उठैत अछि । बात ठेकनबैत अछि । ई सासुक आबाज छैक । नजरि फटकपर चलि जाइत छैक । फटकक दोग द'क' किरिनक इजोत घरमे पैसि रहल छै । मने दिन उठि गेल छैक ।

'दिनमे कहूँ...! –एकटा अज्ञात भयसँ बहुरियाक देह एकबेर आर सिहरि गेलै । तथापि ओ उठैत अछि– इस्स... ! देह टुटल जाइत छै ।

ओ फाटक खोलैत अछि । –''एह, एखन धरि सुतले रहतै । घर-दुआर बहार' के बेर टरल जाइत छैक । ओहो छौंड़ा आब अबिते होतै । जलखइ बनाब'के छै । जा, जल्दी कर !'' –सासुक अढ़ाओन ओ मोन भरि सुनि लैत अछि । आ बाड़ीमे जाइत अछि तथा बाढ़नि ल' आँगन बहार' लगैत अछि ।

बहारैत काल ओ आँगनमे सभक मुँह तकबाक चेष्टा करैत अछि । केओ किछु बुझि त' ने सकल अछि ! मनचोर जी उड़ौने छैक । छोटका देओर, ननदि, माइ-दाइ सभ अपनेमे बेहाल देखि पड़ैत छैक । ओ कनेक आश्वस्त होइत अछि । बुझाइत छै केओ ने बुझि सकल अछि ।

ता ओकर नजरि ससुरपर पड़ैत छैक । साँसे देह जेना सिहरि जाइ छै । रतुका मनसाक चित्र दिमागमे नाचि जाइ छै– नम्हरका काया, भरल देह । कहुँ ! नै नै, फेर ओ की सोच' चाहैत अछि । एना कतहु होइक ! टोल के कोनो मुँहझौंसा छल होतै । ओ आब ककरो दिस तकबाक साहस नै क' पबैत अछि । हाथमे बाढ़नि पकड़ने हबर-हबर आँगनमे चलब' लगैत छैक ।

थरिया-बासन छोटकी ननदि माँजि अनने छैक । ओ आँच पजारैत अछि । गहुँमक चिक्कसकेँ सानि रोटी बनबैत अछि । बाहर बाबूक आबाज ओ सुनैत अछि– जो जलखइ क' ले ग', तैयार छो !

ओकर करेज जेना धकसँ रहि जाइत छैक । मने ओ आबि गेलै ! केनाक' ओ

ओकरा आगाँ जायत ? कहुँ ऊ बूझि ने लै ! नै, हम बड़ अधरम कयलिऐ, एना नै करक चाही । साँचे हम... !

आंगनमे घरबलाकेँ आयल देखि ओ उठैत अछि । आ पूब मुँहक घरक ओसारापर पीढ़ी राखि दैत छैक । घैलसँ पानि ढारि लोटा हाथमे पकड़ा दैत छैक आ छीपामे नून, मिरचाइ, तेल, पिआउज राखि रोटी आँगनमे ध' दैत छैक । थारी आगाँमे राखि कातमे ठाढ़ भ' अपन थाकल घरबलाकेँ निहार' लगैत अछि । सिकरेटीमे कमाइत-कमाइत हड्डी निकलि गेल छैक । बच्चेसँ घर-दुआरक चिन्तामे बेहाल रहल करैत अछि । बाप एहन नोकरी करै छै जे रने-बने बौआयल करैत छै । आ ई... जुआनेमे बूढ़ भेल जाइत छै । बुझाइ छै जेना देहमे दमे ने होइ । आ ओकरा राति मोन पड़ैत छै । ओ पुन: चौंकि जाइत अछि । ओ कहुँ... ! नै, नै बुझतै । एकबेर बहिन कहने रहै– जनानी के ई सभ भेलो पर नै बुझाइ छै ! ओ आस्वस्त होइत घरबलाक खायल थारी उठा बाड़ीमे माँज' चल जाइत अछि ।

दिन भरि काज करैत बहुरियाक मोन थिर नहि भ' पबैत छैक । कहूँ बुझि गेलै त' की कहतै लोक !

ससुर बाहर कमाइत छैक । साले-बरीसे अबैत छैक । कतेक इच्छासँ अपन बेटा के बिआह कयने रहै । बाजल रहै– कुलके राख'बाली पुतहु अछि हमर । से जँ ई बुझि गेलै तँ ओ की सोचत ? केहन बिगड़ल आदमी के ल' अनली । नै, हम विष खाक' मरि जयबै लेकिन बुझ' नै देबै । बहुरिया कोन्टामे ठाढ़ि भेल इएह सभ सोचल करैत अछि आ सोचि-सोचि अहुरिया काटल करैत अछि ।

आइ शनि हइ, रहबे करतै । कहूँ सुत'काल बुझि ने लै ! बापरे ! फेर ओकर देह सिहरि उठैत छैक ।

''फेर जेबही आइये कइला ?'' माइक प्रश्नक उत्तरमे ओकर आबाज ओ सुनैत अछि– ''ओ०टी० छइ ।''

ओ नै बुझैत अछि जे ओ०टी० माने की होइत छैक । मुदा, ओ जयतैक से निश्चय भ' जाइत छैक । ओ कनेक निश्चिंत भ' जाइत अछि– आइ राति त' टरल ।

आइ सबेरे खा-पीबिक' सूति रह' चाहैत अछि । देह टूटि रहल छैक । से दीओ जानिक' नहि बारैत अछि । टूटल देहक पीड़ासँ निन्न लगले आबि जाइत छैक । रातुक कोनो पहरमे ओ फेर ककरो देहक भार महसूस करैत अछि । मुदा, आइ ओकरा आँखियो खोलबाक मोन नै होइत छैक । एकटा नव ढंगक आनन्दक संग दर्दकेँ पीबि निश्चेष्ट पड़ल रहैत अछि ।

क्रम एहने सन चल' लगलैक । प्रत्येक राति पतिक नहियो रहलापर पतिक संसर्गक सुख भोग' लागल । कृशकाय कायाक आगाँ भरल देहक सुखानुभूति ओकरा लेल चरमसुखक आधार भ' गेलैक ।

ओ आइ धरि ई नहि बूझि सकल अछि जे के ओकरा संगे ओना करैत आबि रहलैक अछि । कहियोकाल उत्सुकतासँ आकृतिकेँ देखबाक मोन करैक जे के अछि आखिर ! मुदा, चोट्टे सम्हरि जाय । जँ शंका ठीके भेलैक तँ ? तखन कोनाक' की करत । आइ धरि पबैत आयल स्वर्गानुभूति आत्मग्लानिमे बदलि जयतैक । ओकर तिरपित मोन आर बौआ जयतैक । नै, ओ किएक देखत ककरो मुँह ! आ तेँ बहुरिया डिबिया मिझा अन्हार घरमे जानिक' आँखि मूनि पड़ल रहैत अछि ।

एकदिन भोरेसँ सासुक कननाइ ओ सुनैत अछि । फटक खोलि ओ आँगन बहारैत काल सासुक कानबपर अचरजमे डूबल जाइत अछि । जुआन बेटा-पुतहुकेँ आगाँ एना कानब ! की अर्थ भ' सकैछ ? ओकरा ने चुप करबाक साहस होइत छैक आ ने पुछबाक । ओ आंगन बहार' लगैत अछि । सासुबला घरसँ पितायल ससुरकेँ निकलैत ओ देखने रहैक, से सासुकेँ ससुरे मारने हेतैक, ई बात बुझबामे भाङठ नहि रहलैक । मुदा, किए मारलकै से कोना पुछौ ! ककरासँ पुछौ !

दिन भरि सबकेँ सभसँ तनातनी रहैक । खयनाइ-पिनाइ बन्न । ओ कय बेर सासु के खाय लेल कह' गेल रहै, मुदा ओ एकरा दिस गुम्हरिक' ताकि हाथ झटकि देने रहैक । तखनसँ ओकरा जाय के साहस नै भेल रहै । दिनभरि ओहो भुखले रहल । घरबला ओहिना सिकरेटी चल गेलै– खालिए । बात बुझ'मे एखन तक नहि आयल रहै ।

साँझखन बाहर-भीतरसँ अबैतकाल सरंचिया काकीक टाट लग अबैत-अबैत ओ ठमकि जाइत अछि । अन्हार छै– से क्यो देखि नहि पबैत छैक । भीतर आंगनमे दू-तीनटा मौगी ओकरे ससुरक नाम ध'क' किछु बाजि रहल छलै । ओ कान टाटसँ अड़ा दैत छैक ।

''किसनमा हाकिम भेल ग' त' गाम घिनायत ! छी-छी !'' –सरंचिया काकीक स्वर बहुरिया स्पष्ट चिन्हैत छैक ।

''से की भेलै काकी ?'' –कोनो जुआन मौगी टोकैत छैक ।

''देखलही नहि, चिकनाबाली के देह फोड़ने छै ! की, ओ कोनो साँइ-बहु के झगड़ा हइ ?'' –सरंचिया बुढ़िआक रहस्यमय स्वर अभरै छै ।

''तखन ?'' –जुआन स्वरक उत्सुकता स्पष्ट अछि ।

बहुरिया कनेक आर टाट लग ससरि जाइत अछि । ओकरे सौंसे देह जेना घुरघुरा रहल छैक– नहि जानि की बजतैक !

''हमरा ते' चिकनाबाली कय दिनस' कहैत अछि जे मरदाबा भङठि गेल बुझाइ छै। इज्जत-प्रतिष्ठा के कोनो खेयाल नहि हइ !' –सरंचियाक स्वर।

''से की माने ?'' –कोनो दोसर आतुर स्वर।

''रातिमे उठिक' ओ कय दिनसँ कतहु चल जाइत छैक। एकबेर पुछबो कयलकै से चुप्पे छल। मुदा, आइ त' अपन दीठसँ देखि लेलकै !'' –रहस्यसँ परदा उठबैत अछि सरंचिया।

''की देखलकै काकी ?'' –उत्सुकता आ रोमांचसँ भरल स्वर बहुरियाक कानसँ टकराइत छै।

''आइ राति बिछाओनपर जखन नै देखलकै किसुनमा के त' चिकनाबाली केबाड़ अलगा आँगनमे आब' चाहलक, कि ओ किसुनमा के चोर जकाँ बहुरियाक घरसँ बहराइत देखि लेलकै। से नै रहल गेलै– पूछि देलकै। ताहीपर देह धुनि देलकै बेचारी के ! हँ, एहन चंठ लोक नै देखने छल। जुग उनटि गेल। बेटाकेँ कमाइत-कमाइत हड्डी खिआ गेलै आ ओकर बहु ल'क' बाप मौज करै छै ! हे भगवान !'' –सरंचियाक स्वरक संग आन मौगी सभक आश्चर्यमिश्रित चीत्कार बहुरिया सुनैत अछि।

से सुनि टाट लागल बहुरिया एकबेर त' ओतहि खस' चाहैत अछि। आकि टाटकेँ आर मजबूतीसँ पकड़ि लैत अछि।

मने आइ धरि ओकरा घरमे आब'बला ओकर ससुरे छलै ! ओकर अनुमान गलत नै रहै। आ बहुरियाक आगाँ रातुक चित्र नाचि उठै छै।

आकृति अपन मुँह बहुरियाक मुँहपर राखि देने रहै। अन्ठाक' पड़लि बहुरियाकेँ भभाक' महकल रहैक दारू। दाढ़ीक खुट्टी सौंसे मुँहमे सुइया जकाँ गड़ल रहैक आ से सहाजक' सुतलि रहि गेल रहय। मुदा, दिमागमे एकटा बात फेर मड़राय लागल रहै– दिनमे ओ अपन ससुरकेँ माँछक संग दारू पिबैत देखने रहैक आ देखने रहैक खुटिआयल दाढ़ी सेहो। मुदा, फेर वएह बात– नै, ऊ नै भ' सकै छै। आ सूति रहल रहय। से आइ बात खुजिए गेलै– वएह रहय आइधरि।

दिनक क्रम एहिना बितैत गेलै। एहि बीच ओकर ससुर कयबेर काजपर गेलैक, कय बेर अयलैक। आ जते बेर अबैक, मौका निकालि ओकर कोठलीमे सूतल करैक। ओहो आँखि मुनि अभ्यस्त मनःस्थितिकेँ परतारल करय।

आइ डेढ़ वर्ष सासुर बसलाक बाद बहुरिया अपन कोरामे चिहुँकैत नेनाक अनुहार बापसँ वा बाबासँ मिलयबाक जरूरति नै अनुभव करैत अछि। नेनाकेँ भरि पाँज समेटि छातीसँ सटा, मनःस्थितिमे उपजैत पीड़ाकेँ मेटयबाक प्रयत्न करैत पड़लि रहैत अछि।

■

पाँक

ट्रींग-ट्रींग, ट्रींग-ट्रींग, ट्रींग-ट्रींग... !

हम टेलिफोनक चोंगा दहिन हाथसँ पकड़ि मुँहसँ सटा लैत छी– 'हैलो !'

'चन्दरजी छथि ?' –रिसीभरमे प्रश्न अभरैत अछि।

'हँ, हम बाजि रहल छी। अहाँ कत'सँ बजै छी ?' –हम पुछैत छियनि।

'जी, हम होटल एभरेस्टसँ बाजि रहल छी। रूम नं० 302मे एकटा यात्री टिकल छथि। ओ अपनेसँ बात कर' चाहै छथि'–रिसीभर बातकेँ फरिछबैत अछि।

'होटल एभरेस्टमे यात्री !' –हम सोचैत छी आ किछु स्मरणक' सिहरि जाइत छी। ई यात्री कहीं... !'

'ठीक छै', हम 'होल्ड ऑन' कयने छी, बजा दिऔन।' –हम चोगा पकड़ने कहैत छियनि।

ओ जयबेर अबैए, एही होटलमे टिकैत अछि। पछिलो बेर जखनि ओ काठमाण्डूसँ आयलि छलीह तँ एतहि टिकल छलीह। आ से रंगताल भेलैक जे... । हमर देह ठीकेँ एखनो सिहरि जाइत अछि... ।

...साँझ छओ बजे हमरा घरमे फोन आयल रहय– 'होटल एभरेस्टमे आउ। हम प्रतीक्षामे छी।' हम घरसँ धड़फड़ायल पहुँचल रही ओत्त'। पहिचान कोनो तेहन नमहर नहि भेल रहय। ओकरा प्रति एकटा अज्ञात आकर्षण मता देने रहय। काठमाण्डूमे बसनिहारि अत्याधुनिक कोनो मौगीक सम्पर्क... । काउण्टरपर जाइते मैनेजर सिंहजीक मुस्की मोनकेँ आर गद्-गद्क' देने रहय। मने ओहो बुझैत रहैक जे हम भाग्यशाली लोक रही... । आ सिंहजी स्लीप द' नाम टीपि पठा देने रहथि। ऊपर।

हम बैसल अनेरे की सँ की गुनधुन कयने जाइत रही। आ अपनाकेँ ओकरासँ

बात करबाले' फिट बनबैत रही । हम गाम-देहातक लोक आ ओ आधुनिक संस्कृतिमे पललि कन्या... । सुनने रहिऐ काठमाण्डूमे कहाँदन एकरा लेल लोक सब मरैत अछि । एकबेर जकरा दिस ताकि देतैक ओ पछोड़ धयने बिना नहि रहय । छोट खुट भरल देह, लल्होन गाल (जे बेसीकाल रूज लगा बनबैत छलीह), गोल-गोल कारी आँखि । आ परिधान एक रहय तखन ने । दिनमे कयबेर बदलैत अछि । जाहिमे सभसँ प्रिय पेंट आ शर्ट । टाइटसँ, जाहिसँ छातीक उभार स्पष्ट देखि पड़ैक । नितम्ब आ छाती, दुइएटा त' ओकर विशेषता बुझाय हमरा... ।

पटर-पटर ध्वनि सूनि पड़लरहय । निश्चय सैण्डिलक आवाज रहैक । हरियर रंगक साड़ीमे लेपटायलि रेखा देखि पड़ल रहय । हपसिक' लग आयल रहय 'हेलो चन्दर ! कयबेर डेरामे टेलिफोन करबयलहुँ मुदा लापता रहैत छी । बुझाइए कतहु चक्कर चलबैत रहैत छी की ?' ओ ठठाक' हँसि पड़ल रहय । हम की उत्तर दितिऐक, ओकरा ! परबाहि नहि रहैक । ओ हमर बाँहि पकड़ने ऊपर लेने चलि गेल रहय । हम जाइत-जाइत सिंहजीक रहस्यमय मुस्किक पाछाँ बेहाल भेल जाइत रही । कहूँ इहो हमरा बारेमे... ।

रूममे हम प्रवेश कयने रही । डबल बेडक रूम । रेखा रहैक एकसरे आ बेड दू ? किएक पुछितियैक । हम पुबारी कातक बेडपर बैसि गेल रही चुपचाप । किछु बाजू तँ की ?

रेखे बातकेँ बढ़ौने रहय– "हम अहाँ ला काठमाण्डूसँ सनेस लयने छी ।

लेब ?' हम छक्क पड़ल जाइत रही । ई की लाओत हमरा ले' । सभ दिन अनकर लेनिहार हमरा लेल की लओलक अछि ।

"की अछि ?" –हम पुछने रहियनि ।

ओ अपन खाटसँ दुनू पयर नीचां खसा तरमे निहुरल रहय । आ एकटा हाथ बढ़ा निचाँसँ गिलास आ वीयरक आधा खाली कयल बोतल बहार कयने रहय । आ ओकरा किछु मोन पड़ल रहै, हमरा दिस ताकि हँसल रहय– "एह, अहूँ बुद्धुए रहि गेलहुँ । अहाँ कोनो लड़कीक कोठलीमे छी ! गेट बन्दक' देबाक चाही अहाँकेँ !'

ठीके, गेट तँ खुजले रहै । ओना हम एकरा बन्न करब जरूरियो नहि बुझने रहिऐ । भेंटक'क' चल जायब । ई बन्न-तन्न के करओ । अनेरे लोक किछु सोचि लेत... । मुदा, आब तँ बन्न करही पड़त । हम उठल रही । आ सिटकिनी लगा देने रहिऐक । फेर आबिक' पलंगपर बैसि गेल रही । आ उत्सुकतासँ रेखा दिस देख' लागल रही ।

रेखा गिलासमे वीयर ढारि गिलास हमरा दिस बढ़बैत बाजलि– 'हे लीअ' ! इएह सनेस अछि अहाँ लेल । काठमाण्डूसँ खासक' अहीं लय अनने छी । संगे पीअब से विचारि... ।'

'ई हमर सनेस ?' –हम मनाक' देने रहिऐक– 'नहि, हम नहि पीबैत छी ।'

रेखा हमरा दिस आश्चर्यसँ ताक' लागल रहय– 'दुत्, मजाक नहि । अहाँ नहि पीबैत होयब से हमरा बिसबास नइं अछि । पिबू ने... !'

'ठीके रेखा, हम नहि पिबैत छी । कहिओ ने आइधरि मुँह लगओलहुँ अछि । पीबू अहीं !' –हम दृढ़ताक संग मनाक' देने रहिऐक । आइधरि जकरा देखैत देरी हमर सम्पूर्ण व्यक्तित्व पंगु भ' जाइत अछि से जहर हमरा देखबैत अछि रेखा... । कहांदन 'सनेस' छै ओकर । थूः । मोन घृणासँ भरि जाइत अछि । रेखापर नहि, उच्चताक आग्रहसँ जीवैत लोकपर– जकरा लेल इएह सभ किछु छै ।

रेखा अकबका गेल रहय । ओकरा विश्वासे ने भेल रहै जे हम नहि पीबि सकैत छी । हम स्पष्ट देखने रहिऐक, ओकर मुँह बिधुआ गेल रहै । तखन बड़ दुख भेल रहय... आइ जँ हम पीबैत रहितहुँ !

ओ गिलासकेँ दहिन हाथसँ पकड़ि गटागट वीयर पीबि गेल रहय । मुँह कनेक कालक लेल कड़ुआयल रहै । फेर प्रकृतस्थ भ' 'आधीरात' पढ़' लागलि रहय ।

हम यंत्रवत् बैसल रही । रीतिक नओसँ उपर भेल चल जाइत रहैक । ओकर मूड देखि ओहिठामसँ चल आयबे ठीक बुझाइत रहय । बरू भिनसरे बात क' लेब । से कहने रहिऐक– 'रेखा, एखन आब हम जाइत छी ! बरु भोरे आयब... ।' –'नहि, एखन बैसू । कनेक काल ! भोजन कयलहुँ ?' –ओ आदेशक संग प्रश्न कयने रहय ।

हम तँ मारबाड़ी बासामे खाना खा लेने रही । नोकर नहि रहने सबेरे होटलमे भ' गेल रहै । से कहने रहिऐक– 'हँ, हम तँ खयलहुँ !'

'तखन चिन्ता कथीक । एही ठाम सुति रहू । दूटा बेड त छैहे !'

हम सर्द भ' गेल रही । घाम छुटि गेल रहय ओहि राति हमरा । हम, आ एहि कोठरीमे सुतू ! जनकपुरक लोक काल्हिसँ सड़कपर चल' नहि देत ।

'नहि, आब रातियो भ' गेलैक । हमरा आन ठाम निन्नो ने होइत अछि । तेँ जायबे उचित ।' हम सफाइ देने रहिऐक ।

'हँ-हँ, हम बुझैत छी । अहाँ बदनामीक डरसँ एत्त' सूत' नहि चाहैत छी । खैर, नहि सूतब । कनेक काल तँ थम्हू !' ओ दुखी होइत बाजलि रहय ।

हम कनेक देर आर रुकि जायब उचित बुझने रही । पुनः यंत्रवत् बैसि गेल रही । दोसर खाटपर सुतलि रेखा बेहोश होयबाक स्थितिमे आबि गेल रहय । मने दारू लागि गेल रहै । ओकर अस्त-व्यस्त हालति हमरा तँ आर डेरा देने रहय । कहीं...!

नहि, आब हमरा रहब ठीक नहि । हम ओकरा लगमे जाक' जयबाक अनुमति लेब' चाहने रही । ओकरासँ गप करबाक आ बात करबाक सभ उत्कंठा रातिक करिछाओन सिआहमे डुबि गेल रहय । रहि गेल रहय मात्र भय– सामाजिक मर्यादाक । तेँ पड़ायब जरूरी... ।

'रेखा ! हे, दस बाजि गेलै । आब हमरा जायब उचित !' –आ ओ हमर बातकेँ अनसुनाक' हाथ पकड़ि बैसा लेने रहय । आब हमरा बाध्य भ' ओकरे बिछाओन पर बैस' पड़ल रहय । छातीक धड़कन एक्सप्रेस भ' गेल रहय । आ रहि-रहिक' नजरि दरबाजापर चल जाय । कहूँ केओ केबार नहि खटखटबै– 'की छी ?' हम इहो जनैत रही, एना होटलमे होइत नै छै, मुदा मोन मानय नहि... । घमा आयल देहकेँ पंखाक हवा नहि सुखा सकैत रहय । हमर जान अवग्रहमे पड़ि गेल रहय । की करू ? रेखा अस्त-व्यस्त रहय । हम देखने रहिऐक जे ओ जानि-बूझिक' अथवा दारूक प्रभावसँ कपड़ाक खिआल छोड़ि देने रहय । मैक्सीक उपर द'क' छातीक चमकब हम अनुभव तँ कयने रही, मुदा भसिअयबाक स्थितिकेँ धरि रोकने रही । मनुक्खसँ पाथर भ' गेल रही ।

दससँ बहुत उपर भ' गेल होयतैक । बाट आब जाम भ' गेलै होयत । आ डेरा सुदूर उत्तर जयबाक रहय । हम धड़फड़ाक' उठल रही । हमर मोन कहने रहय, आँखि मुनने रेखाकेँ ओहिना पड़ल छोड़ि दी आ उठिक' भागि जाइ । ने उठायब, आने... !

मुदा, हम तखनो बड़ असमंजसमे पड़ल रही । जाहि रेखासँ गप करबाले', एकर सान्निध्य पयवाले' पाइ आ प्रतिष्ठा सभ किछु गमबयबला लोक तैयार बैसल रहैत अछि, आ जे देखिक', तड़पाक' आनन्दित होइत रहैत अछि, उएह रेखा एहन अवस्थामे हमरा लग ! एकदम हालक जान पहिचान... ! तखन... ? की ई हमरा जाँचि तँ ने रहलि अछि ? देखी, इहो तँ मरदे अछि, की करैए ?

नहि, आब हम किन्हु नहि रहब । हम उठल रही । दरबाजापर जाइत की फुरायल रहय, घूरिक' फेर पलंग लग ठाढ़ भ' गेल रही । भयंकर बिड़रो उठल रहय । किदन-कहाँदन सोचने रही । उटपटांग सभ... ।

'हम जाइत छी !' –हम रेखाकेँ सुगबुगाइतो ने देखने रही । लात लगाक' दरबाजा खोलि बाहर आबि गेल रही । भक द' जेना साँस पलटल रहय । बाहर ठंढा हवाक झोंक मोनकेँ परतारने रहय । आ हम सीढ़ी दिस डेग बढ़ा देने रहिऐक । सीढ़ीपर अबैत-अबैत हम रेखाक दरबाजा भीतरसँ बन्न होइत स्पष्ट सुनने रही । मने रेखा जागल छल– होशमे छल । तखन ई ढाढ़स... ?

उतरैत काल काउण्टरक आगु-पाछु हम कय गोटेकेँ देखने रहिऐक । स्थानीय आफिसक हाकिम सभकेँ । ई सभ मरल गायपर उतरैबला गिद्धक हेंज बुझायल रहय । हमर डेग नमहर भ' गेल रहय । डेरापर अयलाक बादो हमर शंका कम नहि भेल रहय । नहि जानि रातिमे की सभ भेल होयतैक !

भोरे जखन टीसनपर गेल रही हम तँ सेकण्ड क्लासक गेटपर ललका फ'ड़क कोट पहिरने रेखा हमरे तकैत बुझायल । देखिते चिकड़ि उठल रहय– 'ओह चन्दर ! कत' छलहुँ ? जल्दी आउ !'

हम अनुमान कयने रही जे ई बेसी उताहुल अछि । किछु कह' चाहैत अछि । मुदा, एत' भीड़ छै तेँ कहि नाह पाबि रहल अछि । एकरा एकान्त चाही । हम भावनाकेँ बुझैत कहने रहिऐक– फस्ट क्लासमे चल । ओतहि बैसा दैत छियैक ।

'हँ, एकदम ठीक । ओत्तहि ठीक रहत ।' रेखा अपन छोटका सूटकेश हाथमे लेने सेकेण्ड क्लाससँ उतरि गेल रहय । ओकर व्यग्रता अनेरे प्लेटफार्मपर लोकक नजरिमे चढ़ल जा रहल छलै । ओहुना ओ जतहि जाइत अछि, मधुमाछी जकाँ लोक काते-कात भनभनाय लगैत छैक ।

डिब्बामे स्थिरसँ बैसल रहय । मोनकेँ थीरक' बाजल रहय रेखा– 'राति अहाँके अयलाक बाद तँ बड़ गजब भ' गेलै !'

'अँय, की भेलै ?' –हमर शंका ठीक बैसल रहय भरिसक ।

'अहाँक गेलाक एक घंटाक बाद दरबाजा पीटल गेल रहय । तखन हम पुछने रहिऐ जे के अछि ? मालिक रहय होटलक । खोलब तँ जरूरिए । ओ आबि किछु एम्हर-ओम्हरक बात पुछि चल गेल रहय । हम बन्नक' देने रहिऐ केबाड़ आ पलंगपर सूति रहबाक प्रयास कर' लागलि रही !'

'तखन ?' उत्सुकता बढ़ले जाइत छल ।

फेर उएह मालिक अबैत अछि । मुदा, एहिबेर ओकरा संगे टाइ पहिरने एकटा अपटूडेट छौंड़ा सेहो रहैत अछि । मालिकक व्यवहारसँ बुझायल, ओ कोनो हाकिम रहल होयत । आ तखन जे ओ हाकिम सन छौंड़ा बाजल से की कहू !' –रेखाक मुँह जहर भ' गेलै । कनेक काल गुम्म भ' अपने आगाँ बाजलि ओ– 'ओ आदमी हमरा संगे राति बितब' चाहैत रहय !'

'अँय, राति बितायब' !' –हम अचंभित भ' गेल रही । हम नीचा उतरैत काल ओहि 'हाकिम'केँ देखने रहिऐ आ खूब नीक जकाँ चिन्हैत रहिऐ । मुदा, ओ एहन भ' सकैत अछि– नहि बुझने रहिऐ ।'

'हँ ! आ से खूब जोर द' क' । हम कतबो मना केलिऐ, ओ मानिते ने रहय । कहय, चन्दर जहन आबि सकैत अछि त' हम किए नहि !'

'सार, पाजी !' –हमरा मुँहसँ अनायास गारि निकलि जाइत अछि ।

'हम कहने रहिये चन्दरक संग हमर सम्बन्ध किछु दोसर अछि । अपन लोकक सम्बन्धसँ वीरानक सम्बन्धकेँ तुलना नहि कयल जा सकैत अछि । आ ई तँ हमर खुशी अछि ने जे ककरा संगे हम रही– ककरा संगे नहि, ताहिसँ तोरा की ? नीक चाहैत छी तँ चल जाउ !' –आ खूब डंटने रहिऐ तँ ओतसँ गेल रहय । रेखाक आँखि जेना पनिआ गेल रहैक । नारीक विवशताक एकटा रूप देखने रही हम । नोर तँ ओकर निरीह व्यक्तित्व किंवा सहज आ पवित्रताक प्रमाणपत्र होइछ ने ! कहने रहय ओ जे आब आयब तँ हम होटलमे नहि रहब, अहींक ओहिठाम रहब । से... । आ फेर एकबेर ओकरा प्रतिक सहानुभूति भय आ रोमांचमे बदलि गेल रहय तहिया... । गाड़ी सीटी बजओने रहैक– हम हाथ हिलबैत डिब्बासँ उतरि गेल रही... ।

आ आइ टेलिफोन आयल अछि फेर होटल एभरेस्टसँ । के अछि तकर ठेकान तँ नहि अछि, मुदा होटल एभरेस्ट आ रातिक आठ बजे... ! ककर फोन भ' सकैत अछि। फेर ओ त' कहने रहय, होटलमे नहि टिकब... ! कहीं ओ नहि तँ अछि । अथवा हमरासँ झूठ बाजल रहय... !

आध घंटासँ उपर भ' गेल अछि रिसीभर उठौला । की करैत अछि एखन धरि । ता रिसीभरमे किछु घुरघुराइत अछि । हम कानसँ सटा लैत छी– ''हेलौ; चन्दर जी छथि ? ओ बाथरूममे छथि । अहाँकेँ कहलनि अछि तुरत एतहि अयबा ले' ।'' नारी बोलीक सुमधुर स्वर सुनबाले' पाथल कानमे ई मोटका मैनेजरी बोली गरम तेल ढारि देल सन बुझि पड़ैत अछि । रिसीभर फोनपर पटकि दैत छी । फेर रहस्य बनले रहि गेल । गुन-धुन छुटल नहि ।

हमर रिक्सा होटल एभरेस्टक आगां रुकैत अछि । रिक्साबलाक पाइ फरिछा हम भीतर प्रवेश करैत छी । काउण्टरक ड्यूटी प्राय: बदलि गेल छलैक । ड्यूटीपर सिंहजी छथि । ओ हमरा देखि अनेरे मुस्किया दैत छथि । हम आब पूर्ण आश्वस्त भ' जाइत छी– रेखे अछि । हम इशारा करैत छियनि । ओ मुस्किआइत बजैत छथि– ''अरे अपने लेल ! जायल जाओ, उपरे छथि । रूम नं० 302 ।''

हम सरासर उपर चढ़' लगैत छी । पछिला बेरक घटना बेर-बेर मोनमे अबैत अछि । आइयो राति आठेसँ शुरू छैक । एहूबेर एसकरे अछि । कतौ फेर जँ बबाल उठओलक तँ... ।

रूम नं० 302 । हम दरबाजा खटखटबैत छिऐक ।

'के अछि ?' –भीतरसँ मधुमे बोरल शब्द बहराइत अछि ।

हम नेहाल होइत उत्तर दैत छिऐक– 'हम छी ।'

'ओह, चन्दर ! आउ-आउ । हम कनेक फ्रेस होइत छी ।' –रेखाक आज्ञाक संग हम भीतर प्रदेशक' चुकल छी । रेखा... ! कोठरीमे नहि ! ओह बाथरूममे फोहारा चलैत छैक । मोनसँ नहा रहलीह अछि । बाप रे, कतेक काल एकरा नहायमे लगैत छैक... । ताबत बैसहि पड़त ।

रूममे एकटा छोटकी सूटकेश, हैन्ड ब्याग, बड़का पर्स, उचकी एँड़ीक चट्टी । खुट्टीमे शर्ट आ पेंट टाँगल । हम ओछाओन पर राखल 'सत्यकथा'क प्रेम व हत्या अंक उठा पढ़' लगैत छी ।

बाथरूमक केबाड़ चड़मड़ाइत छैक आ ओहि द'क' द्वितीयाक चान हुलकी दैत छैक । शीघ्रहि एकटा खुशीक सिसकारीक संग कोठलीमे पूर्णिमाक प्रवेश होइछ । ट्यूबलाइट जेना तरेगन भ' गेल हो ।

'कहू, ठीके छी ने !' –रेखा भीजल केसकेँ तौलयासँ रगड़ैत हमरासँ पुछैत अछि । –'हँ, ठीके छी । तोँ कखन अयलेँ ?' –हम ओकरे पुछैत छिऐक ।

'अयलहुँ तँ दिनमे । साढ़े तीन बजे प्लेनसँ । जयनगरबला गाड़ी छुटि गेल तँ अहाँकेँ फोन कयलहुँ, मुदा अहूँ नहि छलहुँ, तँ हारिक' आइ फेर हमरा एतहि रह' पड़ल ।' –रेखाक सफाइ हमरा सन्तुष्ट क' दैत अछि ।

तखने बिजली गुम्म भ' जाइत छैक । अन्हार गुजगुज कोठली आ ओहिमे दूटा विपरीत लिंगी मनुक्ख... । किछु भ' सकैत छैक । मुदा, से होइत छैक किछु नहि । रेखा हमरा धकिअबैत टेबुलक निचला तहपर राखल मोमबत्तीकेँ सलाइसँ लेसैत अछि । एकटा मद्धिम प्रकाश कोठलीमे छिड़िआ जाइत छैक ।

गर्मी त' खूबे छैक ऐहिबेर । देह पसीनासँ ठीके नहा जाइत अछि । बिना खिड़कीक एहि घरमे तँ आर प्राण चल जायत । हमरा हँसी लगैत अछि अपने मोने । आइ रेखा प्राय: एहि कोठलीमे जानिक' रहलीह अछि । बिना खिड़कीक कोठरी । ओइ बेर कहाँ दन खिड़की द'क' केओ पैसैत रहैक तँ चिचिआयल रहय– 'ईऽऽऽ... हे पड़यलै'!'

हम घसकबाक बहाना बनब' चाहैत छी– 'राति अन्हरिया छैक । हमरा जाय पड़त फेर ओतहि । तोँ अयलेँ, हम भोरे भेंटक' लेब । आब... !'

'नहि, भोरे हम गाम जायब । ट्रेनसँ । अहाँसँ भेंट भ' सकैत कि नहि । ठहरू, कनेक लाइन अबैत छैक तँ चल जायब । गर्मी तँ ठीके बड़ छैक ।' रेखा केसमे ककबा फेरैत बाजलि ।

हमरा फेर एकटा भय सतब' लागल । राति भ' गेने परेशानी तँ होयबे करतै, कहीं...!

बड़ीकाल धरि गुमसुम पड़ल रह' पड़ल । किछु फुराइत नहि अछि । रातुक एहि अवस्थामे आबि सभ आकर्षण हमर खत्म भ' जाइत अछि, रेखा लग ।

'हमरा तँ एत्त' मजबूरीमे रह' पड़ल ने ! एकसरि ठहरबामे डर लगैत अछि आब । कोन ठेकान... !' केस झाड़ैत रेखा सहज रूपेँ बजैत अछि ।

हम एहिसँ आगाँक इच्छा बुझबाक स्थितिमे आबि गेल छी । ओ कोनो बेर कहि सकैत अछि– 'डर लगैत अछि । अहूँ सुति रहू ने एत्त' !' से हम पहिने समझा देब' चाहैत छी– 'एह, होटलमे डर कथीक । हम ओकरा आबिक' खूब डंटने रहिऐ । ओ क्षमा-तमा माँगि लेने रहय... । तेँ आब कोनो तरहक डर नहि ।'

रेखा चुप अछि । केस किछु रक्ख भेलैक । ओ हाथसँ केसकेँ पाछांमे घुमाक' जूड़ा जकाँ बान्हि लेलक । हम घड़ी देखैत छी– दस भ' गेलैक, आब चलक चाही । हम उठैत बजैत छी– 'लाइन नहि अओतैक । एहि भरोसे हम राति भरि एत्तहि बैसल रहि जायब... । तोरा तँ एत्तहि रहबाक छौ– हम तँ दूर जायब ने ।'

रेखा फेर चुप भ' जाइत अछि । एकटक नीचाँ देख' लगैत अछि । जेना किछु गुनधुन कर' लागलि हो । हम ठाढ़ छी । ने हमरा बैस' कहैत अछि' ने जाय । जेना भीतर कोनो झंझावात चलि रहल हो । हमरा ओत' प्रत्येक क्षण खतरासँ खाली नहि बुझाइछ । कहीं... !

'नहि, हम एत्त' एकसरि नहि रहब । लाइन नहि छैक । की तँ अहाँ एत्तहि सुतू, नहि तँ हम अहींक घरपर जायब... !' रेखा छातीकेँ मजबूत करैत बाजलि । ओकर बातक दृढ़ताकेँ देखि हम तँ अवाक् भ' गेलहुँ ।

एत्त' तँ हम सूति नहि सकैत छी । आ घरपर कोना ल' जैबैक ! बड़ धर्म-संकटमे पड़ि गेलहुँ । जाहि लोकलज्जा आ बदनामीक डरे होटलमे नहि सूति रहल छी– वएह बदनामी तँ घरोपर गेने भ' सकैछ । हम साफ मनाक' दैत छिऐक– 'नहि, ने हम एत्त' सूतब आने तोँ हमरा ओत्त' जायबेँ । लोक की कहत !'

'ओह, तँ अहाँ अपन बदनामीक डरसँ हमरा एहिठाम एकसरि गिद्धक हेंजमे छोड़ि जाय चाहैत छी ? बेर-बेर हम कतेक प्रतिकार करबैक ! अहूँक इएह इच्छा अछि तँ.. . जाउ । हम नहि, रोकब'–सिसकैत रेखा बजैत अछि ।

'हम बड़ अचंभामे पड़ल छी । जाहि खतराक डरेँ सानिध्यसँ बच' चाहैत छी– तकरे बेर-बेर सामना अजीब अनुभूति दैत अछि । रेखाकेँ खूब नीक जकाँ बूझल छैक– हमरा घरमे सुत' बला एक्केटा रूम अछि । ओत' गेने एकरो ओहिमे सुत' पड़तैक । मुदा, जिद्द कयने अछि । नहि ल' गेने आब दोसरे बदनामी होयत । रेखाक बाप ओकरासँ परिचय करबैतकाल हमरा कहने रहय– 'ई हमर बेटी अछि । काठमाण्डूमे रहैत अछि । जहिया कयियो ओत'सँ आब' वा जाय बेरमे जनकपुरमे रहैक तँ अपना जकाँ देखबैक । अहींक आसपर... !' हमरा दिस आशा-भावसँ देखने रहय रेखा । तकरा बाद कयबेर अयलैक जनकपुर । मौका-कुमौका आर्थिक सहयोग धरि हमक' दैत रहलिऐ । आ बेर-बेर ओ कृतज्ञतासँ भरल आँखि हमरा दिस तकैत रहल । जेना विश्वासे ने होइ हमरापर' जे हम ई सहयोग बिना कोनो प्रतिदानकेँ क' रहल छलिऐ । कहबो करैक ओ– अहाँक सब उपकारक बदला हमरा चुकयबाक अछि । जरूर चुकायब... । हम बातकेँ हँसिक' टारि दैत रहलिऐ । हम जनैत रहिऐ– ई औपचारिकता लेल मात्र बजैत छल । जनकपुरमे ओ की हमरा उपकृत करत... । एत' हमरे जरूरति छैक ओकरा । आ आइ हमरा आगाँमे बैसलि रेखा पुन: सहायताक भीख माँगि रहलि अछि । हम की करू !

नहि, ओकरा ल' जाय पडत्त अपने ओत' । रहल हमर बात, तँ देखल जयतैक...।

हम रेखापर नजरि गड़बैत कहैत छिऐक– 'अच्छा चल, डेरे पर चल ।'

रेखा प्रसन्न होइत हमरा दिस देखैत अछि । जेना हमर बोलीपर विश्वासे ने भेल होइक । सब समानकेँ यथावत् राखि दैछ । टेबुलपर राखल ताला उठा बाहर अबैत अछि । हम ताला केबाड़मे लगा दैत छिऐक । ओ साड़ीक पल्ला ठीक करैत अछि । हम दृढ़ताक संग सीढ़ी उतर' लगैत छी– पाछाँसँ रेखाक चट्टीक आवाज हमर संग दैत अछि !

■

कामरेड

लाल सलाम !

लाल सलाम !!

अजुका खबर की हौ चलितरा- सुखिया चमार चलितरा खतबे के कान लग जाक' पुछै छै ।

नै, कोनो, की बात है मीता-चलितराक मुँहसँ बोल छिनैत सुखिया डपटैत छै' -चूप, कामरेड कह आब । ओहि दिन अपना सबके उपरका कमरेड ई बात नै सिखौने रहौ ?

भुइल भ' गेल कमरेड । ठीके गलती भ' गेल । अच्छा कमरेड, की बात है से ।

रे ओते हल्ला भेल छलै, नै सुनलही । करिया मंडलके बकरी कतौ मुँह ध' देलकै अयोधी यादवक खेतमे कि ताबड़तोड़ दस-पन्द्रह सटका घीच देलकै कहाँदन ओकरा बेटीके । सेहे करिया पाटीमे उजुर कैने है- तहीसँ बैसारी है आइ ।

"अच्छा त ई बात है" चलितरा खैनीक जूम ठोढ़मे दबैत अयबाक आश्वाशन देलकै । दुनू दू दिस फूटकि गेलै ।

साँझ भ' गेल छलै । पाटी अफिसक टुटलाहा फूसबला घर । नीचाँ गोनैर विछायल, जाहिपर आठ-दस गोटे बैसल । एकटा काठक टुकरी पर डिबिया टिमटिमाइत । संभव, ओइमे तेल नै हयतै । आइ काल्हि मटिया तेल भेटि नहि रहल छै ।

एकटा लंब-घड़ंग मरद सभके शांत करैत पुछैत छै-करिया, की भेल छौ ।

की कहियो कमरेड । मंगनीमे हमरा बैटीके थोपिया देलक आयोधीके बेटा । दू चारि कौर खयने हयतै सेहो बहुत । -करिया मडर बातके फरिछबैत अछि ।

की चलितर, की होतै । गीरहथ सभके अतियाचार आबो ओहिना सहैक लोक सब ? -लक्षमनसाहक गहिँर शब्द बहराइ छै । डिबिया मिझा गेल छै । मात्र आकृतिक हिलब-डूलब बूझि पड़ैछ ।

आब, एतेक दिन सहलिऐ, । आब नै । कनी मुँह धैए देलकै तँ कोन चास उजड़ि गेलै । आ कहुँ भैसिए हुला दितिए' तँ की होइतै- चलितरासँ पूर्वे मुखिया चमार बजैत छैक । सेहे, राणाकालमे जमींदारसभ हुकुम चलबै, बेगारी खटबै । पंचायतमे गीरहथ सभ मनमानी करैत छल । बड़का धनिक सभके राज चलै छल । आब तँ हमरा सभकें युग अएलैक हौ । आब तँ हमरो सबके बातके मोजर देतै सब । तब एना क' बिना देखले सुनले... हँ, नीकबात नै भेलै ।- एकटा अधवयसु बड़ आवेशमे आबि गेल छल ।

चलितरा बातके सम्हारैत बाजल- ठीक है, एक बेर ओहू पार्टीके श्री नारायणके हम सभ एक बेर चेता दी । जे भाइ, गाँव-समाजमे कोनो धार-विगार होइ से बैसि क' निपटा ला । मारि-पीट नै करहो । आब समय-साल देखिते छहो ।

लंबघरंग मरद बातके तह लगबैत अछि- ठीक कहलकै चलितर । एक बेर बुझा दियौ । नै मानत त देखल जयतै ।

देखल की जयतै, चौरी चांचर सुन्न क' देबै-एकटा युवंक जोश देखबैत अछि ।

चुप्प सार ! देवालो के कान होइ है । कोइ सुनि-लेतौ त सभ गुड गोवड़ भ' जयतौ । करबे नै करबे कहिया, बदलाम भ' जयबे आइए- अधबयसू हँटैत बजैत अछि ।

अच्छा तँ मड़र बला बात के तह लागि' गेल । दोसर कोनो बात है - लंव धरंग पुछैत छै । अन्हारोमे ओकर आँखि जेना जमकि उठैछ ।

है बात की - टाट लागि क' प्राय: एखन धरि औंघाइत एकटा मुरेठा बाला बजैत अछि ।

त अखनीसँ कत्त छले तों । लोक जल्दी सूतत । काल्हि भोरहरबामे दौनी जोत के, हर जोत के आ फेर दिनमे धान काट' के । फुरसत छै एखनु । वन-वनिहारक के त एहे समैया छै- चलितरा कनेक रोषसँ बजैत अछि ।

कनी आँखि लागि गेल छल' -मुरेठा बला देह-हाथकेँ झाड़ि गाल साफ क' बजैत अछि- हमरा बहरान ल' के घराड़ी के हम कि करियौ ?"

कोन घराड़ी रे थाना बला ? लंवधरंग फेर गहींरसँ पुछै छै । हँ हौ कमरेड ओहे । तहिया एकटा खुट्टा गाड़ि अपन गायके बान्हि देने रहिऐ तँ प्रधान पंच सिपाही बजा लौने रहय । हमरा थानामे थुना देह तोड़ि देने रहय- मुरेठा बलाक स्वार मे दर्द स्पष्ट बुझाइत छै ।

-रौ, तोरास त कागजो करौने रहौ- चलितरा जेना मन पाड़ैछै । हँ, हौ सार्वजनिक जमीन छै से भोग हम नहि करब सेहे कागज करौने रहय- फेर खुट्टा गाड़िक' गाइ बान्हि-लंबधरंग निर्णय सुनबै छै ।

फेर कहीं- मुरेठाबलाक मुँहसँ बातके लौकैत सुखिया चमार बमकि उठैछै । -के है रे मरदाबा जे आब रोकतौ । सरकारी जमीन छै । आगाँमे के भोग करतै । तोही करबे किने ।

'ठीके कहै है सुखिया । बरू कनी आगा' घुसकाक' घेरियो लिहे । तोरा हट' कहतौ त गाममे बहुतोके घेरायल है सब के ने उकटि देबै हम सभ- लंवधरंग बातके जोड़ दैत कहैत छैक ।

कनि हमरो सुनैजा- अन्हारोमे हाथमे विनटा आ सूत लेने बैसल दोसर मुरेठावाला सभक ध्यान अपना दिस केन्द्रित करैत अछि ।

तोरा बाकिए छलौ कमरेड-मुखिया मजाक करैत अछि ।

मजाक नै बुझ । सुनही । ओइ दिन जनकपुरसँ आयल उपरका कमरेड की कहने रहै सिपिलमे । जे जमीन जोतै है तकरे भ' जयतै । दू-आदमी एक जमीन प' नै रहत । -दोसर मुरेठाबला सुनबैत छै ।

हँ, रे कमरेड । कहने तँ इहो रहै जे जँ धनिक के जमीन कमायसँ बेसी है ओकर सब जमीन गरीबमे बाँटि देल जयतै ।

दूत ओतबे । रे कहने त रहै जे गरीब आब गरीब नै । सबके कमयबाक खेत, काम लेल नोकरी, सस्ता ऋण मिलतै ।'

तै स तँ हम कहै छी जे हमरा सबके की होतै । कहिया खेत भेटतै ?

-तैयो एक बीघा बटैया करैछी- दोसर मुरेठा बलाक स्वरमे जेना अपूर्व उल्लास छैक ।

होतै कमरेड सभ । औगताइ नै जाउ । अखनु तँ सम्बिधान अएबे कैलैए । रिकाट सभ तैयार भ' रहल छै । जे सब कहल जाइय- सब होतै धीरज तँ राखू-लंवधरंग सभके समझबैत छैक । अगुतैने काम बिगरतौ, देखै नै छही, कंगरेसी सभ केना हल्ला करैहै । कमनिस्ट सब बलु जोर होतौ तँ खेत प' चहरि जयतौ । बाँटि लेतौ, मोही लिखा लेतौ । तैस कंगरेसमे अबै जो । यदि हम सब अगुतैबै त लोक भरकतौ । अखनु धीरजे धरब उचित- अधवयसु सभके समझबैत चेतबैत छैक ।

तब आब बैसार उसरो-मुरेठावला हाफी करैत बजैत अछि ।

डंटी-तराजू त' बूझ त बहुत झुकि गेल छे । उठ'त पड़तै । लेकिन चलितर, कल्हुका पंचैतीमे जाय त पड़तै हौ । लंवधरंग देह हाथके सरियबैत बजैत छैक ।

हँ, काल्हि त भरि गामके बबुआन सब बैसतै । थानतर चन्द्रशेखरके किशोर दू चारि चमेटा मारि देलकै तेकरे पंचैती है- चलितरा बातके चिबबैत बजैत अछि ।

हौ, कथीके पंचैती-मुखिया फेर एक बेर तनैत अछि- ओहो अपन दरबजा पर ओकरा पीटने रहै, ओकरो मौका भेटलै पीट देलकै । हिसाब बराबर ।

'लेकिन, पंचैतीमे त जाय पड़तै । कहह त । के जायत पंचैतीमे- लंवधरंग अन्हारोमे सभके अनुहार पढबाक चेष्टा करैत अछि ।

चलितरे चलि जाओ-अधवयसु प्रस्ताव करैत अछि ।

नै हम जयबौ । जेकरा आगुमे भरि मुँह बाजल नै छी । जेतेको बेर हमरा सबके पंचैतीमे बैसउ जै द' सकै छल, तकरा बीचमे हम कोना बाजब-चलितरा हड़बराक' अपन अस्वीकृति द' दैत छैक । लंवधरंग रोषा जाइत अछि- देखलहो, इहे सब गरीबके सब दिन गरिबहे देख, चाहैत छैक । हौ, समय बदललै । सुपत-कुपत आब हमहु सब कहबै । नै मानत त देखल जयतै । तेँ पहिने जकाँ डेराइत रहबा' त कोइ नै पुछतो । नै सुपत कहने त मारि खाइत रहला, आबो नै बजबा त उजरका धोतीबला सभ गाम चल' नै देतो । चलितरा अखनो धनिकके मुँह देखक' डेराइ छै । पैंच-पालट, कर्जाके डर होइहै । हमरा आब कोनो डर नै । कमरेड, हम जयबै पंचैतीमे । कहबै ठैस क' । अहूँ मारलिऐ, अहूँ के मारलक बात साफ । देखै छिऐ' के हमरा की क' लैए-मुखिया चमार नेता जकाँ भाषण कर' लगैत अछि ।

मुरेठा बालाके जेना बाँहि फरक' लगैत छैक-गरीब-गरीब ?

युवकक संगे आरो दोसर गोटे संग दैछ- एक हो !!

चुप्प सार, ई कोनो पाटी मिटिंग है कि नारा-जुलुश है । लोक निसबद्ध रातिमे नारा सुनतौ त की कहतौ । एक त ओहिना हम सब बदनाम, तै पर नारा लगबै छथि- लंवधरंग डँटैत छैक ।

त की भेलै' कमरेड-सुखिया अगुतायल जकाँ बजैत अछि । ठीक छै । काल्हि तोरे पर । हँ, देखिहे, पाछाँ नै भ' जैहे । सुपत-कुपत कहिहै । डर कोनो ने । अपनो मंत्री है । पुलिस-तुलिस कुछ नै-लंवधरंग घरसँ बहराइत बजैत अछि ।

अच्छा त कमरेड सभ लाल सलाम !

लाल सलाम, लालसलाम !! सभ घरसँ बहरा जाइत अछि ।

■

एकटा कारी साँझ

कयबेर जेबीके झाड़ि चुकलाक बादो मोन मानैत नहि अछि । कतहु ने कतहु गह पकड़ने होयत । ज भेटि गेल त' प्राण पलटितए । से एही आशामे एखन धरि दुनू कोट, पेंट सभक जेबी आ सीरमाक तरमे हाथ घुमा चुकल छी, परिणाम शून्य आयल अछि । तँ की आइ खालिए रह' पड़त !

बजार दिस जयबा लेल सड़क पर खहरि चुकल पयर जेना अपने आप घींचा गेल रहय– प्राय: पाइ तँ जेबीमे नहि होयत । आ उपर डेरामे आबि जेबीक खाना तलाशी भेल रहैक जे एखन धरि भ' रहल अछि । मुदा, एक्कोटा पाइ भेटि नहि रहल अछि । आ तेँ बजार नहि जा सकबाक दुख मोनकेँ भारी बनओने जा रहल अछि ।

होटलमे उधारी चलैत अछि, पान सुपारी खातासँ चलिए जाइत अछि से एक आध दिन तक निमाहल जा सकैछ । मुदा, बजार जयबाले' रिक्साखर्च तँ चाही । अइनी-जइनी तीन टका तँ अबस्से । दुर्भाग्य केहन जे साँझ पड़ल जा रहल अछि । तीनोटा टकाक दर्शन दुर्लभ भ' गेल जा रहल अछि । परिवार नहि रहने अस्त-व्यस्त घरमे एहिना होइत छैक ने । मोन अपने पर कुपित भ' जाइत अछि ।

साँझ करिया गेल छैक । आब जयबाक हम प्रयोजन नहि बुझैत छी। बरण्डापर राखलन खुरसी पर ओलरि देहकेँ थबकारि लैत छी । एकटा पैघ निसास ल' छातीक बोझ हल्लुक करबाक प्रयास करैत छी । आइ बजार नहिएँ जा सकलहुँ ।

किछुए काल एना रहना भेल होयत कि बरण्डाक केबाड़ी क्यो पिटैत सन बुझाइत अछि । पीटबाक क्रम एना जे पीट' वला औगतायल हो, जल्दी प्रवेश चाहैत हो । हम चौंकि उठैत छी- एना उपर अयबाक साहसतं जल्दी ककरो ने होइत छैक - ई के अछि ? गुनधुन करैत केवाड़ खोलैत छी- बाहर छींटक साड़ी पर ललकी पीसक ब्लाउज पहिरने एकटा कड़गर जुआन छौंड़ी काँख तर दोसर छींटक नुआमे किछु, मोटामे बन्हने ठाढ़ देखि

पड़ैछ । हमतँ आर अचंभित भ' जाइत छी– 'सांझक' दरबज्जापर कोन माउगि आयलि अछि ! हमओकर मुँह गौरसँ ठेकनबैत छी कहूँ गामक टोल परोसेक ककरो बेटी-पुतहु भ' सकैछ आ जकरा हम चिन्हैत होइअइऐक । से हम चिन्हैत नहि छिऐक ।

हम किछु पुछितिऐक ताहिसँ पूर्वे ओ हमरा आगाँ द' बरण्डा पर चल अबैत अछि । आ माथ पर जमि आयल घामक बुन्नकेँ नुआँक आचरसँ पोछ' लगैत अछि । पयर आ नुआँक कोचा गरदायल छैक- मनेखूब दौगैत ई जनानीएत्त धरि आयलि होयत ।

'कत्त घर छौ एना किएक अयलेँ ?' हम ओकरा निहारैत पुछैत छिऐक । 16-17 वर्षसँ उपर उमेर नहि होयतैक । गोर आ मुँह चिक्कन । गोरमुँहमे कारी टिकुली खूब शोभि रहल छलैक । हाथमे काँचक नवे चूड़ी-भरल बाँहि । गरामे हसुली, पयरमे काड़ा । बुझायल कोनो खायल-पीअल घरक बेटी होयत ।

''हमर घर हय रतिबड़ा । बड़ी दूर है । रातिए चलली त एखनु एत्त अइलीग''– ओ मुड़ी गारने बजैत अछि।

''रातिए किएक चललेँ । घरसँ भागि गेलही की ?'' – हम ओकर नुआक मोटरी केँ निहारैत पुछैत छी।

''हँ, हम ससुरासँ भागल जाइ छी'' ओ कनेक सकुचाइत बाजलि ।

''कथीले ?'' हम इहो बिसरि जाइ छी जे बरण्डामे राखल कय गोट खुरसीमे अपनो आ ओकरो बैसबा लेल कहि सकैत छिऐक । अथवा ई कही जे बातक रोकचतामे बैसब व्यवधान बुझाइत अछि।

ओ बड़ करूण आँखिए हमरा दिस तकैत अछि । हम देखैत छी जेना ओकर डबडबायल आँखि समुद्रक हिलकोर जकाँ उफनि रहल हो । एक बेर भय मिश्रित नजरि स खूजल दरबज्जा दिस तकैत अछि । हमरा बुझाइत अछि ओ जेना डेरायलि हो । हम केबाड़ भीड़ा पाछाँसँ काठक बिलैआ लगा दैत छी. ।

ओ बजैत अछि– 'हमर बिआह बड़ अधरमी घरमे भ' गेल है मालिक । इज्जत खोर है मालिक इज्जत खोर । ओ जेना आगाँ बाज' नहि चाहैत अछि, अथवा ओकर गला अवरूद्ध भ' जाइछै । हमहुँ किछु नै कहै छिऐ । ओ पुन: बजैत अछि– 'हमरा ससुरकेँ दूटा बेटा है । हम छोटकाके छिऐ । ई सभ बाहर कमाइ छै कलकत्ता । घरमे सासु नै है । हमही दुनू आदमी रहैत छिऐ । हमार ससुरा बसला छओ मास भेल होतै । घरबलातँ दिन क' क' कलकत्ता चलि गेलै । लेकिन हमर ससुर बड़ पापी है मालिक । हमरा घरमे जबर्दस्ती ढुक' चाहै है । कय दिन तँ हल्ला क' देलिऐक । दिआदनी से हँटे- अइ घरमे रहेके हौ तँ देह हाथ जांतिक' रह' पड़तौ । सभ सह' पड़तौ ।''

-ओ हिचकि उठैत अछि ।

आब ठाढ रहब संभव नहि बुझाइत अछि । अपनो खुरसी पर बैसैत ओकरा बैसबाले' ईशारा करैत छिऐक । ओ थकमकाइत बैसि जाइत अछि ।

'मालिक, बड़ मुश्किलसँ ओइ पापीक घरसँ भोरहरबामे भागि सकली हम । तीन बजेके रेल छुटिगेल त जनकपुरमे अपना गौआ- घरूआ सभकेँ खूब तकली । कोई नै भेटल तँ टिसने पर सूति रहब से सोचि बैसल छली की दूटा छौड़ा हमरा आगाँ-पाछा कर' लागल । हम डरे सर्द भ' गेल रही- ''आइ काल्हि जानो धनो आ इज्जतो जाइ छै!''

''टीसनेमे तँ पुलिसो रहै छै, । नहि कहि देलही ।''- हम उत्सुकतासँ पछैत छी । मुदा, अपने पूछब हमरा बइमानसन बुझायल ।

''एह, ऊ छौड़ा सभ पुलिसोसँ फुसुर फुसुर करै छल । हमतँ सुनने छी पुलिसो कोनो भला आदमी नै होइहै । से भगैत-भगैत त एम्हरे चलि अइलि । कहूँ मालकीनी सभ होयत तँ- 'ओ अपन नोरसँ भरल नजरि एम्हर-ओम्हर दौड़बैत बात रोकैत अछि ।

ओकर बातकेँ सुनि जेना हमरा मोन पड़ैत अछि एकटा घटना जे लगले घटल अछि । कतेक साम्य छैक, मोन झुर-झुरा जाइत अछि ।

किछु दिन पूर्व जखन पीड़ारी चौकसँ अबैत रही त एकटा सत्रह-अठारह वर्षक सुन्नरि छौंड़ी कांख तर मोटा दबने झटकारने चल अबैत रहय । ओ ध्यान देबाक बात नहि रहैक-बात रहैक ई जे ओकरा पाछाँसँ दूटा छौड़ा सभ सेहो पछोड़ धयने चल अबैत रहय । पहिलुके साँझ रहैक । हम रीक्शावलाके रूकबाक संकेत कयलियैक आ की होइछ तकर प्रतीक्षा कर' लागल रही ।

तखने दूटा गस्ती पुलिस पर नजरि पड़ल रहैक ओहि मउगिकेँ आ ओ दौगैत-दौगैत गेल आ दुनू क' पयर छानि लेने रहैक । सीसकारीक आबाज हम स्पष्ट सुनने रही । छौंड़ा सभ बाटेसँ बीला गेल रहय । हमहूँ निचैनसँ सांस लेने रही आ टीसन दिस रिक्शा बढयबा ले' कहि देने रहिऐक ।

दोसर दिन हॉस्पीटल जयबाक मौका भेटल रहय । एकटा वेड पर रतुका माउगि के पड़लि देखि अचंभित भ' गेल रही । मोनमे उरी'बीरी लागि गेल जे ककरा सँ पुछियौक ता परिचित डा. साहेब आयल रहथि । हम पुछने रहयनि '' ई जनानी ।''

बातके लोकैत डा. साहेब मुस्कुराइत बाजल रहथि- ''हँ ई जनानी पाँचे बजे भोरमे बेहोश हालतमे आनल गेलि छथि । राति भरि एकरा संगे जर्वदस्ती..... । हम डा. साहेबक पूरा बात सुनबा ले' ओत ठाढ नहि भ' सकल रही ।

''मालिक, मलिकाइन आओर नै है । कनी राति भरि- ''ओ हमरा गुनधुन करैत देखि टोकने रहय । तकरे संग हमर तंद्रा भंग भ' गेल अछि ।''

हमरा आगां बैसलि सेहो रूसनहारि अछि । तएँ त ई सुरक्षाक हेतु मलिकाइनकेँ खोजैत आएलि अछि ।

मुदा, हम त एत्त' एसकरिये छी । आइ एहन जे नोकरो गाम चल गेल अछि । तखन ?

''नहि, मलिकाइन एत्त' नहि छैक । हम एसकरिय...... ''

बातकेँ पुरो नै होब' दैत छैक कि आँखिमे दहशति भरने खुरसीस धरफरा क' उठ लगैत अछि ।

''बैस, बैस, मलिकाइन नहि छैक तँ की भेलै । हम तँ छी । तोरा आरामसँ रह' के' बात छौ ने ! एत्तहि सूति रह' भोरे छव बजेक ट्रेनस चलि जइहेँ ।''

''नहि मालिक । हम एसकरिए एत्त नै रहब । हमरा डर लगै है- एक बेर फेर हिचुकि उठैत अछि ओ ।

हम बड़ असमंजशमे पडि जाइत छी । पूर्व घटनाक चित्र बेर-बेर मस्तिष्कमे नाचि उठैत अछि । जँ ई एहिठामसँ जायत तँ बाहर घुमैत गुण्डा एकर प्रतीक्षे करैत होयत । एकरा पकड़त आ .... । मुदा एत' सुरक्षा भए सकैत छैक।

''बाहर कत' जयबेँ । बगलमे ई खाली कोठरी छैक । सूति रह । भोरे चलि जइहेँ । डर कथीक''- 'हम भरोस दीअबैत छिऐक ।

ओकर कननी थम्हैत नहि छैक । मने एखनो ओ अविश्वासमे पड़लि अछि ।

हमरा झोंक चढ़ि जाइत अछि- 'की तोरा बुझाइ छौ, अपन इज्जत बचब आयलि तोरासन अवलाक संगे हम जबर्दस्ती करबौ! तखन एखने की भेलैए । राति छैहे गेट बन्ने छैक आ नीचाँ तोहर आबाज लोक सुनबो ने करतौक । की तों बचि सकैछे !''

एकाएक ओकर कननी थम्हि जाइत छैक ओ हमरा दिस ताक' लगैत अछि । मने हमरा बातकेँ बुझाबक प्रयास क' रहलि होइक ।

''हँ, एहि सुन घरमे तोरा संग किछु भ' सकैछौ । तो नचार भेल पड़ल रहबेँ । घरसँ भागलि रूसनिहारिक दशा तँ एहने होइत छैक । के पतिअएतौ तोहर बात । लोक कहतौ बड़ सतबरती रहय त राति क भगबे किएक कयलेँ । तोरा हमरा पर विश्वास नहि छौ त ले दरबज्जा हम खोलि दैत छियौक । जा सकैछे- जत' जयबाक होउक !''

ओ हमर मुँह दिस टकटकी लगा क' तकैत अछि । बुझाइछ जेना ओ हमर बातके तोलैत होअए । कनेक काल गुम्म भेल किछु सोचैत अछि । फेर विश्वाससँ उठैत अछि । हाथक मोटरीके उठा पछबरिया कोठरीमे चल जाइत अछि । आ चौकीक बिछाओल बीछन्नाक सीरमामे मोटरीके राखि ठामहि ओलरि जाइत अछि । निश्चिन्तता आकि समर्पण- कहब कठिन छैक । मुदा, ओ स्थिर भ' जाइत अछि ।

तखने नीचाँमे किछ शोर सुनि पडैत अछि । हम मुड़िआरी दैत छी । चारि गोट छौड़ा दारू पीने टन्न भेल गारि बकि रहल छल- ''साली कत' गेल । हमरा सभके ठकि क' भागि गेल ।

''की भेल ग'' एकटा पलदार टोकैत छैक । चारिटा छौंड़ाक संग स्टेशनक खाली जमीनमे छोटका-छोटका कपड घर बना रहैत कुल्ली कबाड़ी सभक परिवारक लोक सेहो जमा भ' गेल छैक ।

''होयत की ! एकटा छौंड़ी हमरा सभसँ पाइ ल' क' भागि गेल अछि । लोक कहैए-एम्हरे आयलि अछि ।''

'केहन है'' घोल महक क्यो पुछने रहैक ।

''गोर छै । कपारमे टिकुली, पयरमे कड़ा गारामे हँसुली आ छींटक साड़ी पहिरने हय...देखलिऐ अ ...'' ।

हमर देह शर्द भ' जाइत अछि । हम पलटिक' घरमे तकैत छी- पयरमे कड़ा, गरामे हँसुली, गोर कपारमे टिकुली आ छींटक साड़ी पहिरने छौंड़ी हमरा बीछाओन पर निश्चिन्त भेल पड़लि अछि ।

■

आब तँ पेट जरूर भरतै

रेल पूक्की पाड़ैत अछि पी ऽऽऽऽ ।

सुगिया धड़फरा कऽ उठि जाइछ- मने विहान भऽ गेलै । ओ सुतबो कहाँ कयल । भरि राति कछमछ करिते रहि गेल । ओकरा बुझाइ छै, कखन भोर होयतै आ भरि पेट खिच्चड़ि खायत । खैराती खिच्चड़ि ।

तेँ रातिमे कैक बेर चेहा-चेहा कऽ उठि बैसल छल-कहीं भोर ने भऽ जाइ आ ओ पछुआ जे जाय । दुनियाँ भरिके खधम्मरि सभ टीसन लग रातिएसँ जुटि जाइछै, अनको पारस-खा जायबाली सभ- सुगियाक मोन भेर भऽ जाइछ ।

ओ आइ कैक साँझसँ भुखलि अछि । एम्हर कैक दिनसँ झपसी लधने छैक । कतहुँ मांगहु जाओ तँ कोना । दरे-दोकान ओहिना ढनढनाइत छै । गहिंकी नहि अयने दोकानोवला सभ ललकारि कऽ भगा दै छै । परिवारबला सभकेँ घरमे खेखनियाँ-मिनती कयलापर एक, आध कौर भोजन दऽ दै छै । ओ अपने खाओ आकि ई पांच वर्षक बेटीकेँ दौक ।

बेटी दिश एकटक तकैत सुगिया जेना कतौ भसिया जाइए- 'नै-जानि केना पार लगतै एकरा' । रवि-रवि कऽ भीख मांगि जे पाइ-कौड़ी बचौने छै ओ, पांच-छयसय टका तँ अवस्से होयतै । ओकरा ओ केथरीमे सी देने छैक । रातिमे ओहि पर सुति रहैए । नहि जानि कंकर नजरि पड़ि जाइ आ.... ।

सुगिया अपन पेट काटियोकऽ बेटीक पेट भरबाक प्रयास सदिखन करैए । ओ एकरा कतहु नीक घर-वर देखि विआहि देब' चाहैए । दुत! के करतै हमर बेटीसँ बिआह' - सुगियाकेँ अपने-पर हँसी लागि जाइछै । तैयो ओ सोचैत अछि- बेटी ओकरहि जकाँ जीवन भरि भीख मंगैत नहि बौआइ !

सुगिया कनेक कालक हुतु जेना भसिआ जाइए- मोनमे पछिला कथा चकभाउर

देब' लगै छै.... । कहाँदन कोनो माउगि ओकरा जनमाकऽ चौरीमे फेकि आयलि रहय । एकटा भिखमंगाके भेटल रहै ओ । बड़ परिश्रमसँ ओकरा पोसलकै भिखमंगा । जखन सुगिया टेल्हगर भेल तँ बापक डंटाकेँ हाथसँ पकड़ि दरबज्जे-दरबज्जे भीख मांगल करय । जे पाइ-कौड़ी भेटैक, हाथमे राखल बाटीमे जमा कयने जाय । ई क्रम कैक वर्ष चललै ।

सुगिया जखन जुआन भेल त ओकर बाप मरि गेलै । आब ओ की करओ ? सभ दिन भीख मंगैत देखनिहार की ओकरा कोनो काम-धन्धा दितैक ? अथवा ओहुना चैनसँ रहय दितैक ? दिन-रति गुनधुने बिताबय सुगिया ।

एक राति टीसन पर सूतल रहय । बाहर धनघोर वर्षा होइत रहै । लोक कोहुना दबकल-सुटकल सूतल रहय । निसबद्ध रातिमे केओ गोटे जबरदस्ती मुँह बन्नकऽ ओकरा पर..... । ओ कतबो चिचिआय चाहलक नै बाजि सकल।

आ एक बेर ओ दगायल तँ फेर सम्हारबाक मौका नहि भेलै । ओ निश्चय कऽ लेलक जे ओ चैनसँ तखने जी सकत जखन एहिना भीख मंगैत रहय ।

आ ओ फेर भीख मांगय लागलि । शहरो छोड़ि आन ठाम चल जाइत से नइँ भऽ सकलै । बापक संग दरबज्जे-दरबज्जे घुमैत-घुमैत ओ बहुत गोटेकेँ चीन्हि गेल छलि । गली-गली ओकरा ओहिना अखियास भ' गेल छलै-तेँ ई शहर ओकरा छोड़ल नइँ भलै ।

ओही अवस्थामे सुगियाकेँ पेट भऽ गेलै । बेटी भेल रहैक । आब एसकरिमे मनकेँ बहटारबाक लेल सुगियाके एकआ खेलौना भेटि गेल रहै- बाबू बेटी हम्मर, सुन्नरि बेटी हमर । भरि दिन मांगि-चांगि कऽ डेरापर आबि बेटीकेँ घंटौ दुलार करय । मनमे तोष होइ ।

जँ-जँ बेटी बढ़ैत गेलै, सुगियाकेँ चिन्ता होइत गेलै । कहीं इहो हमरे जकाँ ने भऽ जाय । नै जेना हेतै तेना एकर बिआह करेबै- सुगिया दृढतापूर्वक मोनकेँ थीर करय । मांगि-चांगि कऽ आनल पाइ जमा कऽ केथरीक खोल बना जमा करय । लदने घुमय ओकरा, जतय जाय ततय ।

पाइयो कहाँ दै छै महाजन सभ आब । पचपैसी, दसपैसी भजाकऽ रखने रहैछ आ रविकऽ आगांमे फेकि दैछ । भरि शहर घुमलापर बीस-तीस टका । देहक जोड़-जोड़ जेना कचकि उठैक । कतेको दिनसँ पयर फूलि जाइछै । आ रवियो तँ आठ दिनपर अबै छै मोचरूआ- सुगियाकेँ जँ एक्को दिनक अधिकार दितै तँ सभसँ पहिने ओ सप्ताहमे सातो दिन रवि कऽ दितैक ।

हं, जहियासँ मंदिर लऽ पतरका बाबू खिच्चड़ि खुआबऽ लागल छै, जय-जय भऽ

गेलैए । सुगियाकेँ खिच्चड़िक मोन पड़िते पेटमे मरोड़ देबऽ लगै छै । कतेक आकुलतासँ ओ शनिकेँ इन्तजार करैए । यैह खायल सात दिन धरि.... । तेँ कनेक जल्दी ।

पछिला शनिकेँ एहिना एकटा नेङरा मनसा ओकरे पारस पर बैसि गेलै आ हब्बर-हब्बर भकोसय लागल रहे । ओ त बकर-बकर मुँह तकिते रहि गेल रहय । ओ ओइ पतरका बाबूक....की नाम रहै, दुर नामसँ कोन मतलब, खिच्चड़ि धरि खुब खुअबैक भरि पेट । बड़ नीक सुभाव छै मालिकक- सुगियाकेँ बुझाइछै जेना ओ पात पर बेसल मालिककेँ निहारैत हो । केना धड़फड़ा कऽ दोसर पात मंगौने रहै आ ओकरा खूब अहगरसँ खिचड़ी धऽ खुऔने रहे । दुनू माय-बेटी भरि पेट खयने रहय ।

एह, आइयो ओहे साहेब औतै । सुगिया मोने-मोन मनता करैए-कैक सांझक भूखलि लारूबातू भेल अछि ओ । साहेब नीक जकाँ खिच्चड़ि दिअबितै । कतेको परसन ओ लीतै...।

दिन फरिछाय लागल छै । सुगिया केथरी समटैत अछि आ नजरि टीसनक प्लेटफर्म पर दैत छैक- हँ, एक आधटा भीखार सभ जमा होम' लागल छै । गाड़ी जा चूकल छै, मने आब पांतिमे लोक बैसत । जल्दी करक चाही, कहीं फेर ने बेसी लोक आबि जगह छेकि लैक ।

सुगिया बेटीकेँ उठबैत छै- गे बोआ उठ, भोरे भऽ गेलै । खिच्चड़ि खाय नई जयबे । चरमहक धारापर अपनो आ बेटियोके हाथमुँह धोइत अछि । केथरीसँ मुँह पोछैत टीसन दिस लपकैत अछि ।

प्लेटफार्म लग जा पहिने ठमकैत अछि, एम्हर-ओम्हर तकैत अछि । एखनि तक साहेब नइ अयलै'- गुनधुन करैत सुगियाक मोन छोट भऽ जाइत छैक ।

हंडीमे खिच्चड़ि आबि गेल छै । दालि-भातक सोन्हगर सुगन्ध हंडीसँ बहराइत भाफक संग सुगियाक पूरामे घुसिया रहल छै । जँ-जँ गन्ध तेज होइ छै सुगियाक बेचैनी बढल जाइछै, नजरि चारूभर नचैत छै ।

करिंदा सभ हाक पाड़ै छै-बैसे जो जल्दी । सुगियाकेँ बैसबाक मोन नइं करै छै । अधपेटा खाय ले ओ तैयार नइ हैत आइ बरु भुखले रहि जायत..... शहरक मेन रोड दिस एकटक तकैत सुगिया मोने-मोन बातकेँ गढ़ैत-मेटबैत अछि ।

सभ धमाधम बैसि रहल छै । राति भरि अजुका खिचड़ी ले जगले रहल सुगिया आ आइ ओही बेरमे साहेबे नइ अयलै । आनपर कोन बिसवास ।

गुनधुन करैत सुगियाकेँ पतरका साहेब पर नजरि पड़ि गेलै । ओकरा देहमे जेना अनायास फूर्ती आबि गेलै- एह साहेब अयलै । ओ पात ओछाकऽ निश्चिन्त भऽ गेलि । आइ ओकर पेट जरूर भरतै-सुगिया पहिनेसँ तिरपित भऽ गेल अछि ।

■

भाउर

हे, एकटा बात सुनलिऐअ- 'गाममे आंगनमे पयर दिते पत्नी कहैत छथि ।'की' हम सहज भ' ठेकनिअबैत छी ।

'लक्ष्मीक पुतोहु उढड़ि गलै- पत्नी गरजांति क' बजैत छथि ।

'कोन लक्ष्मीक पुतहु ?' -हम ओहुना गामक लोकक‍ँ कम्मे चिन्हैत छिऐ ताहुमे जनानाक कथे कोन ।

'उएह, मीयाबाली जकर पंचायत हालेमे भेल रहैक ।

'ओह!' हम बातक‍ँ बुझि जेना झन-झना गेलहुँ । मोन पड़ल किछु दिनक घटना सभ आ आँखिक सोझाँ नाचि उठल बिलटबाक घरबालीक भरल पुरल देहयष्टि । दू गोट धीयापूता छै, मुदा बूझाइत नहि छैक । कस-कस करैत।

'तँ ओ उढड़ि गेलै' हम मोने मोन सोचैत बरण्डा पर राखल खुर्सी पर बैसि जाइत छी ।

किछुए दिनतँ भेलेए ओकरो पर पंचायत भेलै । जातिक भर-भलादमी सभ जुटल रहै । माइजन-देवानक आगाँ जखन बात खुजल तँ लोक बुझलक लालबन्दीमे कोना एकटा छौड़ा संगे खुजि गेल छलहि । माने मिया संगे । छी, नाश कैलक खानदानक‍ँ । बुढबा लक्ष्मी सहनी माथ पकड़ि पंचमे अफशोस करैत रहय ।

बात नहि खुजितै । गामक मलाहिन सभ लगपासक गाम सभमे घोँघी मारने रहैत छैक आ तकरा भाउर क' एत्तसँ बीस-पचीस कोस धरिमे बेचि अनैत छैक । डेढ-दू रूपैया किलो । नीक आमदनी भ' जाइत छैक ।

ताहि क्रममे जनकपुरसँ बस चहरि लालबन्दी धरि चल जाइत । ओत्त एकटा बकचिकवासँ केना ने केना ओकरा साँठ-गाँठ लागि गेलै । आ बेर सबेर ओत्तहि रह' लागलि रहब ।

ओकरा संगे गेलै अड़ोसिया- पड़ोसिया जनानी सभक‍ँ ई बात शुरूमे बुझयमे नहि अएलै । बसमे चलैत काल ओहि कन्टेक्टर' सभक संगे हंसी मजाक तं करिते रहै छैक- डेली पैसेन्जर हयबाक कारणे‍ँ भाड़ामे छूट द' देत से लोभ रहैछैक ताही क्रममे ओहि बकचिकवासँ भेट-घाँट, बातचीत आ खान-पान धरिके बात भ' गेल रहै । सभ एकरा स्वभाविक मजाक बुझने रहय । मुदा, लक्ष्मीक पुतहु ओहि राति ठीके मिअबा संग चल गेल रहै । राति भरि ओकर संगे सूतल रहै ।

संगी सभ तैयो नै बूझने रहय । कोनो आन ठाम गहिकीए के -घरमे रहि गेल हयत सोचने रहय ओ सभ ।

मुदा, बादोमे, ओकर उएह धन्धा होब लगलै । दू दिन चारि दिन धरि ओहिना मिअबाक ओहि ठाम रह 'लागल त संगक मौगी सभके माथ ठनकल रहै- हो न हो बात किछु गड़बड़ छै । बड समझौने रहय ओकरा सभ गोटे मिलि क' । एक दू खेप तैयो गाममे ई बात नहि बाजल रहय । कहुँ अपनाक‍ँ सम्हारि लेत । दू गोटे बेटोक मुँह देखौने रहै-एहू सँ सम्हरि जायत ।

मुदा, से भेलै नहि । ओ बहसि गेल छलीह । तखन ओ सभ गाममे अपना-अपना घरबलाक‍ँ ई बात कहि देने छलीह । मौंगी सभक कानमे पड़िते सौंसे गाम बिड़रो जकां पसरि गेल- 'बाप रे, गजब भ' गलै । लक्ष्मीके पुतहु लालबन्दीक‍ँ मिअबा संगे रहै छै। दुर छिया लोक कर लगलै । आ तखन अजीज भ' क ' लक्ष्मी पंचायत बैसौने रहय ।

पंचैतीमे सभ ओकरा की की ने कहलकै । कुलनाशी, चरित्रहीन, रंडी नहि जानि कोन-कोन आस्पद सभ!

देओर कांच करची हाथमे ल'क' नचबैत रहै- छोड़ हमरा, एहि करचीसँ दाग' दे । गतर-गतर दागि दैत छिऐ तखन एकरा बिलगा देबै । जाओ जत्त जायत जत्त ।'

'ठीके दाग एहि कुकर्मिनियांक‍ँ । नाक कान कटा देलकौ' - ससुर सेहो कांचे करची कतौसँ उठाकऽ उसार' लागल रहै ।

तखने सासु बीचमे पड़ि गेल छलीह- हे सुन! घरबला गाम पर नै हे । परोक्षमे किछु क' देबही से ठीक नै होतौ । ओकरा आबऽ दही तँ सभ बात कहि-सुनै हैं । तखनु जेना होतौ करै जैहे ।'

इहो बात सभक‍ँ उचित लगलै । आइ कयक माससऽ घरबला पंजाब गेल छै कमाय । अखाढ़ अएलै-खेती गृहस्थीक लेल तँ अएबे करैत । तखने देखल जएतै । सएह सोचि ओकरा चेतौनी दैत छोड़ने रहै-तोँ भाउर कर' नहि जो । घरमे काम काज कर । आब जे निकलले तँ टांगि तोड़ि देबौ ।'

मौगी मुंड़ी गोंतने आंगन पैसि गेल रहय । पंचैती अवधिमे एक्को शब्द नहि बाजलि रहय । बौक बनलि सभक बात सुनैत । बुझाइ जे भितर किछु छै जकरा ओ लाब' नै नै चहैत रहय-गमैया परिवेश । लाज-धाख । पंचायतमे रहल किछु गोटे ई कहने रहय ।

तहियासँ किछु दिन धरि ठीके ओ घरसँ नहि बहरायलि । ओहो एम्हरसँ ध्यान हटा लेलक ।

बरु एहि बीच एकटा एहनो बात भेलै जे लोक बुझलक आब ठीक भऽ जयतै । दुनू भैयारीके बांट-फांट भेल रहै । घर नै बनल रहै । से ओ घरबलाक परोक्षमे ससुर, देओर आ जन बनक्के सहयोगसँ फूटे अंगनाके घर बना लेने छल । दिन-राति मेहनत क' क' लेब-मुनिकऽ दुरूस्त कऽ कऽ चिक्कन-चुनमुन बनौने छल ।

एक दिन एकटा पड़ोसनी पुछियो देने रहैक- 'गे मठिहानी बाली । कहाँदनतोँ मिअबा लयकऽ भाग चाहै छीही।'

ओ तड़पि उठल रहय 'हे, आइ एतेक मेहनतसँ घर-दुआर लेबली-मुनलीअ दोसर बेटखौंकी खातीर ।

भने लोक अन्दाज लगौलक ओ नहि भागत । एम्हर पंजाब गेल घरबलाक सेहो कोनो ठेकान नहि । नहि जानि कतेक दिन आर लगतै ।

बात जखन सेरायल सन भेलै कि एक दिन घोंघी लाब नरयिहा पौड़ेश्वर दिस गेल आ घोंघी आनिकऽ घर पछुवारा छोटकी खत्ता छै ताहि मे ध' देलक । आंगन आयल । नुआ-वस्त्र जे चललै लेलक आ चुपेचाप पड़ा गेलीह । जखन घंटा-दू घंटा भेलै तँ बात खुजलै । लोक चारू भर खिरल, मुदा ओ नहि भेटलै ।

सभ बूझि गेलै ई मिअबे लग भागि गेलीह । फेर ई बात आगि जकां गाम भरि पसरि गेल- लक्ष्मीकेँ पुतहु आइ तँ भागिए गेलै । हे भगवान छोट दुनू बेटीकेँ की होतै ।'

आंगनमे पत्नी बजैत छथि- दुनू बेटी बाट धरि कनैत-खोजैत गेल छलीह । माय कतय चलि गेलै'- बेटी सभक हाक्रोश सभकेँ हिला देने छलैक । लोक की कहओ-तोहर माय कत्त चल गेल छौ । एकटा अढ़ाई-तीन वर्ष आ दोसर पांच-साढ़े पांच वर्षक ! टुगर !

गाम भरिमे एक्के बात- 'दुत निर्लज्जी । केना एहन घर छोड़ि कऽ चलि गेलै । कथीकेँ दुख रहै । अपन घोंधोकेँ भाउर कऽ कऽ नीक कमा लैत छल । खेतो-पथार छलै । घरोबला अबैत काल रंग-विरंग केँ नूआ-वस्त्र लबिते छल । पाइयो-कौड़ी लबैत छल । ई भरछांहीकेँ की भेलै । कुल दग्गी !'

मठिहानी बाली दू गोट बच्चीके छोड़िकऽ भागि गेलै मियां संगे-ई सांचे एकटा बडका घटना भऽ गेलै । आखिर ओ एकटा अजाति संगे भागबाक स्थिति धरि कोना पहुंचली ?

मिआसँ भेंट भेलाक बाद ओकर स्वभावमे अन्तर आयल रहै ई बात बहुतो जनानी महशूस कयने रहय । नीक-नीकूत खान पीन । मौज-मस्ती ! आ हसी-ठट्टा । मिआंक संग मुक्त सहबास ।

मस्त मिआं-कस कस करैत मठिहानीवाली । घरक सूनापन भाउरमे सम्पर्कक अनगिनत सुख । बाहरक खुलापन रंग-रभस'भितरमे उठैत द्वंद्व । घरबला पंजाब । एक मास दू मास नहि । दू-चारि मास छोड़ि बरोबरि । देखा-देखी संसार ।

सीमाक अतिक्रमण होइत गेलै । बान्ह बन्हाइत रहल, बाढि तोड़ैत रहल । आइ दहा गेलै । गामक दिआद, सँ-समाज, माइंजन-देमान अपन-अपन कुलक गाथा पसारने अछि । विशाल समुद्रमे फेंटा गेल नदीक धारकेँ मोड़ि पछुआरक खत्तामे समाब' चाहैत अछि ।

जेठक अन्तिम सप्ताह । आम टो टाकऽ पाकब शुरू कऽ देने छैक । लाल-लाल बमई ! मठिहानी बाली टिकुलेसँ आमके रखबारी करैत रहलीए- 'एह एहिबेर हमरो आम खूब फड़ल छै । पौर साल तँ धीआ पुताकेँ जीह सिहा गेल, अइ बेर अपनो आ धीआ पुता खाइत-खाइत..........।'

घरमे राखल मौनीमे धयल पाकल-पाकल बमई आमो मठिहानीबालीकेँ आइ रोकि नहि सकलकैं । ओ एकटा बड़ सौदा कर' बहरा गेलीह अछि ।

भाउर करब ओकरा सभक मूल धन्धा छै ने । आ जखन धन्धा लोक करैए तँ नफे बरोबरि होइक से जरूरी नहि । नफा-घटाक खेल तँ ओकर हिंसक भऽ गेल छै ।

हं, एहि बेर कनेक सम्हरि क' भाउर पर निकलल अछि । की मटिहानीवाली नहि जनैत हयतीह-एहि व्यापार मे ओकरा घाटा-नाफासँ अतिरिक्तो बहुत किछु सह' पड़तैक !

■

छाउर

मौसी हाथकेँ अपना हाथमे दबने हम बड़ी कालसँ एहिसँ आगां की होइक से सोचि रहल छी । मुदा, किछु फुराइयेने रहल अछि ।

जखन स्टेशनसँ फोन आयल जे विराटपुरसँ आयलि किछु जनानी अहाँकेँ खोजि रहल छथि तँ हमरा बुझबामे भांगठि नहि रहल जे रेखाक परिवार सभ होएत । भ' सकैछ सभ काठमान्डू जाइत होयताह । तखन रेखो भ' सकैछ । एकटा अज्ञात खुशीमोनकेँ झनझना देने रहय ।

मुदा, जखन स्टेशनसँ डेरा दिस अबैत आकृति सभकेँ देखने रही तँ मोन खसि पड़ल रहय । एकटा मोट-गोल काया आ दोसर नमछराह आकृति जकरा कोरामे छोटछीन नेना.... । मोटकी रेखाक माय आ पतरकी रेखाक मौसी-कोरामे रेखाक दूबरखाही बेटी...। चिन्हबामे कोनो भांगठ नहि भेल रहय । जाधरि ओ सभ हमरा घरक दरबाजापर आबय-आबय हम मौसीकेँ रेखाक सादृश्य खोजिलेने छलहुँ-भने आइ हम अपने भठबाले तेयार बैसल छलहुँ ।

गर्मीक समय । बिजुली गुम तँ बिजुली पंखाक तँ गप्पे नहि । से उपरका अंगनइमे दुनू चौकी लगा बिछाओन बिछवा देने छलिऐक । उत्तरकात बच्चीके ल' रेखाक माय आ दक्षिण भर अगबे मौसी । गर्मीसँ ओहुना निन्न नहि होइत, ओना हमरा तँ आर निन्न नहि भ' रहल छल-से एहू बहाना सँ मौसीक कातमे कुरसी लगा हम बैसि गेल रही आ गप्प-सप चला देने रहियैक ।

गप-सप मद्धिम आबाजमे करबाक प्रयास करैत रहियैक । कहीं रेखाक मायने सूनि लिअय । किछु जँ आइ बजाइए गेल तँ । आ अनचोकेमे हमर हाथ मौसीक हाथपर पड़िगेल रहय । मौसी ओकरा हटबाक जरूरति नहि बुझने रहैक । बरु एक बेर माथ उठा अपन बहिनकेँ देखि लेने रहैक जे सुतल अछि कि नहि ।

ई ध्यान ओकरे रहैक से नहि हमहु कयबेर रेखाक मायक अनुहार गमबाक प्रयास कयने रही-ठीके सुतल अछि की! ओना कनेक कालमे ओ फोँफ काट' लगलि रहय-मुदा, हमदुनू गोटे अपन मोने-मोन ई बुझैत रही जे ओ सूतल नहि अछि । बहाना कयने अछि । एतेक गर्मी, हवाक प्रवेश नहि आ ताहिपर फोफ... ।

तेँ की एहिना हाथ दबने पड़ल रहब उचित । ने रेखाक माय सुततै आ ने हम मौसीक संगे भरि पोख बात क' सकब । हम कछमछा रहल छी । आइ हम कछमछा रहल छी, छांह देखबाक हमर मन:स्थिति हमरा बताह बना देने अछि । मौसीक प्रति ई आशक्ति आखिर हमरा मोनमे अयलैक कोना ? हम स्वयं नहि बुझि पाबि रहल छी ।

कैकगोट घटनाक स्मृति माथमे ओहिना नाचि उठैत अछि ।

रेखाक संगे काठमाण्डू जयबाले' मौसी आयलि रहय । हम एक्कोबेर नहि मौसीकेँ बतओने रहिये । हमरा कोनो आकर्षण नहि बुझायल रहय एकरामे । नमछर देह, मुँहमे माताक स्पष्ट चिन्ह, आगाँ दिस बढल दाँतक कारणेँ नमरल लोल अविबाहित । 26 वर्षक जुआन छौंड़ी । रेखा बाजलि रहय- बड गुणवती अछि । लड़के ने भेटि रहल छैक । विवाह करब जरूरी छैक, लेकिन घरक हालति.... । बजा भुकी नहि रहने मौसीसँ बातचीत तँ नहि भेल रहय, मुदा दयाधरि अवश्य आयल रहय-जुआन देहक दुर्दशा देखिक'।

हम एक बेर काठमाण्डू गेल रही त रेखाक घरमे भेंट करबाक हेतु सांझखन पहुचल रही । रेखा घरमे नहि छलीह, बड़ आवेशस मौसी घरमे बैसओने रहय आ जाधरि हम खेलियेक नहि ताधरि हमरा आब' नहि देने रहय । एहि बीच बहुत रासबात सभ बाजलि रहय मौसी- 'कन्फीडेन्सीयलटाँके धरि । रेखाक अनुपस्थितिमे ओकरा कोठरीक रूमानी परिवेश मौसीक प्रति कोनो आकर्षण हमरा हृदयमे उत्पन्न नहि क' सकल रहय । सुखाएल ताड़क गाछ लगैत मौसी छातीपर दुपट्टा धरब एक्कोबेर जरूरी नहि बुझने रहय- तथापि हम निर्लिप्त भावें सभ आदर-सत्कार ग्रहण करैत रहि गेल रही । अबैत काल पुन: भेटबाक ओकर अनुरोध सेहो हमरा भीतरमे कत्तहु गुदगुदी नहि उभारि सकल रहय।

काठमाण्डूसँ गामपर घुरैत काल जनकपुरमे हमरा ओइठाम एकदिन ले टिकल रहय मौसी । दिनभरि । सँझुका गाड़ीसँ जयनगर जयबाक रहै । समय बितयबालेल हमरा ओत' आबि गेल रहय । एकांत पाबि बहुत रास बात भेलैक । बाजलि रहय-''हम जनै छी रेखाक संगे अहाँककी सम्बन्ध अछि ?''

''की अछि ?'' -हम टोकि देने रहिएकै ।

''ठीके, रेखा हमरा सभ किछु कहि देने अछि । ओ हमरासँ किछु नुकबैत नहि अछि-'' मौसी हमरा आँखिमे आँखि गड़बैत बाजलि रहय ।

हम कनेककालक हेतु ई मानिलेबा पर बाध्यभ' गेल रही जे ठीके रेखा बात किछु कहने होयतैक । मुदा, से ई एखन ओ प्रसंग उठा हमरासँ की चाहैत अछि ? हम ठीके कनेक गुनधुन कर' लागल रही । तखन ओ तीन बजेक गाड़ीसँ जयनगर जयबालेल बड़ आग्रह कयने रहय । राति के होटलमे रहि सिनेमा देखबाक आकर्षक कार्यक्रम रहैक ओकरा । मुदा.......हमनहि जानि किए तहियो मना क' देने रहियै- '' नहि, हम नहि जा सकब । हमरा एत' बहुत रासकाज सभ अछि ......''?

हम देखने रहियै मुह रूठ क' क' मौसी गाड़ी पकड़ि चलि गेल रहय । ओकर उदास-उदास अनुहार तखनो हमरा कोनो प्रतिक्रिया उत्पन्न नहि कयने रहए । कत्तौने कत्तौ मौसी हमर सान्निध्य चाहैत अछि जरूर । से किएक ? प्रश्न घुरिआय लागल रहय ।

एकबेर काठमाण्डूसँ किछु समान आ सम्बाद घर कहिदेवालें रेखा पठओने रहैक । से मौसीके कहलेल जा सकैत छलहुँ से एकटा आदमी द्वारा सम्बाद पठा देने रहियै-''हम । मौसी अलका सिनेमा हॉलक आगां उतरल छलीह । बड़ आवेशसँ शिकायती लहजामे बाजलि रहय-''एँह, की अहाँ गाम नहि आबि सकैत छलहुँ । कयबेर कहैत छी गाम आयब । अहाँ नहि अबैत छी । ई तँ ठीक नहि भेल । हमरा तँ एकपाइ अयबाक मोन नहि छल- खाली दीदी कहलक....।''

हम खाना खयबाले होटलमे पैसि गेल रही । मौसी नहि खयलक । समदिया वतौलक एकांते-'' अहाँके पुरजी ई पबिते दौड़ि क' एकातमे जा पढय लागलि रहय । बहिन मनो कयलकैक जे मौसम ठीक नहि छैक, नहि जो । दोसर दिन चलि जइहें, मुदा ई नहि मानलक । जिद क' क' आयलि अछि.... ।

तखन ई झूठ किएक ? मोनक आवेगकेँ नुकायबा लेल तँ नहि ? की ओ हमर बजाहटिकेँ अपन प्रयासक स्वीकृति तँ ने बूझि लेलक । आ तकर भान हमरा सिनेमा देखैत काल भेल रहय । ओ सिनेमा देखैत रहय आ हम अपन पखुरा पर मौसीक राखल गालक गर्मीकेँ सहेजैत रही । जेना ओ सिनेमा नहि हमरेसँ सट' आयल छलीह .....।

चरिबजिया नेपाली गाड़ी पकड़बाले उद्यत हमरा रोकैत मौसी बाजलि रहय- ''हे, नहि जाउ आइ ! आइ राति एत्तहि रहु । राति दोसर हालमे देखब । भोरे अहाँ जनकपुर चलि जायब, हम वीराटपुर ।''

''नहि, हमरा जयबाक अछि जरूरी''- हम तखनो आकर्षित नहि रही । बरू एकटा आशंका घेरने जाइत रहय-आखिर मौसी हमरा संगे रहबाले एतेक जिद किएक करैत अछि । एकरा पता छैक- हम विवाहित छी । बाल-बच्चाबला छी । बसल घरक लोक छी । तखन एना सटबाक कारण की,

मोन दगधतँ तखन आर भ' गेल रहय जखन ओकरा संगे ओकरा जुआन भेल जाइत

भगिनपूत बाजल रहय- ''ठीके कहैत छथि दीदी, आइ राति रहि जाउ ने । काल्हि चलि जायब...... ।''

जँ मौसी कोनो व्यक्तिगत कमजोरीक वशीभूत भ' हमरा रहबाले कहैत रहैत तँ एकांतमे जा कहि सकैत छलीह । अपन जुआन बहिनपूत लग स्पष्ट रूपेँ हमरा रुकबाले कहब-की संकेत करैत अछि ।

तखने एकटा बात मोन पड़ल रहय रेखाक । कहने रहय हमरा एकदिन जनकपुरमे- ''मौसीक बिआह करव आब जरूरी छैक । मात्र अहींटाके कहैत छी, हिनका दौरा पड़ैत छनि.... । अब पुरुषक सान्निध्य चाही । लड़का छैक तँ खोजि दिऔक....'' ।

तँ मौसीक पूरा परिवार हमरासं की आशा करैत अछि ? सिहरि गेल रहय हमर देह । आ जबर्दस्तीए गाड़ीमे धरफड़ा क' धम्म द' बैसि गेल रही । मौसीक जुआनी जरैत सारा बुझाइत रहय- जकरा दिस पलटि तकलापर कोनो अहीत होयबाक आशंका रहैक ।

तकराबाद मौसीसँ भेट भेना बहुत दिन भ' गेल रहय । एहि बीच पता लागल रहय मौसीले लड़का ठीक भ' गलैक । बरु मौसिए ओकरा ठीक कयने रहय । एकटा आफिसमे कर्मचारी रहैक-घरमे अबैत जाइत रहैक । संगति प्रगाढ़ होइत गेलै- आ आब दुनूमे खूब पटै छै । जल्दिए मँगनी होयतै आ विआहो ।

हमरा आब ई खबरि प्राण पलटओने रहय । मौसीक रूपमे आब हमरा कोनो खरापी नहि देखि पड़य । हमर पुरुख पुन: पलटि आयल रहय हमरामे ।

आ तेँ एतेक दिनुका बाद जखन डेरा दिस मौसीकेँ अबैत देखने रही त हमरा रेखाक सादृश्य ओकरामे देखि पड़ल रहए । अनेरे आशंक्ति हमरामे अभरि आयल रहय । बातक सिलसिला चलल रहैक आ आब ओकर हाथ हमरा हाथमे अछि ।

मौसीक बहिन एकबेर जोरसँ खखसैत अछि आ करोट फेरि लैत अछि । मौका नीक बुझाइत अछि । मौसीक हाथकेँ जोड़सँ अपन दिस घीचैत छी । मौसीक हाथ स्प्रींगजकाँ नमरैत चल अबैत अछि । मौसी पटभेलि पड़लि अछि । लोथजकाँ कोनो प्रतिक्रिया नहि । रेखाक शब्द कानमे गूंजि रहल अछि-'' एकरा पुरुषक सान्निध्य चाहिऐक....'' । हम अपन बाम हाथ मौसीक पीठपर छहलबैत छी... । कोनो सुगबुगाहटि नहि । हम छटपटा रहल छी- मौसी निचैन अछि ।

ओह! एकाएक हम सिहरि जाइत छी । मौसी त जड़ल साराक छाउर जकाँ ठंढा भ' चुकलि छथि । हमरा एत्त रूकब कोनो काजक नहि, हम अपन कोठरी दिस ससरि जाइत छी ।

■

बहुदल आयो !

आयो-आयो, बहुदल आयो

आयो-आयो, बहुदल आयो

खुरसी पर बैसल रमेश उचकि क' खिडकी बाटे बाहर देखैत अछि, पूर्व दिससँ एकटा हुलि एहि बाटे नारा लगबैत आबि रहल अछि । एहिमे युवक सभ बेसी छैक- इसकुल, कॉलेजक छौड़ा सभ ।

ई क्रम आइ कय दिनसँ चलि रहल छैक । देशक आन भाग जकां एत्तहु एहिना हुइलक- हुलि नव अनुहार नारा लगबैत घुमैत रहैत अछि- निरंकुश व्यवस्था, मुर्दाबाद !

रमेशके मोन होइ छै कनेक आर देखी । देखी जे एकटा अदम्य उत्साह कोनो लोकमे भरि गेल छै आ जथाभावी बजबाक, ककरो गाडि पढि मोनक भरांस निकालबाक, गुमसैत आकांक्षा एहि खुलापनमे कोना बहरा रहल छैक ।

मुदा, चोट्टे अनुहार नुकबैत खिडकीक ओत भ' जाइत अछि । बगलमे पलंग पर पत्नि, सभ सँ छोट बालक छोटु निसभेर सुतल अछि । लगैत छैक जँ ई नारावला सभ ओकरा चिन्हलकैक तँ अनेरे चिचिया उठि सकैछ- मुर्दाबाद, पंचायत व्यवस्था, मुर्दाबाद !

भ' सकैछ ई ओकर मोनक आतंक हुअए । देश भरिमे गत चैत 26 गतेक बहुदलीय व्यवस्थाक घोषणाक बाद जे उत्साहक लहरि आयल छलैक एहिमे 30 वर्षसँ देशमे शासन कयनिहार पंच लोकनि पतनुकान ल' लेने अछि । निवर्तमान श्रेष्ठ प्रधानमंत्रीकेँ फाँसी पर चढएबाक मांग काठमाण्डू सँ आइ कय दिनसँ भ' रहल छैक । ताहि डरेँ पंचलोकनि अपन-अपन घरमे त्रसित भेल पडल छथि पडोसिया माननीयक घर पर कय बेर हमलो भ' चुकल छनि । चार्ज छनि जे प्रतिकार समितिमे रहि बहुदलक विरोध कयलनि ।

तएँ पूर्व पंचकेँ देखिते-मंडलेचोर, मुर्दाबाद'क नारा आ मौका पबिते मुँहमे करिखा-चूना लगा केस काटि शहर भरिमे मुर्दाबादक नाराक संग घुमएनाइ मामूली बात भ' गेल छै ।

ताहूसँ पंचायतमे कनेको कहियो सम्बद्ध रहल लोक प्राण बचा रहल अछि । अपनाकेँ मण्डले कहएबाक अपराध सँ बच' चाहैए ।

रमेशकेँ मोन पडै छै किछु दशक पूर्वक इतिवृत्त । ई मण्डले सभक खूब चलती रहैक- व्यवस्थाबादी, सरकारबादी, खूब कमयलक- खूब खयलक । एकर पृष्ठभूमिबला लोक नीक पद-प्रतिष्ठा प्राप्त कयलक ।

सएह मण्डले आइ बहुदल विरोधी सभक पर्याय बनि गेल छै । जत्तकतहु पंच देखि पडैछ, छौडा सभ मण्डले' कहि दौडि पडैछ आ मुँह-हाथ भरकुस्सा क' रूई जकां धुनिक' राखि दैछ । किछु दिन भेलैए काठमाण्डुमे त' जाने सँ मारि देलकै भीड़ ।

आब तँ चोरो अपनाकेँ मण्डले चोर छी कह' लागल अछि । चलू सजाय जे भ' जाओ, जान तँ बांचत ।

रमेशक सेहो पछिला इतिहास नरमीक रहल छैक । से मानेमे आतंक त' छैहे देखिते किछुगोटे मुर्दाबादक नारा ने लगब' लगैक, घर- दुआरमे रोड़ा-खपटा ने बरसबैक ।

तएँ भीडकेँ लग अबैत देखि रमेश खिडकीक ओट भ' जाइत अछि । भीडसँ अपनाकेँ बचएबाक मोन किए होइ छै ?

जानकी चौक पर राजेश कतेक दृढतासँ बाजल रहैक- औजी, जे केओ पंचायतमे रहय से की सभ फायदेमे अछि । की ओकर शोषण नहि भेलैए ?

भीड़ जुटल लागल रहै तैयो ओ अपन धुनिमे बजैत गेलाह- हम मानै छी, पंचायतमे रहि बहुतो खूब पाइ लूटलक । कय-कय कित्ता जमीन, घर बनौलक । उच्च पद पौलक । मुदा, एहिमे किछु एहनो कार्यकर्त्ता अछि जे किछु नहि पाबि सकल, जकर खूब शोषण भेलैक । एकरा संगे ओकरा जोड़ने रहैक तएँ नहि तँ .... ।

रमेश आर किछु देर ओत्त रहि सुनैत मुदा तखने ओकरा बुझएलैक जे भीड़ बढ़िए रहल अछि आ ओ भीड़सँ अदकल अछि ।

मुदा, राजेशक गप्प जेना ओकरा मन-मस्तिष्कमे एकटा बिड़रो उठा देलकै-की ठीके ओहो सभ शोषित नहि अछि ?

अपनाकेँ हीन भावनासँ ग्रसित रखबाक बोझ जेना कनेक हल्लुक भेलैक । कनेक निचैनसँ शहर भरिमे घुमल । बरु काम नहि रहितो एक चक्कर नीक जकाँ घुमि गेल ।

कोनो टोका-टोकी नहि, कोनो प्रतिक्रिया नहि । हँ, पुरना पंच अथवा मण्डले सभ बजारसँ निपत्ता धरि जरूर रहय । तकलो पर दुर्लभ भ' गेल अछि ।

तैयो कखनो काल भीडकँ देखि रमेशक मोनमे थरथरी ध' लैत छैक । बदलल परिस्थिति आत्मबलकेँ कमजोर क' देने छैक । काल्हिए एकटा जुडो-कराँटे चैम्पियन खेलाड़ीकँ करिखा-चूना लगा बजार घुमौने रहैक । कतेक असहाय-अपमानक घोंट पीबैत बुझाइत रहै ओ । ओकरा आंखिमे प्रतिहिंसाक धधकैत अग्नि देखि भीतरसँ सिहरि गेल रहय- रमेश ।

मानवीय दृष्टिकोणसँ एहि काजकँ विरोध नहि कयल जा सकैछ । तुरत मण्डले अथवा प्रतिगामी तत्व कहाओत । जे एखुनका समयमे, सभसँ भरिगर गारि भ' गेल अछि ।

के बजौक की ? चोर, उचक्का, डाकू गामघर शहरमे आतंक मचौने अछि । जनजीवन असुरक्षित भ' गेल छैक । लोक अपन रक्षा अपने करैत अछि । जँ केओ एहनमे किछु कहि दैत । बेइज्जतियो क' दैक त' के सुनतै । तएँ घरमे बैसि जनभावनाक मुक्त अभिव्यक्तिकँ अनुभूतिए द्वारा बुझबाक प्रयास करी तँ बेजाय की । अनुभूतियो तँ मोनकँ ठंढा क' सकैछ ।

तैयो मोन मानैत नहि छैक रमेशकँ । होइ छै खिडकी पूरा खोलि दी आ ताही भीड महक एकटा हिस्सा अपनाकँ बना ली से किएक नहि भ' सकैत छैक । किएक बेर-बेर पुरना दृश्य आंखिक आगाँ ठाढ भ' मोनकँ ढील क' दैत छैक- ओ सोचैत अछि ।

पंचायत प्रति समर्पित रहने ओकरा भेटलै की । दू-दू बेर जिल्ला पंचायतमे जितल कँ हराओल गेलै । पचासी हजार टाकाक भुस्सा भ' गेल रहैक ।

बहुत लोक महल-दूमहल बनौलक । ओ बापक बनायल पुरना मोडलक मकानमे गुजर करैए । घरक खर्च खा समाज सेवा कैलक की छै ओकर उपलब्धि !

एकटा बुद्धिजीवी मात्र एकटा बुद्धिजिवी होइए । राजनीति तँ महज मजबुरी थिकै । सएह मजबूरी आइ कतेक बाध्य क' देने छैक रमेशकँ - घरके बाहर नाराबाजी सुनैत अछि, अदम्य उत्साह उल्लासक अनुभूति करैत अछि, मुदा ओइ चेतनाक समुद्रमे भसिया जएबाक इच्छा रहितो घरमे खुरसी पर पडल बैसल अछि । की जीवन भरिक इएह छै ओकर कमाई !

रमेशक्कँ लगैत छैक बेसीकाल ओ कोठरीमे बैसि नहि सकत । किएक बैसत घर मे ? हेराफेरी क' बनाओल दू-मंजिला-तीमंजीला कँ निहारबा लेल, सामुदायिक केन्द्रक निजी टी.भी. कँ देखबा लेल, अथवा झूठ-फरेब क' जम्मा कयल रूपैयासँ कीनल गहना लदने घरबालीक देहयष्टि निहारबा लेल, की छै ओकरा घरमे ?

एक्कोटा एहन वस्तु जे उपरबाइली परि लागल हो । किए रही घरमे ? निरपराधी हयबाक हिम्मत त' लाबही पड़तै ।

मोन जेना छटपटा जाइत छैक । खुरसीसँ उठि कपड़ा बदलैत अछि । मोनकँ सक्कत करैत अछि- देखल जएतै, आइ भीडक संगे ओहो चलत ।

एक बेर घरसँ बाहर होएबासँ पूर्व खिड़की द' भीड़क अवस्था देख चाहैत अछि- कत्त धरि गेल हयत । तखने खूब जोड़सँ हल्ला होइत छैक- लगै छै जेना भीड़ बताह भ' चिचिआ रहल हो - मण्डले चोर मुर्दावाद ! आयो, आयो- बहुदल आयो !

अनुमान होइ छै रमेशकँ -हो न हो कोनो पुरना पंच भीडकँ हाथ लागि गेल छै । आ.... एकर आगाँक कल्पना कए रमेशक सौंसे देह सिहरि जाइत छैक ।

ओकर नजरि पलंग पर सूतल गहना विहिन पत्नी आ छोटू पर पडैत छैक । ठामहि खुरसी पर जेना केओ कान्ह जाँति दैत छैक । कानमे दुर होइत शब्द अहुरिया काटि रहल छैक- आयो, आयो बुहदल आयो !!

■

उड़ान

गौशालाक धर्मशाला ओहुना यात्रीसभसँ भरल रहैत अछि । जँ भारतीय क्षेत्रक बसक बस दर्शनार्थीसभ एत्तय अबैत अछि तँ आर एहिमे रहबाक ठाम नहि रहैछ । नयाँभवन बनौलक अछि तैयो कोठरीक अभाव ।

नजरि खिरबैत छी तँ जनकपुरक कए गोटे देखि पडैत अछि । बरोबरि लोक एत्त' अबैत रहैत अछि । ताहुमे जहियासँ विदेशमे कमाए जाएकेँ चक्कर चलल छैक-गौशालाक सभ लॉज, धर्मशाला भरल रहैत अछि । किछु गोटे तँ माससँ उपर भ' गेलै, एत्त बैसल अछि ।

हमहुँ ककरो खोजि रहल छी । कहल गेल छल एम्हरहि कतहु टिकल अछि कहाँदन । से काल्हि बारह बजेसँ ताकि रहल छी नजरिपर अभरि नहि रहल अछि । ओहुना एहि गौशाला क्षेत्रमे धनुषा, सिरहा, जानकी आ आब मिथिलाक नामपर लॉजसभ खोलि लेल गेल अछि । सभ अरबिया सभकेँ फसएबाक लेल । चलितो छैक प्राय: तएँ ने टीकि पौलक अछि ।

हँ, उएह अजयक काउण्टरपर ठाढ बुझि पड़ैत अछि छौंड़ा । भिनसर आठक अमल होइत हएतैक । बाप कहने रहैक बुझि-सुझि देबाक लेल । उड़ान भेलै कि नहि भेलै ।

रजिन्दर कापर । गत वर्षसं सउदी जएबा लेल फिरिशान अछि । एहिबेर तेसर एजेन्ट बदलि चुकल अछि । पहिल एजेन्ट 10 हजार टका ल'क' पार भ' गेलै । हारि'क दोसर पासपोर्ट बनौलक आ दोसर एजेन्टकेँ ठीक कएलक । गामेक एकगोट बीचमे पड़ल रहैक । चिन्हा-परिची रहैक तएँ सभकेँ विश्वास भेलेक । राजेन्दरो ओकरे पासपोर्ट द' देलकै ।

सभकेँ बसमे भरिक' काठमाण्डू लओने रहए एजेन्ट । 15 गोटे रहैक । रजिन्दरसँ असी हजार टका उड़ा लेने रहैक दुसधबा । आनोसँ दस-बीस हजार । ओहु बेरमे हम

काठमाण्डूमे रही । सभ तमाशा देखने रहिऐक । एक दिन तँ हवाई फिल्ड धरि ल' गेलै सभकेँ । लिअ-आइ त' उड़ान भ' गेलै । सभक अनुहारपर सन्तोषक अनुभूति रहैक ।

आहिरे बा साँझमे तं सभ घुरि अएलै । अभिभावकसभ दंग रहि गेल । बिदा भ' चलि गेल बाल-बच्चा केँ फेरस' लॉजमे लौटैत देखि सभ हुमड़ल एजेन्ट दिश । ओ हाथ जोडि लेने रहैक-आइ कागजमे स्टाम्प नहि लागल छलै । शुक्र-शनिकेँ अवश्य उड़ि जएतै । ओइ दिन बुध रहैक । दू-तीन दिनक बात छै- देखिए लेल जाए । अभिभावक सभ शांत भेल रहए ।

हम तँ चलि गेल रही जनकपुर । बादमे पता चलल ओकरासभकेँ उड़ान नहिए भेलैक । सभ निराश भ' एजेन्टकेँ गारि पढैत गाम घुरि गेल रहए ।

आइ ई तेसर खेप छैक । नयाँ एजेन्ट भेटल छैक साहुजी । अहिबेर कहांदन पक्का छैक । गौशाला चौककेँ पार करैत हम अजयक काउन्टर लग पहुँचैत छी । ताबत ओ छौड़ा कतहु चलि गेल रहैछ । बितलहा क्षणक स्मरणमे एना ने हेरा गेल रहिऐ, छौंडा दिस डेग बढएबाक सुधिए ने रहल आब.... ।

अजयसँ पुछैत छिऐ, ओ काउन्टरपर हमरा देखितहि उठिक' ठाढ होइत कहैत अछि- तुरते कतहु निकलल अछि । परसूकेँ फलाइट छै, खुश अछि ।

खुशी हएब अस्वाभाविक नहि । पांच रूपैए सैकड़ा ब्याजपर अस्सी हजार उठाक' एक वर्ष राखय । सोझेँ डयोढा भ' गेल छैक । आय छैक नहि, खेते-पथार बेचिक' साधब' पड़तै । तएँ बाप सोचने रहैक जं एतेक तँ किछु आर भ' जाओ । आ फेर नया महाजन खोजि बेटा पठौलक अछि । ज एहुबेर बौआ हुसल कि बाप अड़रा क' खसतनि । तएँ कनेक बेसिए खोज-खबरि ।

अजयक काउन्टरक अगाँ ठाढ भ' नजरि खिरबैत छी । हमरा नहि अभरैत अछि । हम अजयके कहि दैत छिऐक कतहु आबए तँ कहि देबैक सर खोजैत छथि- रूममे आबिक' भेट लेत ।

अजय स्वीकृतिमे माथ डोलबैत अछि । हम आगाँ बढि जाइत छी । भोरका समयमे गौशालामे भीड़-भाड़ कमे छैक । जे छैक ताहिमे किछु पशुपति दर्शनमे जाइत-अबैत किछु मर्निगंवाकसँ घुरैत । किछु नाइट बससँ आएल थाकल-ठेहिआएल । लॉजदिश नजरि खिरबैत बढैत । बससँ उतरैतमे अधिकांश अरवियेसभ बुझाइत अछि ।

हमरा समयपर प्रज्ञा-प्रतिष्ठान पहुंचबाक रहैत अछि । जलखै करैत माइक्रोमे बैसि जाइत छी । पांच बजे अपरान्ह जखन घुरैत छी तं अजयक काउन्टरपर पहुँचैत छी । अजय कतहु गेल रहैछ । हम कनेक पूर्व दिश सहारा गेष्ट हाउस लग टहलि पहुँचैत छी । कतहु

उड़ानक प्रतीक्षावला अनुहार खुसुर-फुसुर करैत देखि पड़ैत अछि । किछुकेँ देहपर मुस्की छैक, उमंग छैक तँ किछु गोटे हताश-हताशसन देखि पड़ैत अछि । हमरा बुझबामे कनेको भांगठ नहि रहैत अछि- मुस्की कन्फर्म टीकटक छैक, हताशमे एजेन्टक ठकैतीमे पड़ल आइ-कल्हिबला सभक अछि ।

सरकार विदेशमे पठाबबलाक लेल कड़ा नियमक घोषणा करैत अछि । तैयो एजेन्टसभ लोकसभकेँ भ्रमजालमे फंसा ठकिए रहल छैक । गामक झाजीक बेटा पांचे मासमे कतारसँ घुरि आएल । कहाँदन कम्पनीए फेल भ' गलै । सभकेँ पठा देलकै । कर्जा सधब मुश्किल छैक । बेकार भ' गेल से फूट ।

एजेन्टसभ फारम भरबैत काल काज किछु कहैछ, तलब भत्ता किछु कहैछ, मुदा कतार गेलापर आने काजमे लगा देल जाइछ आ पाइयो कम्मे दैत छैक । कतेक तँ घीघरी काटिक' तीन वर्ष पुरबैत अछि किछु टीकटक पाइ जुटा घर घुरि जाइत अछि । ठकैती, झूठ आ दलालीसँ भरल उड़ान कराब'बला धन्धा सदैव अपजसिए रहल अछि । तैयो एहिमे लोक लागल अछि । आब तँ नेतासभ सेहो एहिमे लागिगेल अछि । अपन प्रभावक प्रयोग पाइ कमएबामे लगबैत अछि । एक उड़ानमे दसहजार सँ पच्चीस हजार धरिक चोखे नाफा । सुतरि गेल तँ वाह-वाह आ नहि सुतरल त' लात- जुत्ता !

दूर आब बातो-फैज्जतिकेँ कोनो रोष नहि रखैत अछि एजेन्टसभ । पाइकेँ आगाँ बेइज्जति आ गारि कथीक । सिरहाक दुसधबाके देखिऐक- गौशालाक रमाइलो सांझ मे जा हाफ मगा क' अनेरे झूम' लगैत आ सिकरेट मँगा क' झुठे छौँड़ी परिचारिकासभकेँ सिकरेट लेसि देबाक लेल आदेश दैत । लड़कीसभ व्यवसायक बाध्यतावश लाइटर आनि कारी-कारी मोट ठोडमे दाबल सिकरेटकेँ लेसबाक उपक्रम करैत ।

एकबेर ओकरेसंगे दोहरी सांझक आनन्द उठएबालेल ओहि रेस्टुरेन्टमे हम पैसल रही। कनेक पिबैत आ बेसी मुँह बनबैत दुसधवाकेँ ओहि रेस्टुरेन्टक छौड़ीसभ चिन्हैक । ओकरासभकेँ बुझल रहैक- ओ छौड़ीकेँ सान्निध्य पएबाक हेतु बेर-बेर सिकरेट मुँहमे धरत आ ओहि छौड़ी सभसँ लेसबाक लेल कहत । तएँ ओकरा देखितहि छौड़ीसभ मुँह दाबि हँसल रहए ।' ..... ल' आयो मोरा....।' हमरा बुझल छल-ई सभ मौज मस्ती रजिन्दर कापर सन्-सन् उड़ानक आकांक्षीसभस पाइ ठकि क' भ' रहल छलैक । जँ उड़ान नहि भेलैक तँ.... । आ सएह भेलै-चारि पाँच लाख टका ल' क' भागि गेल छैक । एक वर्षपर कर-कुटुमक बलपर ओकरा पकड़ल गेल आ कहांदन कागज बना देने छैक । हम फेर बहकि गेल छी । सहारा होटलक आगाँ सोचमे मगन भेल हमरा जनकपुरक चौधरी टोँक दैत अछि- की, कहिया अएलहुँ ?

हमर तंद्रा भंग भ' जाइत अछि । आत्मीयतापूर्वक कहैत छिऐन्हि- काल्हिए बारह

बजे अएलहु- अहाँ ? चौधरीजीक अनुहार जेना मलिन भ' गेलन्हि- की कहु हम त' एक माससँ छी ।

'एकमाससँ' हम आश्चर्य व्यक्त करैत छी ।

'हँ, यौ । एक मास भ' गेल । सार भागल फिरैत अछि । पाइ ठकि लेने अछि, मुदा हमर भतिजाकेँ उडानक दिने ने तय करैत अछि ।

त' इहो उड़ानेक मारल छथि हम गुनधुन कर' लगैत छी, लोक एतेक ठकाइत अछि । तैयो किए एकर पाछाँ बेहाल रहैत अछि ?

अरबसँ मुट्ठाक मुट्ठा जखनि मनीट्रान्सफर, बैंक आदिसँ गार्जियनसँ बेटा-भतिजा-पतिक पठाओल पाइ छोड़ा क' घर लबैत अछि तँ घरमे अथवा गाममे निठल्ला बैसल युवकसभकेँ जीहसँ पानि खस' लगैत छैक । बाप-माएक कंठपर सवार भ' उड़ानक लेल पाइ मँगैत छैक आ जोगाड़ लगा एजेन्टक पाछाँ दौगैत अछि । उड़ि गेल त' ठीक, चलि जाइत अछि, नहि गेने विलटैत अछि । ई दिल्लीक लड्डु जे खाए सेहो पछताए, जे नहि खाए से आर पछताए ।

हमरा गुनधुनमे देखि चौधरी टहलि जाइत अछि । हम चारूकात तकैत छिऐन्हि, नहि देखि पड़ैछ । हमरा रहए जँ किछु बात करी हुनकासँ । मुदा, तावत ओ आँखिक सोझाँस' पर भ' गेल छलाह । हं, एहि खोजबीनमे हमर नजरि लगले पूर्व कातक होटलक बगलमे चुपचाप एकटक किछु निहारैत रजिन्दर पर पड़ैत अछि ।

एह भेटल छौंडा । अनेरे हम अपस्याँत रही । हुलसिक' ओकरादिस बढैत छी मुदा, रजिन्दरक नजरि जाहि वस्तुके एकटक देखि रहल होइछ ताहि दिस नजरि गेने हमहुँ ठमकि जाइत छी । प्राय: एखने कतार एयरवेजसँ कोनो अरबिया उतरल अछि आ टैक्सीसँ अम्बार लागल समानकेँ उघि रहल अछि होटलक काउन्टर दिस । बड़का बेग, 24 इन्चक रंगीन टीभी, भीसीआर, कैमरा, साउण्ड सिस्टम कथी-कथी ।

ढोआइत समानकेँ एकटक नजरिसँ देखिते की कल्पना करैत हएत, अनुमान करब हमरा कठिन नहि होइत अछि । पहिलुका मालीकक कर्जा, दोसरक असी-हजारक कर्जा आ एहि बेरूका पन्चानबे हजारक कर्जा- सभ जहिआ ओ कतार सँ घुरल तँ सधा त' देबे करतै, घरमे सुख-सुविधाक सभ सामग्री लाओत ..... । खाली एकबेर, मात्र एजेन्टक बोली मात्र साँच भ' जाओ आ ओ कतारदिश उड़ान भरि सकओ........??

हम ओकर कल्पनामे व्यवधान उपस्थित करब उचित नहि बुझैत छी । चुपचाप ओकर तन्द्रा भंग हएबाक प्रतीक्षा कर' लगैत छी ।

■

सहादत

आइ सौसे गाममे जेना हवा-बिहाड़ि पैसि गेल छैक । जकरा देखु सएह बाजारपर भागल जाइत । कैक बेर लोक पुछबो करैक 'हौ, की भेलैए, कत्त भागल जा रहल छह।' किएक केओ कोनो जबाब दितै । सभ जेना हवा भेल दौगैत-हकासल-पिआसल ।

लोक अनुमान करैक - जरूर कोनो भारी बात भऽ गेल छैक । नहि त' सौसे गामक लोक बजार पर किए उनटैत ।

शहर गेल बेटाक लेल आंटा सनैत जयनगरवाली सेहो सुनलक ई शोर-गुल । एक मन भेलै-दुर्र, आब एहिना सब दिन किछु ने किछु होइते रहै छै । नेता सभ राज छिनलकै तहिआसँ कहाँ कहियो चैन छै । फेर होतै कोनो आन्दोलन....... । होउक ग' । बौआ अबिते होतै-भुखाएल गेल रहै । दू-चारिटा रोटी बनाइए लैत छी....... ।

ओ फेरसँ आँच पजार'मे आ आंटा गूंथयमे लागि जाइत अछि । मनके गरम होइत ताबा पर ध्यान केन्द्रित करैत अछि आ आंटाक लोइया बना हाथसँ पसारैत अछि । एक दुइए थाप मारने रहए कि गामबालीक आवाज सुनि पड़ैछै- 'हे, जयनगरवाली । घरमे छी । बाजार पर लोक करमान लागल छै । चलह ने.... ।'

जयनगरवाली अनठाब' चाहैत अछि । बड-बड दुखबला समाचार आ बस्तु ओ सुनलक आ देखलक अछि एहि बीच । मधेशी सभ आन्दोलनमे रहैक त' भटाभट लोक मारल जाइक, सौंसे गाम-नगर उनटि गेल रहै सड़कपर । पहडिया अत्याचारक विरुद्धमे .....हक मंगैत आ मारल जाइत....... ।

जयनगरवालीक देह सिहरि जाइत छैक मोन पड़िते-बाजारमे रही, केनाक' एक

गोटेके ठामे राखि देलकै मोचरुआ पुलिस........ । बजार बन्न होब' लगलै- भागम-भाग भऽ गेल रहै । हमहुं लतेपते गाम दिस पड़ायल रही .... ।

'हे, की भेलौ, जएब' कि नहि ।' गामवालीक आवाज पर जखन तंद्रा भंग भेलै त' ताबा दिस नजरि गेलै-लाल भऽ गेल रहै । नै एकरा ठढ़ाब' पड़तै, नहि तँ रोटीए जड़ि जएतै ने । ओ आँचकेँ कनेक बाहर दिस घीचि देलक आ तखन घरक मुँहथरि पर आबि गामवालीक हाक देलक - 'जाथु हम एखनु नै आएब.......कनिक काजमे छी ।'

जयनगरवाली वास्तवमे जनकपुरक ओ दृश्य मोन पारिते भीतरसँ डेरा गेल छलीह । सभक बच्चा अपने बच्चा सन किने । केना रक्षसबा सभ गोलीसँ उड़ा देने रहैक..... । नहि, हम बाजार पर नहि जाएब । पता नहि, कोन दुर्घटना भ' गेलै, सब ओम्हरे दौगैत छैक । आब अपन चश्मासँ कोनो दुर्घटना देखक इच्छा नहि रहल..... ।

"त' ठीक छै, हम चलै छी" - गामवालीक डेग बाजार दिस तेजीसँ बढ़ैत छैक । जयनगरबाली चुल्ही तर घुरि अबैत अछि । आब ताबा ठंडा गेल छै । होइछै जे लोइया नीक जकां पसारिक' ताबापर ठोकि दैक कि फेर जनकपुरक दृश्य मोनमे अहुरिया काट' लगैत छैक ।...... ओकरो बौआ आइ जनकपुर गेल छै नागरिकता बनब' । कहने रहिऐ मटियातेल लेने आब' ला । फेर कहांदन काल्हि-परसूसँ हड़ताल, बन्न होतै । डिबियो लेस'लेल तेल तऽ चाही...... । से दू लिटरा गैलेन पठौने छी पता नै बाउ कत' अछि....... । जयनगरवालीक मन अहुरिया काट लगलै ।

किछु सोचि जयनगरवालीक देह सिहरि गेलै । आइयो कहाँदन रस्ता जाम छै, महा बबाल छै । कतौ जाममे नहि पड़ि गेल हो बच्चा..... । आ बजारपरकँ भीड़....... । नहि, जाही पड़तै ओकरा ।

ओ तेजीसँ एक लोटा पानि ढारि आंच बुझौलक । हाथसँ पकड़ि ताबाकँ पाछाँ दिस खसौलक आ पसारल आंटाकँ थारिएमे झाँपि जल्दीसँ केबाड़ लगा बजार दिस झटकारलक ।

बजारपर ठीके करमान लागल लोक रहैक । लगैक जेना सौंसे गामक लोक जम्मा होइक । ओ जखन लगमे गेल तऽ देखलक माथमे ललका कपड़ा बन्हने किछु युवक सभ चारू भरसँ लोककेँ गोलिआक' कतिऔने बीचमे किछु रखने अछि ।

जयनगरबालीक छाती जोरसँ धड़कए लगलैक । एकमात्र बेटाक चिन्ता आर

सतब' लागल रहै । बजारपर पहुँचिते बहुतो गोटे शोकाकुल नजरिसँ जयनगरवाली दिस देखलक । मुँहसँ बोली तऽ नहि फूटल रहै ककरो, मुदा जयनगरवालीक अनुभवी आँखि लोकक चित्कार करैत आँखिक भाषा पढ़बामे बेसी समय नहि लगएलकै । ओकरा बुझएलै जेना कोनो गंभीर घटना भ' गेलैए...... ।.....की ? से देखबा लेल ओ गोलकेँ चीरैत आगाँ बढ़ल । जखन गोलकेँ चीड़ि खुलाभागमे आएल त' एकटा लाश देखलक जकरा लाल कपड़ा आ फूलसँ झांपल गेल रहै । ओ मुँह दिस गौरसँ देखलक–बापरे, ई त' ओकरे बेटा छैक । ओकर माथ चक्कर काटऽ लगलैक आ जाम भ' गेलै सभ तन्तु । ओ अड़राक' लाश पर खड़ि पड़ल आ प्राय: बेहोश भ' गेल । मुदा, ओ खसैत-खसैत सुनने रहए, कंओ बाजल रहै – पहड़िआ सभक जिद्द खा गेलै एकटा आर मधेशी सपूतकेँ ।



विदागरी

कोना दुइए चारि दिनमे अजमरपट्टी वाली कनियाँ फदक' लागल रहैक – ई बहुतोकेँ पचि नहि रहल छैक । उमेरो त' ततेक नहिए जे बात बूझितए आ परिवेश अनुकूल अपनाकेँ बनयबा लेल सभसँ घोल-फचक्का करितय । डेढ़ दशकसँ किछुए ऊपर, हँ-देह दशा भरल जरुर रहनि जाहिसँ बहुतोकेँ भ्रम भ' जा सकैत छलैक हुनक प्रौढ़ताकेँ । मुदा सत्य बात तँ ई छलै– ओ ठीके नेना छलीह, देव-दुनियाँक छओ पाँचसँ दूर ।

आ तेँ किछु पुछनि, ओ टन द' जवाब द' देथि । ओना ई नीक लक्षण मानल जाइत छैक । लजकोटरि आ मुँहधुनुआँ लोक समाजक हेतु बड कठिनाह होइत अछि । से ओ सहज छलीह ।

मुदा, एक्के बात घरक सभ गोटेकेँ अनसोहाँत लगनि जे अपन घरबलासँ सभक सामने फट-फट बाज'मे ओ कनेको संकोच नहि करैत छलीह । 'औजी, लाजो-लेहाज कोनो चीज होइत छैक ने– बडका काका कैक बेर अपन टिप्पणी सुना चुकल छलाह । मुदा, नया लोक कतेक मोजर देतनि । आब युग बदलि गेलै... ।

कक्का कहथि– "बुझलिऐ, युग बदलि गेलै । मुदा, मर्यादाक खिआल तँ करहि पड़तै ने । जहिया हमरा सभकेँ बिआह भेल तँ घरमे सुत' जाएक लेल रातिक इन्तजार करी । सभ गोटे खाक' सुति जाय तँ चोराकऽ घरबाली लग जाइ । फटको एनाक' खोली जेना कोनो चोर चोरी करबा लेल अनकर घरमे पैसैत हो । आ अन्हरोखे उठि दलान पर जा अनठा क' पड़ि रही । ई कोनो हमरा सभक कमजोरी रहय । नहि, अपन मान, मर्यादा आ संस्कारक प्रति आदर रहय । हम सभ वैह चाहै छी, एखनो युवा सभसँ । जँ ई बात राखल जाइ तँ बेजाये की ?"

ठीके कक्काक तर्ककेँ काटब कठिन छैक । मुदा, आजुक समयमे तकरमे तकर

पूरे के पूरा पालन करब सेहो मुश्किल त' छैहे । ई बात अजमरपट्टी वाली कनियाँक घरक लोक बुझथि तखन ने । हुनका तँ साँय संगे ठस-ठस बात करब सोझे छातीमे सूइ जकाँ भोकनि । कैक बेर इशारासँ आदति सुधार करबाक हेतु कहियो चुकल रहथि, मुदा कनियाँक लेखेँ धन सन ।

टी.भी. खोलि दुनू साँय-बहु एक्के ठाम बैसि जाय आ हां हां-हिही, गप-सप शुरु क' दिअए । लोक जरै रहओ..... ।

पहिलकी कनियाँकेँ बाप-माय, भाइ-बहिन, गाम-समाज खूबे मोन पड़ैत छैक । अजमरपट्टी बालीक सासु गामक आन पुतहुसँ तुलना करथि अपन कनियाँक - ई त' एक्को बेर अपन बाप-मायके नाम तक नहि लैत अछि, पता नहि कथीक बनल हय ई.... ।' कनियाक सासुओ कखनो काल बुदबुदाए लगैत अछि । कनियाँ तकरो कोनो मोजर नहि दैत अछि ।

एक दिन तखन हद भ' गेलै जखन दुरापर ओकर बाप आयल रहै विदागरी मांग' आ ओ ओहिना घरमे बैसल टी.भी. देखैत घरबला संगे मस्तीमे रहय । फदका करैत-हँसैत ।

आंगनक महिला सभ तँ अजगुत जेना देखैत हो -अचंभित भेल सन । एक्को ठोप नोर नहि, विलाप नहि, कोनो गम नहि । ने भेटबाक इच्छा, ने घरमे भेट कर' औताह तकर कोनो प्रतीक्षा ।

'अजीब लड़की अछि -' लड़िकाक पीसी-छक्क पड़ल छलीह - 'ने कोनो बात बुझैत अछि, ने कोनो खानदानी चालि-ढालि देखबैत अछि । एतेक उदंड किए........ लगैए भाइ, गलत काज तँ ने क' लेलनि' । संभवत: दीदीक सोच ठीको भ' सकैत छलैक आ सौंसे घरक हेतु एकटा चिन्ताक विषय भ' जइतै जँ छोटकी बहिन सभ बातकेँ समेटि आक्रोशमे जा कनियाँकेँ लथाड़ने नहि रहितथि आ कनियाँक उतारा जँ सुनल नहि गेल रहितैक ।

अपन घरबलाक संग, ननदिक संग अथवा घरक नेना भुटकाक संग हंसैत-बजैत रहनिहारि कनियाँ तुरते गंभीर भ' गेल छलीह आ दीदी दिस ताकि बजलीह - 'दीदी, हमरा एत्त बड़ नीक लगैत अछि । खुलल वातावरण, सोझरायल सोचक लोक सभ छथि । हम एतेक खुजल छी तँ एखन धरि केओ रोकलक नहि, जे केओ किछु कहबो कयलनि, समझायबाक हेतु । मुदा, हमरा अपन घरमे, गाममे रहब दुर्लभ भ' गेल छल । हम कनेक खुजल विचारक लोक छी । स्कूलमे पढ़ैत छी - संगी-साथी सभ छथि । बाजू तँ फलाँकेँ बेटी त' उदंड भ' गेलै । सभसँ बजैत छैक' - कहि दसटा बात बजैत अछि । बाट-घाट चलब दुर्लभ भ' गेल अछि ।

कनियाँ हिचुक' लागल छलीह । बहिन हुनका चुप रहबाक हेतु आग्रह करैत छथि । ओ सहानुभूति पाबि आर जोरसँ हिचुक' लगैत छथि । ओहने अवस्थामे अपन बात जारी रखैत छथि - 'घरमे माय सेहो दिन-राति उछन्नर दैत रहैत छथि - ई छौड़ी त' किदन भ' गेल । भरि दिन छौड़ा सभ संगे घुमैत अछि, ठस-ठस बजैत अछि । आब एकरा विआह क' देब पड़तै । तखने ई शांत होत.... । आदि-आदि बहुतो बात सभ....।'

कनेक कालक चुप्पीक बाद ओ आगां बजैत अछि - 'से दीदी हम घरसँ आ गाम दुनू दिससँ प्रताड़ल जाइत छलहुँ । मोनक सभ इच्छा, आकांक्षा गुमसि गेल भितरे-भितर । बाप-माय बियाह क' देलनि, पढ़ाइ छोड़ा देलनि । मनसँ भारी दुख-संताप ल' एत्त अयलहुँ । डेरायल रही कतौ एतहु...... एतहु तँ तेहने नहि हयत ।'

फेर हिचुक' लागल छलीह कनियाँ जोरसँ । आवाज गलेमे अवरुद्ध भ' गेल रहैक । बहिन थोड़थम्ह कयलकनि तँ किछु शांत भेलीह । बहिनकेँ हिम्मत नहि होइन जे हुनका किछु कहि पाबथि ।

कनियाँ फेर बाज' लगलीह - 'हमरा अहाँ सभक संगति, एहि घरक व्यवहार सभ एतेक पसिन पड़ल अछि जे हम अपनो घरसँ बेसी खुलिक' रहि सकै छी । बाबू, माय, भाइजी, छोटकी कनियाँ, बड़की दीदी-सभ जेना हमरा पाल-पाल क' पौलनि अछि । जे स्नेह भेटल ओ गाम बिसरा देलक, लोकक कहब आ मायक कर्कश व्यवहार सभ बिसरि गेल छी ।'

ओ भावुक होइत बजलीह - 'हमरा बुझल अछि– बाहर हमर बाबू विदागरी लेल आयल छथि । संभवत: पहिल बेर सम्मत नहि देखल जाइछ । बाबूजी विदो क' देताह, मुदा हमर ई खुशी आ स्वतंत्रता हमरा नहि भेटत दीदी......... ।

बहिन स्तब्ध । कनियाँक चुलबुलाहट पर तरे तर कुलबुलाइत आंगनक सभ सदस्य हतप्रभ । सभ सुनलकै कनियाँक व्यथा । ओतबे कालमे सभकेँ लगलैक जे कनियाँ दू-तीन मास पूर्व मात्रे नहि, कतेको वर्षसँ ओहि आंगनमे आयलि बैसल छथि आ घरक सभसँ प्रौढ़ छथि ओ ।

आंगनमे सभकेँ भेलैक जे ओ सभ सामूहिक रूपेँ कनियाँकेँ विदा नहि करबाक लेल भाइजीकेँ कहनि । ई दोसर बात छलैक जे सामाजिक परम्परा अनुसार नव कनियाँकेँ पहिल सम्मत नहि देखल जयबाक कारणेँ ओ ई विदागरी रोकताह से विश्वास किनको ने छलनि ।

■

जय मधेश

'बाबूजी, समय भऽ गेलै, जाहु पड़तै' - जेठकाक ई आवाज ओ कएक बेर सुनि चुकल अछि। मुदा, जेना अनसुन क' देने होइक। साँच बात ई छै - आइ माघ 2 गते अर्थात् पेन्शन पएबाक दिन छै। ओ जखनसँ बैंकमे एक घंटा पाँतिमे लागि अपन पैंतीस सय टका पेंशनक लओलक अछि, तकरा खर्च करबाक कतेको योजना पहिनही बना चुकल छल। मुदा, घर अबिते जेठका अर्थात् अशोककेँ फार्म भरबाले' पाँच सयटका मांगब ओकरा अखड़ि गेल। ओ लगक कुरसीकेँ घीचि ओहिपर बैसि गेल - गुम्म।

अहुरिया कटैत अशोककेँ ओ देखैत रहल अछि से बात नहि। ई ओकर चारिम बेर फार्म भराइ छैक। कतेक अरमानसँ बी.ए. करौलक अपन बेटाकेँ। जिनगी भरि अपने मास्टरी करैत रहल। समाजमे सभसँ दबिए क' जीअल, जीअ' चाहलक। बेटा दबंग रहैक। ओ किछु एहन बन' चाहय जाहिसँ लोक ओकरा सम्मान करैक। आ ओहो समाजक लेल किछु क' सकए।

अशोक कतेक ठाम दौगल रहय। नहि कोनो गुंजायश भेलै त' निश्चय कएलक- ओ आब सिपाही बनत। ताही निर्णयक कारणेँ गत तीन बेरसँ स.इ. के परीक्षा हेतु आएल अछि। स.ई. माने सब इन्सपेक्टर। एक-एक, डेढ़-डेढ़ सय पद खाली होइछै। बहुतो मधेशी परीक्षा दैत अछि, मुदा पास होइत छै सभ पहाड़ी। अशोके जकाँ आरो लोक लोहछि जाइत अछि। आ ई बात मास्टर अयोधी नहि बुझैत अछि से बात नहि। ओकरा ई विभेद सभ बुझल छै। तैयो अपन नौकरीक तीस वर्ष नेपालक पहाड़-कन्दराबला जिल्लामे गमौलक। मधेशमे लाख कोशिश करए-बदली नै भेलै। एक मन होइ नोकरी छोड़ि दिअए, मुदा फेर परिवार, बाल-बच्चा मोन पड़ै आ हड्डी घोंटि क' रक्षसबा सभकेँ तरमे बहैत रहल- मास्टर अयोधी यादब खुरसीपर बैसल अपन अतीतमे घुरिआ गेल छल।

'बाबुजी, की भेलै ? - कनेक रोषसँ अशोक टोकलकै पेंशन याप्ता अपना बापकेँ जकर माथपरक उज्जर केस आ अनुहारपर उतरि आयल थकान ओकरो कएक बेर मथैत रहैत छैक। कहाँ ओ कमाक' बाप-मायकेँ खुआबितै, आ कत्त बापकेँ तंग करैत आबि रहल अछि। मुदा, ई अन्तिम बेर छै, नहि भेलै त' देखल जएतै-अशोक अपना मोनेमोन किछु संकल्प लैत अछि।

अयोधी मास्टरकेँ बुझल छै - बेटाक ई चारिम बेर फार्म भराइ छैक। एहु बेर पास हयबे करत तकर कोनो गारण्टी नहि छैक। ओत' अपन संचयकोषक पचास-साठि हजार टको घूस देबा टोल पछिला बेर काठमाण्डू गेल रहय। सूत्रो भिड़एलक, मुदा ओकर बेटा छंटा गेलै। आ आब जँ नहि भेलै त ओ किछु अनसोहांतो निर्णय क' सकैत अछि...।

एहि बेर फेर ओ जिद कएलक अछि। मोन त' नहि छलै ओकरा जे ओ फारम भरए मुदा गत वर्ष माघमे उठल मधेश आन्दोलनमे ओकर उपस्थिति मोनकेँ घबरा देने रहैक अयोधीकेँ। बापरे पहिल बेर सौंसे मधेश जागि गेल रहय। बच्चा-बच्चा सड़कपर उतरि अपन अधिकार मांगऽ लागल रहैक। पुलिस..... जुलूस.... लाठी चार्ज, आँसू गैस आ गोली प्रहार। मधेशक चालिससँ उपर युवक शहीद भ' गेल रहैक।

अयोधी हाकरोस क' कानल रहय भरि राति - एकटा बेटा आ ओहो राति भरि गायब। पता नहि की भेल हयतै। कान लगाक' एफ.एम. सुनय। नहि जानि गोलीक शिकार भेलमे कतहु चिन्हल नाम नहि कहैक।

सिहरि जायल करए अयोधी। पहाड़मे मास्टरी करैत अयोधी तहिया निश्चय कएने रहय -उमेरक हिसाबसँ तँ एखन दू चारि वर्ष ओकर नोकरी छलैक। मुदा, सेवाक हिसाबेँ दुइए मासक बाद ओ रिटायर भ' रहल छल। ल' लेत ग' ओ रिटायरमेंट आ घरे पर रहि बेटाकेँ देखभाल करत।

आन्दोलनक भाषण ओ बड़ मनोयोगसँ सुनै-दू सय अड़तीस वर्षसँ मधेशीकेँ शोषण करैत आबि रहल पहाड़ी शासक सभकेँ आब स्वतन्त्र, स्वायत्त मधेश देब पड़तै। एक मधेश एक प्रदेश। राज्यमे जनसंख्याकेँ आधार पर समान प्रतिनिधित्व.... । आर बहुत रास वात सभ।

अयोधी कएकटा आलेखो पढ़ने छल ताहि बीच-एक करोड़सँ ऊपर मधेशी आ राज्यमे हिस्सा 5-7 प्रतिशत। से आन्दोलनकारी सभ आधा-आधी मंगैत अछि तँ सार सभकेँ फटै छनि - अयोधी कएक बेर महशूस करैत छल।

आइ एक वर्षभऽ गेलै। फेरसँ लोक सगबगाय लागल अछि। बड़ बात कएने रहय - ई करब त ऊ करब। किछु नै कएलक मधेशी सभकेँ। तएँ फेरसँ आन्दोलन हयबाक

तैयारी भ' रहल छै । जुलुश नीकलि रहल छैक । अइबेर तँ निर्णायककेँ हयतै – जेना नेता सभ कहै छथि ।

'गिरिजा सरकार-इस्तिफा दे । मधेश विरोधी – मुर्दाबाद' – दूर कतौ जुलूसक संग नाराक आवाज मास्टरकेँ सूनि पड़लै । तंद्रा भंग भ' गेलै । आ जखन सचेत भेल त' सभसँ पहिने बेटा पर नजरि खिरौलक । ओकरा डर भ' गेलै – कहीं ओहो ओहि जुलूसमे नहि चलि गेल हो । फारमक पाइ नहि भेटलापर ओ जाइयो सकैत छल.... ।

'रे अशोक, कत्त छे' – आवाज देलक । उतारा नहि अएलै । मनमे शंका उठलै –कतौ ठीके..... । ओ धरफड़ा क' खुरसीसँ उठल आ भितर आँगन दिस बढ़ल ।

आन्दोलनमे ओ नहि जाओ से मनशाय नहि छैक ओकरा । ओ त' स्वयं आब ओहिमे शामिल हयत । ई समग्र मधेशीक प्रतिष्ठा'क विषय छै – एक्के राज आ दू भेद । मुदा, एखन फारम भरबाक छै, पहिने ओ क' लेओ तखन देखल जएतै । आन्दोलनक बेर छै – कतहु इहो निकलि जाए....... ।

आँगनमे माय लग मुँह लटकौने अशोक बैठल भेटैत छैक । अयोधी बूढ़क जानमे जान अएलै । ओ कमिजक जेबीमे छोटकी डायरीमे सरिआक' राखल पाँच सयक टकही निकालि अशोकक हाथपर ध' दैत छैक आ हिदायत दैत चेतबैत छैक – सोझे कैम्पमे चलि जइहे । फारम भरि दही आ तैयारी कर । समय उनटतै जरूर, फेरसँ माँग उठऽ लागल छै । कतेक दिन धरि सातदल आ सरकार मधेशी जनताकेँ ठकतै । आब अधिकार भेटतै बौआ, जो शुभ-शुभक' ।

अशोक बापक ओजसँ भरल अनुहार एकटक देखैत रहि जाइत अछि । कनेको शोर-गुल भेला पर अशोक-अशोक कहैत खोज लाग'बला ओकर बाप आइ मधेशी हयबाक गौरवसँ मातल छथि, मने ओहो हमरे सभक बाट पर छथि । अशोकक ठोढ़पर हल्लुक मुस्कीक रेखा दौगि जाइत छैक आ एक नजरि मायक आँखिमे धरैत आँगनसँ बहरा जाइत अछि ।

घरबाली लग चटाइ पर अयोधी बैसि जाइत अछि आ जाइत बेटाकेँ तकैत रहैत अछि ।

'नारा, जुलुश फेर लाग' लागल है । अहु बेर लोक मरतै की ? – अशोक मायक जिज्ञासा अयोधी मास्टरकेँ उत्प्रेरित करैत छैक – 'हँ, लगैए शुरु भ' गेलै आन्दोलन, होहुक छलै, तीन बेरसँ अशोक जाइए आ खाली हाथ घूमि क' अबैए । हमरे सभकेँ देल करसँ पहाड़ी जिल्लामे विकास आ मधेशमे रौदी-दाहर । नै, अशोकक माय, आब सहब अन्याय छै ।'

'तँ की अहुँ जएबै ?' – एकटा आशंका बुढ़िआक स्वरमे स्पष्ट झलकि उठैत छैक ।

'सौचै छी, हम त' काँग्रेसी छी ने ! बी.पी.के भक्त । कहियो कोनो दोसर पार्टीमे नहि गेलहु । मधेशक कल्याण काँग्रेस करत, तएँ मधेशीमे ओ बेसी लोकप्रिय । मुदा आब बदलब ग' अपन विचार..... । आन्दोलन चाही... कतेक पछुआ रहल जाए । पद-प्रतिष्ठाक नामपर रहओ ग' जे दास बनल अछि । आब हमहुं निकलब ।'

अयोधीक दृढ़ता बुढ़िआकेँ हिला देलकै । सम्भवत: ओ सोचने हयत – बेटा त' रहिते अछि आब घरोबला ओम्हरे रहत त' पता नहि की हयतै........ ।

'पार्टी निकालत त, की कहत नेता सब' – बुढ़िआ मनटोअ' चाहैत अछि ।

'किछु ने कहत, ओ की निकालत, हम आइए राजिनामा द' दैत छी । आब अन्याय सहबाक समय नै रहलै ।'

जुलूस ओकरे घरक लग आब' लागल रहै । अयोधी देहपरक टुस घरवालीक कोरामे धएलक आ आँगनसँ बहरा गेल ।

सड़कपर एकटा बड़का जुलूस नारा लगबैत जा रहल छलैक – एक मधेश, एक प्रदेश । ओ एकटा छौड़ाक हाथसँ प्लेकार्ड लेलक आ जुलूस मे नारा लगबैत लोकक संग अपन स्वर मिला देलक – जय मधेश ।

■

भहरैत नेओक जोड़

आदरणीय निरसन बाबू ! पत्रमे लिखने छी – रानीक अप्रेशन नहि भ' सकलैक । एखन नहि, आब बादेमे होयतैक ! अहाँक पत्रक जावाब, देबाक मोन तँ नहि होइत अछि, मुदा पूर्वक दुर्घटना आत्माकेँ पुन: कचोटि उठल अछि आ तेँ ई जबाब प्रेषित कर' पड़ल..... ।

की अहाँ सभ किछु बिसरि गेलिऐ ठीके ! मोन नहि अछि ओ चेहरा । पूर्ण भखरल गुलाब सन पुष्ट देह, अर्थात् समुद्र जकाँ गहींर आ चमकैत आँखि...... । ई अहींक बेटी छलीह सरोजा । अहींक दुलार–प्यारमे पलल–बेटासँ बेसी अहाँक दुलारु । जकरा बेटी कम 'बेटा' बेसी कहल करिऐ । एकर शिक्षा–दीक्षा कमो होइत परिवेशक आग्रह ओकरामे परिपक्वता आनि देने रहैक । ओ आधुनिक विचारधाराक युवती भ' गेलि रहय ।

.......तेँ ने अहाँक द्वारा भेल विआह ओकरा पसिन नहि पड़लैक । कहाँ शहरमे पलिल–बढ़लि–शिक्षिता, नव–नव सपना मोनमे सजौने अहाँक 'बेटा' आ कहाँ खेत–हरक चक्करमे घुरिआयल महाभुसकौल मुचंड जकाँ लगैत अहाँक जमाय । चप्पलो अहींकेँ कीनि क' देब' पड़ल रहय कहाँदन...... ।

कतेक हनछीन क' सासुर गेलीह पहिल बेर । हम तँ बादमे बुझने रही ओकर दर्द, मुदा अहाँक तँ बड सिनेही लोक रहय ने, एक्को बेर ओकरा आँखिक सपना पढ़बाक प्रयास कयने रहिऐक ? पुछने रहिऐक 'बेटा ! की ठीके ओहि घरमे तोरा सुख नहि होयतै ।' जँ पुछबो करितिऐ तँ की ओ मुँहसँ किछु कहि सकतै । मात्र आँखिसँ दहो–बहो नोर बहबैत रहैत । जकर अर्थ बुझियो क' अहाँ नहि बुझबाक ढोंग कयने रहितहुँ । अपना स्थितिसँ मजबूर भ' अहाँ कहुनाक' ककरो खुट्टापर खुटेसि जे देने रहिऐके तकर अपराधबोध अहाँक हियाकेँ सालैत रहैत ..... अहाँ ठीके मजबूर रही ।

कतेक जतनसँ अहाँ बेटीकेँ मंगोने रही । आ जखनी आयलि तँ पुन: जयबाक मोन

नहि मानलकैक । कैक बेर अहाँक जमाय बिदागरी कराबय आयल रहय, मुदा ओ बरोबरि कहए – हम आब मरि जायब, मुदा सासुर नहि जायब । ओहि ठाम हम गलिक' मरि जायब हमर दुख बुझनिहार क्यो नहि..... ।' अहाँ सामाजिक प्रतिष्ठाक चिन्तासँ विचलित भ' सहयोगी बूझि हमरा पत्र लिखने रही – तुरत आउ ।

हम पहुँचलहुँ तँ मुदा सरोजाकेँ उबारि नहि सकलहुँ बरु स्वयं फँसि गेलहुँ । नहि जानि की भेलै सरोजा हमरामे किछु देख' लागलि रहय । चुपचाप ओ किछु निर्णय कर' लागलि रहय । सिलसिला चलैत रहलैक हम आर ओझराइत रहलहुँ । अहाँ केहन तटस्थ भ' गेल रही । अहाँ ने ओकरा रोकि सकल रहिऐक ने हमरे ।

हमरा अपनाकेँ व्यवस्थित करबामे समय लागि सकैत छल । ताहूमे अहाँक चुप्पी अपराध भाव जनमा देने रहय तेँ आगाँक कोनो निर्णयमे विलम्ब भ' रहल छल जे सरोजाक लेल बड कठिनाह भ' गेल रहैक । ओकर देहक विकास मोनक जुगुप्साकेँ बढ़ौने जा रहल छलैक – ई हम बरोबरि महसूस करैत रही । मुदा हम तँ रही ने । अहाँ अपन बेटीक हालति नहि बूझि सकलिऐक, सैह हमरा लेल अचरजक बात अछि ।

....केहन जीह सूखल रहय– मोन नहि सिहरैत अछि । अहाँक नजरिक आगाँ अहाँक दुलरुआ बेटी पेटमे बच्चा पोसि लेने रहय..... । केहन सनसना गेल रहय सौसे शरीर आ झामा क' खसल रही चौकी पर हमरा बादमे कहल गेल रहय । हमरा तँ इहो कहल गेल रहय जे ओकर स्थितिक जिम्मेवार हमरे बनौने रही अहाँ सभ । सासुरसँ एत' रहैत सरोजाक ई हालति शंकास्पद तँ छलैहे । धन कही सरोजाकेँ जे स्पष्ट रूपे अपन घरबलाक नाम कहने रहय आ ओकर घरोबला एहि बातकेँ स्वीकार क' लेने रहैक ।

मुदा, सरोजाक एहि हालत तँ हमर की हाल भेल रहय ...... अहाँ अनुमानो कयने रही । जकरा ल' क' एकटा नव जीवन जीबाक सपना सजौने रही हम – छीनाइत सरोजाकेँ चुपचाप देखैत रहि गेल रही..... । की अहाँक सामाजिक प्रतिष्ठा अहाँक संस्कार हमरा हमर सरोजाकेँ बाझक हाथसँ घूरा सकैत छल ?

हम तँ नहि जनैत छी अहाँक दुलरुआ बेटी अहाँ सभक सामाजिक मर्यादाक नामपर ओढल अभिभावकत्वक नीतिसँ जेना गतिकेँ प्राप्त कयलक ताहिसँ अहाँक संस्कारी मोन कतेक धरि अहाँकेँ धिक्कारने हयत, मुदा हम तँ लूटि चूकल रही.... अवाक् नि:सहाय ।

बहुत दिनुका बाद जखन अहाँ हमरा ओत' आयल रही तँ अहाँकेँ देखिते हम चिकरि उठल रही – आब की अछि हमरा लग । सभ सरोजाक संग समाप्त भ' गेल अछि । ठीके हमर सभ सपना आंगनक पनिबटमे घूरि आयल रहय.... ।

अहाँ कननमुँहे बाजल रही – 'नहि एहन बात नहि बाजू । जे ईश्वरकेँ मंजूर छलैक ताहि पर ककर सक । आब.........।'

'की आब ?' – हमरा बुझायल अहाँ कोनो नव षडयन्त्र त ने कर' आयल छी । सरोजाक गति हमरा तोड़ि देने रहये ने ।

सरोजाक चलिते जे नोकशान भेल अछि – तकर पूर्ति की रानी नहि क' सकैत अछि'- अहाँक ई खूजल प्रस्ताव एकाएक हमरा सुन्न क' देने रहय । हमरा तँ पहिने विश्वासेने भेल रहय जे ई बात अहाँ अपना मुँहे बाजल रही । मुदा, बजैत तँ अहीं रही । सरोजाक गति अहाँक सभ उपरका लवादाकेँ उघारि देन रहय आ तँ अहाँ आब आर जोखिम उठाब' नहि चाहैत छलहुँ ।

'अहाँ कोना बुझै छी – रानी, सरोजाक स्थानकेँ पूरा करत ?' हम अहाँकेँ हथोरबाक लेल ई प्रश्न कयने रही।'

रानीपर हमरा विश्वास अछि । ओकरा जेना बनयबैक ओ एखन बनि सकैत अछि । अहाँकेँ अपना अनुकूल सहयोगीक जरूरति अछि – रानी संग पूरि सकैत अछि । आ एहि संगे हमरो....... अहाँ एहिसँ बेसी बाजि नहि सकल रही । अहाँक अनुभवी थाकल आँखि कोरमे भरिआयल नोरक हल्लुक दानाकेँ अहाँक नुकायब हम स्पष्ट देखने रही ।

रानीपर हमरो विश्वास रहय तथापि हम फरिछयबाक लेल कहने रही – की रानी एहि लेल तैयार भ' सकैत अछि ? ओकर सहमति लेल गेल छैक ?

अहाँ स्वीकृतिमे माथ हिला देने रही । मोन नै पड़ैए – हम किछु काल गुम्म भ' गेल रही । ठीके अहाँ हमरा मोनमे एकटा नवीन सपनाकेँ जगा देने रही । हमरा तँ बुझायल रहय हमर ढहैत सिनेहक नओकेँ फेर एकबेर जोड़बाक गुंजायश भ' सकैत छल ।

हमहुँ तँ बरोबरि सपनेक पाछाँ बेहाल रहलहुँ ने । गामसँ शहर अयलाक बाद जखन सयान भेलहुँ तँ हमर सभ सपना ओहि जनानीक संग समाप्त भ' गेल – जकरा हमरा संगे विदा क' देल गेल जे ई हमर पत्नी अछि । पत्नीकेँ नीक जकाँ नहि चीन्हि सकियो क' लोक बाप भ' सकैछ एहि ठाम । आ जखने एक बेर बाप भ' गेल तँ मात्र घुटन रहि जाइछ संगमे ...... । सपना तँ सम्भावनाक संग चलैत छैक ने ।

हम तँ एहु लेल अहाँक बेटी सरोजाकेँ धन्य मानैत छी- जे ओ हमरामे सपना जगओने रहय । सभ किछुक अछैतो जाहि विराट वस्तुक हमरामे अभाव रहय तकरा प्राप्तिक बाट देखओने रहय..... ।

से सरोजाक संग समाप्त भ' गेल सभ सपना जेना आइ पुन: रानीक सामीप्यक

संभावनाक संग जी उठल रहय । रानीकेँ हम खूब नीक जकाँ जनैत छी ओ ठीके बेसी उपयुक्त थिकीह ...... मुदा...... ।

एहि बीच एकटा भयंकर त्रुटि देखार भेलैक अछि रानीमे जे ओकरा चैनसँ रहय नहि देतैक । तँ हम अहाँकेँ कहने रही – 'रानीक अप्रेशन जरूरी अछि, नहि तँ जाहि कल्पनाक संग हम संग हयब – सैह दुखदायी भ' सकैछ । हमरा अपनो ने ठेकान रहैत अछि ने ।

मोन पाड़ू निरसन बाबू, अहाँ एहि बातकेँ स्वीकार कयने रही । आ समुचित इलाज करयबाक हमरासँ वायदा कयने रही । हमरा सभक बात एहिपर आबि क' रुकि गेल रहय- ओकर स्वस्थता हमर स्वीकृति ।

हम कतेक माससँ आइ धरि प्रतीक्षामे बैसल छी । आइ धरि अहाँ ओकर कोनो व्यवस्था नहि कयलिऐक । आ आइ, पत्र लिखै छी- 'रानीक अप्रेशन नहि भ' सकलैक- आब बादेमे होयतैक ।

की एहि पत्रक भावमे अहाँक चोरी देखार भ' रहल अछि ? आ कि कोनो मजबूरी अछि जे अहाँ साँच बाजि नहि पाबि रहल छी । की कारण थिक जे हमर, बेरबेर तगेदा कयलो पर अहाँ ओकर इलाज नहि करा सकलिऐक ।

अहाँकेँ पता अछि अहाँक ई देरी हमरा अपराधी बना रहल अछि । आइ चारि माससँ अहाँक बेटी हमरा कोनो पत्र नहि लिखलक अछि । एकर कारण आन जे होइक प्रमुख कारण यैह छैक जे हम ओकरा एखन धरि लाबि किए ने सकलिऐक । बेचारी ! ओकरे जीवनले' लगाओल हमर शर्तक मर्म ओ नहि बूझि सकैत अछि । ओकर भीतरक जनानीक ओकर सम्पूर्ण विवेककेँ मारि देने होयतैक । अजोह सपना जवानीक अस्तव्यवस्ततामे छटपटा रहल होएत । अहाँ किएक बुझबैक ? लिखै छी – अप्रेशन नहि भेलैक ।

कतेक सहज सूचना अछि । कनेको अहाँ अपन इतिहाससँ किछु सीखि सकलहुँ अछि । एहिना टाल-मटोलसँ सरोजा चूकि गेल रहय ने ! की अहाँ फेर चाहै छी, रानी सरोजा भ' जाइ ।

नहि, निरसन बाबू ! हमरा, अपन बेटीक आगाँ अपराधी बनयबासँ पहिने सोचू – सत्य अहाँकेँ नीक जकाँ पता अछि । हम कतहु दोषी नहि । दोषी तँ अहाँ छी – जे सांच बात कहि नहि पाबि रहल छी । बेटी -सरोजा दिस बढ़ि रहल अछि । ओकरा सम्हारब आब हम आन भ' सकैत छी – रानी अहाँक अपन बेटी अछि ।

■

आब बूढ़ी घरि आओतीह

मास्टर राम पदारथ साह टोकनकेँ ल' क' कएक बेर भुक्तानी बला खिड़की लग पहुँचि क' सोधपुछ क' चुकल अछि । एखन धरि ओकर चेक आएल नहि छैक । ओकर मोन जोरसँ धरकए लगैत छैक - पता नहि फेर कोनो फेरी लागि गेलै की ? ओ ई बर्दास्त नहि क' सकत जे ओकर सही, गलत होइत छैक, खातामे पाइ नहि आएल होइक, किंवा चेकक पीठपर कार्यालयक छाप नहि होइक । बड़ आशा आ विश्वासक संग चेक ल' क' बैंक मे आएल अछि । ई दिन देखबा लेल ओकरा चारि मासक प्रतीक्षा कर' पड़ल छैक । ताबत एहि बीच जे नहि घटबाक चाही तेहन घटनासभ घटि चुकलै आ बकर-बकर मुँह तकैत रहि गेल ।

हेड मास्टरसँ रिटायर भेला छः सात वर्ष तँ भेले हयतैक । अड़तालिस सयटका ओकरा पेंशन भेटैत छैक । दुनू बूढ़ा-बूढ़ीक लेल बेजाए नहि छैक । कपड़ा लत्ता, दर-दबाइ । खान-पीयन आ कहियो काल सैर-सपाटा । नोकरी करबाक साफल ओ पबैत रहल अछि । जे पेंशन भेटैत छैक ताहिमे अपन जीवनकेँ ढालि लेने अछि । ने एक पाइ बेसीक खर्च । मुदा, विगत चारि माससँ पेंशनक पाइ नहि भेटने जे दुर्गति भेलैक अछि आ सोचिए क' सिहरि उठैत अछि । बैंकक प्रतीक्षा बेंचपर बैसल मास्टर रामप्रसाद पता नहि कत्त हेरा गेल । बूढ़ी कए बेर तगेदा कएलकै - सुनै नै छी, हमर नुआ चिर्री-चिर्री भ' गेल अछि । ब्लाउजो इएह छै, कोहुना धो-धो क' पहिरैत छी हँ, घरमे आब आँटा साफ नै है । दोकानदारो एहि माससँ उधारी देब बन्न क' देलक अछि ।

संभव छैक बूढ़ी किछु आर कमी दिस ध्यान आकृष्ट करितैक कि राम प्रसाद उठिक' जनक चौक दिस टहलि गेल रहय । भल रहैक ई दिन-दिनक कच-कचसँ बरु चौके पर जा दीपनारायण पत्रिका दोकानमे राजधानीक किछु गपसप क' मोनक पीड़ा कम करबाक प्रयास करब । सामान्य दिनमे आठ बजैत-बजैत घर घूरि जाएवला मास्टर साहेब आइ किछु बेसीए समय चौकपर विलमि जाइत छथि । जनक चौकक चबुतरापरक

सिमेंटक बनल बेंचपर बैसल ओ अपने भविष्य मादे सोचैत रहथि । मुदा से कतेक काल अन्ततः घर तँ घूरहीक छन्हि, घुरलाह । मुदा, रातिक 10 बाजि गेल रहै । तखनो हिम्मत नहि होइन्ह घरबालीक आँखिसँ आँखि मिलएबाक । ई बुझैत, ओहिमे ओकर स्वयंकेँ कोनो गलती नहि छैक । गत चारि माससँ पेंशनक पाइ नहि पठाएब सरकारक गलती छैक, मुदा बूढ़ीकेँ जवाबदेही तऽ ओकरे छैक ।

ओकरा देखिते बूढ़ी वासि रोटी आ आलुक सन्ना आगामे राखि दैत छैक । ओ एकटक कखनो आगांक थारीमे राखल भोजन आ कखनो आँखिमे समुद्रक ज्वारभाटा लेने बूढ़ीक अनुहार देख' लगैत अछि । बड़ कठिनसँ आइक हेतु बचा क' रखने रही आँटा, सएह अछि । आब काल्हिसँ भगवाने आशा । बूढ़ी लोटामे पानि दैत बजैत अछि । मास्टर राम पदारथक मुँहसँ बोल नहि फुटैत छैक । ओ आलुक सन्ना संगे चुपचाप रोटी चिबएबाक उपक्रम कर' लगैत अछि । लगैत अछि जेना ओ अपन सभ बेवशी आत्मग्लानिकेँ चिबा रहल हो । कहुनाक' पानि पीबि जखन ओ ओछान पर जाइछ । तँ बूढ़ी सेहो ओकरे छोड़ल रोटीक दू चारि कौर मुँहमे ध' मुँह हाथ धो लगमे अबैत छैक । बुझाइत छै मास्टर साहेबकेँ सुतबासँ पूर्वे बूढ़ी किछु कह' चाहैत हो । एम्हर रामप्रसाद बूढ़ीसँ किछु सुनी ताहिसँ पूर्वे सुति रह' चाहैत अछि । फेर उएह..... कथा-पिहानी किने, ओ करोट फेरि लैत अछि । बूढ़ी बाजिए दैछ-सुनै छी । रामपदारथ आर गुम्मी लाधि दैत अछि । ओना बूढ़िकेँ बूझल छैक ओछान पर जाइते सुति नहिए रहल हयत । तएं फेर एकबेर जोरसँ शोर पाड़ैछै - सुनलिऐ नै । अहाँ कहैछी चारिमाससँ पेंशन नै भेटल हबे । काल्हिसँ तऽ घरमे किछुओ नै रहत । केना क' घर-दुआर चलतै । अइ सरकारकेँ कोनो भरोसा नै है कखनो वार्ता त कखनो जन-आन्दोलनक धमकी । पेंशनकेँ पाइ पठएबो करतै कि नै ...... । रामपदारथ मास्टरकेँ कछमछी ध' लैत छैक । ओकरा अपन पत्नीक एहि खिस्सामे कोनो रुचि नहि छैक । सभ बात घूमि-फिरिक' कल्हुका खानापर अटकि जएतैक, जे ओकरा बुते आब संभव नहि हयतै । सभ दोस-महिमसँ पैंच-पालट ओ ल' लेने अछि । दोकानबला टप' नहि दैत छैक । ई सभ बात ओकरा बुझल छै । फेर ताही बातकेँ उठाक' किए ओकरा आर गलीज करै छै ई जनकिआ के माय ।

एहन अवस्था आबि गेल छै त' कैला ने एक बेर जानकीकेँ खबर क' देल जाए । धीयापूता लोक कैला जनमबैए..... बूढ़ीकेँ बात पूरा होएबासँ पूर्वे गबदी हनने मास्टर एक्के बेर हहा-फुहाक' उठैत अछि आ पत्नी दिस आँखि गुरड़ि लगभग चिकड़िक' बजैछ खबरदार, फेर मुँहसँ जनकिआ के नाम लेली त' । हम ओकरा आगू भीख मांगू, बौआ हम सभ भूखले छी, किछु टका पठा दे । नहि, हमरा बुते ई किन्हु नहि भ' सकत । बरु एक चूरु पानिमे डुबि मरब, ई कृत्य नहि करब..... । सकदम्म भेल बूढ़ी साहस करैत अछि - पढ़ा लिखा क' एतेक नमहर हाकिम बनैलिऐ एहने दिन ला किने । एहिमे भीख

मांग' कें कोन बात भेलै । ई त' अधिकारकें बात भेलै, एना नै सोचियौ.... । अच्छा छोडू, अपना बेटीक वर्थडे पार्टी कएने रहय त' अहाँकें बजौलक ? दूमास पूर्व ओकर सारिक विआह भेल रहैक । कहाँ दन लाखो टका खर्च कएलक, अहाँकें एक्को खण्ड साड़ी पठौलक ? नहि, ई बात छोडू जखन हम स्कूल रही । अहाँकें पेटमे दर्द उखड़ल रहय । छटपटाइत रही । तखन अहाँकें बेटा टूरमे रहय कहाँदन, पुतहु त' रहय । हालोचाल पुछए आएल ? नहि । चारि माससँ पेंशनक पाइ नहि भेटल अछि । बुढ़बा-बुढ़िया बाप माय कोना रहैत हयत - तकरो सोधपुछ करबाक पलखति छैक अहाँक हाकिम बेटाकें ? से त' नहि भेलै । तखन किए जाए बेरमे हमरा अपन आत्माकें मार'-कहैत छी । हम सभ पढएलौं लिखएलौं एही दुआरे ने जे हमर बालक कोनो हाकिम बनत । समाज मे उच्च ओहदा पाओत । से तँ भेटिए गेलै, आब अपना स्वार्थक खातिर ओकर ओहदा कम किए करबैक ।

जाउ सुतू ग' । जे भगवान जीवन देने है सएह जोगाड़ देतै । बेटा अछि, एना केना सोचि सकैए । फुरसत नै भेल होतै, चाहे सोहे बिसरि गेल हयत - मायक ममता एखनो टिकल रहैत अछि । मास्टर साहेब आब आर रोषसँ भरि जाइत छथि- हँ, सएह ममता देखबैत निरसन झा पत्नीक संग घीघरी कटैत छथि । मास्टरे छलाह । पेट काटि-काटि आ खेत-पथार बेचि-बेचिक' एकटा बेटाकें डाक्टर आ एकटा बेटाकें इंजिनियर बनौलनि । एकटा इंगलैण्ड बसि गेलनि आ दोसर अस्ट्रेलियामे । मन होइत छैक त' कहियो काल किछु टका पठा दैत छनि । मुदा बुढ़मे एक हाथ सेवा कएनिहार, दुख दर्द पुछनिहार केओ नहि छनि । एतेक धरि जे डाक्टर लग जा जचौताह, जांचक फीस नहि रहैत छनि । जनकिआकें माय, ई कहू, एहन सन्तान कोन काजक ? इएह ने जे हमर बेटा डाक्टर आ इंजिनियर अछि ? अहाँ जिनगी भरि मास्टरी कैली । कोनो बात कें 'घुमाक' विद्यार्थी पढ़बैत रही तेना पढ़ब' लगैत छी । हम सब मुरुख लोक, एक्के बात जनै छी, बेटा खून होइ छै । बाप मायकें प्रति कहियो बेजाए नै सोचत ।

आब मास्टर साहेबक धैर्यक बान्ह टूटि जाइत छन्हि - तँ, जाउ, अहाँ अपन बेटा कें ओत्त, भाड़ा-बर्तन करब, धीया-पूताकें खेलायब आ दुनूसांझक बुतात भेटत, हमरा ई उपदेश नै दिअऽ, बुझली ? बुढ़िआ खौझा जाइत अछि - तँ रहू अहि ठाम । ने बेटाकें कहबै । दोकानदार खर्चा देत नै । टेंटमे पाइ नै अइ । हम बेनगन होइ छी से झाँपि नै सकब । तखन अइ ठाम रहिए क' की ? हँ, हँ, जाउ जत' मोन होइअ, आब हमरा नै बजाउ । बड़ भ' गेलै । मास्टर साहेब करोटि फेरि क' सूति रहैत अछि । भोर होइत छैक । दैनिक क्रियासँ निवृत्त भ' टहल' जएबा सँ पूर्व चाहक अमल जखन होइत छैक त' मास्टर साहेब पत्नीकें खोजऽ लगैत छथि । मुदा, घर भरिमे ओ कतहु ने देखि पड़ैत छथिन्ह । ओ अहुरिया काट' लगैत छथि ।

आइ कएक दिनसँ दूध बिना कारी चाह कोहुना घोटैत रहलाह अछि । क्षुधा त' शांत भ' जाइत छलैक । अपनासँ आइ धरि चाह बनब' नहि अबैत छन्हि । तखन आइ त' चाहो पर आफत । ई बूढ़ी कत' गेलीह ? की ठीके घर तँ ने चल गेलीह अथवा बेटा लग ? ओ त' ओहिना रोषमे बाजि गेल छलाह । बूढ़ी ऐना छोड़ि क' नहि जाइत छली । मास्टर रामपदारथ आर व्यग्र भ' जाइत अछि । घरसँ बाहर निकलि चारु भर चकुआइत अछि तँ टहलानक मूडमे बाहर निकलल रामजी भेटि जाइत छनि । ओ जिज्ञासा करैत छथि- हौ, हमर बूढ़ीकें देखलहो हऽ ।' हँ, माट साब ।' भोरे किछु पजिऔने भौजी निकलैत छलीह तऽ हमही टोकि देलिऐ- भौजी कत' एतेक भोरे ! ओ हड़बड़ीमे छलीह । एतबे बजलीह - बौआ भमरपूरा जाइछी । से गामे गेल हयथीन्ह । मास्टर रामपदारथ कें किछु संतोष होइछै । चलू, बेटा लग' तऽ नहि गेल । फेर चिन्ता बढ़ि जाइत छन्हि, बूढ़िये छलीह से कोहुना नून-रोटी मुंहमे जाइ छल । आब । ओ बिनु चाह पीनहि रोडपर उतरि जाइत अछि । सड़क पर चलैत ओकर सोच ओहिना चलैत रहैछ । आइ पन्द्रह दिनसँ दिनहु ओ शिक्षा कार्यालयमे पुछ' जाइत अछि जे पाइ एलैक कि नहि । आ जखन फांट बला नहिमे मुड़ी डोलबैत अछि त' लगैत छैक' जे ओ ओकर खोपड़ि सन मूड़ीकें पकड़ि मसोरि दी । ओकरा की बूझल छैक, पेन्शन प्राप्त घरसँ फूट रहैत कोनो गरीब मास्टरक जीवनचर्याक पीड़ा । अपन गर्दनि छै, सोझे हिला दैछ -नहि । कटाह बात आ जबाबदेहीक पीड़ा किछु दिन त' नहि रहत । जखन पाइ आओत त' बुढ़ियो आबिए जैतीह । आइयो त' जाही कें है शिक्षा ऑफिस । देखी आइ की होइत अछि ?

मास्टर साहब साढ़े नौ बजे धरि घूरि अबैत छथि । फ्रेश भ' शिक्षा कार्यालय हेतु विदा होइत छथि । बाट मे कए गोटे पुरना शिक्षक सब भेटै छन्हि । सबहक वैह हाल । दिनहुँ शिक्षा कार्यालय दौड़नाइ । खाली घुमनाइ, मुदा आइ ओहो सब तमतमाएल छैक । लगैए शिक्षा कार्यालयमे किछु घटतैक जरूर.... । आइ ओकरो रोष बढ़ले छैक । भले बूढ़ि गाम भागि गेलीह आ बोझ किछु कम भ' गेल । मुदा, गाममे ई बात पसरिए गेल हेतै, मास्टर साहब घरोवाली कें राखि नहि सकलाह । ई कम अपमान तऽ नहि अछि हमरा लेल । सार ठकुरवा जँ आइ नहिमे मुड़ी डोलौलक त' भले मसोरबै नै, फोड़ि धरि जरूर देबै । देखल जएतै । ओ अपन जेबीमे धएल चाभीक भरिगर लोहाबला रिंग कें ठेकनिअबैत अछि । गुल्लरियो तँ पक्के उगि सकैछ एहिसँ ...... । ओ हहाइत-फहाइत सोझे फांटवला ठकुरबा लग पहुँचैत अछि । एक हाथ दहिना जेबीमे राखल कुंजीक झब्बा पर कसने ठाकुर मुस्कुराइत नमस्कार करैत छैक- नमस्कार सर । आबि गेल अपनेक पाइ ।

मास्टर साहबक हाथ जेबीमे जेना जाम भ' गेल होइ । मुँहसँ बकार नहि फुटैत छन्हि । नमस्कार धरिकें उत्तर नहि द' पबैत छथि । मात्र एकटा अंगमे हलचल होइत छन्हि । आँखिमे, जाहिमे एक्केबेर जेना समुद्रक लहरि उठि गेल होइन । जखन नोर

आँखिसँ बाहर खस' लगैछ त' मास्टर साहबक तन्द्रा भंग होइत छन्हि आ वाम हाथसँ रूमाल निकलि तेजीसँ आँखिपर ध' लैत छथि, जेना किछु पड़ि गेल होइन । चुपचाप चेक बुझैत छथि आ सोझे बैंक मे आबि जम्मा क' दैत छथिन्ह ।

औ माट साब, औ माट साब । चौंकि उठैत अछि मास्टर राम पदारथ, अए के छी ? आहिरे बा, कत्त' हेरा गेल छलिऐ । खिड़की सँ कतेक बेर नाम बजौलक अछि । लगैए चेक आबि गेल अछि, बगलमे पाइक प्रतीक्षामे बैसल चीन्हल कोनो शिक्षक टोकैत छन्हि ।

मास्टर रामपदारथ जेबीसँ टोकन निकालैत अछि । स्थिर भावेँ खिड़की लग जा टोकन बढ़बैत अछि । कर्मचारी टोकनकेँ देखि चेक बहार करैत अछि । फेर चेक पर सही करबा लए मास्टर साहबकेँ घुरबैत छन्हि । ओ फेरसँ पाछाँ सही कऽ दैत छथिन्ह । ओ चेक बढ़बैत छथि । एक-एक क' गनि जखन पन्द्रह हजार दू सए टका मास्टर राम पदारथकेँ हाथमे पड़ैत छैक त' ओ भाव विह्वल भ' जाइत अछि । पाइकेँ गनि जेबीमे धरैत अछि । मोनमे उठैत छैक हिलोर-आब त' बूढ़ी जरूर घुरि औतीह । आँखि सँ दहोबहो बहैत नोरकेँ रोकबाक किवा झँपबाक ओ एहिबेर जरूरतो ने बुझैत अछि ।

■

अन्ततः

किसुनमा जनकपुर रेलक डिब्बामे बैसल-बैसल अगुता गेल छल । जखन ओ जयनगरमे ओइ पारक रेलसँ उतरल तऽ लोक कहलकै साढ़े तीन बजे नेपलीया रेल खुजै छै । दसे मिनट रहै गाड़ी खुलइमे । ओ लगभग दौगैत-दौगैत टीसन आयल रहय आ हड़बड़ा क' एहि डिब्बामे पैसि गेल रहय । समान कोनो वेसी नहि रहै - एकटा झोड़ी आ कनहापर दू गोट कम्बल । मात्र एकटा यात्रीकेँ 'कोहुनाक' जगह बना लेने रहय आ निचैनसँ सीटपर बैसि गेल रहय । हँ, आब त' अइली ।

'मुदा एक घंटा लेट भऽ गेलै - पंजाबमे कीनल लोकल घड़ी दिस स्थिर नजरिसँ देखैत किसुनमा बजैत अछि - कहि नै, कखन ई पहुँचाओत । ओकरा पंजाबसँ तीन दिनक बाटक जे थकान रहै, ताहू सँ बेसी एहि रेलमे बैसल-बैसल महसूस होबऽ लागल रहै । कहे है कहाँदून इंजीने फेल भऽ गेलै - केओ गोटे प्लेटफॉर्म पर बजैत छैक - किसुनमा कछमछा उठैत अछि । एतेक दूरसँ आबि एतेक फेरी...... 'पता नै उत्तीमपुरवाली की कहैत होतै .... ।'

मोन कतहुँ भितरसँ गुदगुदा अबइछै किसुनमाकेँ । दुइए वर्ष तऽ अयला भेलै कि पंजाब जाए पड़लै । माइ कहबो करै सखा सन्तान भेलापर घर छोड़लोसँ बेजाय नै । बुढ़ियाकेँ दू वर्ष बितलोपर धीयापुता नै भेने पुतहु बांझ लागऽ लगलै आ कयबेर उपरागो देने रहै । ओ बीचमे पड़ि माइकेँ शांत कऽ दिए - किसुनमाक आगाँ ओहिना दृश्य सभ नाचि उठै छै । हयबे करतै कि । गोसइंया देब'बला होतै तऽ के रोकि लेतै - ओ माइक कहल करै ।

ओकर उत्तीमपुरवालीकेँ देखिकऽ तऽ परोसिया सभ कहै छै - बुढ़िया केहन बीछ कऽ पुतहु लऽ आयल । माइ बाजल करैक - नीक बहुरियामे ने वाल-बच्चा उजिआइ छै । खानदान सुधारि दै छै । किसुनमाकेँ अपन पिण्डश्याम रंग मोन पड़ि जाइछै ।

उत्तीमपुरवाली सेहो रातिमे कहल करै – 'हमरा बेटा चाही ।' ओ चौल कऽ दै– 'तऽ हम कथीलऽ कऽ मुँह बन्न कऽ देने छिऐ आ खिल-खिलाकऽ हँसि पड़ै उत्तीमपुरवाली ।' जेहन उज्जर दप-दप दाँत छै छिनरी कँे । जेहने मुँह तेहने दाँत' – किसुनमाकँे रहि-रहिकऽ बिताओल सुखीतगर क्षणमोन पड़' लगैत छैक ।

भोंऽऽऽ- इंजिन चिकरै छै । लगैए आब खुजतै-घड़ी पर नजरि गड़बैत किसुनमा हड़बड़ाइए – एह पाँच बाजि गेल छै । नै जानि कखन पहुँचब ।'

ठीके इंजन ससर' लगै छैक । किसुनमा के जानमे जान अबैछै । लगैए रातित' भइए जायत । फेर खान-पीयन । के कत्त अइ । जे से आब घरतऽ जएबे करब ।

ओ एहिबेर दूटा कम्बल लओने अछि – एकटा मायलेल आ एकटा अपना लेल । जाड़ आबि गेलै ने । टूटल घर आ जनमारा जाड़ ।

नै, अयबेर सबसँ पहिने ओ घर बनायत । एहि बेरका कमाइ घरे बनबइमे लगा देतै । दूटा हन्न बनाओत आ एकटा भनसा घर । एकटामे अपने दुनू परानी आ एकटामे बुढ़िआ माइ । सात-आठ हजारमे भऽ जाए चाही – किसुनमा हिसाब जोड़ैए । भइयोगेलै पन्द्रह महिनाने । परूकँे भादोमे गेल रहय पंजाब ओ – आँगुरपर मास गनैत अछि । पाँच हजार मात्र लौने छै । देहकँे कपड़ा लत्ता, घड़ी आ उत्तीमपुरवाली लेल 'टेली कुसा' साड़ी ।

किसुनमाक मोन फेर गुदगुदा जाइ छै । रातिमे सुत्त' काल कनियाकँे पहिराकऽ...।

गाड़ी रुकि जाइत छैक । ओ मूड़ी उचका कऽ तकैत अछि- खजुरी आबि गेलै । आब एक टीसन और छै । तकर बाद दू कोस पैदल । रातिमे कोना जायत गाम...... । मोन पड़ै छै आइ तऽ सोम छै, बजारक दिन, लोक त' भेटबे करतै । केहुना गाम त' जाही के छै । पन्द्रह महिना भऽ गेलै । उत्तीमपुरवालीसँ भेंट भेला । नहि जानि कत्त छै...... ।

टिसनपर उतरि पीआजी-मुरही खा भरिपेट पानि पीबि लैत अछि । ओकरा भूखसँ बेसी पीआस लागल रहै । दरभंगा टीसन पर 'पेड़ाखाउ, पानि पीउ' कहैत व्यक्तिसँ एक पेड़ा खाय दू गीलास पानि पीने रहय । तेसर गिलास पानि मंगलकँे त' ओ जोरसँ दबारि देने रहै- एक पेड़ामे तीन गीलास पानि नै भेटत । ओकर मोन छुछुअएले रहि गेल रहै । से एत्तऽ भरिपेट पानि पीबि मस्त भ' गेल अछि ओ ।

किसुनमा गाड़ीकँे ससरब देखैत अछि आ धरफराक' डिब्बामे चहरि अपन सीट धऽ लैत अछि । आब एक टीसन, फेर गाम । मन प्रसन्न छै । लगैछै जँ गामे लगमे चलि अइबतै तऽ केहन नीक होइतौ ।

अइबेर ओ पंजाब जाएकँे जल्दी नै करत । गोधियाँ सब बरु जाएत तऽ जाओ । ओ सही रुपैयामे केहूना खेपत साल । माइक वचन बेरबेर ओतहु मोन पड़ै ओकरा-सखा-सन्तान भेलापर बाहरो गेने कोनो क्षति नै..... । अइबेर जेना होतै तेना एकटा..... बितल दीपावलीमे छूटल फूलझड़ी जेना ओकरो भितर छूटि रहल होइ । उत्तीमपुरवाली, सखा-सन्तान आ पंजाब । कतेक आकर्षण छै एहि तीनू मे । कखन किसुनमाकँे आँखि लागि गेलै पता नै, टीसन पर गाड़ी रूकला पर केओ टोकि देने रहैक – ओ पसीन्जर ! महिनाथपुर आबि गेल ।

ओ धड़फड़ा कऽ उठैत अछि । एक्के लपकाने प्लेटफॉर्म पर उतरि जाइत अछि । चारू भरि नजरि खिरबैत अछि – केंओ गौआँ तँ ने उतरलैए गाम जाए ला । नहि-नहि केंओ अभरैछै । ओ त' निराश भ' जाइत अछि । तथापि बाट पर एकबेर देखलेब' चाहैए – कहुँ बजारवला केओ होइत..... ।

'के किसन छा हौ – केओ झोलफोल अन्हारमे टोकैत छैक । ओ चौंकि उठैए । फेर प्रसन्न होइत टोक'बला दिस बढ़ि जाइए । टोकनिहारकँे देखिते चिकरि उठैए – गोबिन भाइ ! कत्तसँ ।

इएह बजारे आयल छली । कह' की समाचार छै । बहुत दिनपर अबै छहो – गोविन्द पुछै छै ।

हँ, एहि बेर कनी बेसी लागि गेलै । संगी भेट गेलाक प्रसन्नता छै किसुनके । 'गामे की ? – ओ पूछैत अछि । 'हँ, चल' संग पुरि देबो' – गोविन्द आगाँ बढ़ि जाइत अछि । किसुन पाछाँ गाम दिश चलि पड़ैछ ।

गाम पहुँचला पर एक बेर घड़ी देख' चाहैए, अन्हार छै – कोना देखौ । जेबीसँ सलाई निकालि कऽ रगड़ैत अछि । इजोतमे घड़ी पर नजरि टिकबैत बरबराइत अछि – आठ, माने उत्तीमपुरवाली सुति रहल होतै । देखा चाही ।

दरबज्जापर अबिते फेर एक बेर भुलकि जाइछै – पन्द्रह माससँ बन्हायल अछि ओ । आइ राति टेलिकुसा कँे नुंआ आ उत्तीमपुरवाली । आँगनमे पयर दिते कोनो नेनाक कानबक स्वर सुनैत अछि आ चौकि उठैत अछि । ठमकि जाइत अछि बीच आंगनमे – ककर बच्चा छै । की कोसिला दीदी आयल छै । भऽ सकैए, माइ दुखित होतै त' सेवा-सुसुरखा करैला मंगा लेनेहोइ । नीके भेल । बिन बजायले दिदीयो सँ भेंट भ' गेल ।

घरकँे फट्टक लागल छै । ओ खटखटबैत अछि । भितरसँ बच्चाक कानब छोड़ि आर कोनो शब्द सुनि नहि पड़ैत छैक । ओ फेर फट्टक हड़बड़बै छै ।

के हबे ? - भितरसँ उत्तीमपुरवाली केँ स्वर सुनि पड़ैछै । किसुनमाकेँ जानमे जान अबैछै - नै, है तऽ घरेमे । 'हम छी'- गराकेँ साफ करैत ओ उतारा दैत छैक ।

'अखनु अलिऐ - आवाज चिन्हि प्रसन्नतासँ फट्टक खोलैत अछि उत्तीमपुरवाली । ने चिट्ठीकेँ जवाब, ने ढौआ-कौड़ी, एना कतौ भेलैए - उत्तीमपुरवाली मुँह फुलबैत आगाँमे ठाढ़ भऽ जाइत छैक ।

चिट्ठी तऽ नै भेटल रहय, हँ ढौआ, जएबे करैछी तऽ लेने जायब, से सोचि नै पठौलिऐ । अच्छा, माइ कहाँ छै ?

दिदी गामपर गेल छथि । छठिमे बजौने रहथिन । अखनु तक नै आयल छथिन्ह । उत्तीमपुरवाली हाथसँ मोटरी लैत घरमे चल जाइत अछि । फेर लोटा आनि चैलचीसँ एकलोटा पानि ढारि घरवलाकेँ पयर धोअ ला दैत छैक । किसुनमा पैर धोइत आ गुनधुन करैत अछि - तब ई बच्चा ककर छै । पुछै छै - ई केकर बच्चा छै घरमे ?'

जा तऽ एकरा मालूम नइं छै । चिट्ठी देने रहिऐ । ई अपने बच्चा है कि । उत्तीमपुरवाली प्रसन्न होइत बजैत छैक ।

'ठीके, भगवान लगैए सुनि लेलन्हि' - किसुनमा सेहो प्रसन्न होइत घरमे पैर रखैत अछि । बच्चाकेँ निहारैत पुछै छै - कयमासक है । 'चारि मासक' - उत्तीमपुरवाली लगले उत्तर दऽ दैत छैक । 'चारिमासक'- घरमे ठाढ़ेठाढ़ किसुनमा मनमे हिसाब लगबै छै - हमरा गेल पन्द्रह मास आ बच्चा भेला चारि मास । माने चौदह मास भेलै गरभमे अएला । फेर ई हमर बच्चा केना भेलै ? तकी एहि बीच उत्तीमपुरवाली दोसर संगे-रंग रभस करै छल ? मुदा, से पुछो केना ।

किसुनमा हाथक लोटा निचाँमे धऽ पटिया पर ठामहि बैस रहैत अछि । ठोढ़पर आयल हँसी जेना एके दाब मे उड़ि गेलै । ओ एक बेर गहीकी नजरिसँ उत्तमपुरवालीकेँ आ एक नजरिसँ बच्चा दिस तकैत अछि । बच्चा एखन सूति रहल अछि । ओकरा बुझाइ छै बच्चा ने मायसन अछि ने हमरे सन । तखन ई ककरा सन ।

उत्तीमपुरवाली एखनो किछु बूझि नइं सकल अछि - बौआ भेने माय कतेक प्रसन्न भेलखिन्ह । कहथिन- खनदान उजिया गेल । अहीला मुँहकानवाली कनियाँ कइली किने ।

किसुनमा चुप्प रहैत अछि । दिआक मद्धिम लौमे किसुनमाक शांत चेहरा देखि उत्तीमपुरवाली फेर टोकै छै - एना चुप्प किए छी । नै, नै, कोनो बात छै । बेसी थाकि गेल छी ने । किसुनमा बीछाओन पर ओलरि जाइत अछि ।

'खयबै नहि' - उत्तीमपुरवालीक प्रश्नकेँ उत्तर ओ बड़ कष्टसँ दैत अछि - खयने छी, भूख नै छै । सुतब, थाकल छी ।

रातिमे बिन खयने केना रहतै । भात कनी बेसीए रीन्हा गेलहै । हम लेने अबै छिऐ - पत्नीक आग्रहकेँ टारैत किसुनमा जोर दैत कहैत अछि - नै, नै, हम नै खायब । कहि त' देली । नै तंग करु । आ आँखि मूनि लैछ । पन्द्रह महिनापर घर आयल घरवलाक संग रभस करबाक इच्छा उत्तीमपुरवालीकेँ नहि होइछै से बात नै । मुदा, ओकर रुख हिम्मत जुटा नहि पबैत अछि । चक्का पर मलिया हथोड़ैत छैक । भेटि जाइत छैक । ओइ महक तेलके गमैत अछि । फेर मलिया लऽ घरवलाक पयरमे करु तेल लगबऽ लगैत अछि ।

कनेक कालमे जेना किसुनमा चौकि उठैत अछि - के छी ? अहाँ छी । छोड़ू, हमरा सुत दिअ । तेल-वेल नै लगायब ।

उत्तीमपुरवालीक हाथ ठामहि रुकि जाइत छैक । एतेक दिनपर आयल स्वामीकेँ एहन व्यवहार किए ? की भेलैए ओकरा ? उत्तमपुरवाली गुनधुन करैत तेलक मलसी फेर चक्का पर धऽ दैत छैक आ एक नजरि आँखि मूनने पड़ल धरफर दैत बच्चावला गोनैर पर चल जाइत अछि ।

किसुनमा भले आँखि मुनि लेने हो- सुतल नहि अछि । ओकरा आँखिमे नीन्न आबियोने सकै छै । बस पछिला घटना सब घीरनी जकाँ नाच' लगै छैक ।

कतेक जीद कयने रहय उत्तीमपुरवाली 'टेली कुसा' के लेल । माइकेँ इच्छाकेँ देखैत ओ एहि खेप पंजाब नहि जाय चाहैत छल, बस एतहि भाग्य अजमाओल । खैनियो बीछ'मे काज त' लागिए जइतै । मुदा, मनहरपुरवालीकेँ ललकी 'कुसा'केँ साड़ी पहिरने देखि आनि देबालेल जोर देब' लागलि रहय । कर्जालऽ लऽ कऽ साड़ी लायब उचित नहि बुझने रहय तखन मन मारिकऽ पंजाब जायकेँ निर्णय लेब' पड़ल रहै । आ जखन निर्णय लइए लेलक त' भेलै जे घर-दुआर बनाइए लेत आब तएँ किछु बेसीए मेहनतसँ कमाय लागल । पेट काटि - काटि कऽ पाइ बंचबैक । सपना बीनय - दू हन्नाक घर हएत । बाल-बच्चा हएतै । निसफैलसँ घरवालीक संग सूति सकब । साँच बात तऽ इहो छैक - एकहन्नाक घरमे एक कोनटामे माइ आ एक कोनटामे अपने दुनू परानी । नीक जकाँ...... ।

जखन बुझएलै जे ओकर सप्ना आब पूरा भ' जयतै तऽ गाम घूरि आयल । घरवाली ला अपना दिससँ दू दर्जन चूड़ियो लेने आयल तैं-काँचक एक नम्बर के । बीस टका लागल रहै - किसुनमा मोन पाड़ैत अछि । मुदा एत्त..... । जाहि बाल-बच्चाक हेतु मोनमे एतेक उमंग रहय ओ भइयो कऽ किएक हमरा अपना नै लगैए । केहुना कऽ हिसाब जोड़ै छी त' एक मास कम जाइछै - माने हमरा पंजाब गेलाक एक मास बादक बच्चा पेटमे अएलै...... हमरे । नै इ नै होब देबै - किसुनमा जेना लोहछि जाइए ।

तखने बच्चा उठि जाइछै आ चिचिआय लगै छै । किसुनमाकेँ लगै छै बच्चाक कानब सोझे ओकर छातीकेँ भोकने जा रहल होइ । ओ भोकासी पाड़ि कानय चाहैए । फेर मन थीर करैत अपने समझबैत छै - एकबेर मौगियोसँ पूछि तऽ लिऐ । देखल जयतै काल्हि । ओ आंखि मुनि सुतबाक प्रयास कर' लगैत अछि ।

किसुनमा पाँचे बजे उठिकऽ बाध दिसि चल जाइत छैक । पोखरि दिससँ अयलापर मुँह-हाथ धो कऽ गामक इस्कूल लगक चाहक दोकानमे बैसि रहैत अछि । किशोरी चाहलेल पानि गरम करब शुरु कऽ देने छैक, ओकरा देखिते हुलसि कऽ पुछैछै - किसुन कह' हौ । कहिया अएल' हो ।

'काल्हिए अएली'- मन बूझल-बूझल सन लगै छै किसुनमाकेँ । ककरोसँ बाज'केँ मोन नै करै छै । ओकरा बुझाइछै गामक सभलोक जनै छै जे ओ भादोमे पंजाब गेल रहय आ आसीनकेँ बच्चा छै । मानेओ अनकर जनमायल बच्चाक बाप अछि । तहीसने किशोरियो मुस्किया कऽ पुछलकै ओकरा । आब त' उबेर भेलै - लोक सहटैत एम्हर अओतैक चाह पीब' । सभ ओकरासँ किछु ने किछु पूछि बैसत । नै केनाकऽ आगाँमे ठाढ़ रहि सकबै हम । गाममे ककरो ने गुदानय बला करगड़ जुआन ओ आइ बिलाइ बनि मुँह झँपने घूरत ?

किसुनमा धरफर क' चाहक दोकानसँ उठि जाइत अछि । किशोरी हल्ला करिते रहि जाइ छै - ओ पलटिकऽ नहि तकैत अछि । नै सभ सार हमर मजाक उड़बैत अछि । अनकर जनमल बेटाक बाप...... हा-हा-हा-हा-हा ।

ओ झटकारैत अपन दरबज्जा पर अबैत अछि । बाटमे दू-चारि गोट कुशल-क्षेम पुछबो कैलकै । ओ बिन माथ उठौने उत्तर दैत अपन दरबज्जा धरि आबि गेल अछि । आब ?

आँगनमे जाइत अछि । उत्तीमपुरवाली आँगनकेँ बहारि बच्चाकेँ लऽ कऽ ओसारा पर बैसल दूध पिआबैत रहै छै । ओ ओकरा बगलमे जा ठाढ़ भऽ जाइछै आ बच्चाकेँ मुंह देख' चाहैए, मुदा मुंह माइक आँचरमे झंपायल छै । ओ गुम्म भेल ठाढ़ रहैए ।

'मन नीक है एकर किने ! -उत्तीमपुरवाली गहींरसँ अपन घरवलाकेँ पुछैत छै ।

'भनकेँ की भेल है ।' -किसुनमा उत्तर दैत छैक ।

देखतै बच्चाकेँ ? सभ कोई कहै है बापे पर गेल है' - उत्तीमपुरवाली आंचर हंटबैत बच्चाक मुंह घरवालाकेँ देखबैत अछि ।

किसुन चिचिआ उठैत अछि - नै, ई हमर जनमल नै अछि । एक महिना के फरक छै । हम केना मानि लेबै ।

उत्तीमपुरवाली अवाक् भ' जाइत छैक । पीड़ायल स्वरे बजैत अछि - बापरे ई की बजै है । लोक की कहतै । भगवान के सप्पत है, हम -कोनो पर पुरुखमे भीड़लो होइ त' कोढ़ी फूटि जाए । देह काज नै आबे...... । हे भगवान .... आ हिचुकए लगैछ ।

चुप-चुप बुझलियौ । बापे सन कहाँदन मुँह लगैछै । देख त' हमर आंखि । मिला तऽ अपन बेटाकेँ आँखि । देख तऽ हमर गोल मुंह, मिला तऽ नमगर मुंहसँ । देख त' हमर रंग आ देख अपन बेटाक रंग..... । नै कीन्हु ई हमर जनमल नै छौ । हम नै मानबौ । सांच-सांच बता नैत' खंडी-खंडी काटि देबौ - एक्के सांसमे किसुनमा आरोप पर आरोप दागि दैत छैक ।

हिचकैत घरवाली आर जोरसँ कान लगैत छैक - दिनकर बाबा ! हमरा पर जे आगि उठाओत तकरा कल्याण नै हो । एहन टूटल घर आ तकलिफोमे एकटा मरदबाकेँ धऽ कऽ रह' के फल इहे होइ । माइ गे माइ, कत्त आनिकऽ धऽ देलेँ गे माइ.... । उत्तीमपुरवालीक घौना आब आंगनक सीमा टप' लागल छै । किसुनमा बरबराइत आंगनसँ बहरा जाइत अछि- 'साली रंडी । हमरा पतिआब' बैसल अछि । हम हड्डी गलाउ आ ई एम्हर यार लऽ कऽ मौज करओ । आब पापकेँ झापँ ला हमर नाम लगबैत अछि ।' नहि जानि आर की' की ।

दरबज्जासँ बाहर निकलैत काल ओ किछु जनानी सभकेँ अपन आंगन दिश बढ़ब देखने रहय । आ आओर लाथ लगा विसुनपुर दिश बढ़ि गेल रहय ।

विसुनपुरक भठी पर दिन भरि दारु छकैत किसुनमा क्षण-क्षण गलल जाइत रहय । माथमे रंग-बिरंग फुलझड़ी छुटै आ शांत होइ । कखनो नवजात बच्चा-बड़का नह लऽ कऽ ओकर मुंह नोचैत बुझाइक त' कखनो ओकरा छाती पर बैसल ठहक्का लगबैत । एक बेर त' लगलैक किशोरीयाक चाहक दोकानक आगां भरल गामक लोक बीचमे उएह बच्चा हथगर-गोरगर भ' एहन ने लात पीठीमे देलकै जे ओ सोझे उपर उठि गेल अछि आ तड़पैत फेर धम्मसँ धरती पर खसि पड़ल हो ।

एक दिन दू दिनकेँ बात नै छै । ई त' जिनगी भरि ओकर छातीपर चढ़ल रहतै आ लोक मुसकि-मुसकि कहतै-छौड़ाकेँ मुंह तऽ बापसँ खूबे मिलै छै । नै, हम ओकरा नै रह' देबै । नै रह' देबै ।

ओ आवेशसँ भट्ठीमे सँ उठैत अछि । झोलफल भऽ गेल छै । पयर यद्यपि कखनो कऽ लड़खड़ा जाइछै, तथापि मोनमे एकटा दृढ़ निश्चय जमि गेने आगां बढ़ल जाइत अछि ।

आंगनमे जा अकानैत अछि । उत्तीमपुरवाली भनसाघरमे खाना बना रहल छै ।

डिबिया मद्धिम इजोतमे बच्चा कखनो हंसैत, कखनो मुंह बिजुकबैत । ओ कोठीक गोरा तरमे सँ सीसो पाँग'वला टेंगारी बहार करैत अछि । दहिन हाथमे टेंगारीलऽ एकबेर कोठी पर धयल टेलिकुसावला झोड़ी दिश देखैत अछि आ एक बेर गोर दप-दप खन हंसैत खन मुंह बनबैत चारि मासक बच्चा दिस । माथमे जेना एक्के बेर बड़का समुद्रक ढेहु बजरैछै- हाथ उपर उठै छै आ जोरसँ नीचा खसैछै - क्यां ऽऽऽ खच्च ।

बच्चाक मुड़ी छीटकि कऽ फराक भऽ जाइ छैक । किसुनमा नजरि बच्चाक कटल मूड़ी दिश पड़ैत छैक । ओ सिहरि जाइत अछि । ओकरा लगैछै बच्चाक निर्दोष एवं अबोध आंखि ओकरा चिन्हबाक प्रयास कऽ रहल हो ।



कथा तत्वक खोजमे

कएक दिनसँ भितर एकटा दबाब महसूस क' रहल छी । कोनो कथा लिखबाक चाही । तगेदो अछि आ मोनो कनेक हल्लुक भ' जएत । ओना जहियासँ मैथिलीमे पत्र-पत्रिका बन्न भेलैए आ अपनाकेँ नेपाली दिस मोड़ि लेलहुँ अछि, किछु एहन लिखब कठिन भ' गेल अछि । तएँ प्राय: एक्कोबेर चाहियोक' कथा तत्व खोजि नहि सकलहुँ आ तएँ हम कथा लिखबामे असमर्थ भ' गेल छी । तखन की कयल जाए ? की हमर अगल-बगल सभ किछु ठीक भ' गेल छै, कतौ कोनो विसंगति नहि । तखन कथा कोना बनत ? सांच त' इहो बात छै, विसंगति मात्र कथाक तत्व नहि, जीवन-शैलीक विशिष्टता सेहो कथाक भवन बनाब'मे गाराक काज करैत अछि । तखन चली किछु तत्वकेँ खोजी ।

एक

नेपाल पश्चिमी जिल्ला-तराइक बर्दिया । बहुतो मैथिलीभाषी रोजी-रोटीक हेतु ओम्हर छथि । आ ओम्हरका स्थितिमे रेहल-खेलल होयबे करताह ।

एकटा बादीक घर । दरबज्जा पर तीन-चारि गोटा पुरुष बैसलं । एकटा अधेर 50-55 वर्षक । एकटा 3-4 वर्ष का नंग-धंरग बच्चा । एकटा 15-16 वर्षक युवक । एकटा सरदार अबैछ । हटिएक' अपन ट्रक रोकि ओ ओम्हर अबै छै । 20-22 वर्षक युवक ओकरा देखिते प्रसन्न भ' जाइए । दुनूमे गपसप होइछै ।

सरदारजी कहैछै-रे, घुटना ! अयबें हमरा संगे ट्रक पर । खाना-पीना आ दू हजारक महिना ।

ओ युवक जकर नाम प्राय: घुटना छैक, मुँह बनबैत कहैछै-नै-नै, हम नै जाएब । हमरा एही जग मन लगैए ।

सरदारजी फेरसँ आग्रह करैछै-अइजग दिनभरि बैसल माछी मारै छैँ । किछु कमाइयो लेबें । अपने बैसल छैँ आ....... ।

बात लौकैत ओ छौंड़ा स्थिति स्पष्ट क' दैछ-देखू हमरा सभमे एहिना होइछै । पुरुष काम नै करै छै । काम करैला जाननी त छैहे । बरु आइ, हमर बहिन आइएसँ शुरु कैलक अछि । हाथ फैलसँ खोलियौ ।

सरदारजी मुस्कुराइत छै आ बगलबला घरमे ढुकि जाइछ । एम्हर चारू पुरुष अपन-अपन खेलमे लागल अछि । आधा घंटाक बाद सरदारजी बहराइत छै । छौंड़ा दिस एकटा गहींर मुस्की फेकैत आगाँ बढि जाइछ । ओ छौंड़ा लपकिक' घरमे ढुकि जाइछ । एम्हर चारू पुरुष अपन-अपन खेलमे लागल अछि । आधा घंटाक बाद सरदारजी बहराइत छै । छौंड़ा दिश एकटा गहींर मुस्की फेकैत आगाँ बढि जाइछ । ओ छौंड़ा लपकिक' घरमे ढुकि जाइछ ।

बहिनक हाथमे राखल रुपैआ झपटिक' गन' लगैत छै- बीस, पचीस....तीस..... ।

दू

जनकपुरक एकटा गैरसरकारी संस्था । किछु महिला मिथिला लोकचित्र बनबैत । एकर व्यावसायिक उपयोग भ' रहल छैक । गहिंकी जे विदेशी होइछ, एकटा खास चित्र खोजैत अछि ।

केन्द्रक महिला मैनेजर आलमारीमे चोरा क' राखल किछु नग्न चित्र ओहि विदेशीकेँ देखबैत छैक । ओ प्रसन्न भ' जाइछ । जे पाइ मँगैछ, मैनेजरकेँ हाथमे ध' चित्र समेटि लैछ ।

चित्र बनएबामे मशगूल महिला सभक नेता सभकेँ इशारा करैछ । सभ भितरका एकटा कोठरीमे जम्मा भ' जाइछ । स्टौक जाँचल जाइछ । नग्न चित्र समाप्त भ' गेल होइछ ।

ओ आदेश दैत छैक- देखू, एहि चित्रक माँग बड बेसी छैक । एखन दुपहरियामे केओ नहि आओत, धमाधम बनाउ । कतौ फेर कोनो विवाद ने उठि जाइ-एकटा अधवयसू कलाकार महिला हिचकिचाइत छैक ।

छोडू विवादकेँ । बेसी पाइ भेटल से देखब कि संस्कृति आ परम्पराकेँ नाम पर राम-सीताक चित्र घसैत रहब । आन चित्रसँ बेसी एहिमे पारिश्रमिको अछि कि ने !- नेता कलाकार महिलाकेँ डपटैत छैक ।

सुच्चा मैथिल महिला सभ घोघ तनने कोनो महिलाक नग्न चित्रकेँ जीवनशैलीक नाम पर रंगसँ सजबय लगैछ ।

तीन

महोत्तरी जिल्लाक एकटा गाम । बीस वर्षिया विभा सुखपूर्वक अपन सासुर अबैत अछि । पतिदेव किछु दिन तँ ठीक सँ रखैछ, तकराबाद दहेजक मांग शुरू क' दैछ । अढाइसँ तीन वर्ष पहुँचैत-पहुँचैत दहेजक रकम गामसँ लएबाक हेतु उछन्नर दैत-दैत अधमरू क' दैछ ।

एक दिन विभा गाम पर पत्र लिखैत अछि- बाबू ! ई चण्डलबा सभ कखनो हमरा जानसँ मारि देत !

बाप-माय एकरा बेटीक आक्रोश बुझलक । धीया स्वर्गे नीक अथवा पतिएक घर नीक । से धीआ एक दिन स्वर्गे दिस पठा देल गेलीह ।

पुलिस अएलैक । पति, सासु, ननदि, नन्दोसिकेँ पकड़लक । मोट रकम बोझलक । केस कमजोर क' देल गेलै ।

अदालत जमानतपर छोड़ि देलक । पति बाहर निकलल । जखन पुनरावेदन अदालतमे ई केस लड़कीक पिता दायर कयलक त' निचला फैसला खतम क' देलगेल आ पकड़क आदेश देलक । पति भागि गेल विहारक कोनो गाममे जा क' नया विवाह क' मौज क' रहल अछि ।

आ एम्हर एकरा सभक तीन वर्षक बच्ची अपन ठौर खोजबाक लेल सभक मुँह तकैत अछि.... । माय मरिए गेलै - बाप छोड़ि देलकै !

चारि

जनकपुर अंचल अस्पतालमे धनुषा जिल्लाक एकटा युवक दम तोड़ि देलक । ओ विष सेवन कयने छल । कहांदन प्रेममे असफल भेला पर ओ अपन इहलीला समाप्त क' लेने छल ।

ओकर प्रेमिका कतबो आग्रह पर विवाहक हेतु तैयार नहि भेल छल, ओ सहि नहि सकल, मरि गेल । एकटा दोसर व्यक्ति सेहो आइए भर्ना भेल अछि । ओ तेसर वेर भर्ना भेल अछि । कहांदन एकर प्रेमिका बरोबरि एकरा संग दुर्व्यवहार करैत छैक । परिवारमे आगि लगबैत छैक, मानसिक रूपेँ विक्षिप्त बना देलकै । परिणामत: विष सेवन क' लेने रहय एक बेर, दोसर बेर फाँसी पर लटकबाक प्रयास कयलक । दुनू बेर बाँचि गेल ।

एहि बेर अपनेसँ गरदनिमे छूरा भोंकबाक उपक्रम कयलक । लगमे देख'वला बचा लेलकै आ अस्पताल ल' आएल अछि । तए त' खतरासँ बाहर अछि ।

बस, भ'गेल । हमरा लगैत छल कथा परिवेश विसुखि गेल अछि । आब लागल

हमर कलमे विसुखि गेल अछि । ई जीवन चक्र त' निरन्तर चलि रहल छैक । मानव जीवनक उतार-चढाओ अपन गतिमे अछि । नहि छैक थीर तँ हमर मोन । हमर भटकाव ओहिक्षणकेँ समेटि नहि पाबि सकल अछि तएँ कथातत्वक अभाव बुझबामे आएल अछि ।

मुदा, से बात नहि छैक । अपन अलग संसारमे, अस्तित्वक खोजमे अपस्यांत स्वयं हम, की कथा-तत्वक खोज नहि भ' क' रहि गेल छी ? जे विसंगतिक खोज करबाक दंभ हम क' सकैछी ओत' महज मोनकेँ बहटारबाक उपक्रम थिक । हमरामे स्वयं इ सभ वस्तु विराजमान अछि । हम स्वयं विसंगतिक एक जीबैत रूप छी ।

जीवनक परिभाषाकेँ अपना अनुकूल गढबामे अपस्यांत प्राय: असफल कलाकार, अभिभावक, असफल प्रेमी किंवा असफल मनुक्ख ।



तरबोरा

बाजार सँ घुरैत प्रोफेसर साहेबकेँ भानुचौक लग रवि भेटि गेलनि । ओ धरफराइत, मुँह सुखौने बजारे दिश झटकारैत जा रहल छल ।

किछु आशंकासँ प्रोफेर साहेब टोकलखिन्ह- 'की हो रवि, हालचाल निके ने ?'

'ओह, प्रणाम सर! – कनेक थमहैत सांस लैत रवि बजैत अछि- माय कने बेसिए दुखित छथिन्ह । डाक्टर साहेब देख गेलखिन्ह ए........ ।'

'की कहलखिन्ह डाक्टर साहेब ?' -बातकेँ कटैत प्रोफेसर साहेब व्यग्रतासँ पुछैत छथिन्ह ।

'जी, दवाइ लिखि देने छथिन्ह । तकरे इन्तिजाममे भोरे सँ दौगि रहल छी-' रविक अनुहार पर दर्दक रेघा उभरि जाइ छै ।

'अवधेश कत्त छौ ?' – रविक जेठ भायक मादे प्राफेसर साहेबक जिज्ञासा होइ छनि ।

'ओ त' भोरे सँ किताबक दोकान खोलने बैसल अछि । खाना धरि आइ नहि खा सकल अछि ।' – रवि आँखि नुकबए लागल अछि ।

'तखन तँ नीक चलै छै नहि ?- प्रोफेसर साहेब आश्वस्त होइ छथि ।

'से बात नहि छै सर, बिक्रीए ने होइ छै । एत्तहु कतेक कम्पीस्टीशन भ' गेल छै से देखल नहि जाइछै । पच्चीस, पचास टकाक बिक्री । खर्च-चर्क । एतेक धरि जे आइ दवाइ मे..... । डेढ-दूसय लगतैक तकरो इन्तजाम नहि भ' पाबि सकल अछि । स्टॉल पर ओ ताही आशामे..... ।

प्रोफेसर साहेब रविक पुरा बात सुनियो ने सकलाह । ओ तुरत घुमैत छथि । हुनका

संगे मुंहलगुआ छात्र अरविन्द छैक । ओकरा लगैत छैक जे प्रोफेसर साहेबक माथमे किछु उथल-पुथल चलि रहल हो ।

ओ सोझे बुकस्टॉल अबै छथि । अवधेश एसगरिए टूल पर बैसल गहिंकीकेँ तकैत सन लगैत अछि । प्रोफेसर साहेबकेँ देखिते ओ उठिक' प्रणाम करैत छनि- प्रणाम सर !

'की अवधेश, नयां किछु एलैए की ? प्रोफेसर साहेब सहज भ' पुछैत छथि ।

'जी, दिनमान, माया एखने आयल अछि । नया अंक रचना: मिहिरो अछि इंडिया टुडे, धर्मयुग आएल दू-तीन दिन भेल हयतैक ।' -अवधेश उत्साहित होइत बजैत छैक ।

'अच्छा, सभ द' दय । कय दिनसँ किछु नव पत्रिका नहि पौलहुँ अछि । हँ, प्रेमचन्दवला सेट अयलह की ?

'जी, आएल छैक । द' दिऐ की ?'

'हँ, आ देवकीनन्दन खत्रीक पूरा सेट सेहो' - रैकमे लागल किताब पर नजरि गरौने प्रोफेसर साहेब आदेश दैत छथिन्ह ।

'सर.....'- अरविन्द किछु कह' चाहैत अछि । 'है यौ भव्य पुस्तक छै । अहाँ सएह ने कह' चाहै छी । पढनहुँ हयब एक आधटा । मुदा, सम्पूर्ण सेट पढब तखन बुझबै'- प्रोफेसर साहेब पुस्तक सभ पर ध्यान केन्द्रित कयनहि बजैत छथि ।

'सर, ई सभ बान्हि देलिऐ'- अवधेश मस्त अछि ।

'एखने ? औजी, बहुत दिन पर अहाँक दोकानमे अएलहुँ अछि । अबैतकाल बौआक माय रामायण महाभारत वला नया किताब आनि देबाले' कहने छलखिन्ह । से कोन छैक हो ।'

'जी, हे इएह' दशरथनन्दन श्रीराम आ महाभारत दुनू पुस्तक प्रोफसर साहेबक आगाँ पसारि दैत छनि । ,

'हँ हँ, इएह । धरू एकरो । प्रोफेसर साहेब पुस्तक भेटला पर जेना उत्साहित भ' रहल छथि ।

'सर, ई पुस्तक तँ.......-अरविन्द किछु कह चाहैए । मुदा, बीचे मे बातकेँ लोकैत प्रोफेसर साहेब बजैत छथि- अहाँकेँ पढल नहि अछि सएहने । किए पढब । सिनेमा देखू, टी.वी देखू, के पढैए प्राचीन ग्रन्थ सभ आब । औजी एखनो इएह ज्ञान काज आओत हमरे ओहि ठामसँ ल' जाएब । मुदा, पढू जरूर । '- प्रोफेसर साहेवक आवेश देखबा योग्य अछि ।

'अहां की जानय गेलिऐ, औ बूड़ि । ओ जे छै से एहिसँ पातर आ अपूर्ण छैक । कोर्स जतेक समृद्धि होइछ ततेक नीक । बूझलहूँ ?- प्रोफेसर साहेब समझाब' चाहै छथि ।

अरबिन्द गुम्म भ' जाइत अछि । अवधेश ता पुस्तककेँ बान्हि पैकेट बना दैत छैक । एकटा बड़का भरिगर पैकेट भ' जाइछ ।

'हँ, आब बताउ तँ कतेक दाम भेल ?'

अबधेश कलम कागज पर दाम जोड़ैत अछि । पूर्जी प्रोफेसर साहेबक आगां बढ़ा दैत छैक- दू सय अठारह टका ।

'बस । -जेबीसँ बेग निकालि दूटा नमरी एकटा दशटकही, एकटा पंच टकही आ तीन गोट रूपैया बहारक' अवधेशक आगाँ द' दैत छथिन्ह ।

अबधेशक अन्हार आँखिमे एक्के बेर विजली चमकि जाइछ ।

अरविन्द किताबक पेकेट बेमनसँ उठबैत अछि । ओकरा बुझाइ छै' आइ फेर आंगनमे बात सुनथीन्ह । कथी लेल देल पाइ कथीमे खरिद देलखिन्ह । किताबो तँ एहि महक बहुतो घरमे छलैऐ । फेर.... तखन .....?'

बाटमे ओ हिम्मत क' पुछैत छनि- 'सर, ई की केलिऐ ? एक तँ सारी फाटि गेल छनि तएँ बाजारसँ लएबालेल दू सय टका देने छलखिन्ह । दोसर एहि सँग.... ।'

बातकेँ कटैत प्रोफेसर साहेब बजैत छथि- तोँ सरिपहुँ बूड़ि छह । साड़ी बिनु घरमे एक आध सप्ताह चलियो सकैत छैक । किताब बेसी लेने आरो लोक पढत । मुदा, अबधेशक मायक इलाज जल्दी नहि भलैक तँ की हालति हयतैक ? अहां सुनलिऐ नहि, डेढ-दू सय टकाक दवाइक हेतु फिफिआ रहल छल बेचारे रवि..... । आब तँ से नहि हयतैक ..... ।'

अरविन्दकेँ प्रोफेसर साहेब उपरे उठैत चल जाइत बुझाइत छैक । ओ एक नंजरि हाथमे आयल किताबक पैकेट पर धरैत पाछा उनटि क' देखलक' अबधेश हब्बर-हब्बर दोकान बन्न क' रहल छल ।

■

समाधान

'भाइ, भोज नहि खुअयबेँ ? सुनै छियौ..... चलितरा ई कहैत मुस्किया उठल रहय। आन समय रहितै तँ राजू चलितरासँ झगड़ा क' लेने रहितैक । मुदा, आइ ओकर व्यंग्यसँ पूछल गेल ई वाक्य ओकरा भीतरसँ गुदगुदा देने छलैक ।

ओ नीक जकाँ बुझैए- घरमे आयल पत्नि दिश इशारा छलै' चलितराकेँ । कतेक दिनसँ सजाओल सपना आइ साकार भ' गेल छैक । ओ भीतरसँ प्रसन्न होइत बाजल-'अवश्य' ।

पच्छिम दिसक लालिमामे सुरुज साँझ पड़बाक आभास द' रहल छलै । साँझक बाद राति। आ जखन आइ मोन अनेरे हुलसल छै' ओकर ।

अत्यन्त साधारण परिवारक एकसरुआ बेटा अछि राजू । बाप जिनगी भरि कमाइत-कमाइत बूढ भ' गेलै एक मुट्ठी धान घरमे जमा नै क' सकल । हँ, संगतिमे बेटाकेँ दसमा धरि पढ़ा देने छैक । आ तकरे फल छैक जे शहरमे आइ छोट-मोट नोकरीक' घरक देखरेख क' पबैत अछि । ताहीमहक किटु टाकासँ बच्चाकेँ विवाह कैलक आ आइ द्विरागमन सेहो । कतेक नमहर सपना देखने अछि अपना मादे ओ.....।

भोर भेलैक तँ राजूकेँ आभास भेलै' जे ओ भोज खुअयबाक स्वीकृति द' बड पैघ गलती क' गेल अछि । ओकरा लगमे तखन एक्को टा कैंचा नहि छल आ भोज बिना पाइ-कौड़ी क' कोना होयतैक ? की कहि गेल ओ । आब ......? के पतिआओत ओकर बात, सभ बुझतैक जे ओ लाथ करैए । अजुका दिन सङमे पाइ नहि । आ आब लोकके अनकर वेदनासँ कोन मतलब ?

मुदा राजूकेँ बिश्वास छै, कोनो बहाने सभकेँ ओ मना लेत । आ सैह भेलै' । पहिल बच्चामे नीक जकाँ भोज खुअयबाक 'होउ' ओ मित्र सभसँ ल' लेलक । मोनकेँ कडा क' सोचने रहय- जे होइक । पहिलुकं सन्तानक जन्म पर भव्य भोज करत ओ ।

पहिल सन्तानक जन्मक ओ दृश्य एखनो राजूक आगाँ घुमि जाइ छै'- गर्वसँ गाममे चलत । आइ धरि बच्चा बूझि कोनो मोजर नै देब'वला लोक सभ ओकरो आब मर्द बूझ' लगतैक । घर-दुआर सम्हारबाक जवाबदेही घरमे अनेरे धाम बना दतै, ओकर । अपन बच्चाकेँ पढाओत, लिखाओत । लोककेँ देखने अछि ओ- पढ़ल-लिखल बेटा ढेरक-ढेर पाइ बापकेँ कमा क' दैत । ओकरा जकाँ पेट काटिक' सय-पचास नहि । ओहो अपना बेटाकेँ बाइली आमदनीवला नोकरी कराओत । ढेर पाइ अनतै', घर-दुआर बनाओत खेत-पाथर कीनत । समाजमे इज्जत बढतै ओकरो..... नहि जानि कतेक बात घिरनी जकाँ नाच' लागल रहै' राजूक माथमे ।

तखने कोनो बच्चाक कानब ओ सुनैत अछि- चिहुँकि उठैछ । अपना मोने-मोन किछु सोचि ओ लजा जाइत अछि । 'दुत की सोचि लेलक ओ' ।

शहरमे ड्यूटीसँ चल आयल राजूकेँ एखनो घरसँ घरवालीक पयर भारी होयबाक समाचारक प्रतीक्षा रहल करै' छै । नहि जानि ई समाद अबैक आ ओ भागय गाम...... ।

आ से समया आबि गेलै । खबरि अयलै कनियाक पयर भारी छैक, मने.....' राजू जेना अपन छोटका खोलीमे एसगरे नाच' लागल रहय । फेर एकबेर सभ सपना हरिया गेलै' तँ आब ओकरा कखनो गाम जाय पड़तै' ने- ओहो एक बेटाक बाप अछि !

एहि बीच राजूक पीठमे दर्द उखरि गेल रहै' से कय दिनसँ बोखार तबाह कयने छैक । सड़क पाइ सभ दवाइ-दारूमे खर्च भ' गेलै' । सभ धयल-उसारल ओ अपनेमे लगा देलक । मोन अशांत रह' लागल रहै, नहि जानि कखन कोनो समाद, जेना पत्र आबि जाइ..... ।

आ सैह भेलै' -नौ मास पूरा भ' चूकल छलै ' आ आब अबतबमे छै' । घड़ी, कोनो क्षण भ' सकैछ । से पाइ चाही ।

आब । कत्त'सँ पठबौ ओ रुपैया । कहाँ छै' ओकरा जरमे । तखन की होयतैक ओकर सपनाक । सभ विश्वास खण्डित होइत बुझयलैक ओकरा ।

एकरा सङहि गामपर दर्दसँ छटपटाइत घरवालीक क्लांत अनुहार दिमागमे नाचि जाइछ । छी'-छी', सपना दुनू केँ ओ गढने छल । लगै' छै' परिस्थिति सभ छिड़िआ तँ ने देतैक ।

आइ फेर एकटा खबरि अयलैक दवाइक पूर्जीक सङ । 25-30 टकाक दवाई कीनि जल्दी घर अयबाक लेल कहल गेल छै' । ओ एक बेर फेर छटपटा जाइत अछि-आब ? किछु ने किछु तँ करहि पड़तै । स्थिति तँ अन्तिम छै'- की करओ ओ ।

मालिकसँ पाइ मङबाक साहस नै छै' ओकरा । अगते पाइ उठाक' पछिले मासतँ

पठौने छल ओ आ गत किछु माससँ कनेक बेसिए अगाउ मङितै रहलए । आब कोन मुंहे माङगओ..... । तखन के देतैक पाइ ओकरा आ जँ पाइ नहि होयतैक तँ पत्नी ओहिना छटपटाइत रहतीह ? मित्रक सभक हँसैत अनुहारक ओ सामना क' सकत ? की ठीके सभ किछु तहस-नहस भ' जायत ?

एहि संसारमे क्यो तँ एहन नै छै' ओकरा जकरा ओ समय-समय पर एक मुट्ठी याचना क' सकैक । ओना मोहल्लामे ओकर श्रम ऋणी तँ बहुत गोटे होयत, जकरा समय-कुसमय पर ओ देह-जानसँ सहायता करैत रहलैए । मुदा, आब तँ समय साल एकतरफा छै, क्यो ओकर उपकारक मोजर देबो करतै ?

तैयो ओकरा किछु थाहऽ त पड़बे करतै-राजू हारल मोने मौका-कुमौका बरोबरि काज-धन्धा ओ करैत रहल अछि हुनकर । तँ पहिने राधे ल'ग देखी ।

राजूकेँ देखिते राधा बाबूक पत्नी-प्रसन होइत दौगलीह- 'एह, कय दिन पर देखलियौ राजू । घरमे सभ किछु सठि गेल अछि । कनेक बजारसँ ।

बीचेमे राजू लोकैत बाजैत अछि-एखन हम बेगारतासँ आयल छी मलिकानि । घरमे पत्नी बेमार छै । एम्हर हम स्वय बेमार छली । से पाइ कौड़ीकेँ दिक्कत भ' गेल हय । घर पर पाइ पठायब जरूरी । बड़ अशासँ अपने लग अयलीए । किछु..... ।

एक रत्ती गुम्भ भेल मलिकानि मालिकक नाम पर घरमे पैसि गेलीह । ओ लाथ क' देलक-ई बात राजूकेँ बूझबामे भाङठ नहि भेलैक । तखन ? के विश्वास करौ ओकरा पर । परदेशी लोकनि केँ ने जमीन, ने घर आने प्रतिष्ठा । श्रमक उपभोग करब फूट बात, विश्वास करब फूट बात । बड़ छोटमनेसँ घूरि आयल डेरा पर । ,

फेर हिम्मत क' एकटा बंगाली बाबूक डेरा पर गेल । वड़ स्नेह करै' एकरा राजूक बात सुनिते बंगाली बाबूक भौंह टेंढ भ' गेल रहनि- 'तुमको देनेमे हर्ज नहि । लेकिन, तुम बाहर का, गांवका आदमी है । भाग जायगा तो हम क्या करेगा ।' जेना तड़ाकसँ कनबोझ पर थापड़ क्यो मारलकै' ओकरा । छिलमिला उठल राजू, बाहरक, गांवक लोक बेइमान होइत अछि । सभ ईमानदारी शहरिया सभक बपौती छिऐ' ।

एक आध ठाम आर दौगल राजू । सभ ठाम एक्के बात । अविश्वास आ मात्र अविश्वास हृदय खण्ड-खण्ड भ' गेलै' ओकर । की एही दिनक हेतु एतेक उदार बनौने छल अपनाकेँ ? आइ मौका पड़ला पर कतेक नीक जकां टारि देलकै लोक ओकरा ।

निराशाक घनघोर धूनिमे चोन्हिआयल राजूकेँ एकटा क्षीण इजोत देखि पड़लै- पत्नीक देल औंठीक । बापक बड सेहन्तासँ देल कानक बालीकेँ औंठी बना ओकरा द' देने छलीह-प्रेमक निशानी । मुदा, ओकरा ओ किछु क' नहि सकैत अछि- पत्नीक हृदय

टुटि जयतैक । ओ कोन मुँह ल'क' घरबालीक आगाँ जायत । नै, ओकरा बुते ई पार नै लगतै- राजूक हृदय छटपटा उठैत छैक । विक्षिप्त जकाँ भ' जाइत अछि ओ ।

फेर स्थिर भेला पर पत्नीक कारुणिक चित्कार मोन पड़ै छै' । बचबाक किलकारी सुनि पड़ैछ । बूझाइछै' सभ सपना सपने रहि जायतै' । की की ओ करत ? अन्तत मन औंठी बेचबाक हिम्मत दैत छैक, ओ टिनही पेटीमे चेथरीसँ लेपटायल औंठी निकालैत अछि । आँखि डबडबा जाइत छैक । फेर मोन गुनधुन-गुनधुन कर' लगैत छै'- बेचओ कि की करओ । नै ओ बेचत नहि, बरु बन्हकी लगा देत । देखल जायतै बादमे छोड़ा लेत ग' । आ एकटा दोकानमे कतेक नेहोरा-मिनती कयलाक बात 20 टका दैत छैक ओकर । चलू, दबाई भ' जायत । मोनकेँ तोख धरबैत ओ दवाईक दोकान दिस बढ़ि जाइत अछि ।

दवाई हाथमे अबैत देरी ओ गाम विदा भ' जाइत अछि । ओकरा अपन प्रत्येक डेग कय-कय घण्टाक लागि रहल छलैं । मोनमे पत्नी आ बच्चाक अनुहारक कल्पना क्षीण प्रसन्नता तँ लबैक, मुदा छटपटाइत पत्नीक अवस्था, कोना होयतै की होयतैक तकर चिन्ता मोनकेँ भारी क' दैक । ताहि परसँ औंठीक चिन्ता एक मासमे बन्हकी छोड़यबाक परेशानी, मित्र सभक हँसैत अनुहारक सामना नहि क' सकबाक दर्द.... चारूकात समस्ये-समस्या घेरायल छलै' ओकरा आगाँ ।

गाम देखि पड़लै । नहि जानि किए-गाम देखिते ओकर पयर लोथ भ' गेलै । ओकरा होइछै' ओ हँसओ अथवा कानओ । कतेक फिरिशानी उठौला पर आइ 30 टकाक दवाईक जोगाड़ क' पौलक अछि । की एही लेल ओ कमाइत छल ?

ओ घरक आगाँ आबि जाइत अछि । दुआरि पर लोक सभक भीड़ भीतरसँ ओकरा गुदगुदा दैत छैक-सभ ओकरे बच्चाक अनुहार देखबा लेल ठाढ़ होयत ने । मने ओ आब बाप भ' गेल !

जखन ओ घरक दुआरि लग पहुँचल तँ सभ किछु जेना स्थिर बूझना गेलै' । ओकरासँ आँखि चोरबैत लोक मोनमे आशंका उत्पन्न क' देलकै । ओ हाथमे राखल दबाईक शीशी सभकेँ ठेकनिआ बापकेँ पुछलक- 'की भेलै बाबू ? दवाई हम ल'क' आयल छी ।'

अयबामे बड देरी भ' गेलौ बौआ । ओना गर-बकौर लागल बापक बोली ओकरा सभ किछु बुझा देलकै' । हाथमे राखल दवाई छूटि गेलै, शीशी सभ फूटि गेलै, छिडिआ गेलै सभ दवाई ।

ठकमुरगी लागल ठाढ़ राजू फूटल शीशीक दवाईकेँ छिडिआयब देखैत रहल आ देखैत रहल अपन वर्षहुक सपनाकेँ छहोछित होइत !

■

बिरड़ो

करीम मियाँ आमलेटक अन्तिम टुकड़ी मुँहमे ठूँसैत पीसैत अछि आ बदनाक टोंटी मुँहमे भिड़ा पानि गटगट क' पी जाइत अछि । प्लेटमे हाथ धो देहपरक गमछीसँ हाथ पोछैत घरवालीकेँ हल्ला करैत अछि- नयनाजान, ओ नयनाजान !

'की कहै छी ?' - बारीमेसँ मेहीकी बोलीमे छोटकी घरवाली नयनाजान बजैत छैक । घरबलाक नीक दुलारु अछि । बेर-सबेर करीम मियाँ बजारसँ मिठाइ आनि बड़ आवेशसँ खुआओल करैत अछि एकरा । ई चारिम पत्नी छैक । दूटाकेँ छोड़ि देने छैक आ आब दूटाकेँ रखने रखने अछि । करीम कहल करैत अछि- 'ना बाबा ना ! आब विवाह नै । भ' गेलै ।' ....से गोरकी छोटकी खुब दुलारू बनल अछि । आंगनमे अबिते नयनाजान- नयनाजान रट लगौने रहैत अछि ।

'अरे, हमर झोड़ा कहां है । आइ तँ लाइटो जराक' काज कर' पडतै । ततेक ने कपड़ा जमा भ' गेल छै जे'- करीम बजैत अछि ।

छोटकी एकटा अलमुनियाक पेटीमे राखल काटल कपड़ाक झोड़ा ओकरा दैत छैक ओ तकरा कनहामे लटका दोकान दिस विदा भ' जाइत अछि ।

बाटमे पलदार घर लग जाइते फेर ओकरा कानमे ओएह पुरना जनानी स्वर अभरै छै- जुअनढाहा, मोचरूआ, सरधुआ । तोहर बापक कौरमे ...... ।

आइ कतक दिनसँ करीम ई गारि सुनि रहल अछि । ओ एहि बाटें जाइत-अबैत सुनितो बातकेँ ध्यान नहि दैत छल- एत्त' कतेक खधम्मरि सभ बैसल अछि, अपनामे दिन राति झागड़ा करिते रहैत अछि । तएँ के पड़ओ एहिमे । मुदा, आब ओकरा अनसोहाँत लगैत छैक । आखिर ओकरे सुनाक' किएक पढैत अछि ?

'के अछि ई हरामी' -करीम कनेक खिसिआक' माथ उठा ओम्हर तकैत अछि । एकटा 20-22 वर्षक जनानी जे अुआनीएमे हालति बिगाड़ि लेने अछि । मैल वाइलक

साड़ीमे लेपटायलि ओ एखनो देखबामे ओतेक बेजाय नै-करीम दिस ताकि गारि पढि रहलीह अछि ।

करीम गौरसँ देखैत अछि- खहरल देहक अछैतो जनानी किछु चिन्हास सन लगैत छैक । मन भेलै जे टोकी-फेर की सोचि चुप भ' दोकान दिस बढि गेल । मुदा, पाछासँ ओकर गारि पछोड़ धयने आबि रहल छलैक-मोचरूआ, सरधुआ, बेटखौका... ।

राति एगारह बजे घर घुरैत अछि करीम..... एकदम थाकल-ठेहिआयल । अबिते पलंगपर खसि पड़ैत अछि । छोटकी बीबी दौड़ैत छैक- की भेल अहाँ केँ ? मन खरब अछि ?

'नै, आइ काम बेसी छलै से..... करीम नमहर साँस लैत अपन घरवाली दिस तकैत अछि । ओकर चिकन मुँह देखिते मोन हरिया जाइत छै- हाय रे हमर नयनाजान ।' हाथ पकड़ि जोरसँ देहपर घीचि लैत अछि । नयना करीमक छातीपर लुदसँ खसि पड़ैत अछि...... दुत् । खाना नै खयबै ?

'ई की छै ? ....करीम मजाक करैत छैक ।

'एह, एहिसँ पेट भरतैक । छोड़ू, अहाँ लेल खाना लगा दैत छी । पत्नीक आग्रहकेँ करीम मानि लैत अछि । साँचे आइ ओकरा भूख लागल छैक । ओ खयबा लेल उठि बैसैत अछि ।

नयना लजा जाइत अछि । करीम रोटीक टुकड़ीकेँ मासुक रस संगे बोरि-बोरिक' खाय लगैत अछि आ लाजे लल्हौन भेल घरवालीक मुँहकेँ निहारैत अछि । मानू रोटी मांसुक रस संगे नहि घरबालीकेँ लाली संगे खाइत हो ।

आइ भोरे करीम नित्यकर्मसँ निवृत भ' दोकान जयबा लेल तैयार होइत अछि । आइ ओकर मूड खूब फ्रेस छैक । घरवालीकेँ कहैत छैक..... आइ सांझ सिनेमा । बुझलहुँ ?

नयनाजान कतहु चुक'बाली ......जरूर ? हम सेबेरे खाना बना लेब ?

करीम हाथमे कपड़ा सभ नुरिया गरदनिमे टेप लेपटओने कानपर पेंसिल धयने कोनो कब्बालीक पंक्ति गुनगुनाइत दोकान दिस विदा भ' जाइत अछि ।

मस्तीसँ झुमैत-गबैत जाइत करीमकेँ बुझाइत छैक जेना केओ फटाकसँ कनबोझमे कड़गर थापर मारि देने रहैक ....जुअनढाहा, मोचरूआ, देहजरूआ, बपखौका..... ।

'रसाली, भोरे-भोरे जतरा खराब कर दिया । करीम खोंझा जाइत अछि । गारि पढनिहारि दिस ससरि बमकि उठैत अछि.... की तोरा हमरे देखने गारि सुझैत छौ ?

'गे माई गे माई, इ जुअनढाहा बजै केना है । जेना केहन सतवरता हो-ओ जनानी फेर गरिअबैत छै ।

'हे, पट-पट जे गारि पढैत छें से हम की बिगाड़ने छियौ तोरा गे'- करीम फेर डपटै छै ।

'रे करीमबा, तोरे चलते त हम बरबाद भ' गेली आ की बिगाड़ने छीयौ' । करीम कनेक थकमकाइत अछि...गे तों के छैं । हम त तोरा....... ।'

बातकें बीचमे लोकैत ओ जनानी चिकरै छै...... बिसरि गेलही । पुरना महल्लामे पुलिससँ ककरा पकड़ओने रही ..... । नै हौ मन ।'

''पुरना महल्ला ! .....याने ई फुलिया छै । हे अल्ला...... करीमक माथ घिरनी जकाँ नाचय लगैत छैक । ओ कनेक हटिक' गाड़ल खम्हनीसँ देहकें सटा लैत अछि । ओकरा बुझाइ छै जँ एना नै ओ करितए तँ निश्चिय ओ नीचाँमे खसि पड़ितए । ओकरा माथमे आइसँ सात-आठ वर्ष पूर्वक दृश्य आबय लगैत छैक..... जहिया ओ एहि शहरमे नवे आयल रहय । जवानीक जोश आ घरवाली रखबाक सौख..... ।

पुरना महल्लाक एकटा छोटछीन कोठरीमे ओ रहय आ बगलेक दोसर मकानक एकटा खपड़ैलमे फुलिया । 13-14 वर्षक जुआन फुलिया । देखबामे खूब सुन्नरि । बीआहलि छलि मुदा घरबला एत्त' नै रहैक । उठा-पठकक काज करैक । करीमक नजरि कतेक दिनसँ गरल रहैक ओकरा पर । ओहना छौंड़ा सभ ओइ असगर छोड़ी पर मर' चाहैत रहय । मुदा, फुलिया ककरो नाक पर माछी नै बैस' दैक ।

मास्टर कय दिन फुलियाक आगाँ-पाछाँ करय । कतेको साया-ब्लाउज उधारी सी देने रहैक । एक दिन एकान्त पाबि मास्टर रोबसँ पूछि देने रहैक- फुलिया सिआइक तँ ढेर पाइ भ' गेलौ । देबही नहि ।'

'द' देबह ! आइ-काल्हिमे..... एखनु हाथ पर नै है ।

'नहि हौ तँ कोनो बात नै ...... एक दिन....' करीमक बातक इशारा बुझि फुलिया तड़पि उठल रहय.... रे करीमबा, बेसी लबर-लबर कयले तँ मुँह नोचि लेबौ । तोरा घरमे माय-बहीन नै छौ । आ खूटसँ पाइ खोलि मुँह पर मारि चलि गेल रहय .... ।

छिलमिला उठल रहय मास्टर करीम मियाँ । फुलियाक ई हिम्मत । महल्लाक पुलिस हवलदारसँ करीमक नीक जान-पहचान रहैक । मंगनिएमे कपड़ा सी देल करैक । एक दिन जोगार भिरौलक .... हवलदार साहेब, जीना हराम भ' गेल अछि हमरा सभकें ।

'की बात छै मास्टर साहेब'..... असामीक खोजमे हवलदारक आँखि चमकय लागल रहैक ।

'एह, की कहू । एकटा छौड़ी है फुलिया । महल्लाकें बिगाड़ने जा रहल छै । सांझमे टिकुली सटै छै । छौंड़ा सभकें पटा घरमे रखै छै । छीआ-छीआ ! नीक लोककें रहब कठिन छैक आब ओत्त' ।

'ठीक, छै, देखबै ओकरा'....... हबलदार माथ डोलबैत किछु सोचैत अछि ।

ओही साँझमे नशामे धुत भेल ......हबलदार एकटा सिपाहीक संगे फुलियाक खपड़ैल पर डंटा बजबैत पहुँचल रहय..... 'स्साली । रंडबाजी करै छें । एखने हम बापसँ भेट करा देबौ ।'

फुलिया बाप-बाप चिचिआयल रहै । हवलदार सिपाहीकें ईशारा क' देने रहैक ओ घीसिअबैत ल' गेल रहय आ ओकरा हाजितमे बन्न क' देने रहैक ।

सात दिन रखलकै फुलियाकें थानामे । आ जखन छूटल तँ फुलियाक देह सुखा गेल रहैक । बुझाइ जेना सोनित केओ सुइयासँ घीचि लेने होइक ।

करीम ओकर देखलकै त ओकरासँ आँखि मिलयबाक साहस नहि भेल रहैक । आ राताराती अपन डेरा बदलि एहि महल्लामे आबि गेल रहय । किछु दिनक बाद सुनने रहेक.... घरवला अयलैक तँ थानामे थुनयबाक बात सुनि भड़कि उठल रहैक आ पड़ा गेल रहैक छोड़िक' । आब तँ ठीके देह बेच' लागल रहय..... ।

समयक संग ई घटना विस्मृत होइत गेलै । मास्टर एहि महल्लामे आबि अपन दोकान जमा लेने अछि । बड़ ताकि हेरिक' जोगार भिड़ा नयनाजानकें फँसने रहय-आइ ओकरा संग ओकर गृहस्थी आनन्दसँ कटि रहल छैक । दिनक' 10-15 कपड़ा काटि-सी लैत अछि । दिन खाइत-खेलाइत जा रहल छलैक कि ....आइ.... ।

फुलियाक कानब सुनि करीमक भक टूटलैक । ओ खम्हनी पर ओलरि गेल छल... भारहीन जकाँ । ओकरा ओत्त' आब ठाढ रहब मुश्किल जकाँ लगलैक । ओ मंत्रचालित सन दोकान दिस बढि जाइत अछि ।

'हा, अल्ला, ई की भेलै.... ओकर आत्मा जेना धिक्कार' लगलैक । ओ तँ डेरयबाक लेल ओकरा पकड़ाबय चाहैत रहय... लेकिन पुलिसवला तँ ठीके ओकरा बेसबा बना देलकै...।

दोकान पर पहुँचि ओ चुक्की-माली बैसि जाइत अछि । पटियापर कपड़ा सभ पसारि दैत छैक । हाथमे कैंची ल' ओ कपड़ा काटय लगैत अछि । ओकर हाथ धाराप्रवाह चल' लगैत छैक...... नापोसँ फाजिल ।

छोटका मास्टर चिचिआइ छै.... अरे उस्ताद ! की क' रहल छी ? सभ कपड़ा जिआन भ' रहल छैक ?

करीम नि:शब्द मतसून जकाँ हाथ चला रहल अछि । सम्भवत: टेरीकाँटक कमीजक कपड़ा छैक जकरा ओ कैक टुकरी काटि चुकल अछि आ पुन: काटि रहल अछि ।

छोटका मास्टर फेर हाकरोस करैत अछि.....आहिरेबा ! सभ बर्बाद भ' गेलै । मास्टर साहेब, अहाँकेँ की भ' गेल हय ?

'तड़ाक' ......जबरदस्त थापर ओइ चौदह वर्षक छोटका मास्टरक कनबोझ पर पड़ैत छैक । ओ भौंचक भेल कनमुँहे टुकुर-टुकुर करीम मास्टरक बतहपनी देखैत अछि ।

आ करीम मास्टरक कैंची ओहिना कपड़ा सभकेँ दकचने चल रहल छैक ।



हेराइत परिचय : बौआइत सम्बोधन

आइ लगभग छव वर्षक वाद चारि नं. क्वार्टर आगां ठाढ छी । गामसँ एतुक्का 125 कि.मी. क दूरी तय करैत काल ई मकान आ एकर अगल-बगलक डेरा, वस्तु सभकेँ ठेकिनियबैत आबि रहल छी- नहि जानि एहि बीच कतेक बदलल होइक चीज-वस्तु सभ । बुझाइए जेना कोनो नव ठाम जा रहल होइ जत्त कोनो परिचित भेटब मुश्किल रहय!

मुदा, अद्‌भुत तँ एकटा बात लगैत छल- जेना भितरमे कतौ हम अपराधबोधसँ ग्रसित होइ- एत्त अबैत काल मनमे आदंक पसरल छल, एखनो एहि क्वार्टरक आगां ठाढ होइतो मेटा नहि सकल अछि । बरु कनेक बढिए गेल अछि-कतौ हमर उपस्थिति ककरो लेल कष्टदायक ने सिद्ध भ' जाइक !

कोठरीक दूमुँहा बरण्डा पर राखल खुरसी पर धम्मसँ बैसा जाइत अछि । 'भैया भितरे आउ, संजीवक दू बेरक आग्रह हम अनसूनाक' चुकल छी । हिम्मत नै होइए भितर जाइ । आब परिचयक नव सिमांकन, एकटा रेखा जेना खिचि देने अछि- जकरा टपब उचित नहि ।

पहिने ! ककरो बजएबाक काज नहि रहैत छलै । अबैत देरी हमर आहट पाबि पूर्व मुंहक कोठरीमे भरि आंखि स्नेह-अनुरागक नोरकेँ भरने कोनो आत्मीय प्रतिक्षारत रहैत छलीह । जकरा लग पहुँचि भरिपोख आंखि जुरएबाक व्यग्रता देखबा योग्य रहैत छल ।

आइ छव वर्षक बाद परिचयक सभ अतीत खण्ड-खण्ड भ' गेल बुझाइत अछि । हमर नजरि एतुक्का कोनो वासीक हावभावसँ अपनैतीक व्यवहार नहि पाबि रहल अछि । लगैछ हमरा आयब कोनो सामान्य नहि बरु असामान्य बात होअए । छब वर्षक बादक भेंट आ ई अनुभूति ।

वास्तवमे संजीव आइ हमरा एहि धर्मसंकटमे फंसा देने अछि । लगभग चारि-पाँच वर्षक बाद हमर गाम गेल संजीव एत्त अएबा लेल बड़ जीद ठानि देने छल । हम तौलबाक

प्रयास कयने रहिऐक जे संजीवक आग्रहमे कतेक ओजन अछि किए ओ अएबा लेल जीद क' रहल अछि । जखन ओ बुझैछै-हमर ओतुक्का सम्बन्धमे तनाव आबि गेल अछि ।

तनाव-हँ सएह कहबाक चाही । बरु ई कही जे हम ई मानैत आबि रहल छी । ई तहियेसँ जहिया वीणाक विआहक समाद हमरा पहुँचल रहय- एत्त अएबाक लेल ।

हम झमाक' खसल रही-विश्वासे ने भेल रहय जे वीणाक विअह संभव भ' सकैछ । एहि दुआरे नहि जे ओ कुरूप वा कुलक्षिणी छलीह । एहि दुआरे जे वीणा हमर भ' गेल छलीह । सेनुरसँ नहि, वचनसँ ।

शेखर बाबूक मझिली बेटी वीणा स्वभावक अत्यन्त गम्भीर, भितरसँ महाँसमुद्र । गुण-शीलमे ककरोसँ बीस पड़ैत । गत तेरह वर्षक हमरा सभक सम्पर्क एतेक आत्मियता बढौलक जे हम सभ एक दोसरक हेतु सप्पत खा लेने छलहुँ । लागए-जेना दुनूकेँ एक दोसरक जरूरति रहिए गेल होअए । आ तएँ ओ मिलन भेल छल शायद ।

ओहि बीच एकटा निजी घटनासँ ओत्त हम जा नहि सकलहुँ । आ ताही बीच खबरि आयल जे वीणाक विवाह ठीक भ' गेल छै । हम त झमाक' खसल रही, की ठीके वीणा विवाहक हेतु तैयार भ' गेल छलीह ? नारीक एहि रूपक पहिल दर्शन मोनकेँ आर व्याकुल क' देने छल ।

हम बड़ आक्रोश आ दुखसँ एकटा पत्र देने रहिऐ । पत्रक जबावमे निरिह भावें उत्तर आयल वीणाक- 'अहाँक दू वर्षसँ हमरा भेट नहि करबाक उपक्रमसँ लागल छल जेना अहाँकेँ आब हमरामे कोने रुचि नहि रहल । तएँ जीविकाक नव संभावना दिस प्रयास शुरू कयल आ शहर पहुँचि गेलहुँ । जत्त एकटा निहायत संयोगक कारणेँ लड़का पक्षबलासँ भेटघाँट भेल । बात चलल । बाबूजी 'ह' मे स्वीकृति द' देखखिन्ह । हम वास्तवमे तखनो स्तब्ध भ' गेल रही । घरसँ दूर कोनो विरोधक संभावनो नहि छलैक । हम मजबूर भ' गेल रही । हम उएह वीणा छी-मोनमे कोनो तरहक कपट नहि अछि । हँ, जँ हमरा प्रति कनेको स्नेह अछि तँ एक बेर एत्त आवि अपन अनुहार देखा जइतहुँ । हम जिनगी भरि उपकृत रहितहुँ । पता नहि आर की-की सभ रहैक ओइ पत्रमे ।

शेखर बाबू स्वयं सपत्नी आबि गलती स्वीकार क' गेल छलाह । आश्वासन देलनि-विवाह रोकि देब । मुदा, हम तखनो जनैत रही ओ हमरा लग वीणाक सम्बन्धक दस्तावेजसँ आतंकित भ' ओहन असंभव प्रस्ताव हमरा लग कयने छलीह । तए जखन बादमे पता लागल जे विणाक विआह भ' गेल तँ हमरा ओतेक आश्चर्य नहि भेल छल ।

हम बरू अपनाकेँ हुनका सभसँ अलग करबाक प्रयास कर लगलहुँ । कहियो काल मोनमे हुअए जे आगाँ बढि चुकल बातके ओ एना किए अविश्वाससँ देख लागल

छलीह । बिना एक्को वेर पुछने ओ प्रणयसूत्रमे बन्हबाक स्वीकृति कोना द' सकलीह ? आखिर वीणाक एहि दोसर चरित्रक रूपरंग केहन अछि ! ई उत्कंठा मोनमे बेर-बेर हुअए जे जँ ओ भेटत तँ पुछितिऐक जे हमरासँ छुटकारा पएबाक मोन कोना भ' गेलैक ओकर ।

मुदा, से संयोग आब भेटब कठिन छल तइओ बातकेँ बिसरबे एकमात्र सभक समाधान बूझि ओत्तसँ अनठाब' लागल रही । बरु गत पाँच-छव वर्षमे सभ किछु जेना सामान्य भ' गेल रहै ।

आ जखन गत दिन संजीव हमरा ओत्त आयल तँ हमरा ठक-मुरगी लागि गेल रहय- आशाक विपरीत ओकरा अपना ओइठाम देखि । जतेक काल ओ हमरा कोठरीमे पैसि प्रणाम कैलक ताबत यन्त्रवत् हम बहुत किछु सोचि लेने रही । लागल रहय हमर अतीतक किछु कटु-मधु क्षण अनायास हमरा आगाँमे साकार होइत जा रहल हो । ओहुना संजीवक उपस्थिति हमरा प्रति आदरभावसँ मोनमे घुमडैत वीणासँ भेँट क' जिज्ञासा शांति करबाक आकांक्षा एक बेर साकार होइत सन बुझाएल रहय । तथापि हम अपनाकेँ सहज बनएबाक प्रयास कैने रही आ अत्यन्त औपचारिक प्रश्न पूछने रहिऐ - हालचल ठीक छै किने ?

ओ बड़ नम्र भ' उत्तर देने रहय- जी ! तकरा वाद दैनिक काजमे लागि गेल रही । संजीव परिवारक एकटा सदस्यक रूपमे एत्त पूर्वे अबैत रहय । तएँ ओकरा लेल कोनो औपचारिकता नहि रहैत छलै । देखिलिऐ' एहूबेर ओ सहजे अछि । हँ- पाँच-छव वर्ष जत्त ओ 10-11 वर्षक रहय एहि बेर जुआन भ' गेल अछि । तएँ बोली-वानी सभ किछु संतुलित ।

संजीवक पाँच-सात दिनक प्रवासमे बड़ घुमा क' पुछने एहिऐ वीणाक मादे । आ जखन पता चलल जे ओ दू बच्चा के माय भ' गेलीह अछि आ एखनो नैहरे छथि तँ फेर पूर्वक प्रश्न अहुरिया काट' लागल । तँ की कोनो जोगाडे ओत्त जायल जाए ! नइ, ई कोना भ' सकैछ- अन्तरात्मा मानि नहि रहल अछि । हम किए खसू- मोन दृढ होइत अछि ।

मुदा, संजीव गाम जएबासँ एक दिन पूर्व जखन हमरा ओत्त जा सकब । कोन सम्बन्धक बुत्ता पर ओतुक्का अन्न घोँटायत ?

आ तएँ हम अपन असमर्थता देखा देने रहिऐ' । से संजीव मानलक नहि । बरु एक दिन आर बैसि गेल आ जिद्द ध' लेलक- नहि बहुत दिन भ' गेल छै' । चलही पड़त ।

अनेक गुनधुनक बीच एत्त अएबाक निर्णय कर' पड़ल रहय । हेरायल सम्बन्धक नव सम्बोधन खोजबाक ई उपक्रम कतेक हास्यास्पद रहय हमरा लेल ई हम पूर्वसँ बुझैत छलहुँ, मुदा मोनक कोना अत्यन्त गहींर कोनमे दबल वीणाक सानिध्य सुख रहि-रहिक' रोमांचित क' दैत छल ।

आ अन्ततः एखन हम वीणाक नैहरक एहि मकानक दुरुखीमे राखल खुरसी पर

बैसल छी, पता नहि एहि पूर्व परिचित खुरसी पर हम आर कतेक काल अपनाकेँ अतीतमे उधिअबैत बैसल रहितहुँ एवं संजीवक आग्रह-दुराग्रहमे नहि बदलि हमरा भितर नहि ल' गेल रहितए। हम घरमे राखल पलंग पर बैसि जाइत छी। यद्यपि गर्मीसँ देह उसनल जाइत सन बुझाइत अछि, आ तएँ पंखाक रेगुलेटर दिस तकबाक चाहैत छल, मुदा से हमर नजरि देबालमे किछु उपर एक पाँतिसँ अँटकाओल फोटो सभ पर जाइत अछि। हम बड़ उत्सुकतासँ अपन फोटो तकैत छी- अछिए। माने देवालसँ एखन धरि नहि हटाओल गेल छी। आश्वस्त होइछी। फेर एकटा नव फोटो मध्य ई नव चेहरा अन्दाजसँ हम चिन्हैत छी- नवका जमायक हयतनि, शेखर बाबूक। माने वीणाक घरबलाक।

कखन संजीव पंखा चाला देने रहय हमरा ज्ञात नहि भेल। हम एकटक्क ओहि फोटो पर देखैत फेर भसिआइत जा रहल छलहुँ कि नहि जानि वीणाक माय कोठरीमे आबि बगलक खुरसी पर बैसलि हमरा फोटोक निहारब देखि रहल छलीह। हमरा गुनधुनमे पड़ल देखि हमरा चिन्हबैत बजलीह- इएह छथि सोनपुरबला, हमर जमाय।

हम जेना चौंकि क' नजरि हटा अपनाकेँ सहज बनब' लगलहुँ ओ हमर उत्तरक कोनो प्रतिक्षा नहि क' आगाँ बाज' लगलीह- बड़ नीक लोक। स्टैण्डर बड़ भारी छनि। खाइत-पिबैत लोक। घर-जमीन खुबे छनि। बड़ खर्चिला लोक छथि।

पता नहि हुनक ई परिचयक गप हमरा किए नीक नहि लगैत अछि। बातकेँ बदलैत हम कहैत छियनि- की हालचाल अछि?

'कोहुना चलि रहल छी।' वीणाक माय सेहो बड़ औपचारिक उत्तर दैत छथि। बरु हुनक अनुहार देखि हमरा बड़ पैघ आघात लगैत अछि। हमरासँ दीर्घ अन्तरालक बादक भेंटक कोनो प्रसन्नता अथवा एतेक दिन धरि गुम्मी लधने रहबाक उपरागक कोनो अनुभूति हुनक अनुहार पर नहि रहैछ। चोट लगैत अछि-दू तीन मास नहि अएला भ' गेने उपरागक पत्र पठबैत वीणाक माय एतेक निष्ठूर भ' गेलीह अछि आब! तँ की ओहो हमरा संग आइसँ 14-15 वर्ष पूर्वक सम्बन्धसँ शुरू कर' जा रहलीह अछि।

मोन कोनदान हुअ' लगैत अछि। भोरे चल जएबाक मन बनब' लगैत छी। बुझाइए एत्त रहब ठीक नहि। जत्त घटैत मान-सम्मान हृदय पर आघात मारैत सन बुझि पड़ए ओत्त' थेथरि क' बैसब कोनो तरहें उचित नहि।

फेर सोचै छी- ई सभ हमरासँ डेरा त' ने गेल अछि। हमर पूर्वक व्यथासँ परिचित हिनका सभकेँ लगैत होन्हि जे जँ हम एत्त आबि अपन कथा ककरो सुना देलिऐ' त? महाअनर्थ भ' जा सकैत छलै। सभ जतनल महल भरभरा क' खसि सकैछ। तखन ई बेरूखी ताही लेल तँ नहि।

सुतबा काल एकटा दुबर लोकसँ परिचय करबैत शेखर बाबू बजैत छथि- वीणाक

ससुर छथि। हम कतहु भितर सँ सिहरि जाइछी। वीणाक ससुर! तखन एहि घरक लोकक मुँह पर उड़ैत हवाक कारण इएह बूढ छथि। हम आ ई बुढ मने वीणाक ससुर आ हमरा संगक झाज़ी जे एहि सम्बन्धक मादे खूबे जनैत छथि-एहि उदासी, बदहवसी आ कष्टक पृष्ठभूमिमे नाचि रहल छी। मुस्कीक कतहु एकटा क्षीण रेखा ठोर पर अनैत हम सुत' चल जाइत छी।

भिनसर गाम दिश विदा होइत वीणाक ससुर अपन गाम अएबाक आग्रह करैत छथि। हम औपचारिकतावश अपन स्वीकृति दैत छिऐक, मुदा हम अनुमान करैछी बगलक कोठरीमे अपन चारिमासक बच्चाकेँ कोरमे लेने वीणा सिहरि गेल हयतीह-कतौ हम ओकर सासुर ने चलि जइऐ'। तखन बात झांपले रहतै ई कोना कहल जा सकैछ।

एकर अनुमान करबाक संभावनाकेँ वीणाक चुप्पी आर बढा दैत अछि। दू दिन आयल होइतो एखन धरि ओ हमरा आगाँमे आब' किए ने चाहैत अछि।

स्नान करबाकाल उत्तरवारी कोठरीक मुँह पर अपन कोरामे बेटाके लेने गुमसुम वीणा देखि पड़ैत छथि। ओकर मुँह दोसर दिस छैक, अथवा ओ जानिक' ओमहर घुमि गेल अछि। हम भरिपोख ओकरा देखि लेब चाहैत छी। पता नहि फेर हमरासँ भेंट होइक कि नहि।

स्नान क' अबैत काल एक बेर फेर नजरि ओमहर पड़ैत अछि। ओ तहिना माथ घुमौने अछि। हम कनेक काल ठाढ होइत छी- होइए टोकिऐ'। फेर मन नहि मानैत अछि। पछिम मुँहक कोठरीमे जा कपड़ा बदलि वरण्डार पर रौदमे बैसि रहैत छी।

हमरा खाना खा क' चलि जएबाक अछि। संजीवकेँ शोर पाड़ैत छिऐ' - 'संजीव'।

'जी'- संजीव ताही तत्परता आ आदरसँ उत्तर दैत आगाँमे ठाढ भ' जाइत अछि।

'कपड़ा सभ ठीक करू। भोजन क' तुरत चलब'- संजीवकेँ अढबैत काल फेर मोन कचकि उठैत अछि। एतुक्का प्रवासमे हमर सभ सुविधाक खिआल वीणा करैत छलीह। आइ ....।

भोजनक बाद वीणाक माय झाजीकेँ कहैत छथिन्ह- पंडीतजी, सुति रहु। आइ जएनाइ नहि हयत। अइली अ' अपना मने, जायब त हमरा मने ने।

हमरा कान पर विश्वास नहि होइत अछि। ठीके ई वीणाक माय बजैत छथि। की हम सभ एत्त कोनो भय-त्रासक वातावरण नहि बना रहल छी? की ठीके वातावरण एतेक सहज अछि।

ता भितरसँ मुस्किआइत संजीव बहराइत अछि- भैया! आइ त जयनाई नहिए हयत, चलू बजार, किछु समान सभ कीनबाक अछि।

हम पलंग पर ओंगठल अन्दाज लगबैत छी- वीणाक आग्रह संजीवक माध्यमसँ हमरा लग आयल अछि । की वीणा हमर उपस्थितिकेँ सहज रूपें ल' रहलीह अछि । संभव थिक ससुरके गेने मोन हल्लुक भ' गेल होइक ।

संजीवसँ कनेक थम्हबाक आग्रह क' हम एक नीन मारि लेब' चाहै छी । आंखि मुनने पड़ल रहब- नीनक बहाना भ' जाइत छैक । संभव थिक माथ किछु हल्लुक भ' जाए।

सांझ खन घुमैत बजारमे चौक, सिनेमा हॉल, बजार, फोटो स्टूडियो सभ बुझाय जेना हमर नीयति पर हँसि रहल हो । हम जल्दी डेरा घुरि अबैत छी । मनशाय रहैछ एक्को झलक देखि ली आ मोनक बात एक बेर कम सँ कम कहि दिऐक ।

घरमे राखल पलंग पर फेर ओंगठि जाइछी... । पूर्व मुहक घरमे अपने नेना सभमे घेरायलि वीणा ओकरा सभकेँ पुचकारि सुता दैत छैक आ हमरावला कोठरीमे रखल खुरसी पर बैसि जाइत छी...। नहि, एत्त त केओ नहि अछि । मने हम सपना गेलहुँ अछि । कनेक आँखि लागि गेल छल । जे सत्य हमरा बरोबरि परेशान करैत छल ओ आब सपना भ' गेल अछि ।

मोन पड़ैत अछि । पहिने भोर होइक कि दिन, जखन-जखन ओ सुतल रहैत छल वीणा शरारतसँ पयर गुदगुदा दैत छलीह । उठला पर हसैत बजैत छलीह- 'बाथरूम नहि जायब? की पानि आनि दिअ मुंह धोएबाक लेल ? उठू, कतेक सुतैत छी !

आइ छव वर्षक अन्तरालक बाद बदलल परिस्थितिमे एत्त आबि पुरना बातकेँ सोचि हम आर व्यथित भ' जाइत छी ।

वास्तवमे एत्त हमरा नहि अएबाक चाहैत छल । जिनगीक दू फूट बाट पर अपना-अपना ढंगे चलि चुकल कोनो मीतकेँ फेर पाछां घुमि पुरना परिचय खोजबाक उपक्रम कतेक कष्टप्रद भ' सकैछ, हम एत्त आबि सएह कष्टमे छटपटा रहल छी । संभव थिक- पूबारी कातक कोठरीमे अपना भितरमे स्मृति आ उपरागक आगि समेटने वीणा सेहो एहिना धधकैत हयतीह ।

मुदा, ताहिसँ हमरा मतलब नहि हयबाक चाही । आब वीणाकेँ पाछाँ दिस तकायब अपराध हयत, मर्मान्तक पीड़ा देब हयतै ओकर ।

हम निर्णय करै छी काल्हि अन्हरोखे डेरा छोड़ि देब । संजीवकेँ शोर पाड़ि कहि दैत छिऐक- हे, हम भोरे जायब, से हमर कपड़ा सभ ध' दिअ ।

पलंगपर ओंगठल-ओंगठल आंखि झपने जा रहल अछि । मुदा, दोसर कोठरीमे अपन समानक सैंतब हम महसूश करै छी । एखनो बूझाएइ- जेना वीणा हमर एटैची तैयार क' रहल हो ।

■

सीरी पंचमी

मालिकक विशाल आंगनमे मलिकाइन द्वारा बनाओल पीठारक रेघासँ बनाओल हरक सिरखार पर हर राखि अबुझ खतबे अशा आ ग्लानिसँ भरल आँखिए हर पर धान धरैत मलिकाइनकेँ देखैत अछि ।

आखिर ओ मलिकाइन छैहे आ ओ जन रहबे कयल, मुदा पछिला दिन कतेक कटुता आबि गेल रहैक दुनूक मध्य...... ।

अबूझ पश्चाताप क' उठैत अछि । मोन पाछाँ उड़ि जाइत छैक.... ।

बात बड़ छोट रहै । ओ कय दिन गीरहतक खेतमे काम पर नहि आयल । लार-पोआर समटब, दौनी-दोगौनी करब, खर-खरिहान, बहारब-समटब-सभ छोड़ि देने रहय । आ तकर कारण रहैक उत्तीमपुरमे खुनाइत पैन । 14 रु० धरि रोज रहैक ।

मालिक तँ गरजबे कयने रहैक - मलिकाइन खूब बेटी-रोटी कयलकैक । अबूझबाक संगमे टटका कमायल एक-आध सय टका रहै । गर्मी बरदास्त नहि भेलैक आ ओ बमकि उठल रहय-हमरा फुरसति नै भेल, नै अइली ।

'से कोना भ' सकेत छौ । जनि-बनिहार लोक एहने मौका-कुमौका लेल रखैत अछि ने ! तोरा राखि की फैदा ? - मलिकाइन बाजल छलीह ।

'त' हमरा छुट्टी दीअ, हम नहि रहब । जत्त मोन हयत कमायब । -अबुझबा एक झोंकमे बाजि गेल ।

'ठीक छै हमर खायल-पीयल द'जो । तोरा हमहुँ राख' नहि चाहै छी । तोरा गीरहत के कमि नहि त' हमरो जनकेँ कमी नहि- मलिकाइन निर्णय सुना देने रहैक ।

भेलौ, हम घरे जाइछी । सब सधा देबै । आब अपन दोसर दुआर देखब, लेकिन बात कहिनी हम नै सहब- अबूझबा मस्तीमे बाजल रहय । ओ घरजा घरबालीकेँ सब

बात सुना देने रहैक । घरबाली सुनितें चिचिया उठल रहै - माइ गे माइ ! ई जुअनढाहा त' अपनो बिलटबे करतै हमरो सभकेँ बिलटा देत । रे मचोरुआ, ई जे कुत्ता जकाँ धिआपुता जनमएने छे-तकरा पालतौ के ? के है अइ गाममे जकरा आरि पर घास आ खेतसँ सागो पात आनिक' गुजर चलतै ? के है एहन जे बारहो मास जन-बनिहारकेँ कमयतै ?

ओ अपन घरवालीक बात सुनि कनेक कालक बाद बाजल रहय- मालिककेँ कतेक खायल पीयल होतै?

'से तोरा पतानै । से रहतौ केना । पबनिए-तिहारे, मौके-कमौके त' लाबि क' हम गिरैलियौ । तोँ की बुझबिही-अबूझबाक घरवाली जेना बताहि भ' गेलि रहय ।

'तैयो' ओ हिम्मत कयने रहय ।

चारिमनसँ उपर होतै । आ मालिककेँ देल तीन कठबामे डेढ़ मन धान मात्र भेल छौ अईबेर.... सधा कोन बापक घरसँ सधबै छही - घरवालीक हिसाबसँ ओहो थकमकायल रहय । 'त घरमे अन्न नै है' ओ मनेमने जोड़ैत अछि।

"ओह, केना क' बाजि देलिऐ । आब ? -ओकरा गुनधुनि लागि जाइत छैक । घरबाली ओहुना पितायले रहै आ मोन आब अपने पर पीड़ा गेल रहै से ओ बिन खान-पीनकेँ चर्च कएनहि रामफल धामी लग चलि गेल रहय आ अपन सब खेरहा कहि सुनौने रहै -

'त' हम की करियौ ?' -रामफल उपेक्षासँ बाजल रहय । -'हमरा सुधि नै रहय...। मलिकाइनकेँ बात कहिनी कहि देलिऐ । हम कत्तसँ चुकैबै खान-पीन । हमरा बचाव धामी । आब तोरे आसरा छौ'...... ओकर गिड़गिड़नएनाईकेँ कोनो मोजर नै दैत धामी बाजल रहय..... लक्ष्मीसँ कोइ अहेर करे । हारले-खगते ओहे सब देखै-सुनै छै किने । जो मालिककेँ सब बात कहिक' गलती मानि लेगऽ ।

'कनी, तोही नै कहि देबहो । हम मालिकेमे कमयबै । दू-चारि दिनकेँ नगदी रोज कहुँ साल भरि पेट भरत । हे..... धामी कनीक ......' ओ खुशामद करैत आशासँ धामी दिश तकने रहय ।

'ठीक छै..... हम कहबै मालिक के' - धामीक आश्वासनसँ जेना प्राण पलटल रहै ओकरा । ओ मुंह लटकओने दरबीकेँ बरघरामे जाक' ओंघरा गेल रहय । सांझमे ककरो झकझोड़लासँ ओ हड़बड़ाक' उठल रहय-के है ?

'हम छी रे सार ! लोक दिन भरि कत्त-कत्त गेल आइ अखनुतक सुतले है । लाट साहेबी झाड़ै है'...... करिया खतबे खैनी लेटबैत हुड़पेटने रहै ओकरा ।

एकटा समाद हौ तोरा'........ करियाक बात पर ओ साकांक्ष भ' गेल रहय ।

'काल्हि छै सीरी पंचमी । हड़खड़ा होतै । गीरहत कहलकौअ..... पतरामे कहाँदन तोरे नाम उचरलैअ हरखड़ा करला । से भोरे नहा सोना क' हरखड़ा लक दरबज्जा पर चल जइ है' । मोनमे कतौ उमंग आ आँखिमे ग्लानि लदने ओ झटकारि के' अपना आँगना दिश बढ़ि गेल रहय...... अपन घरवालीकेँ ई समाचार सुनाब लेल ।

आइ भोरे ओ नहा-धोक' लभका समधिऔनाबला धोती आ मारकीनकेँ नवका धराउ गोलगला पहिरि गीरहतक ओहि ठाम चलि पड़ल रहय । बाटमे पुरना घराड़ी परसँ हरखड़ा सेहो उठा लेने रहय । भरि बाट ओ सोचैत गेल - आखिर तीन गाही जनमे ओकरे नाम कैला उचरलै । अबैत काल आन जन सभक बोली ओकरा बेर-बेर माथमे नाचि उठल रहै । आइ तोरे चलती छौ । हरपरक धानसँ आइ भोज-भात होतै की ?

दुरापर अबिते मलिकाइन पर नजरि पड़ल रहै, आँखि नीचा गाड़ि गेलै- की कह' ओ ।

मधुर आबाज सुनने रहय- 'अबूझ : बैसह । मालिक नहाइत छथुन्ह । आब अबिते हयताह ।'

ओ कोनो उत्तर नहि द' धनुषा मेलासँ लायल कड़गर तमाकूमहक एक जूम खूब रगड़िक' ठोरमे दाबि लेलक ।

कनेक कालमे मालिक अबैत छैक । कपड़ा-लत्ता पहिरिक' दहिन हाथमे कोदारि पकड़ि कान्ह पर धएने आ बाम हाथमे डालीमे धान आ दूभि लेने । आगाँ-आगाँ गीरहत आ पाछासँ ओहो खेत दिस बढ़ैत अछि ।

बाटमे गीरहत पुछने रहै- कोन लोहार केँ रखबिहि अइ बेर ! ओ की कहओ । तैयो बाजल रहय- फिरना कोनो बेजाय नहि । जखनु कहै छियै, तखनु तैयार रहैए । से...।

'ठीक छै, चल ओत्तै । मालिक संगे ओहो फिरनाक पसारमे गेल रहय आ फारकेँ पिटओने रहैक । फेर हर ल' क' बड़का कित्तामे जाक' जोति आयल रहय ।

आंगनमे आबि क' पिठारसँ लिखल हरक आकृतिमे ओ अपन हर राखि देने रहैक । तखन ओकर नजरि घरसँ मौनीमे धान ल' बहराइत मलिकाइन पर गेलै' । आइ जतेक धान हरकठकेँ झांपि सकतै -तते सब जने केँ होतै, माने ओहे लेत....... ।

अबूझ अपलक हरकठकेँ धानसँ झपैत अपन गीरहतनीकेँ देखैत अछि आ आँखिक कोनो कोनमे किछु बुन्न नोर डबडबा अबैत छैक । ओकरा बुझाइत छैक- गीरहतनी हरकठकेँ नजि, ओकरे सपरिवारकेँ धानसँ झांपि रहल होइ । ओ ओइ तरमे आश्वस्त महसूस करैत होअए ।

■

प्रमोशन

कोनो मधुर विचारमे हेरायल इन्सपेक्टर दिलेर सिंह हवलदार रामसिंहकेँ शोर करैछ – 'रामसिंह !'

"जी हजूर" – रामसिंह सैलूट मारैत अछि ।

"तोरा हवलदार भेला कतेक दिन भेलौक ?"

"लगभग पन्द्रह वर्ष ।"

"पन्द्रह वर्ष ? ...आ एखन धरि तोँ ओत्तहिके ओत्तहि लटकल छें ?"

'की करितिऐ हजूर, केओ एम्हर ध्याने ने देलकै ।'

'तो किछु कएनहे नहि हेबही ।'

'एहन बात नै हजूर, हम तँ एकसँ एक काम कएने छी ।'

'मुदा, हम तँ तोहर रिकार्डमे किछु ने देखलियौए ।'

'जँ हमरा रेकार्डमे ओ सभ लिखाए जइतै त' हम पन्द्रह वर्षसँ माथ धूनैत रहितहुँ ।'

'मतलब ?'

'हमर तमाम करतब बडका साहेब सब अपना नाम पर चढा लैत रहलाह, हम की करितिऐ ।'

'ओह ।'

'आब तँ उत्साहो मरि रहल –ए ।'

'नहि, रामसिंह । एना नहि सोच । काज करैत जो – हम तोहर सिफारिश क' देबौ ।'

'साँचे हजूर ?'

'हँ, रामसिंह । हम देखि रहल छियौँ तो नीक जकां काज क' रहल छेँ ।'

'अपनेक बड़ कृपा होयत हजूर ।'

'रामसिंह ?'

'हजूर ।'

'रमेश आइ-काल्हि कत्त अछि ?'

'एत्तहि छैक ।'

'मुदा, पछिला कयदिनसँ देखि नहि पड़ल अछि ।'

"हँ, ओम्हर ओ बिआह कर' गेल रहय ।'

'अच्छा ! – केहन छैक ओकर घरवाली ?'

'नै पुछू हजूर, परी सन छै ।'

'हूँ – 'अच्छा रामसिंह, तोरा पता छौ, आइ. जी. साहेब एम्हर दौरा पर आब'बला छथि ?'

'चर्चा त' सुनने रहिऐ सरकार ।'

'हम सोचि रहल छी, तोरा बारेमे एही दौरामे हुनका कानमे बात राखि दियै ।'

'हम जिनगी भरि अपनेक कृतज्ञ रहब हजूर !'

'रमेश कत' रहैए ?'

'हमरे बगलमे हजूर ।'

'के के सभ छै ओकरा परिवारमे ?'

'गामपर के के सभ छै.से त' पता नहि, एत्त धरि ओ एसकरे घरवालीकेँ ल' क' रहैए ।'

'की कहने छलैँ तो ओकर घरवालीक बारेमे ?'

'परी कहने छलिऐ हजूर ! अपूर्व रूप छै ओकर ।'

'की ठीके एहन सुन्नरि छैक ओ ?'

'मोनालिसा'क मुस्की दब भ जएतै ओकरा आगाँमे हजूर ।'

'एहन ?'

'हँ, हजूर।'

'हँ, – रामसिंह ?'

'हजूर ! तेजगर थानाक की हाल छै ?'

'कोनो नीक नै छै हजूर ।'

'मतलब ?'

'काल्हि दू समुदायक बीच भयंकर मारिपीट भ' गेलै । कमसँ कम पच्चीस गोटे नीक जकाँ घायल छैक ।'

'पच्चीस गोटे !'

'हँ, हजूर ! मुदा, हमसभ मिडियाकेँ मात्र पाँच बतौने छिऐ ।'

'बाह, रामसिंह वाह, कहि नहि तोरासन काबिल हबलदार कोना अटकल पड़ल छै ।'

'तकदीरक खेल छै हजूर ।'

'अइबेर तोरो तकदीर चमकतौ रामसिंह ।'

'आब त' अपनहि पर सभ आशा अछि – हजूर ।'

'हँ- रामसिंह ?'

'हजूर !'

'तेजनगरक जमादार अमीरचन्द कत' छै ?'

'ओ त' नमहर छुट्टीमे चलि गेल छै ।'

'ओह, तखन ओत' त' आर सिपाही चाही ?'

'पाँच गोटेक माँग आयल छै हजूर' ।

'हँ, – त' ओत' ककरा पठएबाक छै ?'

'कोनो काबिल जमादार तेहन देखि नहि पड़ैछ ।'

'हूँ, किए ने हम सभ रमेशकेँ ओत' पठा दिऐ ?'

'रमेशकेँ ? ओ त' मात्र हबलदारे छै हजूर !'

'त' की भेलै, काबिल त' छै ! ताबत ओएह जमादारक काज देखत ।'

'हूँ'

'की सोच' लगले रामसिंह ?'

'किछु नहि साहेब ! सोचै छी रमेश कतेक भाग्यशाली अछि ।'

'नहि से कोनो बात नहि । काबिल छै, किछु सीखि लेत ।'

'से त छै हजूर ?'

'रामसिंह ?'

'हजूर ।'

'देख त' ऑफिस कतेक फूहड़ छै । तोरा पता नै छौ आइ. जी. साहेबक दौरा छै एम्हर ?'

'हँ हजूर, आइए हम एकरा साफ क' दैत छिऐ ।'

'ठीक छै' – आ सुन !'

'जी !'

'काल्हि रमेशकेँ टी ओ बना दिहेँ । ओत' ओ एक सप्ताह रहिक' स्थिति पर नियंत्रण करत ।

'हूँ, ।'

'चारि जबान सेहो संगमे लगा दिहेँ ।'

'एहिना, होयतैक हजूर ।' "

■

जीत अपन-अपन

अपना क्षेत्रक डुमरिया गाममे पैसिते सौंसे गाम हमरा लग सहटि अबैत अछि - नेता जी, हम सब आब चैनसँ जी नै सकब । बाप रे, दिन-देखारे हर बैल, खसी-बकरी, गाय-भैंस खोलि क' चोरबा सभ ल जाइ है । रातिकऽ सैन काटिक' धान चाउर अन्न ल' जाइ है । हम सब कुछो नै क' सकै छी । आब की होतै ?

हम जेना अवाक् भ' जाइत छी । सहानुभूतिसँ पुछै छिऐ-एना कहियासँ होइ छइ हौ ?

इएह एक दू मासक शुरु भेलैअ - कए गोट ग्रामीण एक संग बजै छथि । हम चुल्हाईके चिन्हैत कहैत छिऐ- की चुल्हाई, पहिने कोनो खबरि नै ।

पहिने जरूरी नै छलै मालिक । चन्नर साहिब रहै कि ने से इलाकामे शान्ति कएने रहै छलै । कैला कोनो चुल्हाईक आगाँक शब्द सभ हमरा कानमे पड़बो कएल हयत तऽ हम ओकरा पी नहि सकलहुँ । चन्द्रक नाम सुनिते जेना हमर सम्पूर्ण सहानुभूति रोषमे बदलि गेल रहय । चन्द्र माने रमेशचन्द्र इन्सपेक्टर । सार, जकरा चलिते किछु नहि भेल तकरे ई नाम लैत अछि आवेशसँ । मुदा, राजनीतिए काम किछु एहने होइछ मोनकेँ मार पड़ैत छैक । तए तुरत्ते सहज भ' उत्तर दैत छीऐ- ''ठीक छह । एस. पी. सँ हम बात करब । चोरी तऽ रोकही पड़तै ।'' आ ओहि ठामसँ लपकि आगा बढ़ि जाइत छी ।

मरनैआ गाममे भयंकर डकैतीक खबर सुनि अपन जनताक हालचाल जानए ओत' जाइ छी । लखनाक घरमे लूटपाट भेल रहैक । हमरा देखिते चिचिआ उठल लखना- मालिक ई निसपीटर जाइते आखि गुररै है । कहै है हम नै लेगा निवेदन - फिवेदन । जाओ जत्त जाना है तत्त । अगल बगलसँ किछु सुधांवके सेहो परिआस नै मानलकै । हम तऽ मरि गेली मालिक, आब कोन उपाय होतै ?

लखनाक दहोबहो नोर हम देखैत छी आ मोन द्रवित भ' जाइत अछि इन्सपेक्टर पर, आखिर ई पाजी एहन देखरगर डकैतीक केस दर्ता कैला नै कएलक अछि । ओना हम खुब जनै छी डकैती केस लेबासँ पुलिस हिचकैत रहै छै । हम तोष दैत कहैत छिऐ- अच्छा, काल्हि आ देखै छिऐ केना नै दर्ता करैछै ।

गरीबके दरद बुझ'बला कोइ-कोइ हाकिम होइहै मालिक । एकटा इसबर सन हाकिम रहै चन्नरसाहेब । छोटको बातके तुरंत सुनबाई- हम जाइत जाइत लखनाक हिचुकीक संग ई शबद सभ सुनै छी आ फेर मोन लहरि जाइत अछि । आखिर ई चन्द्रे सारमे रहै की जे लोक ओकर गुणगान करैत रहैत अछि ।

एक दिन घरमे खएला बैसले रही की गामक चलितर मलाह दौगते अबैत अछि- मालिक, चनरवा हमर भाइके कपाड़ फोड़ि देने छैक । कतबो कहै छिऐ चौकिबाला के से टस सँ मस नै होइ है, उ भागल जा रहल है । निरास भ' क एत भागल-भागल आब' पड़ल है ।

हाथ वारि पुछै छिऐ- की कहै छह......?

परमान खोजैहै । आ जाबे परमान जुटैबै ताबे उत पाया टपि जएतै मालिक । हम सब की करबै - चलितर हकासल अछि ।

अन्नक ग्रास आब उपर उठब सम्भव नहि बुझाइए । एहि सब कारणे कहियो काल ई राजनीतिक धंधा छोड़ि घर बैसबाक मोन होइत अछि । बड़ झंझट छैक एहिमे । ने खाएके फुरसत, नै सुत' के । सभसँ उपर मतदाता । हम हाथ धोइत उठैत छी - अच्छा, हम कहि दैत छी, इन्सपेक्टर आफिसमे कहि देलासँ तुरत पुलिस खटै छै । हम नै चाहै छी चलितर हमरा लग बेसीकाल रहय । नहि त' इहो कनैत बजैत चन्द्रेक गुण अवश्य गाओत ।

हम अकच्छ भ' गेल छी ई नाम सुनैत - सुनैत । की ठीके रमेशचन्द्र इन्सपेक्टर एतेक लोकप्रिय छल ? जँ सएह रहैक त' तहिया लोक बाजल किएक नहि । हमरा लग ओकर अदखोइ-बदखोइ कएनिहार सभ आइ ओकरे गुणगान कोना क' रहल अछि । एकरे सभक शिकाइत पर त' हम ओकरासँ भीड़ि गेल रही । ओ आइ दू माससँ सस्पेण्डमे पड़ल अछि । नौकरियो छुटि सकैत छै । तँ की .... हमर देह भुलकि जाइत अछि ।

हमरा आगाँ नाचि उठैत अछि एकटा जुआन मजगूत कद काठीक चेहरा । साधारण पहिरन-ओढ़न । घरमे दू बच्चा, पत्नी । घूस खाइत एकरा केओ ने देखने रहै । लोक चर्चो नै करय । कहै कनेक दबंग हाकिम है । राजनीतिकमे तऽ कनेक सिफारिश

चलैछै । मुदा, ओ सिफारिश नै मान'बला लोक । आ जखन इएह अहम टकरएलै त बेचाराके ..... ।

.... भैसमारामे एकटा खून भ' गेल रहै । गाम पूरा सुन्न भ' गेलै डरे । जनानी सभ मात्र सौसे गाममे । कवाड़ी आ सूड़ी इएह भरि गाम । छव-सात सय भोटर रहै एत'। एहि ठाम रामचन महतो आ विलटू कवाडी दूटा हितचिन्तक रहय हमरा । ओहो सभ पड़ायल रहै । एकदिन पता लागल जे ई दुनू गोटे पकड़ा गेल । ओकर बाल- बच्चा सभ हाकरोश करैत हमरा ओहिठाम आबि गेल रहय । मात्र शंकाक आधार पर पकड़ि एक नं. मे थुनने रहैक ।

एकटा राजनीतिक कार्यकर्ताक हेतु ओकर समर्थक पकड़ायब वड़ कठिन काज होइछ । ओकरा छोड़ायब हमरा लेखेँ प्रतिष्ठाक बात भ' गेल रहय । मोन त' मानैत रहय जे हमर बात त' मानक चाही । नवे आयल रहै रमेशचन्द्र इन्सपेक्टर ।

हम फोन मिला कहने रहिऐक - इन्सपेक्टर साहेब । भैसमाराक केसमे पकड़ायल रामचन्द्र महतो ओ बिलटु कवारी निर्दोष अछि सुनै छी ओकरो पकड़ि अनलिऐ अहां सभ ।

इन्सेपेक्टर बाजल रहय - हजूर । ओ दोषी अछि कि निर्दोष तकर फैसला त' अदालत करत । हमरा जे सूचना भेटल अछि ताहि आधारपर अनुसन्धानक सिलसिलामे पकड़ि लओने छी । जाधरि एकर निराकरण नहि हयत हमरा लेल छोड़ब सम्भव नहि ।

हमरा पहिल धक्का लागल । हम तैयो अपनाकेँ नरम करैत बाजल रही - कनेक हमरो बात पर विचार करू । ओकर बाल बच्चा - कनैत-कनैत बेहाल अछि । हमरा देखल नहि जा रहल अछि ।

इंसपेक्टर कनेक रुक्ख होइत बाजल रहय-हजूर बाल-बच्चा त' हमरो अछि । पीड़ा त' हमहु बुझैछी । आ बाल-बच्चा ओकरो छैक जकरा नाहकमे खेतक कारणे मारि देल गेलैक अछि । ओकर कानब हमरो नै नीक लगैत अछि ।

हमहु किछु कड़ा होइत छी- मुदा, ई सब त' निर्दोष अछि । तेँ पकड़ब उचित नहि भेल ।

ई अपने कहै छिऐ । हम त' से नहि कहि सकै छी । कृपया एहि सम्बन्धमे किछु आओर नहि पूछल जाए । हम मजबूर छी ...आ ओ फोन काटि देने रहय ।

हमरासँ होइत बातक बीचमे फोन काटि देत ? एतेक हिम्मत । बाहर रामचन बिल्टुक जनाना सभक कानब जेना हमर पुरुषार्थकेँ ललकारि रहल छल । हमरा ई

व्यवहार लागि गेल । एकटा निरपराधकेँ थुनने छैक आ हम ओकरा छोड़ा ने सकलहु, तेँ हम आब राजनीति की करब ।

हम एकटा कठोर निर्णय क' लेने रही । अपन उपरक मित्र सभक भरासे पर मौकाक ताकमे रही । बरोबरि ओकरा बारेमे बेजाए बात करबाक किंवा सुनबाक हिस्सख भ' गेल । हमर सहयोगी सभ सेहो हमर मोन रखबा लेल वा सांचे रहैक एहेन सन बात हमरा कहल करए आ हमर मोन तड़पल करय । आब ई सार नै हटल तँ हमर राजनीति चौपट क' देत । सूत्रक जोगाड़मे दिन-राति चिन्तित रहय लागल रही ।

आ एक दिन एहन एकटा सूत्र हाथ लागि गेल जकरा ल'क हम राजधानी उड़ि गेल रही । ......रहैक भेल ई जे इंसपेक्टर आफिससँ एकटा थनुवा मरनासन्न अवस्थामे अस्पताल लाओल गेल रहैक । ई कोना भेलैक जे हमरो पता नै रहय आने इहो पता रहय जे रमेश तखन एत्त रहय वा बाहर गेल रहय । एकटा साधारण थुनुवाकेँ जान मारबाक उपक्रम - कोनो कम अपराध नै भेलैक आ एकर नैतिक जिम्मेदारी रमेश पर तँ छलैहे । से उपर बात लगा ओकरा पर कार्यवाही चलबा देने रहिऐक आ एक सप्ताहक भीतर ओकरा सस्पेण्डक पूर्जि भेटि गेल रहैक । मोनमे शांति भेल रहय हमरा । एहू बीच ओकरा विरुद्धमे मन्त्रालयक फाइल मोटा रहल छैक- जकरा मोटएबामे खूब परेशानी भ' रहलैक अछि । भ' सकैछ खारजी धरिक प्रमाण भेटि जाइक .... ।

राजधानी प्रवासमे मन्त्रालयक मुँहथरि थर पपरी पड़ल ठोढ़ लेने चन्द्रेकेँ हकासल-पियासल-फीफिआइत दौड़ैत देखि हमरा सन्तोष भेल करय । अनेको बेर सामना भेल करय । हमरा देखिते आँखि नीचाँ मुहेँ गिरा जाइत रहैक । हम जेना विजयक दबंगमे आर सोझ भ' जाइ ।

आइ - डेढ़ मास पर हम गाम घुमलहुँ अछि । आ एहि बीच किछु दिनसँ अपन क्षेत्रक दौरा अपन दबंग अनुहार देखएबाले मात्र कएने छलहुँ । सार इन्सपेक्टरकेँ देखा देलिऐक । आखिर ओ ककरासँ भीड़ल छल । हमर एहि काजसँ लोकमे हमरा प्रति आर सम्मान आ विश्वास बढ़तैक एहन संभावना रहय । मुदा ...... ।

हम तँ उनटे अनुभव कएलहुँ । सभ तरि त्राहि माम् । सभ चन्द्रलेल बेहाल । हम त' छुगुन्तामे पड़ि गेल छी । बरु आब हमरा आत्मग्लानि होबय लागल अछि । एकटा नाहक अहमक खातिर नीक-बेजाय सोचबाक क्षमता छोड़ि असुरक्षाक भावना जगा देने रहिऐक । जाहि जनताक सुख-सुविधा उपलब्ध करएबा ले एना कएलहुँ - ओएह असुरक्षित तथा दुखी अछि । हम ठीके गलत भ' गेलहुँ । आह राजनीति ।

कानमे पड़ल इएह सहयोगी सभक बात हमरा बताह बना देने रहय । आ जखन

गाममे घुमैत काल चन्द्रकेँ गुणगान करैत लोकक बीच सहयोगी सभक अनुहार ताकी तँ सभ नीचा मुँह गारि लेल करए .... । माने सभ हमरा गलत बना देलक ।

जएह ने सएह दिन ओकर खारिजी पत्र आबि सकैत छैक । हमरा आगाँ फेर नाचि उठैत अछि - दू बाल गोपाल - अजोह किंवा निर्दोष पत्नीक संग चन्द्रे .... नहि - हमरा पुनः राजधानी जाए पड़त । ओकरा रोक' पड़त ।

आ फेर जखन मन्त्रालयमे जा घुमल रही तँ ओहने रुक्ख केस बढ़ल दाढ़ी आ हकासल-पीआसल सन अनुहार लेने चन्द्रेकेँ दरबज्जा पर देखने रही..... । एहन अनुहार ल' क' निस्तेज आँखि, नीचाँमे गाड़ैत हम चन्द्रेकेँ कए बेर देखने रही आ प्रत्येक बेर हम पुरुषार्थ किंवा सोर्सक दबंगसँ तनि जायल करी । मुदा आइ ..... ओकरा देखिते हमर आँखि नीचा गड़ि गेल रहय ...... ।

ई दोसर बात जे आत्मामे सन्तोष धरि रहि गेल रहय ।



इजोरिया रातुक सपना

'एतेक दिन कमेले रे जटबा एना किए कैले रे
सामरि जटीनके पहुँचा उदासे भेलौ रे
एतेक दिन कमइलीयौ गे जटीन तोरे लागी गे
सामरि जटीनकेँ वाला सन्दूकमे धैलियौ गे ।

अपन आंगनमे उसनल अल्हुआ दाँतसँ पीसैत लखन राउत मलहटोलीक छौंड़ी सभक ई गीत सुनैत अछि आ मुस्किया दैत अछि । एकटा हमरो सभक जमाना रहैक - घरे-घरे गीत-नाद । ई इजोरिया तँ गाम भरिक धीयापूता सभक लेल खेलौनियाँ बनल रहितै - जट-जटिन, हर-हर-महादेव, पानि गीत, बेंग कूटब । आब...... । ई गीत सभ कहियो काल सूनि पड़ै है । मोन जेना शीतल भ' जाइ है - लखना पछिला दिनकेँ स्मरण क' निसास लैत अछि ।

राड़ीक डलियामे राखल अल्हुआकेँ हाथसँ सोहि ओहिमे धयल नूनसँ भीड़ा मुँहमे ढूसैत लखना आकासमे चमकैत चान दिस तकैत अछि- एह, भगवान, एहू बेर डबल रौदी पड़ि गेलै । पर साल तँ एहन रौदी पड़लै जे केहन-केहन धनिककेँ डाड़ थौसि गेलै । आ अइ बेर जे पड़तै त' बाप रे ! गाम-गाम अन्हेर भ' जेतै ।

लखनाकेँ मोन पड़ैत छैक पुरहीतक ओ बात जे चारि-पाँच दिन पहिने बाजल छल- पानि त' अछि, मुदा.... । दुत् नक्षत्रो के कोनो ठेकान नै । पंडीयोजी सब आब फेल भ' गेलाह । पतरा-ततरा किछो नै । जे गोसइयांकेँ मन सेहे होतै ।

सुखल अल्हुआ गरमे फँसि गेने लखनाकेँ बेर-बेर पानि पीब' पड़ैत छैक । तैयो लखना सन्तोष बन्हैत अछि - एखनू हमरा सबके इहे परान हबे । दू रुपैए पसेरी - सस्ता छै । गामकेँ बजारपर भेट जाइ छै । एक पसेरी त' कय सांझ घीचा जाइ छै .... ।

देखले दिनमे केहन समय भ' गेलै....... लखना फेर एक बेर अतीतमे सहटि जाइत

अछि – गीरहतकँ खेत उपजल रहैक त' भरि साल काममे घुरिआयले रहली । अपनो घरोबाली-बेटी-पुतहुओ आ कहियो क' बेटियो । बोनिसँ कय घैला भरि गेल रहय । अइ बेर – हे भगवान ! खयनाइ तक आफत हइ । ई त' धन कही जुगलीके जे घरसँ भागियो क' गेल तँ ई अल्हुओ ।

जुगलीकँ मोन पड़िते लखना ओकर माय दिस तकैत अछि । आंगनमे पोताकँ लेने झुला रहल छलैक । कतेक कानल रहै ई अपन बेटा ले' । आ क्रोधमे की सँ की भ' गेल रहितै घरमे । कहाँदन हमहीं बहसा देने छीऐ ओकरा नहि त' ऊ घर क छीपा बेच क' पंजाब भगितै ।

कतेक बुझौने रहिऐ एकरा – बेटा तोहर संगतमे गेलौ । जाय दही । गामकँ बड़ लोक पंजाब गेलैए । आइ ठाम काम नै हइ त' की करओ । कुछो त' कमा क' लैतै । घरसँ नै बहरयने दू पाइ आब नै होब'वाला है । देखै ने छही लरैना बेटाके । पंजाबसँ तीन सय रुपैया आ कपड़ा लत्ता पठैलकैए । धीरज राख– तोरो बेटा कमयतौ........... ।

लखनाक बुझौलासँ जुगलीक माय चुप भले भ' गेल होइक, मोन नै मानने रहै । बरु लखना मोने मोन तीरपीत रहय–भने छोड़ा पंजाब चलि गेल, एहन रौदीमे बैसि क' खाइत तै सँ किछुओ त' लाओत । आ आन पंजाबसँ लौटल छौड़ा जकाँ रेडी त' लयबे करत ...... । लखनाक देह घुरघुरा जाइ छै – एह, मालिक कँ बजबैत देखैत छी त' मनछुअ' के होइत रहै हइ । केना बजै हइ । से आब त' जुगली लेतै त' हमहु कहियो काल कांखमे लटका सकै छी । लखनाकँ लगै छै जेना ओ आरिपर बैसल हो । कांखमे रेडियो लटकयने होइक आ खेतमे जन काम क' रहल होइक । तखने ओकरा गरामे सुखल अल्हुआ अटकि जाइ छै आ ओ बाम हाथसँ अलमुनियाँक पचकलहा लोटासँ पानि घोटैत अछि– गट-गट ! एह – की सोचि लेने छल । हमरा सभकँ ई कोन भाग.... । रेडिए लटका लेब त' की गीरहत भ' जायब ! केहन-केहन गीरहत त' अइ बेर डंड घीचै हइ ।

लखना बेलदार फेर एक बेर सांसारिक चिन्तामे घूरि अबैत अछि – जे, एहू बेर रौदी होयबे करतै.... चानक गोलाकँ निहारैत लखना निसास छोड़ैत अछि – कतेक मालिक सभ हल्ला कयने रहै कमलाके नहरि द' । कहाँदुन मंत्रियो लग लीखा-पढी कयने रहै । हमरा सबके पानिक दोसर कोन आसरा । कमला नदीसँ रमौल, ललिआ, मथलेसर होइत वघचौराके सब जमीन पटि सकै छलै । आन कोनो उपाय नै । लोक कहै हइ बोरींग कहाँदुन अपना एरिया मे नै होइ हइ । मसीने नै है ओहन । तब पानि अयतै केना..... ।

लखनाकँ कमलाक नहरि अयबाक बड़ प्रसन्नता रहैक । ओ सोचैत रहै– गीरहतकँ खेतमे काम होतै । सब परानी काम करब । बोनि जोड़ब आ जुआन भेल जाइत बेटीकँ कतहु सांठि दबै.... कतेक पीड़ा होइ छै ओकरा बेटीक नाम लइते ।

लखनाक हाथ रुकि जाइ छे – काल्हिएक त' घटना छै । चनरदेव साहुक आरिपर घास काट' चलि गेल रहै । खेतो ओकरा कातमे छैक । कहाँदुन ओकर बेटा घासो छीनि लेलकै आ देह हाथमे भीड़ियो गलै । कनैत-कनैत घर आयल रहै इजोतिया..... ने सहाज भेल रहै त' अँगनासँ निकलि गेल रही । पंचैती ककरा पर बैसाउ । पहिने अपने पर बैसब' पड़त जे जुआन बेटीकँ घरमे रखने छी । दोसर, एहन चीजकँ कत' पंचैती करु...... कुमारि-वारि । ठीके लखना घोर दुखी भ' जाइत अछि । हमरा सभक जिनगी कोनो जिनगी नै........ ।

लखनाकँ नहि जानि की फुराइत छै, जोरसँ हाक पाड़ैत अछि– गे, इजोतिया माय ?

अपन पोताकँ खेलबैत इजोतिया माय नहि जानि एहि बीच कत' चलि गेल रहै छै ।

'की हइ-पुरब मुँहक घरसँ इजोतिआ माय बजै छै – कनी छौड़ाके सुता दै छीऐ । एकर माय के हाथ बझल हइ ।'

'इजोतिआ केम्हर गेलै"– चारु भर चकुआइत हाथ बारने लखना पुछै छै ।

'एखन एतै त' छलै । बुझाइए – मलैहनिया छौंड़ी संगे जट-जटिन खेल' चलि गेल होतै– इजोतिया माय बजैत अछि ।

लखना स्वर अकानैत अछि – 'सामरि जटिन के हसुली सन्दुकमे धैलियौ गे.... इजोतियाक आवाज छै । लखनाकँ कतेक आत्मग्लानि होइ छै एहिसँ– कय दिन मायकँ जीद कये रहै इजोतिया –टिनही करा लै' । नहि द' सकलकै लखना । आइ अपन घरदुआरमे रहितै त' कुछो ने कुछो टाम-टुम त' रहितै । ओकरो सेहन्ता होइ छै ने...... ।

'ई हाथ कैला बारने हइ । खायल भ' गेलै की' – इजोतियाक मायक स्वर हाथ बारने निचाँ मुँहेँ तकैत लखना सुनैत अछि तँ चौंकि उठैत अछि । मोन तँ होइ छै ओकरा कहि दै – ख़ा लेने छी । आब ने खायब । मुदा, दिनमे एक बेर, रातिमे एक बेर । ओहो अल्हुआ । एकर औकाते कते । से भरि पेट खेनाइ चाही ।

'ला, कनी नून ला ।' –हाथ बार' के कोनो बहाना त' करही पड़तै ।

इजोतिया माय टुटलहा डलियामे गरदायल नूनकँ हाथसँ छानि सीलौटापर रगड़ैत अछि । मेंही भ' गेलाक बाद चुटकीसँ उठा बाम हाथक तरहत्थीपर धरैत छैक ।

लखना घरवालीकँ देखा क' नमगर अल्हुआ ओइ नूनमे बोरि मुँहमे ठूसि लैत अछि। फेर एक बेर लखनाक नजरि पछीम दिस ससरल जाइत चानपर पड़ैत छैक आ सौसे आकासमे मजबूत तरेगनक किछु हेँजकँ देखि आर मुँह मौला जाइत छैक ।

आइ त' अदरा चढ़ि गेलै । कहाँदून अदरामे अइ बेर त' खूब बरसा लिखल हइ । ओहूना पहिने अदरा बिना बरीसने नै जाइ छलै । लखना एखनो आशा रखने अछि जेना ।

लखनाक पचास-पचपनक ई उमेर बहुत रास आस-निराश देखने अछि । जिनगी भरि अपने त' नै सही, गीरहतेक खेतमे कमाइत-कमाइत खेतीक कीड़ा भ' गेल अछि लखना । डाकक वचन कंठस्थ भ' गेल छैक । आ तेँ ने बड़ विश्वासी जन भ' गेल अछि ओ । पन्द्रह बीस जनमे आर ककरो काज होइक वा नहि, लखनाकेँ धरि गिरहत कोनो-ने-कोनो काजमे जरुर लगौने रहैत छलैक । आ लखनोकेँ गिरहतक धन सम्पत्ति जेना अपने बुझाइ छैक ।

यैह कारण छैक जे एहि बेरुका रौदीक ई लक्षणसँ गिरहतोसँ बेसी लखना बुझाइत रहैत अछि । बखारीमे हजार-बारह सय मन धान गजल रह'वला ओकर गीरहत आइ करकुटुम्बसँ धान पैंचा लेलकैक अछि । एक दर्जन बैलगाड़ीपर लार आ बोरामे कसल धान पुरुब भरसँ अयलकै तँ भरि गामक लोकक आँखि उनटि गेल रहैक.... कहाँ भरि साल जनबनिहार अपन परारकेँ कर्जा देनिहार, नीक-बेजाय देखिनिहार आइ स्वयं उघार भ' गेल अछि । हाथी सन बड़द - भैंसी लार पुआर बिना दुरापर टग हनै छैक ।

लखनाकेँ आँखि नोरा जाइछै । जखन गामक सेरे के ई हाल छै त' हमरा सब सन लोकक की हाल हेतै - लखना कनेक कालक हेतु फेर अधैर्य भ' जाइत छैक । चानक ठहाठही इजोरिया जेना ओकरा देहमे दुपहरियाक सूर्यक धाह जकाँ लहर' लगै छै ।

आब लखनाकेँ अल्हुआ गुलगुलायब अनसोहाँत लगै छै । ओ लोटा ल' क' उठैत अछि आ दहीन कातक निकासमे जा हाथ धो अबैत अछि । कान्हपर धयल चरखनाक मैलहा गमछासँ हाथ पोछि ठेङ्गा घुसका आँगने मे फेर बैसि जाइत अछि ।

लखना फेर शोर पाडैत अछि - 'कहाँ गेलै, कनी हमर गोल गला लेने आ त' ।'

इजोतिया माय घरमेसँ हैंडलूमक गोलगला हाथमे लटकौने अबैत अछि आ लखनाक हाथमे पकड़ा दैत छैक।

लखना गोलगला हाथमे ल' जेबीसँ चीत्ती सुपारी निकालैत अछि आ चक्कूसँ फोड़ि एक टूक लोकिक' मुँहमे खसा लैत अछि । सुपारीक टूक मुँहमे गुलगुलबैत लखना इजोतिया माइकेँ डलियामे राखल अल्हुआ ल'क' जाइत देखैत अछि । बेचारी ! हम त' भरि पेट क' कहुना खाइए लैत छी, ई त' जे उबरै छै सेहे दू कौर खाइत अछि । कहियो क' त' कहाँदून भुखले रहि जाइ छै । देह बज्जर बना लेने छै घरदुआर खातिर ।

लखनाकेँ बुझाइ छै जेना सभक दोषी ओ स्वयं अछि । जुआन बेटीक विवाह नहि होयब, जुआन बेटाके भागि जायब, इजोतिया मायक पेट सटल जायब, अतेक धरि जे

एखन धरि मेघ नै होयब सेहो ओकरे कारणसँ भ' रहल छैक । केहन अभागल भ' गेल छै ऊ । लखनाकेँ बुझाइ छै जे आब ओ अँगनामे बैसि नहि सकत । ओ गोलगलाकेँ हाथमे ल' उठहि चाहैत अछि तँ ओकरा बुझाइ छै जेना ओ अन्हरियामे बैसल अछि । तँ की चान डूबि गेल..... नै ई केना भ' सकै छै ।

ओ अविश्वाससँ उपर तकैत अछि आ हाथमे धयल गोलगला ल'थुस्स द' बैसि जाइत अछि ।

अकासमे कारी मेघक टिक्कड़ि सहट' लागल छलै । चानी सन चमकैत चान मेघक तरमे दबि गेल छल । हवा गुम भ' गेल छलै ।

लखनाक माथ घीरनी जकाँ नाच' लागल छलै..... माने आब पानि होतै । ई अदरा बरीस क' रहतै । त' तेकर माने..... ।

लखनाकेँ बुझाइ छै जे ओ भरल ठेहून खेतमे गड़ल हर चला रहल अछि । बीराड़मे बीरडिआ सभ जोर-शोरसँ बीया उखारि रहलैक अछि । आ जनी सभ आरिपर बैसलि खेतमे कादो होयबाक प्रतीक्षा क' रहलैक अछि ।

ओ कादो करैत बढ़ैत जाइत अछि आ पाछाँ जनी सभक संग ओकर घरवाली, पुतहु आ इजोतिया मगन होइत खेत रोपि रहलैक अछि ।

काँखमे रेडी लटकौने लखना गोला बड़दकेँ नाङरि ऐंठि रहलैक अछि आ बीराड़मे चरखनाक लुंगी आ चलानी गंजी झलकौने जुगली बीया उखाड़ि रहलैक अछि ।

आरिपर जन सभकेँ कदबा लेल ललकारि रहलैक अछि गिरहत । छत्ता ओढ़ने मन विहुँसैत । ई स्वरूप देखबा लेल करेज उनटल जाइत रहैक ......

'मेघ त' टीपिर-टापैर पड़' लगलैक । ई एहिना बैसल !' घरवालीक आवाज सुनिते जेना लखना धरतीपर खसैत अछि । ओकरा लेल आब आँगनमे बैसब संभव नहि । ई त' बड़ भारी समाचार भेलैक ने ।

"कनी मालिक ओत्त'सँ अबै छी'...... लखना गोलगला हाथमे फँसबैत घरबालीकेँ कहैत छैक । ओकरा बुझाइत छै जे बरखा जे भ' रहलैक अछि ई समाचार मालिककेँ कहब जरूरी । मालिकक हँसी देखना ओकर कतेक दिन भ' गेलैक अछि ।

ई जनैत ई बुन्न मालिकोक आङन-दरबज्जापर खसैत होइतैक लखना जल्दीसँ जल्दी एहि समाचारकेँ मालिककेँ सुनाब' लेल ड्योढ़ी दिस लपकैत अछि ।

■

अमरलत्ती

"हमरा अपन पतिसँ कोनो प्रेम नहि अछि । हम तँ सामाजिक बन्धनक कारणे ई सम्बन्ध निर्वाहि रहल छी-" रेखाक ई उक्ति हमरा हिला दैत अछि ।

12-13 वर्षके उमेरमे बाप-भायसँ दूर महानगरक चर्कचकी वाला वातावरणमे अपनाकँ समयबाक उपक्रम रेखाकँ प्रौढ बना देने छैक । ओ गत दू दशकक अपन जीवन यात्राक उपलब्धिमे बहुतो असमान्य परिस्थितिक बात हमरा कहने छलीह, मुदा तकरा हम ओतेक नहि देने छलिऐ ।

मुदा, आइ ओकर ई उक्ति ठीके हमरा दुखी करैत अछि । वर्षहुसँ संग रहनिहारि-स्वयं अपना ईच्छासँ वरण कयनिहारि अपन पतिकँ - एकटा बाध्यता बुझैत हो, तीन-तीन बच्चाक जन्मदाताकँ हृदयसँ स्वीकार नै करैत हो ।

हम पुछैत छिऐ- "नै, अहाँके ई नै बजबाक चाही । पति आखिर पति होइ छथि ।"

"चुप अहाँ की बाजब । पुरुष-पुरुषक तरफदारी नै करत तँ की हमर दुख बूझत । हमर शरीरक ई गति देखि रहल छी । सभ हुनके कारण भेल अछि । ओ हमर भावनाकँ - हमर इच्छाकँ कहियो खियाल नहि कयलनि । जानवर जकाँ हुनका हमर मासु चाहैत छल, अबैत रहला । नोचैत रहलाह । कहू यैह थिक पति धर्म..... ।" -आ एकरा संगे रेखाक आँखिसँ दहोबहो नोर बहय लगैत छैक ।

हम कनेक काल गुम्म भ' पुछैत छिऐ- मुदा, अहाँ तँ केहन चिक्कन देखि पड़ैत छी । बरु पहिनेसँ कनेक चिकनायले बुझाइ छी तखन ?

हमर बात लोकैत ओ आवेशसँ बजैत अछि -"बस, एतबे देखब ने अहाँ सभ ! हमर भितरमे की बीति रहल अछि तकर पता नहि । खाली चीक्कन देह टा सूझैत अछि । हम कतेक कष्टमे छी, की की बिमारी धयने अछि - से के देखत । ई सभ हुनके कारण भेल अछि..... ।"

"से कोना ?" -हमर जिज्ञासा अनाधिकृत छल ।

"ओह, अहाँकँ कोना बताउ । सिंहेजीक प्रयासे 'लूप' लगबओलहुँ । ओ भीतरमे इन्फेक्शन क' देलक । से महामोश्किल भ' गेल रहय । तकरा ठीक करयबामे कय दिन लागि गेल । अस्पतालसँ घर आ घरसँ अस्पताल । हम परेशान, मुदा हुनका कोनो चिन्ता नहि । हम छटपटाइत रही ओ घुमैत रहथि ।

"तखन ?"

"तखन की । मात्र रमेशजी एक एहन सहारा भेटलाह जे राति-राति भरि एक सय दू-तीन डिग्री धरिक बोखारमे अपन कोरामे ल' दवाइ, पानि आ सुश्रुषा करैत रहलाह । भरि राति हमरा संग जगनिहार के रहय रमेश हम्मर?

'तथापि !'

'तथापि की ? ओकरे कथनपर जखन 'एवार्शन' करौलहुँ तँ ताहूमे भेल परेशानी हमरेटा भोग' पड़ल । कयूरेटक लेल दवाई दारु, फीस सभ रमेश देलक । की एकटा पतिक रूपमे सिंहजीक ई कर्त्तव्य नहि रहैक ।

'रहैक । मुदा, अहाँ काजे तेहन झंझटिया क' दैत छिऐ' जे बेचारा नर्भस भ' जाइत होयत ।'

'यैह तँ अछि अहाँ सभक बात । अपन असमर्थताकँ नुकयबाक लेल हमरा सभपर दोष लगा दैत छी ।'

'तैयो एकटा पतिक लेल एहन शब्दक प्रयोग नहि होयबाक चाही, ई उचित नहि ।'

'किछु होउक, हम हुनका अपन आत्मा नहि द' सकैत छिऐ । हमर जीवन आब हुनका संगे सुखी नहि रहि सकैत अछि ।'

हम बुझै छी रमेशक भूत एकरा माथपर चढ़ि बाजि रहल छै । पुछै छिऐ - 'ई बात तँ तहिए सोचबाक चाहैत छल अहाँकँ ।'

'आबे की भेलैए । तलाक ल' लेब ।'

'तलाक ! की ई उचित होयत ।'

'त' क्षण-प्रतिक्षण मरि क' जीअब उचित होयत ?' -रेखाक प्रतिप्रश्न हमरा गुम्म क' दैत अछि ।

किछु सोचि पुछै छिऐ, 'जायब कत' ?

रेखा फेर एकटा धमक्का छोड़ैत अछि - 'रमेशक संग' ।

हमर माथपर फेर एक बेर नाचि जाइत अछि । रमेश माने प्रथम श्रेणीक अफसर । चारि अंकमे दरमाहा पओनिहार गाड़ी-घर सभ सरकार दिससँ भेटल । सामाजिक मर्यादाक लोक । तीन टा धीयापूता, एकटा जुआन बेटी, पत्नी । से रमेश एकरा संग बिआह करत ? केहन भ्रम पोसने अछि रेखा ।

हम अविश्वाससँ पुछैत छिऐ '-रमेश वियाह करत !

'अवश्य' ।

मोने नै मानैए । अपन भरल परिवार छोड़ि अहाँक संग रहत । बाल बच्चा-पत्नी ।'

'हुँ, पत्नी ! के कहैत अछि पत्नीक संग ओ खुश अछि । नितान्त कर्कश घरबालीकेँ उघबापर विवश रमेशक व्यथा हम बुझै छी जे सार्वजनिक रूपसँ ओकरा बेइज्जत करै छै - कुत्ता धरि कहि दैत छै । ने कोनो अपनत्व, ने कोनो प्रेम ।'

'से अहाँ कोना बुझैत छिऐ ।'

हमरा सभ बात रमेश कहने अछि ।

हम स्वयं अपने नजरिसँ देखने छिऐ । हम एक दिन रमेशक संग ओकरा घर गेल रही त' हमरा आगाँमे बाजल रहै - 'कुत्ता, निकलि जाउ हमरा आगाँसँ, हम अहाँक सोझेँ ई लहठी आ सेनुर मिझा लैत छी । बूझब जे हमर घरबला मरि गेलाह - कहू उचित छलै ।

'ओ एना बाजलि किएक ?'

'हमरा ल' क' क्यो गोटे ओकरा बहुत रास बात कहि देने रहैक । से हमरा रमेशक संग देखैत ओ अन्ट-सन्ट बक' लागल छलै ।'

'त' की ओत' अहाँकेँ जायब उचित छल ?'

'हम स्वयं नहि गेल रही । रमेशजी ल' गेल रहथि पत्नीक आगाँ सफाइ दिअयबा लेल जे हमरा -ओकरा कोनो तेहन सम्बन्ध नहि अछि । से ओ हमरा देखिते सिंहनी भ' उठलीह..... ।

'ई अस्वाभाविक तँ नै छलै । एकटा विवाहित आ सुखी परिवारमे दराड़ि देब' गेलिऐ किएक ?'

कनेक विचलित होइत रेखाक । मुँह करुआइत छैक, बजैत अछि - 'ई तँ मात्र संयोगक बात थिक । जे ओकरा चाही हमरामे छल, जे हमरा चाही से ओकरामे छलै ।'

'की चाही तोरा सभकेँ' - फेर एकटा अनधिकृत प्रश्न ।

'हुनक चाहब छल एकटा एहन घरवाली जे हुनक सदैव खियाल राखि सकैक । ओकर घर-दुआरकेँ सजा सकैक । धीया-पूताकेँ उचित तालिमक व्यवस्था क' सकैक । से भेलै नहि । पत्नीकेँ चाहियनि मात्र हुनक संग आ पाइ...... ।'

'आ अहाँक ?'

'हमरा एकटा एहन पति जे हमर भावनाकेँ आदर क' सकय । हमर 'बात बूझि सकय.... ।' -रेखा गुम्म भ' जाइत अछि । हम फरिछयबाक जरुरति नहि बुझैत छी । हम जनै छी रेखाक आवश्यकता सभ । सालमे दर्जन बेर गहनाक डिजाइन बदलनिहारि, दिनमे चारिबेर नूआ फेरनिहारि, महगसँ महग सैण्डिल आ मनीबेग रखनिहारि, चौकपर सजि-धजिक' कोनो चिन्हारसँ घंटो गप्प करैत रहनिहारि, एकतारासँ पंचातारा होटल धरिमे पार्टनरक संग 'चाह' पीनिहारि रेखाक जरुरति हम नीक जकाँ बूझैत छी ।

एकरा संग एकटा आर बातक जरुरति छै । ई एकटा एहन नाव भ' गेलीह अछि जे किन्हेर पर नहि जाय चाहैए, मात्र बहाव दिश चलैत रहबाक अभ्यस्त भ' गेल अछि । एकरा आब ठहराव नहि, बहाव पसीन छै । सिंहजी ठहरि चुकल छथि । एकटा बेकार युवकमे गति कत'सँ अओतैक ।

तँ रेखाकेँ आब आदर्श नहि, तृप्ति चाहिऐक । आ ई तृप्ति ओकरा दिवाकरसँ प्राप्त होइक, कि चन्द्रकिशोरसँ होइक आकि रमेश शर्मासँ ! ओ अपन क्षुधाक तृप्तिक लेल लोकसँ सटैत अछि । लोक सुखि जाउक, आकि उजड़ि जाउक । ओ हरिआइत अछि, जीवैत अछि, पुनः भटकैत अछि ।

'तँ की अहाँकेँ लगैए जे अहाँ सभक सम्बन्ध भ' जायत । दुनू दिस बाल-बच्चा, पति-पत्नी ।

'से कठिनाइ तँ छैक तँ परेशानीमे पड़ल छी । रमेशो हमरा लेल परेशान अछि । ओ पत्नीसँ छुटकारा लेब' चाहैए...... ।'

'से कोना बुझै छिऐ ?'

'हमरा संग हुनक सम्बन्ध आ व्यवहार । काठमाण्डू पन्द्रह दिन धरि संगे रहल रहथि ओ, तीन किलो वजन बढ़ि गेल रहै से मुग्ध होइत बाजल रहथि - 'मुन्नु, तोर चलते आइ हम प्रसन्न छी ।' कत'-कत' ने ल' गेलाह । गोरखपुर, सिरहा, जनकपुर, नारायण घाट । सभठाम अपने गाड़ी ड्राइभ क' घुमबैत संगे रखैत । कतेको राति हम सभ संगे बितौने छी । हम नीक जकाँ हुनका जानि गेल छियनि, ओ हमरा जानि गेल छथि । जँ अहाँकेँ एहुपर विश्वास नै अछि तँ लिअ ।' -हम देखै छी जे ओ अपन मनीवेगसँ एकटा डायरी निकालैत अछि । आ डायरीक कोभरक दोगसँ मोड़ल एकटा चिट्ठी ! जकरा

एकबेर ठोर ल' जा चूमि लैत छैक जा पढ़' लगैत अछि – 'मेरी मन्नो ।' नहि जानि की-की । कोनो प्रेमकथाक अमर पात्रक भाषा ओहि चिट्ठीमे छैक ।

बात तँ ठीक अछि । मुदा, जे सम्बन्ध जुटि नहि सकत ताहिपर एतेक विश्वास करब उचित नहि । एतेक आगाँ अहाँ सभकेँ बढ़बाक नहि चाही ।'

'ई तँ एकटा छलै – चलि गेलहुँ । आब ?'

'एकरा बिसरि जाउ ! जे अछि ताहीमे मन बहलाउ ।'

नहि, ई असंभव अछि । जकरा लेल खिड़कीसँ साड़ीक डोरी बना उतरि गाड़ीमे जा सकै छी, जकरा सार्वजनिक कलपर हमर नहायब पसीन नहि, जे हमरा मोन खराप भेलापर राति-राति भरि जागि सकैए, जे हमर बन्हकी पड़ल गहना-जेबर लेल पत्नीसँ चोरा हजारो टाका द' सकैए, जे पत्नीक हेतु कीनल कोनो साड़ीमहक जोड़ी पहिरा सकैए, जे गोरखपुरक मन्दिरमे भावावेशमे आबि माथमे सेनुर धरि द' सकैए से अपनाकेँ फूट राखब संभवे नहि, कठिनाहे नहि, असंभव लगैए ।'

'हम फेर एकबेर चौकि उठैत छी- 'अएँ, सेनुरो धरि ध' देने अछि ?'

'हूँ, हमरा संग सदैव रहबाक वचनक संगे सेनूर ध' देने छथि । जाहिसँ हमरा विश्वास भ' सकय । ई साड़ियो हुनके देल अछि -, '

'हूँ ! .... ई बड अनर्थ भ' गेल अछि । अपन जिनगीक खातिर आनक जीवन बिगाड़बाक अहाँक कोनो हक नहि अछि ?'

'की एहिमे हमरे दोष अछि ?' – प्रश्नक संग रेखा अपन आँखि हमरा आँखिमे गड़ा दैत अछि ।

हम कहैत रहि जाइ छी – 'रमेशक पत्नीकेँ दूरोसँ देखियौ । बेचारी गलिक' सुखा गेल छै । जुआन बेटी वियाह लेल माथपर छै । दिन-राति कनैत रहैए । ओकर कमासुत पति अहाँ छीनि रहल छिऐ । ओकरा तृप्तिक एकमात्र आधार अहाँ ल' रहल छिऐ । तखन ओकरा भविष्य की होयतैक ? ओ बच्चा सभ कतय जायत ? ई कहियो सोचबो कयने छिऐ ?'

की ई नै भ' सकैए, हम रमेशक संग रही आ ओ एहि घरपर रहय । दुनू दू ठाम रहने पटि सकै छै ।'

'ई तँ अहाँ अपन सुविधाकेँ ध्यानमे राखि बजैत छी, मुदा कोन पत्नी चाहत जे ओकर पति आन संग मौज करैत रहय आ ओ मुँह तकैक । नवकी पहिल भ' जाइक आ ओ रखैल ।

रेखा विवशतासँ हमरा दिस तकैत अछि । ओकरा आँखिमे छलकि आयल नोरक बुन्न ओकर भितरक दर्दकेँ देखार क' दैत छैक । हम जनै छी – हमर कोनो तरहक उपदेश ओकर मर्मकेँ आर छेदत । काठमाण्डू सन महानगरीमे एकसरि जीबापर बाध्य कांचे उमेरक एकटा किशोरीक अतीत..... । रंग-बिरंगक सपनाक इन्द्रधनुषी परिवेश अतृप्तिक महासमुद्र- उबजुब करैत रेखा ।

आ सैह तृप्तिक व्यामोह ओकरा कतेको डारिपर चतरबा लेल वाध्य क' देने छैक । ओ एहिना चतरैत रहत-हरिआइत रहत । क्यो सुखाउ, क्यो उजड़उ !!

■

सम्बन्धक पीड़ा

आशाके रातिएसँ ओकर परिवारवाला सभ समझा रहल छैक- ठीक छै, गलती कऽ लेलें । आबो घर घुरि जो । हम सभ तोहर विआह अपने जाति खनदानमे कतौ नीक घर, वर देखिकऽ देबौ । मुदा, आशा एक स्वरसँ सभक बातके कटैत एतबे कहैत रहि गेलीह जे ई विआह हम अपन इच्छासँ कएलहुँ अछि । तएँ एकरा जिनगी भरि निबाहबाक दायित्वो हमर अछि । हम नहि घुरब..... । आ आंखिमे नोर डबडबा अबैत छलैक ।

आशाकेँ कनेक दुखो रहैक । डेढ़ मास पूर्व जखन संदीप संगे स्वेच्छासँ जनकपुर-काठमाण्डू होइत आर एन. ए. सीक फलाईटसँ दिल्ली भागि गेल छलीह, तऽ ओकर पीसी आ पापा कम नाटक नहि कयने छलाह । ओकर होबऽ बला ससुरकेँ कम परेशान नै कयने रहथि पापा । पंचायत बैसौलनि । ओ जे किछु गहना लऽ गेल छलीह तकरा लेल गहना फिर्ता कऽ दौक, बेटी कतौ जाउक । दू अबोध बच्चा घरसँ कोसो दूर, अनजान शहरमे डरे नुकायल । ओकर फिकिर नै, मात्र किछु भरि सोनसँ बनल गहना प्रिय रहैक ओकर पीसीकेँ ।

जखन पंचायतीक निर्धारित तिथि अबितैक कि ताहिसँ पूर्वे माओवादीकेँ जेना घरमे छापा मारैत छै तेना ओ रहैत घरमे 10 बजे प्रहरी सभक दू भान छापा मारि जबर्दस्ती ओकर प्रेमी आब पति संदीप संगे उठा एस.पी. कार्यालयमे आनि लेने रहैक । कतबो हाक्रोश ओ कयलक-सिपाही सभ नै मानने रहैक । बादमे पता चलल जे देशक गृहमंत्री कहाँदन एस. पी. कें आदेश देने रहैक पकड़िकऽ जेना होइ तेना गहना उपर कऽ देबा लेल । हमर जानक कोनो परबाह नै......... ।

तएँ रातिसँ एखन धरि पापा, मम्मी, मौसी, समाजक लोक, दर-दियाद हमरा समझा अबैत अछि तऽ हमरा आओर कटाउन लगैए । ई सभ हमर नीक लेल नहि, अपन सामाजिक मर्यादाक लेल हमरा घुराबऽ आबि रहल अछि । आ हमरा मोनमे आर घृणा बढ़ि जाइत अछि- जखन अड्डा थाना कइए देलक तऽ आब आर मोह कथीक..... ।

जखन ओकर ससुर दोसर दिन भेने एस.पी. अगाड़ीमे ओकरा द्वारा ल' जाएल गेल गर-गहना, भारतक विभिन्न शहरमे कयल गेल खर्च सभ द' देबाक लिखित स्वीकृत कऽ देलखिन्ह तखन ओ आर एहि परिवारक मायाक बोझ तर दबि गेल रहय । बाप-मायतऽ ओकरा छोड़ि देने रहैक, धन्य छै ससुर जे बिनु खयने, ल' गेलाह । माँग बमोजिम केँ सभ किछु पीसीकेँ मुँहपर मारि हमरा दुनू गोटेक घर ल' जएबा लेल तैयार भऽ गेलाह अछि । आ कागज क' देलखिन्ह अछि ।

संदीपक गामक लोक, समाजक उत्साहसँ अनेरे हमरामे श्रद्धा आ हिम्मत बढ़ा देलक अछि । एस.पी. कार्यालयक बाहर डेढ़ दू सय दै-दियाद गौआँ सभ ओकरा सभक पकड़ाऊकँ विरुद्धमे थाहाथही देने छैक, जाहि घरमे प्रवेशो ठीकसँ नहि भेल अछि, ताहि घरक लोक, समाजक ई स्नेह ओहन नव जोड़ीक लेल सुखद आश्चर्य आ तोष दिअबला तऽ छैहे - जे भागि कऽ बिआह कऽ लेने हो ।

एहन माहौलमे अपन मम्मी, पापा सभक अपन सामाजिक मर्यादा बचएबाक लेल ओकरासँ करैत अनुनय-विनय ओ कोना स्वीकार क' सकैत छलैक । पापाकेँ घर लऽ जएबाक अन्तिम प्रयासो ओ निष्फल क' देने रहैक । ई दोसर बात भेलैक जखन ओ संदीप संगे बाहर आबऽ लागल रहय तँ खूब कनायल रहैक । बस पापाकेँ कहने रहैक -ई काज हम अपन मरजीसँ कयने छी तएँ एहीमे हमर सुख अछि । अहाँ हमरासँ संबंध बनौने रहू । हम अहाँकेँ दुनू गोटे अत्यन्त प्रेम करैत छी पापा........ । आ एस.पी. कार्यालयकँ सीढ़ी उतरि गेल रहैक ओ । कार्यालयक बाहर करमान लागल रहैक । जेना कोनो युद्ध जीति लेल गेल हो । ओकरो अपन निर्णय फेरसँ उचित आ आवश्यक बुझाएलैक । ओ डेरा आयल । डेरामे तहिना करमान लागल लोक । गाम घुमैत काल एकटा बस लाओल गेल । बसमे लगभग 60-70 आदमीक संग ओ दुनू गोटे सेहो बैसिकऽ गाम दिस बढ़ल । एक मम्मी, पापासँ छुटबाक दर्द रहैक तऽ दोसर एहन माया कयनिहार गाम-समाज ।

ओकरासँ पूर्वो जनकपुरमे कतेको लड़की अपना प्रेमीक संग भागलि अछि । एक-दूटाकेँ परिवारवाला तँ घेर-घारि क' जबर्दस्ती घर घुराइयो लेलकै, मुदा अधिकांश एखनो अपन प्रेमीक संग घर बसा लेने अछि । परिवारवाला वर्ष, दू वर्ष मनमोटाव आ अन्तमे फेर जुड़ि गेलै । एक भ' गेलै सभ..... ।

ओकर अवस्था एहिसँ भिन्न नहि । ओहो बालिग अछि, अपन भविष्य निर्णय कऽ सकैत अछि, कयलक अछि । आब आगां की हयतै, के जनैत अछि, किए से सोचल जाए । ओकरा अपना पर विश्वास रहैक, बाप-मायक एकमात्र बेटी हयबाक कारणेँ ओ जे करता ओकर बाप-माय तकरा स्वीकार क' लेतै । मुदा, उनटे भ' गेलै । बस ओकर ससुरकेँ ओकरा ल' गेने बेटाक प्रति शिकायत हयबाक चाहैत छलैक- पढ़ाइयो ने पूरा

कयने छल । आ कतौ जाति-विरादरीमे बिआह होइतैक तऽ दू-चारिलाख टका सेहो दितैक आ लड़की छानबाक अवसर सेहो भेटितैक । मुदा, ओत' आँखि मूनिक' ओकरा सभक संग भ' गेलाह आ ओकर मम्मी-पापा..... । जे होइक प्रेम कएनिहारकँ लाख दुख उठबे पड़ैत छैक, त्याग-बलिदान कर' पड़ैत छैक । आइ धरि किताब आ सिनेमामे ओ पढ़ने आ देखैत आयल अछि, आब तत' ओकरा अपने भोग पड़ैत । भोगतै ओ । ओ बसमे बैसल लोक सभकँ अपनत्वक भावसँ घुरिक' देखलक । मोनमे फेरसँ एकटा दृढ़ता अएलैक । देखल जएतै...... जे हयतैक । ओ आँखि मुनिक' बसक सीटपर ओंगठि गेल ।

बस जखन रुकलै तँ सांझक झोलफल भ' गेल रहै । ओ बसेसँ दरबज्जा दिस तकलक बापरे ! ओतेकटाकँ दरबज्जा जनानी-बच्चासँ भरल । सड़केपर बस रोकऽ पड़ल छैक । आ ओकरा संदीप संगे पैदले लगभग सय मीटर धरि आंगन जाए पड़लै । लगै जनानी सभ एक झलक ओकर देखबा लेल ढाही मारैत हो । ठीके युद्धमे जीतिक' जेना राजकन्या सभकँ दरबारमे आनल जाइत रहै, तहिना उक्त माहौल रहैक । तखनो एहि घरक लोकक ममता आ स्नेह ओकरा द्वारा प्राय: कयल गेल भगबाक गलतीकँ जेना स्वस्ती प्रदान क' देने होइक, ओ बढ़का बोझसँ आइ मुक्त भ' गेल बुझाइए । नै विश्वास होइछै ओकरा । गामघरकँ बेटी जातिकँ ककरो संग भागि जयबाक घटनाकँ 'उढ़रब' कहि खिधांस कयल जाइछ । घरमे कोनो इज्जत नहि, एत्त तऽ जेना सभ किछु उनटल अछि, ममता आ स्नेहसँ लबालब भरल आँखि आ माथपर ओहने अपनत्वक हाथ..... । आइ डेढ़ मासक बाद ओ निचैनसँ सुतल । आब ककरो डर तँ नहि रहलै । नुकाक' रहबाक जरुरति त' नहि ।

आ ठीके आइ पांच मास भ' गेलै निचैनसँ रहैत ओकरा घरक माहौलमे ओ अपनाकँ मिझरा चुकल अछि । आब तँ एहि घरक दुख आ सुखकँ ओ अंगा लेलक अछि । संदीप कओलेजो जाए लागल छै । ओहो जँ पप्पा चाहथि तऽ कतहु काज कर' चाहैत अछि । मोनो लागि जएतै आ हाथपर किछु भइयो जएतै ।

आइ राति पता नहि ओकरा सपनामे अपन मायक कारी अनुहार किए देखा पड़ल रहै । ओ गुनधुन कर' लागलि रहय । बड़ मानैत रहै ओ एकरा । जखन जे लेब-मम्मी बजारसँ आनि दैक, जे खायब घरसँ बनाक' ल' अबैक । शायद इएह बेसी दुलार ओकरामे स्वयं निर्णय करबाक शक्ति देने रहैक, जकरा ओकर पापा बिगड़ब कहै छथि । कतेक डँटने रहथिन्ह पापा मम्मीकँ एस.पी. कार्यालयमे - तिम्रै कारण यो बिग्री । गर लार-दुलार । एउटी छोरी छ....... माया गर्नु पर्दछ.... । गर माया, गई छोडेर.... (तोरे कारण ई बिगड़लौ, कर लार-दुलार । एक्केटा बेटी अछि, दुलार त' करही पड़तै । कर माया, गेलौ छोड़िक') । मम्मी भरि आँखि नोर लेने ओकर अनुहार पर नजरि टिकौने रहैक । ओ मायक आँखि दिश तकबाक साहस नहि क' सकल रहय । कहीं ओकर ममता आर निश्चयकँ डिगा ने दिऐक ।

सएह मम्मीक अनुहार कारी-स्याह ओ देखलक अछि । विगत पांच मासमे मम्मी-पापाक कोनो खबरि नहि । एहू गाम भ' क' त' जाइते छथि । मुदा, खोज पुछारी अपन गलतीक एहसास भ' रहल छनि आ तएँ ओ लाजसँ झुकल होथि । जे हुनका बेटीक लेल, इज्जतक लेल एतेक कयलकनि तिनिकँ एस.पी.कार्यालयमे फज्जति । पाइए त' सभ किछु नहि ने हो...... । से पापा नहि बुझलखिन्ह आ ओकर ससुरकँ उनटे लाख, डेढ़ लाख टकाक फेरमे पाड़ि देने छथिन्ह । प्राय: इएह गलती हुनका हिनका सभसँ, अपन बेटीसँ, दुलारं, आ बेटासँ आँखि मिलएबाक साहस नहि दैत छैक । ओ आगां बाटे जाइत छथि, मुदा चोराक' ।

कयकटा पाबनि-तिहार आबि क' चल गेल अछि । बीच-बीचमे मम्मीकँ पठाओल दूत सभ दरबज्जा धरि अबैत रहल अछि, मुदा ने ओकरा सभसँ भेंट कर' चाहैत छैक ने ओकर सासुरक लोक । जँ सएह छैक तऽ मम्मी, पापा अपने किए ने अबैत छथि ? मोनमे कयबेर रीस उठैत छैक...... ।

मुदा, आइ जखनसँ ओ उठलि अछि, मोन गुनधुन करए लागल छैक । कतबो मोनकँ पाथर बनबय चाहैत अछि ओ बाप-मायक अनुहार आगांमे अबिते बर्फ जकां पघलि जाइत अछि । तऽ अछि ओ सभ..... । बड़ कयने अछि ओकरा लेल । एकटा बेटी आ एकटा बेटा..... । ने ओ ओकरा सभक बात बुझलकै आने ओ सभ ओकर इच्छाकँ कदर कयलकै । अपन-अपन जिद्द पर दुनू अड़ल रहि गेलै आ आइ ओ जिद दुनूक मध्य कतेक दूरी क' देलकै । आठ कि.मी.क दूरी हजारो माइल भ' गेल छै । आ अनुहार देखबा लेल सपनाक आसरा भ' गेलै ।

से आजुक सपनासँ आशा विचलित भ' गेल अछि । जरूर किछु ने किछु अशुभ भ' रहल छै । ओ सोचि क' हताश भ' जाइत अछि । आ से ओकर आशंका बेजाय नहि होइत छैक । साँझ पड़ैत-पड़ैत ओकरा ई सम्बाद कहल जाइछै- ओकर माय अस्पतालक बेडपर जीवन आ मृत्युक बीच झूलि रहल छथि ।

ओ तऽ सन्न भ' जाइए । सभ काज छोड़ि भोकासि पाड़ि कानय लगैत छैक । राति भरि कनैत अछि । ककरोसँ बजबाक इच्छा नै होइत छैक । एही पीतमे ओ सासुकँ कहिनी धरि कहि दैत छैक - अहाँ सभकँ बूझल छल । तैयो नहि कहलहुँ । एतेक भारी बात एना नुकाएल जाइत छैक ? पहिल बेर ओ अपन सासुपर मुंह चंठ क' क' बाजलि रहय । बादमे ओकरा पछताबो भेलैक, मुदा मायक बिमारीक खबरि ओकरा विचलित क' देने छैक । आब ओ की करओ ? जाओ मायक लग ? से कोना ? एखन धरि पापा लगसँ कोनो लेब' त' नहि आयल अछि । सासु, ससुर पठैथिन्ह त' कोना ? एतेक पैघ घटना घरमे भ' गेलै, मुदा पापा निर्दय बनल मर्यादाकँ निर्वाह क' रहलाह अछि । तखने ओ अपने मने जएबो करौक त' कोना ? एतहु मर्यादाक सवाल छैक । आब त' एहि घरक

मर्यादा ओकरा लेल सभ किछु अछि । जे ओकरा त्यागि चुकल छैक तकर प्रतिष्ठा कोन कामक, जे छातीसँ लगौने अछि तकर मान, मर्यादा ओकरा जीवनसँ बेसी महत्त्वपूर्ण छै। कहाँ भेलैक पापाकेँ जे मरैत मायकेँ मुँह देखएबाक लेल बेटीकेँ बजा लैत छी । असगरुआ दुलरी बेटी आशा...... । अपन मायकेँ देखबाक लेल आइ कते' दिनसँ छटपटा रहलि अछि । मुदा, मर्यादाक घेरामे बन्हायल बस ओकरा प्रतिष्ठा दैत ओ छाती पर पाथर राखि जीबाक लेल तैयार भ' चुकलि अछि । अलबममे लागल मायक तसवीरेँ देखि कैंकबेर हिचुकि, हिचुकि क' कानि चुकलि, आशा प्रेमक परिणामसँ उपजल मानसिक पीड़ाकेँ सहबाक क्षमता अपनामे विकसित करबाक प्रयास क' रहलीह अछि । एतेक त' होहीक छलै ने, ओ संतोष करैत अछि ।



फ्लैश बैक

नरेश पाछां चलि गेल अछि, बहुत पाछां । प्राय: पचास वर्ष पाछां । गामक सहपाठी सभक संगे खेलए ओ । बहादुर नोकर रहैक- बाबूजी जंगलकातसँ लओने छलाह । एकबोलिआ, आदेश चाही, काम फत्तह कइएक' दम लैत छल । से बाबूजीकेँ आदेश रहैक- गुरुजी लग पढ' ल' जएबाक छै, से बहादुर लाख चिचिऔलो पर नरेशकेँ कान्हपर बोकि कन्हाइ साहुक दलानपर गुरुजी लग दइए अबैक । ओत्त गेलापर गुरुजीक कांच करची अथवा खजूरक छड़ी ओकर सभ जिद्द हेरा दैक । ओ चुपचाप हाथमहक पाटीपर कारिख पोति कचरासँ साफ कऽ चमकाब' लागए आ तखन भठासँ लिखबाक प्रयास करए - क ख ग घ....... ।

"इस्स......" गुरुजीक छड़ी जखन बाँहि पर पड़ैक तँ ओ लोहछि जाए । मन होइ भागि जाइ मुदा ...... बहादुरक डीलडौल आ पिताक आदेश मन पड़ितो मनमारि क' पाटीपर आँखि गड़ा ककहरा लिखबाक प्रयास कर' लागए ।

गुरुजीक ओहिठाम ककहरा कंठस्थ रहैक । ई कंठस्थ करब ओकर मजबूरी रहैक, ओना हिसाबमे ओ ओहुना कमजोरी महसूस करए । चौठचन्दमे गुरुजीक संग घंटी बजबैत, काठक डंटाकेँ बजबैत घरे-घरे घुमनाइ आ गुरुजीक डेरापर जा गूड़-चाउरक प्रसाद खएनाइक अपन आनन्द रहैक ।

आनन्द तँ पानि नहि पड़ने 'हर हर महादेव' बना गाम घुमबै काल सेहो अबैक । कोनो सहपाठीकेँ सौंसे देहमे छाऊर रगड़ि देल जाइत छलैक । माथपर आ बाँहिमे सेहो अशोक पात सभ लपेटि देल जाइत छलैक । माथपर जूट आ सनसँ जटा टीनकेँ कैंचीसँ काटि चान लटका देल जाइक । हाथमे बाबाजीकेँ त्रिशूल आनि क' ध' देल जाइक । वस-वनि जाइक महादेव । छौड़ा सभक हेँज पाछां-पाछां हाक परैत जाइत - हर, हर महादेव पानी देऊ अलिकती पुगेन, बढी देउ ! भाव रहैक महादेव पानि दीअ, कमसँ नहि भेल, बेसी दीअ ..... । जकरा दरबज्जापर जाइक पानि उझलि दैक । मान्यता रहैक पानि

देलापर वर्षाक संभावना बढ़ि जाइत छैक । बेचारे महादेव बनल बौआ बादमे थर-थर कांपए, बच्चा सभ ताली पिटैत हँसैक । बाल सुलभ प्रताड़ना ओहि समयमे खूब प्रचलित रहैक । नरेश ओहि हेंजमे अगुआ रहय.... ।

नरेशक ठोढ़ पर अपने आप मुस्की दौड़ि जाइत छैक । बितलाहा क्षणक स्मरण कतौंसँ गुदगुदा दैत छैक ओकरा । बालशोषणक विरुद्ध ओहो कतेक आलेख लिखि चुकल अछि, कतेको सेमिनारमे भाग ल' भाषण छांटि चुकल अछि । मुदा, नेनामे नेनेद्वारा कएल ई अपराध शोषण नहि रहैक । नरेश बाल सुलभताक ओहि क्षणकेँ फेरसँ स्मरण करैत सिहरि उठैत अछि आ कतौ भोतिआ जाइछ पुन: .... ।

मुश्किलसँ 7-8 वर्षक छल हयत । गामेक स्कूलमे पढ़ए, मुदा संगति रहैक अपने टोल-महल्लाक धीयापूतासँ । ताही मंडलीमे एकटा छौंड़ी रहैक इजोतिया । ओकरे लगुआक बेटी । नीक रहैक कि अधलाह ओकरा तहिया ज्ञान नहि रहैक, मुदा ओकरा संगे इजोरिया रातिमे 'अन्हरिया-इजोरिया' खेलैत ओ खूब प्रसन्न रहल करए । आंगनेमे दुनू पयर आगाँ पसारि बैसि, बाँहिकेँ केहुनी लगसँ आगाँ-पाछां करैत आ ताही लयमे दुनू पयरके सेहो आगाँ पाछां करैत पाछां मुंहे घुसकैत इजोतिया खेलल करए आ गाओल करए- "आगेमाईकेँ बेतिआ....." त' ओकरा नीक लगैक ।

इजोरिया रातिमे चानक चारुकात बनल गोल घेराकेँ कौतुहलसँ देखैत काल माय रहस्यमय बोलीमे समझबैक - ई हमरा सभक पुरखा सभक बैसार छै इन्दर भगवान लग । कहै है निचां पानि बिना अकाल पड़ल छै, पानि दिऔ । आब पानि हयबे करत...... । नेनामे ई बात सत्य लगैक आ आश बन्हाइ, जरूर वर्षा हयत ।

तेहने समयमे जट-जटिनक गीत होइक । टोलक महिला सभ जटा आ जटिन बनए आ गीत गाबि-गाबि झूमए । ओहिमे पुरुष नहि, नेनाकेँ छुट रहैक । 'नरेश' नियमित ओकर दर्शक रहए, ओकर संगी इजोतिया ओहि मंडलीमे शामिल रहैक, ओ एकटक ओकरा सभकेँ झुकि क' आगां बढ़ैत आ तहिना माथ उठा क' पाछां अबैत देखैत रहय...।

नरेशकेँ फेर किछु मोन पडैछै, ठोढ़ पर हंसी अबैत-अबैत रुकि जाइछै । भतखोखरि बुढ़िआक अंगनामे बेंग कूटि मैलाक संग पतली फेकि देल जाइ छल आ ओ बुढ़िआ भरि राति फेकनिहारकेँ पुरा खनदानकेँ उराहि दैत छलैक । बेटी-रोटी करैत रहैत छली । वास्तवमे बेंग कूटि क' तएँ ओकरे आंगनमे फेकल जाइत छलै जे ओ बेसी गारि पढ़ि सकैत छलीह । राति भरि जुआन छौड़ी सभक धमगज्जरिक संग बालसुलभ उत्सुकतासँ पाछाँ-पाछाँ दौगब महज खुशी दैत छलै । लगै दिनमे बहादुरक घीसिआ क' गुरुजीकेँ चटिसारमे ल' जएबाक डरसँ मुक्त रातुक ई माहौल स्वच्छन्द छैक । ने बाबूजीक डर, ने बहादुरकेँ उठा ल' जएबाक चिन्ता । बात बुझौक कि नहि, नरेश रमल रहैत छल ओहि खेलमे ।

ओकरा तँ तखनो ने किछु बुझायल रहै जखन इजोतिया ओकर घरक पछुआरबला गाछी आ भुसा घरलग एकटा प्रस्ताव कएने रहैक- नरेश,....... खेलबेँ ? अर्थ त' ओकरा ओतेक नै बुझल भेलै, मुदा ओकर इशारासँ आशय बुझने रहय आ डेरा गेल रहैक - 'नहि, हम नहि खेलबौ । 'ठाढ़े' ओ नासकार चलि गेल रहय । जेँकि इजोतिया ओकरा उमेरसँ बेसीक बुझाइक, ओ बातकेँ बुझैक, मुदा नरेश....... ।

पता नहि नरेशकेँ किए आइ पुरना बात मोन पड़' लागल छै । ओ भोरेसँ अपन पोताक उदण्डपनीसँ फिरिशान भेल अछि । एक तँ भोरमे देरीसँ उठत, उठि कत्त पड़ायत ठेकान नहि । स्कूल जएबाक कोनो जरूरी जेना नहि होइक । कुण्डलिया छौड़ा सभक संगत आ पता नहि गुटका, भांग, सिगरेट किंवा आनो कोनो नशा खाइत हो, त' मनमे आशंका उठल छै । खौंझायल मोने वरण्डाक खुरसीपर बैसि गेल । तखने ओकरा बुझएलै- एक ई दिन अछि आ एक ओ दिन रहय । फेर भसिया गेल रहय । एखनो मोन थीर कहाँ भेलैए..... ।

माय जखन ओकरा दुनू मोड़लहबा टांगपर लादि दुनू हाथ पकड़ि घुघुमना खेलबै तँ हिल्ला झुलबाक मजा ओ लेल करए । गीतक लय संगे झूलैत नरेशक बालपन महज देहमे गुदगुदी आ आनन्द मात्र उठा सकैत रहय बुझए किछु नहि ।

मुदा, जखन ओ टेल्हगर भेल त' मायकक नक्कल करबाक मोन होइक । अपन भातिजकेँ ओहिना टांगपर ध' झुलबऽ लागय आ पढ़ऽ लागय - घुघुमना घुघुमना, बौआकेँ गढ़ा देब दुनू कान सोना । ओकरो झुलबैत आनन्द लगैक आ बौआ सेहो हंसि, हंसि क' अपन आनन्दक अनुभूति करबैत छल । ओना ओकर छोट-छोट पयर-हाथ बौआकेँ बेसी काल सम्भारबाक अवस्थाकेँ नहि रहैक, ओ उतारि दैक तुरते ।

अपन नेनपनक उछल-कूदक दूटा घटना मन पड़िते सौंसे देह सिहरि जाइत छैक । बड़ मुश्किलसँ बचल रहैक आँखि ओकर... । आँगनमे दुनू भाइ खेलैत रहय । भैया तीर धनुष बना चलौल करए । एक बेर भेलै ई जे तीर सोझे नरेशकेँ आँखिएमे लगलै-वाम आँखिमे । सौंसे हाहाकार मचि गेलै, माय त' बताह भऽ गेल छलीह । ओकरा कनैत-कनैत बेहाल रहैक । गामेक टोटकासँ आँखि ठीक भेल रहैक । पता नहि माय कोन-कोन देव-पीतरकेँ एहि लेल मानि देने छलीह । तहिना एकबेर गछुलीमे आम लूट' बेरमे अन्धाधुन्ध दौगल रहय नरेश, त' गाछीमे गाड़ल एकटा खुट्टाक नोक सोझे कपारमे गड़ि गेल रहैक । माथ सुन्न भऽ गेल रहैक । मायकेँ जखन पता लगलै तऽ ओ हकासल-पिआसल दौगलि रहय घराड़ीपर आ ओकरा समेटि क' गामक वैद्य लग ल' जा उपचार करौने रहैक ।

बाल सुलभ जीवन शैली, गामसँ जनकपुर धरिक यात्रा, पढ़ाइ आ डिग्री सभक

अपन-अपन कथा रहैक । धन खेती जे होइक, शिक्षामे पछुआएल परिवारक प्रत्येक ओ संघर्ष ओकरा भोग' पड़लै जे एकटा सभ्य समाजक अंग बनबा ले' जरूरी होइत छैक । आइ जखन उमेरक चारिम प्रहरमे जएबा ले तैयार अछि ओकरा लगैछै ओ फेरसँ बचपन दिश लौट' चाहैए । दिन-रातिक षडयन्त्र, राजनीतिक विद्रूपता, चन्दा, अपहरण, हत्या किंवा दिन-दिन बढ़ैत असुरक्षाक भय आ आतंकसँ त्रसित समाजमे तनावक जिनगी जीवाक अर्थेकी ?

मुदा, फेरसँ ओ स्वयं प्रश्न करैत अछि– की ओ नेनपनक स्वच्छन्द, सहज स्नेहसँ भरल किछु साल घूरि सकत । चलू ओ बितलहा वर्ष नहि घूरत ई सत्य थिक, अपने तँ ओहि युगमे जा सकैछी ने ! हँ, ई संभव छैक । भ' सकैछ एना भेने तनावमे कमी अबैक, मुंहपर चापलूसीक बोल झाड़ैत, परोक्षमे चरित्र हत्याले उताहुल सरसमाजक व्यक्तित्वक दोगला मुंह देखबाक दुर्भाग्यसँ बचि त' सकै छी । हमही किएने अपनाकेँ नेना बना ली । नरेशकेँ अपने सोचपर हँसी लगै छै । की ई संभव छैक । ओहुना साठिक बाद लोक नेनपनमे पुनः प्रवेश क' जाइए कहाँदन । ओकरो अवस्था तँ आबिए रहल छैक । चलल जाए एक बेर सएह सही..... ।

नरेशकेँ जेना सौंसे देह हल्लुक लगैत छैक । बरण्डासँ उठैत अछि । आंगनमे अबैत अछि । पोता आबि गेल छै । ओकरा डंटबाक इच्छा रहितो ओ चुप रहैत अछि । प्रारंभ एत्तहिसँ हुअए तँ हर्जे की ?

■

हुगली ऊपर बहैत गंगा

हीरामन आइ फंसि गेल अछि ठेठर बाली बाईक संग । ओहि ठाम तं हीरामनक प्रेम एक तरफा रहैक, ठेठरबाली बाई मात्र सहानुभुति देखौने रहैक । एत्त तँ बात बिगड़ि गेल छै । दुनू दिस आगि लागि गेल छै आ हीर बाई भीतर छटपट्टी उठि गेल छै- आब कोना कऽ रहत ग' सोनाबाईके बिना ओ..... ।

कएकटा सिनेमा देखने रहय जाहिमे बाईक प्रेम बरोबरि असफल होइत गेलै आ कतेक त' एहि संसारेसँ विदा भऽ गेल रहय । तएँ एम्हर टपबासँ पहिने ओ कएक बेर सोचने रहय । कतौ मन मीलि गेल तँ...... ।

दुत्-हमरा सन-सनकेँ के पतिअएतै । कनी मनोरंजन करब आ घुरि आएब- हीरा मोनक तोष दैत.....स्ट्रीटक बंगला नं. 4 मे पैसि गेल रहय । समय अपराह्नक तीन बजेक रहैक । दरबज्जा पर एकसरि ठाढ़ि सोना ओकरा किए नीक लागल रहैक । सम्भवतः एहु दुआरे जे आन दरबज्जाक बाई सभ बटोहीकेँ जबर्दस्ती हाक पाड़ैक । नहि आब चाहवलाक देहमे रगड़ा लैक, जेबीमे हाथ धरैक, धक्का मारैक, मुदा जखन ओ एहि दुहारि पर आएल तँ गुम सुम ठाढ़ अठारह-उन्नैस वर्षक पिण्डश्याम सन अत्यन्त सुभग हीरा ओकरा अपना दिस आकर्षित कऽ लेलकै आ ओ ओत्त ठमकि गेल रहय । हीराकेँ एखनो मोन गुद-गुदा जाइछै सोनाक तखनुका मुस्कीकेँ स्मरण करैत । ओ लोटपोट भऽ गेल रहय आ आंखिक दरबज्जा दऽ सोनाक हृदयमे जेना पैसि जाए चाहने रहय ।

सोना ओकरा लऽ दू महला पर सजाओल एकटा कोठरीमे लऽ गेलै । ओ कोठरीमे जएबासँ पूर्व घरक वातावरणकेँ जंचबाक लेल नजरि खिरौने रहय- आठ-दस कोठरी आर रहैक, जाहिमे हंसी-मजाकक स्वर आबि रहल छलैक । माने ग्राहक ओम्हरो फँसल रहैक । सोना बाँचल छलीह एहु दुआरे जे ओकर रंग ओतेक साफ नहि रहैक, आ ने आन छौंड़ी जकां लब-लब ओ करैत छल । ग्राहककेँ बुझाइक एहि मन्हुआएल छौड़ीमे कोनो जान नहि हयतैक सम्भवतः, तएँओ चुपचाप ग्राहकक प्रतीक्षामे सभसँ अन्त धरि बैसल करए ।

बादमे ओकरा सोनासँ पता चललै, सभकेँ ग्राहक भेटि गेलाक बादे हारल-फुरल लोक ओकरा लग अबैक । एहिसँ एक बात त' जरूर रहैक- सोना आन बाई जकां तोड़ल-मचोड़ल नहि गेलि रहय, बांचलि छलीह । ओकर अनुहारक तेज एखनो दपदप करैक आ सएह तेज हीराकेँ ओकरा दिस आकर्षित कएने रहैक ।

पहिल सांझ सोनाक संग महज ग्राहक भऽ बीतबऽ चाहैत रहय हीरा । थाकि-हारि गेल छल एहि महानगरमे । बाप-मायकेँ कमाएक नाम पर दू हजार टका लऽ कलकत्ता आबि गेल रहय । ओकर गौंआ सभ एत्त कमाइ छै, कहने रहैक कोनो सेठक बंगलापर लिखा-पढ़ीक काम छै' दिआ देबौ ।

मोन त' रहै जे विदेशे उड़ि जाइ, बड़ लोक ओकरो गामक अरब गेलैए । विदेशमे पाइ त' होइ छै, मुदा कष्टो कम नहि छैक । घर-परिवारसँ दूर । ओ सोचने रहय- उड़ानक बात बादमे देखले जएतै । एक बेर गौंएँ सभक बातकेँ भजा ली आ कलकत्ता चलि आएल, से आइ पन्द्रह दिन भऽ गेल छै, मुदा ओइ सेठक ओइ ठाम काम नहि भऽ सकल । ओ आबे-आबे ताबे दोसरकेँ राखि लेने रहय । ओ बौआ गेल रहय आ फेरसँ सरियाकऽ काम खोजऽ पड़ि रहल छलैक । रहबालेऽ गौआँक खोली रहैक आ खएबा ले सेहो कहियो काल ओकरे सभक ओहि ठाम खा लैक । मुदा, कलकत्तामे खर्च त' होइते छैक । काम नहि भेटौक त' कतेक दिन टिकत ओ......... ।

सोना बाई टोकैत छै त' ओकर तंद्रा भंग भऽ जाइत छै- की सोचऽ लगलहुँ । आउ ने, आनो ग्राहक खोज पड़तै ने ।

हीरा बच्चेसँ भावुक स्वभावक रहल अछि । चौबीस-पच्चीस वर्षक उमेर भऽ गेलै, बाप-माय कतबो वियाहक लेल कहैत छैक ओकरा अपन मोनमे की फुरै छै की नहि, वरोबरि मना करैत आएल अछि । नारीक प्रति अत्यन्त सम्मान रखैत अछि हीरा...। आइ उएह नारीक संग..... ।

''की भेल बाबू साहेब, आउ सेज पर''- कहैत सोना अपन साड़ी खोलऽ लागल। साड़ी खोललाक बाद ब्लाउज खोललक आ नीचाँक साया सेहो । हीरा एखनो चुपचाप ठाढ़ सोनाक देहयष्टि निहारि रहल छलै । ओ महसूस कएलक सोनाक सर्वाङ्ग खीलि उठल रहैक। मरकरीक जोड़गर प्रकाशमे सोनाक रंग सेहो बदलि गेल रहैक । नापल-तौलल शरीर, काजर कयल सुन्दर आंखि, समुद्रक गहिराइ लेने मुस्कीक तरंग आ छातीमे साटि लेबा ले' आतुर दुनू हाथ... ।

हीराकेँ लगै छै ओ ठीके उचित चुनाव कएलक अछि । पन्द्रह दिनक झमारल ओकरा एत्त राहत भेटतै । सोना बाई आन बाईसँ फूट बुझएलै ओकरा... । ओहो पलंग दिस ससरल । अपन पेंट आ अंगा उतारलक । एहिमे सोना ओकरा सहयोग कएलकै । ओ

अनुमान कएलक सोनाक आंखि ओकरा देहयष्टि देखि सन्तुष्ट सन लगैक । ठोढ़ पर हंसी आ मोनमे समर्पण... ।

सोना ओकरा दुनू हाथे छातीमे सटबैत सेज पर ल' अनैत छैक । ओ कनेक कालक हेतु सभ किछु बिसरि जाए चाहैत अछि । मुदा, तखने ओकरा छोड़ैत सोना उठि खड़ा होइछ आ हीरा दिस तकैत बजैत अछि– कोन ब्राण्ड लेबै' ?

ओ अकचका जाइत अछि । की कोन ब्राण्ड ? ओ प्रश्नवाचक नजरिए सोना दिस तकैत अछि । सम्भवत: सोना ओकर भाव बूझि जाइत अछि– बुझलिए नहि, दारू चाही ने, से कोन ब्राण्डक ?'

हीरा त' झमा क' खसल । ओ त' कहियो आइ धरि सुंघनो नहि अछि, एत्त त' पीबाक बात भ' रहल छै । ओकरा मोन पड़ि जाइ छै कलकत्ताक सोना गाछीमे काम करैत कएटा संगीक उपदेश-कहियो ओहि महल्लामे पैसबें त' दारूक आग्रह हएबे करतौ । जे पीबैए से मज्जा लुटैए आ डाँड़ सेहो ढील करबैए । बजारमे पांच सयक दारू ओत' एक हजारमे भेटैत छैक । से बौआ... ।

'की भेल ?' –सोनाक अगुतायल प्रश्नक उत्तरमे ओ बजैत अछि– नहि, हम त दारू नहि पीबैत छी । एतेक धरि जे सिकरेटो नहि... ।'

सोनाक हुलसल मन कनेक खसि पड़लैक । ओकर व्यावसायिक विधानमे व्यवधान आबि गेल रहैक । एक त' बुढ़िआ बाई केँ पाई नहि भेटतैक, दोसर ने ओकरा आनन्द । एकटा अभ्यस्त काजमे व्यवधानसँ सोनाक मन खटा गेल सन लगैत छैक । ओ फेरसँ मन मारिक' बीछाओन पर घूरि अबैत अछि । आब ओकरामे ओहन प्रफुल्लता नहि रहैछ– ई बात हीरा नोट करैत अछि । तेँ की ? जिनगी भरि एक बुन्न जीह पर नहि धएल एहि विषकेँ, ओं सोनाक मन राख' ला गटकगटा क' पी जाइ । नहि, बरु हम घूरि जाएब, एकर जे पाइ छै द' देबै । नहि सुतब एकरा संग-हीराक सेहो जमीर जेना जागि जाइ छै।

ओ धरफराक' उठैत अछि । अपन कपड़ा दिस बढ़ैत अछि कि सोना हाथ पकड़ि लैत छै– अहाँकेँ दुख भ' गेल । बाबूजी, अहाँ सन लोक फिरले अबैत छैक एहि गल्लीमे । एहि ठामक इएह दस्तूर छै । खाउ, पीउ आ मौज करु । मात्र पीआस बुझएबाले' केओ-केओ अबैछै ने । तएँ कनेक हमरा अनसोहांत लागल रहय । सोना स्थिति स्पष्ट करैत अछि ।

''सांच बात ई छी सोना, हम एत्त मन बहटारबाक लेल एलहुँ अछि । बेरोजगार छी । संगमे जे जतेक पाइ बाँचल अछि ताहिसँ एखन कोलकत्तामे संघर्ष करबाक अछि । जा धरि सकब रहब, नहि हयत त गामक छौड़ा सभसँ पाइ माँगि गाम घूरि जाएब । हम

मौज मस्ती करबा ले' एत्त नहि आएल छी, तएँ हमरा लागल अछि हम गलत ठाम आबि गेल छी– एक्के निसासमे अपन व्यथा हीरा कहि जाइत अछि । ओकरा सोना दिस तकबाक साहस नहि होइत छैक । ओकर अनुहार नीचां खसि पड़ैत छैक । सम्भवत: ई ओकरामे भरि आएल ग्लानिक भावक कारणेँ भेल हो ।

जेँ कि ओकर अनुहार नीचां दिस नमरल छैक ओ सोनाक खिलैत अनुहार पर पसरि रहल मुस्की देखि नहि पबैत अछि । पता नहि किए सोना आब अत्यन्त सहज भ' जाइत छैक । ओ हीराक दाढ़ीकेँ हाथसँ पकड़ि झूकल माथकेँ उपर उठा दैत छैक– हम आइ पहिल बेर कोनो सुच्चा मनुक्खक दर्शन कएलहुँ अछि । जहियासँ हमरा काका लगैत गामक एकटा चालू लोक एहि मंडीमे बेचिक' भागि गेल तहिआसँ कतेको गाहिकीकेँ सन्तुष्ट कएने हयब । मुदा, ओहिसँ हमरा जे पीड़ा आ दुख भेटल से भेटल, आइ पहिल बेर एहन गहिंकीसँ भेट भेल अछि, जकर भलमनसाहतसँ हम तृति भ' गेल छी । बिनु किछु कएनहि चरमोत्कर्षक आनन्द उठा रहल छी । बाबूजी, अहाँ जइयौ नहि– सोनाक अनुनय-विनयमे एतेक ताकत रहैक जे हीरा अबाक् भ' गेल । ओ त' एत्त कतेक कालक मनोरंजन लेब' आयल रहय, मुदा कथा त' किछु आने दिस जा रहलैक अछि । कहीं इहो एहि बाइ सभक चालि त' नहि छैक फांसबाक ।' फेर सोचैत अछि– ओ बुझिए गेल जे हम नाचार छी, पाइ-कौड़ी बिना नहि । तखन हमरा फाँसिए क' की भेटतै ।'

हीराक मनमे गुनधुनी उठि जाइत छैक । सोना ओकरा स्थिरसँ सेज पर बैसबैत अछि आ अपन खूजल शरीरक कए भागमे दांतसँ काटल, नहो नोछड़ल घावक चेन्ह सभ देखबैत छैक । जांघ, वक्ष सभ तेहने दागसँ भरल । बजैत अछि – ओहने हवसी सभ अबैत अछि । दारू पीबैत अछि, सिकरेट जड़बैत अछि आ ठुठ्ठा कखनो कऽ सम्वेदनशलील अंग पर रगड़ि छिलमिला दैत अछि । नोचैत अछि, नछोडैत अछि आ घंटो तबाह कएने रहैछ । ओकरा ने हम किछु कहि सकैत छिऐक ने हमर बाई । मोट पाइ देने रहैछ, ओ । इएह छै, एहि गल्लीक जीवन आ सत्य....।' कनेक काल चुप्प भऽ सोना हीरा दिस तकैत बजैत अछि– अहाँ एहि थालो-कादोसँ भरल विशाल दलदली मैदानमे अपना बैसबाले' एक हाथ सुक्खल ठाम खोजऽ आएल छी– ई अहांक भोलापन अछि आ अहांक इएह भोलापन हमरा भितर धरि हिला देलक अछि । हम एखन धरि सिहरन महसूस कऽ रहल छी । ई सुखानुभूतिक सिहरन थिक जे आइ धरि हमरा नहि भेटल छल, पता नहि अहाँमे की अछि, आइसँ अहाँ हमर गहिंकी छी, हम चाहब अहाँ नित्य आबी, कमसँ कम एक बेर ।

हीरा त' आर सर्द भऽ जाइत अछि । ई की भऽ रहल छैक । उनटा हुगली बहऽ लगलै एत्त । हम कोना एत्त आबि सकै छी । आइ एक दिन अएबाले कतेक हिम्मत जुटौने छी, ई त' सभ दिन कहैत अछि । नहि, कतहु फेरसँ त्रिया चरित देखाओत त' ने ई... ।

सोना हीराकेँ गुनधुन करैत देखि फेर टोकैत छैक– अहाँ सोचैत हयब, हमर फीस दिनहुं कोना दऽ सकब । बाबूजी, हमरा लेल आनो ग्राहक सभ छैक ने । हम ताहि महक हिस्सासँ बाइके अहाँक हिस्साक पाइ दऽ देबै, अहाँ ओहिना अबियौ, हमरा नीक लागत ।

आब हीराकेँ मोन मानि जाइत छैक जे कोनो लाइ-लपेट सोनाक मोनमे नहि छै । सांचे ओ बाघ-सिंहक हेंजक बीच कोनो अपने सन हरिन खोजऽ चाहैत अछि, जकरा संग सुख-दुखक गप कऽ सकए, मोनक पीड़ाकेँ बाँटि सकए ।

ओ आश्वस्ति दऽ दैत छैक । ओकर नोकरी, संगमे घटल जाइत पाइ, किछु सुधि नहि रहैछ ओकरा । ओ सोनाकेँ छातीसँ सटा लैत अछि । पहिल बेर सोनाकेँ छातीसँ लगा ओकरा अपनत्वक बोध होइत, राहत भेटैत छैक ।

■

क्रम

भगजोगनी

आ रेखाक आँखि डबडबा गेलै।

हमरा अफसोच होइत अछि हम किए पुछि देलिऐ किछु। सभक अपन-अपन व्यथा होइत छैक, कथा होइत छैक। कियो ककरो व्यथा थोड़े बाँटि लैत छैक।

हम पुछितिऐक नहि। डेरामे अयलापर गुम-सुम पड़लि रेखाकें देखि हमरा आश्चर्य भेल रहय। दिन भरि बक्-बक् करैत माथ खयबापर उतारू जन्तु एखन एना गुम्म भेल पड़लि अछि—हमरा ठीके अजगुत लागल रहय आ तें पूछि देने रहिऐ—"की बात छै रेखा ? मोन उदास छौ।"

"किछु नहि ! ओहिना किछु सोचा गेल। हँ, अहाँ एत' बैसब की ? हम कनेक 'नयाँ सड़क' सँ भेने आबैत छी"—ओ बातकें टारैत हाथमे राखल पर्समे किछु ठिकियाबैत बाजलि।

"नहि, हम एत' नहि रहब एसकरि"। हम अनुमान करैत छी, ई 'दिल्ली बजार' सँ नयाँ सड़क जा फेर औतीह तँ एक घंटासँ उपर हमरा एत' बैस' पड़त, जे हमरा लेल नितान्त मोश्किल अछि। तें नकारि देलियनि। मुदा, फेर पूछि बैसैत छियनि- "नयाँ सड़क की काज अछि ? हम तँ ओम्हरे जायब। कयने आयब !"

"ई काज अहाँ बुते नहि होयत। हम स्वयं करब"—पर्सकें सम्हारैत बजैत अछि।

बजैतकाल पर्सकें छुअब हमरा किछु सन्देह लगैत अछि। रेखाक संगे हमर आत्मीयता पर्सकें जबर्दस्ती छूबाक अधिकार द' देने अछि। से हम पर्स हाथमे लोकि लैत छी आ पेंच घुमा ओकरा खोलिक' देखैत छी। पर्समे सोनाक टूटा चूड़ी अभरैत अछि। आन बस्तुमे ककही, ऐना लागल झड़नी, सेफ्टीपीन,

लिपस्टीक सभ छैक। मुदा चूड़ी किए? मोनमे किछु शंका होइत अछि आ हम पूछि दैत छिऐक—"ई चूड़ी पर्समे किए छौ?"

"एकरे काज अछि—बजारमे। एकरा......" हम बात लोकैत बजैत छी—"दुत, एकरो डिजाइन कोनो बेजाय नहि छैक। किए तोड़बहिक। नीक लगैत छौक।" हमरा पता अछि। रेखा गहनाक सभदिन सौखीन रहलि अछि। पचास हजार टाकासँ उपरक गहना छैक ओकरा लग। लेटेस्ट डिजाइन की तँ कीनैत अछि अथवा तोड़िक' बना लैत अछि। आ तेँ पुछने रहिऐ ओ प्रश्न।

मुदा, सएह बात पुछब रेखाक हेतु दुखद भ' गेलै। ओकर आँखि डबडबा गेलै। भरल आँखिए ओ हमरा दिस तकलक आ कोठलीमे टांगल अपन अत्याधुनिक फैसनमे खिचाओल फोटो दिस टकटकी लगाक' ताक' लागलि।

हम बात बूझि नहि सकलिऐ। पुनः पुछैत छिऐ—"ठीके, तों तखन चूड़ाकेँ करबही की?"

"हम एकरा बेचबै"—ठोरपर दांत जमबैत रेखा बाजलि। "अयँ, बेचबेँ! गय कथी लय? तोरा कथीक कमी भ' गेलौ? मजाक नहि कर।"—हम आश्चर्यमे डुबल बहुत रास प्रश्न पुछबा ले' उताहुल भ' गेल छी। मुदा रेखाक अनुहारक कठोरता तकर अनुमति नहि दैत अछि।

"घरक भाड़ा पांच सय टाका देबाक अछि। घरमे तरकारी नहि अछि। सिहजीकेँ (पति) बनारस पठयबाक अछि। नोकरी करबा ले' फार्म सब अनबाक अछि। पाइ एक्को टा संगमे नहि अछि, खाली छी। कत'सँ औतैक ई सभ। तेँ ई चूड़ी बेचिक' काज चला लेब......।" हिचुकि उठैत अछि रेखा आब। कतेक कालसँ जाँतल भाव हिलोरि उठैत छैक। आँखिसँ नोर झहर' लगैत छक।

हम अकबक भेल छी। साँचे हम सुनलहुँ अछि ई बात? ई रेखा स्वयं बाजि रहल अछि। रेखा... एकटा अति ऐय्यास किसिमक जनानी। जकर दैनिक पहिरना साड़ी तीन-साढ़े तीन सय टाकासँ कमक नहि होइत छैक। पचास टाकाक लिपस्टीक, पच्चीस टाकाक नेल-पालिस, डेढ़ सयक सैंण्डिल—ओकरा लेल

साधारण छैक। बेडरूममे ड्रेसिंग टेबुलपर राखल पाँच सय टाकासँ ऊपरक शृंगार-प्रसाधन एकर आर्थिक आ मानसिक उच्चताक पहिचान भेल करैत छैक।

आ, से रेखा आइ ....।

हम किछु मास पाछाँ चल जाइत छी। काठमाण्डूसँ एकटा पत्र जनकपुर पहुँचल रहय—"जनकपुरसँ किछु तरकारी पठा दिय'। एत' उपलब्ध नहि।" हम विमानसँ पन्द्रह-बीस टाकाक तरकारी कोनो अपेक्षित हाथे पठा देने रहिऐ। मुदा ओ अपेक्षित तरकारी गलतीसँ त्रिभुवन विमान-स्थलपर छोड़ि डेरा चल गेल रहय। चारि दिनक बाद रेखाकेँ विमान-स्थलसँ फोन गेल रहै जे अहाँक तरकारी आयल अछि। ओ रानीपोखरिसँ टैक्सी भाड़ाक' विमान-स्थल जाक' तरकारी लेने रहय। ओ तरकारी अनबामे ओकरा तीस टाका टैक्सी-भाड़ा लागल रहै। पन्द्रह टाकाक तरकारी आ तीस टाका भाड़ा।

हम तकरा बाद जखन काठमाण्डू गेल रही तँ डँटने रहिऐ—"एह, ई कोन बुधियारी भेल! छोड़ि दितिऐक। एतेक महग।"

बात लोकैत बाजलि रहय—"अरे, अहाँ की बजैत छी? की भेलै तँ! तरकारी हम सभ बड़ प्रेमसँ खयने छलहुँ। आखिर प्रेमसँ पठाओल छलै किने!"

हम किछु बाजि नहि सकल रही। बकर-बकर मुँह तकैत रहि गेल रहिऐ।

तहिना एकबेर जनकपुरसँ हम अपन एक मित्रकेँ रेखाकेँ कहि देबा ले' कोनो समाद देने रहियनि। आ, टेलिफोन नम्बर सेहो जे ओ फोनक' दिह'थिन। से, ओ काठमाण्डू जा फोन कयलकनि, मुदा ओ नहि छलीह। घरक मालकीन सुना देलकनि जे जनकपुरसँ फोन आयल छल—काठमाण्डूसँ अयबा ले'।

से जनकपुरमे हम अवाक् भ' गेल रही जखन ओकरा प्लेनसँ उतरि सोझे हमरा डेरामे भेँट करबा ले' अबैत देखने रहिऐ। पुछलापर ओ, प्रायः गामक कोनो समाद होयतै तेँ ट्रंककाल आयल होयतैक, से बूझि जनकपुर, गाम जयबा ले' आबि जयबाक बात बाजलि रहय। हमर मित्रक फोनकेँ ट्रंककाल बूझि लेने रहय आ

आबि गेल रहय अति सहज भ' क'। काठमाण्डूसँ जनकपुर आ जनकपुरसँ गाम । पुनः काठमाण्डू । छौ-सात सय टाकासँ कमक खर्च नहि । आ, से तकर कोनो चिन्तो नहि ।

हम काठमाण्डूए रही । गाम जयबाक रहैक ओकरा । जयबासँ एक दिन पूर्व ओ हमरा पकड़िक' बजार ल' गेलि छलीह । स्वीटर, पेंटक कपड़ा । बेटी ले' फ्राक (६० टाकाक फूल मात्र काढ़ल), घरबला ले' पेंट-शर्ट । अपना ले' तीनटा साड़ी—बारह सय टाकामे । ऊनी ब्लाउज । दू हजार टाकासँ बेसीक सामान छल होयतैक । आ, डेरामे कपड़ा सैंतैत काल भारू नमरीक एक इंच मोटाइक गड्डी आ ई सभ चीज रेखा जानि-जानिक' हमरा देखयबाक प्रयास कयने रहय । ई हम बेर-बेर नोट करी । ओकरा रईसी खर्चपर हम शंका नहि करी तें ई सभ पृष्ठभूमि रहैक । हम ओकर खर्च देखी आ मोनमे पूछी जे ई कत'सँ लबैत अछि ।

मुदा, एतेक देखलाक बादो हम किछु पुछि नहि सकल रहिऐ । किए पुछि-यौक कथू । काठमाण्डूक छौंडी सभक डिजाइन आ ओकर ऐय्यासी देखि ओकर आमदनीक स्रोत पुछब अपराध मानल जाइत छैक । हमरामे ई अपराध करबाक साहस नहि अछि ।

आ से बुझायल, रेखा गमि गेल रहय । बाजलि रहय मूडमे—"देखू अभि ! ई सभ जे खर्च देखैत छी ओ हमर छोट दरमाहामे की पूरा भ' सकैत अछि ? हम जनैत छी, अहाँ ई सोचल करैत होयब । त' हम साफ बता दी जे विबाहसँ पूर्व हमर एकटा अभिन्न मित्र छलाह—शेखरबाबू । काठमाण्डूक इन्द्र चौकक प्रसिद्ध व्यापारी । सोल्टी हमरा सभके लग अनलक । आ, हम सभ बड़ नीक मित्र बनि गेल रही । आइ धरि हमर मित्र हमरा समय-समयपर आर्थिक सहायता देल करैत अछि । दुखक समयमे देल हुनक ई सहयोग एखनो हम 'नहि' नहि कहि पबैत छी । तें हुनकेपर हमर सभ शान-शौकत । आ पति ...। ओ त' बनारसमे पड़ल छथि । हुनका हमरे कमाइ चाही । हम कत'सँ लाबी, तकर हुनका कोनो फिकिर नै । मात्र चाही हुनका टाका, कपड़ा ।"

रेखाक भाषण आर बड़ी काल धरि चलैत जँ एकटा लम्बूसन मरद ओकर

कोठलीमे बेधड़क नहि पैसि गेल रहितैक इशारासँ ओ बता देने रहय जे इएह ओकर मित्र छैक । हम सामान्य शिष्टाचार निभा कोठलीसँ सरकि गेल रही ।

काठमाण्डू सन ठाममे साढ़े तीन सय टाका मासिक भाड़ापर घर ल' क' रहनिहारि रेखाक रईसी, मोनमे तँ कचोट भरैत गेल, मुदा किछु बाजि नहि सकल रही ।

दोसर दिन भेने एयरपोर्टपर हमरा भेंट भेल रहय रेखासँ । हपसिक', हमरा देखिते, लगमे आबि बैसि गेलि रहय । अपना प्रेमीकें एयरपोर्ट नहि आबि सकबाक कारण कह' लागलि रहय । ओकर भाइ आब'बला रहैक बीरगंजसँ, नहि तँ ओ सभ बेर ओकरा एत' छोड़' अबैत छैक । बड़ भला आदमी छैक ओ....। एहू बेर जरूरे अबितै ।

हम ओकर उत्साह देखि जरि गेल रही । पुछलिऐ—"ई अनकर सहयोगपर कतेक दिन धरि जीवन चला सकबैक रेखा ? आइ नहि तँ काल्हि ओ अहाँसँ छुटबे करत । तखन ई बिगड़ल ऐय्यासीक जीवन की अहाँ भोगि सकब ? बाल-बच्चा भेल आब । पढ़ल-लिखल पति भेटल अछि । सामाजिक मर्यादा छैक....। किछु सोचलिऐक अछि...?" हम तहिया ओकरा 'अहाँ' सम्बोधन करैत रहिऐक । हमर बात सूनि रेखाक मुँह जेना कड़ुआ गेलै । भावावेशमे अपन सोहनगर क्षणक वर्णन करैत काल भविष्यक ई कटु उपदेश सुनबा ले' ओ एकदम्मे तैयार नहि बुझायल । हमर मुँह ओ चंठ जकाँ देखने रहय, जेना हम की कहि देने रहिऐक ।

बमकि उठलि रेखा—"हुँह' सामाजिक मर्यादा ! कथीक मर्यादा ! १७-१८ वर्षक काँच उमेरमे काठमाण्डू एसकरिये आबि नोकरी करबाले' बाध्य कयल गेल । लड़कीक जीवनमे सामाजिक मर्यादा नामक कोनो वस्तु नहि होइत छै अभि ! हम स्वयं जीवनक बाट बनौने छी, स्वयं चलब । भविष्यक कल्पना हम कर' नहि चाहैत छी । वर्तमानकें खूब नीक जकाँ भोगबाक हमर लालसा अछि— खूब भोगैत छी । साठि टाकाक घरमे टुटलाहा खाटपर कोनो साँझ खाय, कोनो साँझ भुखले सुतबापर बाध्य कोनो लड़कीक जीवनमे के किछु क' देबा ले' अयलैक ? पैदल ताहा चल जायब आ पैदल आयब । घंटा भरिसँ उपर काठमाण्डूक उभड़-खाभड़

सहरजमीन । कल्पना करू तँ, हमरा कतेक कष्ट भेल होयत । एकेटा कपड़ा सप्ताह-सप्ताह पहिरिक' रहल छी हम । तखन के आयल अछि समाजक मर्यादाक रक्षा ल' । धन्य इएह शेखर, जे हमरा नवीन जीवन देलक । आइ जे किछु छी, ओकरे बदौलत……। जा धरि ओ रहत आ हमरामे बुद्धि रहत, हम एहिना जीबि लेब । नहि चाही ककरो उपदेश…।" आ उठि गेल रहय सीटसँ । फिल्ड दिसक सीसावला खिड़की लग जाक' आकाशमे उड़बाले' तैयार जहाज दिस टकटकी लगा देख' लागलि छलीह रेखा…।

हम स्तब्ध भेल ठाढ़ भ' गेल रही, वेटिंग कोचपर । की सभ बाजि देने रहय रेखा । समाजक प्रति ई विरक्ति… एकरा नीक-बेजाय सोचबाक बुद्धि घीचि लेने छैक । के कहओ एकरा…। हम तखनो सोचने रही—आइ ने काल्हि ओ सोचती जरूर……।

आ, से रेखा आइ हमर आगांमे कानि रहलि अछि । संगमे एकोटा पाइ नहि । पाँच सय टाकाक भाड़ापर लेल मकान, पति, बच्ची आ घरक खर्च । नोकरी छुटि गेल छै । फिराकमे अछि । तकर सभ खर्च । मांगओ ककरासँ ? से चूड़ी बेचतीह । सोनाक छै, तीन हजार स' उपर देतै । गहना तँ बड़ छलैक । हाथमे औंठी पाँच हजारसँ उपरेक रहैक—हीराक ।

हम रेखाक आँगुर तकैत छी । आहि रे बा ! ई की ! औंठी नहि छैक । कानमे बालीयो नहि । गरदनिमे नेकलेश सेहो नहि छैक । पैंतीस सय टाका दाम एक-बेर रेखा कहने छलि । ई सभ तँ बरोबरि पहिरैत छलि ? तखन ? दुत् ! की सोचैत छी हम ! पेटीमे बन्न कयने होयत । समयसाल तेहन ने छै । तखन ई चूड़ी ? हमरा मोन पड़ि जाइत अछि पछिला बात सभ,आ रेखाक उक्ति—"भविष्यक कल्पना हम कर' नहि चाहैत छी । वर्तमानकेँ खूब नीक जकाँ भोगबाक हमर लालसा अछि, खूब भोगैत छी ।"

मोन करैत अछि, मोन पाड़ि दिऐक ओ बात सभ । आ तँ कहैत छिऐक—"मोन छौक रेखा ओ बात सभ, जे तों हमरा…"

"नहि, मोन पाड़ू अभि, ओ बात सभ ! टीसैत अछि हियामे हमरा । हमरा सभ मोन अछि । समाजक द्वारा मात्र शोषित हम घृणासँ घेरलि रही तहिया ।

हमरा जीवनमे जे भेटल रहय सभ भेड़िया बनि हपस' चाहय । नोरसँ बेसी हमर जवानीमे रुचि रहैक लोकक । एतेक विशाल महानगरमे भूखल आँखिसँ बचिक' रहब—तपस्या रहल हमराले' । मुदा पुरुषक ई रूप हमरा हृदयमे घृणा उत्पन्न करा देलक । आ से बदला लेबाले' हम दर्जनो पुरुषकेँ बेबकूफ बनौने रही । एखनो पचीसो लोक हमरापर दीबाना भ'क' बौआ रहल अछि । हमरा ओकर विरक्ति आकि दुखद स्थिति देखि खुशी भेल करैत अछि । जीवनकेँ खूब नीक जकाँ जीबाक हमर लालसा साँचे हमरा आन्हरक' देने रहय । हम भविष्य नहि सोचने रही । ककरो समयपरक आर्थिक सहयोग किंवा आत्मीय सिनेहकेँ जीवनक आदर्श बुझैत रहलिऐक—आ बाटक निर्माण तेहने कयने रही । से आब बुझलिऐक अभि, ओ हमर धोखा छल । भ्रम छल । जीवनमे बहुत कम एहन क्षण अबैत छैक जखन एकर सार्थकताक अनुभव लोक करैत अछि । हम बुझैत छी—हम गलतीक' रहलि छलहुँ । ई महानगर हमरा भोतिया देलक । मृगतृष्णाक पाछाँ बेहाल रहलहुँ ।

"की तों गलती सुधारि सकैत छेँ ?" हमहूँ कनेक बेसिए कटु भ' गेलहुँ ।

"हँ, हम ताहि दिस प्रयासक' रहलहुँ अछि, तेँ तँ नोकरी नहि रहनो आइ कोहुना गहनापर खेपि रहल छी । देखैत छिऐक—कानमे बाली, आँगुरमे औंठी आ गरामे नेकलेश किछु छैक ? सभ बन्हकी राखल छैक । माँ आयलि छलीह । मौसी गेलीह गाम, सभकेँ पठयबाक रहय । अपने पहाड़—सासुर जयबाक रहय । घरक भाड़ा, खयबाक सामान सभ । घरबलाक खर्च । एही सभमे बन्हकी ध' ध' क' काज चलाओल अछि । की अहाँ एकरा पुरनका बातकेँ विस्मृत करबाक लक्षण नहि बुझैत छी ?"—रेखा आँचरसँ आँखि पोछैत बजैत अछि ।

"तखन की शेखरसँ आब …" हम कनेक नरम होइत छी ।

बीचेमे लोकैत रेखा तड़पि उठैत अछि—"नहि लिय' नाम ओकर । ओ हमर जीवन तबाहक' देने अछि । शुरुएमे यदि ओ हमरा खर्च नहि दीत, सहायता नहि करैत तँ हम नहि बहसितहुँ । हमर बर्बादीमे ओकरे हाथ अछि । जानिक' भलेँ ओ किछु नहि कयने होअय. मुदा हम आब बुझैत छी, ओ बिगाड़ि देलक हमर चालि । आइ डेढ़ माससँ उपर भेँट भेला भेल ओकरासँ । हम नहि चाहैत छी, भेटय । तेँ ने ई कर्ज सभ....।"

"की एखनो ओ सहयोग करतौ……?"

कनेक काल रेखा देबालपर एकटक देखैत अछि। जेना कतहु भसिया गेल हो। पुनः सम्हरिक' बजैत अछि—"हँ एखनो जँ हम ओकरा अपन हालत कहियौक तँ ओ सहायता करत। मुदा से हम चाहैत नहि छी। बीतल क्षणक दर्दकेँ आब आर जियाब' नहि चाहैत छी हम। पति छथि, बेटी अछि। एकरे देखि जीवन निबाहि लेब हम। हम नहि चाहैत छी, आब पति हमर बीतल जिनगीक पाछाँ अपस्याँत रहथि….।"

"तखन शेखर……?"

"शेखर आब हमरा लेल भगजोगनीसँ बेसी महत्त्व नहि रखैत अछि अभि! हमर अन्धकारपूर्ण भविष्यमे टिमटिमाइत एकटा अति क्षीण इजोत। जकर नियति आब हमरा ल' स्पष्ट नहि। जकरा सहारासँ हम अपन दाम्पत्य जीवनक बाटकेँ देखि नहि सकब। ओ आर भोतिआ देत—भकचोन्ही लागि जायत हमरा। ओ ज्योति एकटा भ्रम छोड़ि किछु नै भ' सकैछ हमरा लेल। आ जीवन भरि जिनगीक गलत मिथकक पाछाँ बेहाल रहनिहार हम—आब आर भ्रममे पड़' नहि चाहैत छी अभि"।" आँखिमे उतरि आयल नोरक बुन्नकेँ फेर साड़ीक कोरसँ पोछैत बजैत अछि—"चलू, अहूँ ओम्हरे चलब ने! साँझो पड़ि सकैत छैक। आ आइए काज होयब जरूरी अछि। अहाँके बुझले अछि"।" पर्सके सम्हारैत रेखा उठैत अछि। आइ बहुत दिनपर रेखाक अनुहारपर एकटा शांति देखि पड़ैत अछि। बाहरी दुनियाँमे अपन चालि-ढालि, पहिरन-ओढ़न, बोली-बानीसँ अत्याधुनिका, 'ग्लैमर गर्ल'क रूपमे जानल जाइत रेखा हमरा आगाँमे गम्भीरता आ शांतिक प्रतिमूर्ति भ' ठाढ़ि अछि। बुझाइछ, सौंसे दुनियाँक घर-गृहस्थीक चिन्ता एसकरे रेखे उठा लेने हो।

हम यंत्रवत् रेखाक पछोड़ धयने डेरासँ निकलि जाइत छी।



अन्हारमे भोतिआयल एकटा सिपाही

आखिर गणेश मरिये गेल। ओकर लोक-वेद कहाँदन औंघराइत-औंघराइत देह-हाथ फोड़ि लेने रहैक। कोना ने! जीबाक एक्केटा बएह आसरा रहैक। ओकर पन्द्रह रुपैया महिनापर बड़ सन्तोष रहैक बुढ़िआकेँ। कमौआ बेटा जुआनीमे कात भ' गेलै बहु ल' क'। आ बुढ़बा-बुढ़िआपर सगरो संसारक भार पड़ि गेलै। धिया-पुता एही ले' जनमबैए—गणेश बरमहल कहल करैक।

कातो भेने गणेशकेँ कल्याण नहि रहैक। एक्के आंगनमे रहबाक कारणे सभदिन जेना एकबेरक' गारि-हुज्जति दुनूकेँ देबे करैक बेटा-पुतहु। मारबो-पिटबो करैक। एह! एक दिन कूहल देह ल' क' घरबला लग पंचायतमे आयल रहय बुढ़िया। भरल पंचायतमे हाक लगा गेल रहय बुढ़िया—'तोरा अछैत हमर ई दुर्दशा!' गणेश कहुना मनाक' घर ल' गेल रहैक आ बेटा-पुतहुकेँ डाँटि देने रहैक। मुदा आब? आब तँ ओकर परोक्ष भ' गेलै। कुहल देह ल' क' ओ आब कत्त' जायत? ककरा कहत ओ—तोरा अछैत हमर ई हाल! आब तँ ओकर परोक्ष भ' गेलैक!

से जखने सुनलक गणेशक परोक्ष भ' गेलै, उदास भ' गेल। बड़ कचोट होइत अछि। ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व हमरा आँखिक आगाँ नाचि जाइत अछि। ओकर वाक्पटुता, कर्त्तव्यनिष्ठा सम्पूर्ण गाँआकेँ मोहि लेने छलैक। सत्ते, ओ कर्मयोगी छल—काजुल छल।

गामक 'पीन' रहैक गणेश। सम्पूर्ण गामक सिपाही। कोनो पंचैती बैसयबाक हो तखन, कोनो मेलाक आयोजन हो तखन, कोनो एकाह-नवाह हो तखन, गणेशक उपस्थिति अनिवार्य बूझल जाइत छल। आ ओहो अपन लगन सँ एहि सभमे भीड़ल रहल करय।

पन्द्रह रुपैआ मासिक पंचायत छलै ओकरा। आजुक समयमे एतेकसँ परिवार चलायब बड़ कठिन नहि, असंभव थिक। मुदा ताहूमे बूढ़ सन्तुष्ट रहैत

छल। ओकरा दशक काज करबामे बड़ आनन्द अबैक। ओकर इएह परिश्रम ओकरा गाम भरिमे लोकप्रिय बना देने रहैक।

तेँ गणेशक मरि जायब मामूली बात नहि छलैक। सौंसे गाममे सोर भ' गेलै। लगले पसरि गेल रहैक जंगलक आगि जकाँ। सभक करेज जेना चहकि गेलै। क्लांत भ' गेल रहय गौंआक अनुहार। एकटा अथक सहयोगीकेँ चलि जयबाक दर्द सभक आँखिमे सहजेँ देखल जा सकै।

गोर दप-दप। पचास-पचपनक उमेर। काज करबामे हठगर। हाथमे एकटा पातर लाठी रहल करैक, जकरा कैक बेर लोक चोरा लेल करैक। ठेहुन धरिक धोती, जे अंगपोछा सेहो बनि जाइक। ठोरतर दबने खैनीक जूम। आ किछु उचकिक' चलबाक अभ्यासी गणेश। हमर गणेश सौंसे गौंआक सिपाही, जे आब नहि रहल।

सत्ते ई अनुभूति मोनकेँ पीड़ा दैत अछि। बड़ संसर्ग छलैक हमरा ओत' ओकरा। प्रधान होयबाक कारणेँ आ हमर पुरान गोराइत होयबाक कारणे सेहो। कोनो टहलकेँ बजयबा ले' सदैव तत्पर। ओकरा लेखेँ जेहन आंगन तेहन बाहर। मजकियो बड़। फगुआ दिनक ओकर पहिरन देखि अनायास हँसि पड़बाक मोन होइक। हमरे हरिपुरवला बट्टीदारसँ माङल दाउरा, सुरवाल, टोपी आ बाबुक पुरना जूता पयरमे आ आँखिमे टूटल बाँहिबला चश्मा, जकरा ओ डोरीसँ बन्हने रहैक। हाथमे वएह पतरका लाठी। छौंड़ा सभ देखि-देखि किछु कहि दैक आ ओहिपर गणेश ताल तोड़' लगैक।

जहिया हम बड़ छोट रही तँ देखिऐक एहिना बड़े अबैत ओहि बूढ़केँ। सभ क्यो ओकरा गोराइत कहैक। हमर जमीन छै किछु उत्तरभर पहाड़मे। बटैया लागल। ओतहि ओ गेल करैत छल आ उपजाक आधा भाग लबैत छल— मकै, गहूम, तोरी आ बहुतरास रब्बी-राइ सभ। तहियासँ एकरा देखि मोन गर्वित भ' गेल करय जे ई हमर गोराइत अछि। छौड़ा सभक बीच हमर सीना तनल रहैत छल—अपन खास सिपाही होयबाक कारणें। आ, आइ हम वएह दृश्यकेँ मोन पाड़ि चिहुँकि उठैत छी। आइ हमर सिपाही हेरा गेल अछि। हम असुरक्षित भ' गेलहुँ अछि मने !

पता लागल अछि, बाबू हरिपुर गेलाह अछि। रब्बी-राइक सम्बन्धमे खोज करय। सोचैत छी, हुनक आत्माक छटपटाहटि क्यो नहि देखि सकैत अछि। सदैव संग आ जी-हजूरीमे रहनिहार हुनक अभिन्न सहयोगी गणेश आइ हुनका संगे नहि गेल छनि। आब कहियो जाइयो नै सकतनि।

किछु दिनसँ एम्हर गाम नहि नीक लगैत अछि। गामक प्रत्येक प्रवासक संग जोड़ल अछि गणेश बुढ़बाक संस्मरण। जे रहि-रहिक' हमरा विचलितक' दैत अछि। बजारक दिन तँ आर उदास लगैत अछि। आंगनमे जाइत छी तँ सुनैत छी—'तेल लयबाक छै। प्याजो घटले छैक। जीर, मरीच-तरकारी सेहो लाबहि पड़तैक। हँ, आइ तँ बजारो छैक—माछो तँ आनहि पड़तैक। कत' गेलथिन माय ! पठौथिन ककरा ? सत्ते सभक आगाँ आब एकटा प्रश्नचिन्ह जागि जाइत छैक—पठौथिन ककरा ?

हमरा नोकर-चाकरक कमी अछि से बात नै। सभ अछि मुदा विश्वासी नहि। बिसबासी छल गणेश बुढ़बा। एकदम फिट। मिरचाइ-प्याजुसँ ल' माछ-मासु धरिक वएह कीन-बेसाह करैत छलैक। आ, साँझखन आंगनमे मायक आगाँ गमछाक खोँइछ बना ठाढ़ गणेशक भाव मायकेँ बुझबामे भाङठ नहि होइत छलनि। किछु—चूड़ा आ एहनेसन खाय-पीब' बला किछु द' देल करथिन। गणेश तृप्त भ' गेल करय।

गामक बजार आब उदास लगैत अछि। ओतेक भीड़मे भोतिआयल हम अपन गोराइतक अनुहार तकैत रहैत छी। मुदा नहि भेटबाक रहैछ, नहि भेटैछ। अपन बतहपनीसँ स्वयं हमरा कचोट होइत अछि। मुदा ....।

हमहीँ किए ? गामक बहुत रास लोक ओकर अनुपस्थितिसँ खिन्न रहैत अछि। छौड़ा सभक हेतु तँ जेना बज्रपाते भ' गेलैक। ककरा कहतैक ओ— "फतुरी" आ के अभ्यस्त हाथेँ लाठी उठा मारबाले' छुटतैक। गणेशक मुँहसँ गारि सूनि लोक आर किचकिचा दैक। आ ओकर 'मूड'पर आर जोर-जोरसँ हँसय। थपड़ी पाड़य। आब ओकराले' गणेश एकटा टीस भ' गेलैक अछि। ओकर फतुरी ओकरासँ बहुत दूर चल गेलैक, जकर पूरी खयबाक लालसा आ जकर गाड़ि पढ़बाक मुद्रा ओ कतहु ने देखि सकत।

ओकर फतुरी आब नहि रहल । बड़ सुधुआ लोक रहय गणेश । सुपत-कुपत सभकेँ कहि दैक । क्यो दुखो नै मानैक ओकर बातकेँ । बरु केहनो क्लांत ग्रनुहार ओकर बात सूनि बिहुँसि उठैत छल । ओकर परोक्ष भेलापर बहुत रास घटना सभक स्मृति अनेरे मोनकेँ भारी बना दैत अछि ; ओकरा संगे बिताओल नेनपन, ओकर देल मान-स्नेह एकटा हूक बनि भीतर खटकि रहल अछि । अव्यक्त वेदना सत्ते बड़ दुखदायी होइछ !

मरैत अछि सभ क्यो मुदा गणेशो मरि सकैछ, हम सोचने नहि छलहुँ । नहि मरैत कहियो से बात नहि—एखन मर'बला स्थितिमे ओ नहि छल । खूब काम-काज करैत । ने कोनो दुख, ने कोनो तकलीफ । लोक तँ सएह देखैत छलैक आ तेँ ओकरा ठीके बूझब सभक हेतु स्वाभाविक ।

से एक दिन एतहि केयो गोटे हमरा कहलक जे गणेश मरि गेलै तँ हम सन्न रहि गेल रही । की पुछियौक जे कोना ? हमरा अपन कानपर विश्वास नहि भेल रहय, आ जखन आश्वस्त भेलहुँ तँ ज्ञात भेल जे आइ ओकरा दारू पीबि गेलैक । ओकरा दारूक सेहो लति रहैक । पाव-आधपाव कहियोक' पीबि लैत छल । आ, से कोनो ओकरा शारीरिक कष्ट नहि पहुँचबैक । ई स्वभाविक भ' गेल रहय ओकरा लेल । मुदा वएह स्वाभाविक दारू ओकरा मारि सकैछ—सोचियो ने सकैत छलहुँ । पाव भरि, आध पाव पीलासँ केयो मरैत नहि अछि आ एहिसँ बेसी पीबाक ओकरा सामर्थ्य नहि छलैक । तखन ? कतेक पीबि गेल ओ दारू ? की ओ मरबा लै' मात्र पीने छल ? की दुख छलैक बुढ़बाकेँ ? प्रश्न अछि । के देअओ उत्तर ?

ओना लोकके एहि प्रश्नक उत्तर देबाक कोन प्रयोजन ? ओकरा तँ दिन-राति हजूरीमे ठाढ़ एकटा गोराइत चाहिऐक । नीक-बेजायमे रंग देनिहार एकटा सिपाही चाहिऐक । अपन व्यथासँ व्यथित कयनिहार पारिवारिक दुख-दर्दमे फँसल गणेश नहि । तेँ सोचैत छी जे लोक एहि प्रश्नक उत्तर एखन द' सकबाक स्थितिमे रहैत तँ गणेश मरबो ने करितय । गणेश मरल अपन खातिर नहि, अनका खातिर । अनकर दर्दकेँ समेटनिहार बुढ़बा स्वयंकेर दर्दसँ हारि गेल । के बुझत एहि मर्मकेँ ?

दिनमे भोरे भट्ठीमे बैसल तँ साँझ धरि कनेक-कनेक पिबिते रहि गेल । ओ अपन पाइसँ पीलक वा केयो ओकरा पिऔलकैक, कहि नहि । मुदा ओ पीलक

जरूर आ से खूब पीलक । कहल जाइछ, दारू लोकक मोनक दुख-दर्दकेँ बिसरबाक अचूक साधन होइछ । मुदा के पुछितैक ओहि बुढ़केँ जे ओकर केहन दुख छैक । जे सदाक हेतु ओकरा सभ किछु बिसरबाक हेतु बाध्यक' देलकैक । ओकर दुख-दर्दसँ लोकक कोन काज । ओ तँ गामक गोराइत छल—सिपाही छल । काज तँ ओकर जिनगी छलैक । काज आ प्रशंसा !

ओहि दिन पीलाक बाद साँझखन घर जा सूति रहल । कहाँदन निफाल-बाली बेटी आयल रहैक पूरी ल' क' । कहने रहैक उठाक'—'बाउ, पूरी खा ल' न' !' —'काल्हि भोरे दीहे' कहि करोट फेरि बुढ़बा सूति रहल रहय से सुतले रहि गेल । पुनः कहियो नहि उठबाक हेतु ।

कखनोकाल वायुमण्डलमे खट् खट् खट् खट् शब्द सूनि चौंकि उठैत छी—कतहु गणेश बुढ़बा लाठी टेकैत तँ नहि आबि रहल अछि ! मुदा नहि, आगामे एकटा विराट अन्हार छोड़ि आर किछु नहि देखाइ पड़ैछ ।



भोतिआयल बाटक बटोही

'अहाँ गाम नहि गेलिऐ यौ !'—क्यो गोटे आश्चर्यसँ रोडपर ककरोसँ पुछैत छैक। हमरा नहि नीक लगैत अछि ओकर ई पूछब। क्यो कतहु जयतै, नहि जयतै, से लोकके ँ कोन मतलब ? मुदा ओ हमरासँ नहि पुछने रहय। तेँ उत्तरक अपेक्षा ओकरा पुछनिहारसँ रहैक आ ओ उत्तर देबो कयलकैक। ओ सन्तुष्ट भ' आगाँ बढ़ि गेल रहय।

मुदा हमरा सन्तुष्टि नहि होइत अछि। गाम लोक किए जाइत अछि ? एहि कॉलोनीक बहुसंख्यक लोक गाम चल गेल अछि—बहुत दिनपर। होरी, छठि, दशमी वा अन्य कोनो तेहन सन परब—नोकरिहाराक हेतु अपन लोकसँ भेट-घाँटक बहाना होइत छैक। से, देशक विभिन्न प्रान्तसँ नोकरीक क्रममे आयल एतुक्का लोक गाम चल गेल अछि—जे बाँकी अछियो ओ एक-दू दिनमे चल जायत। जे नहि जा सकत, ओ एहिना लोकक प्रश्नक भाव उघैत सड़ैत रहत एत'…।

आ हमहूँ एत' आबि सड़ि रहल छी। से बात एत' अयलाक बादे हमरा अनुभव होब' लागल अछि। एहिठामसँ बड़ आवेशसँ गाम जाइत अछि। जेना गाम पर ओकर खुशी ओकर प्रतीक्षा करैत होइक। ई दोसर बात छै जे वएह गाम ककरो लेल कठपीज जकाँ भीतरसँ टीस मारैत छैक आ लोक एहिना कतहु पड़ल-पड़ल आनके ँ गाम जयबाक आवेश निहारैत रहैत अछि।

अबैत काल देखने रहिऐक बसमे दूर-दूरसँ कमौआ बेटा, पति, भाइ, बाप अपन घर जयबाक उत्सुकतामे बसके ँ उचितो स्टापपर रोकब पसिन्न नहि करैक। एक पतियानीसँ छोट-पैघ मोटाक बस-स्टापपर अनेरे भीड़ उमड़ैत—हतासल। उत्सुक जमघट, नीचाँ राखल टिनही किंवा स्टीलक बक्सापर गाड़ीक प्रतीक्षामे नबकनियाँ सभ—क्यो जाइत, क्यो अबैत। आ, हम एहि सभ उत्सुकता मध्य अपराधी जकाँ अबैत रही। यन्त्रचालित सन। गाम जाइत लोकक अनुहार देखबाक हमरा साहस नहि होअय—से मूड़ी गोँति हम डेरा आयल रही।

एतहु अयलापर मोन शांत नहि भ' सकल। लोकक अनुहारमे जेना हमरा लेल एकटा उपेक्षा बूझि पड़य, लकड़ीक आड़ा जकाँ चीरैत नजरि हमरा बुझाय ने सभ हमर बात बूझि गेल अछि। हम गाम छोड़ि आन ठाम आयल छी।

हम कैक बेर एत्त' अयलहुँ अछि, मुदा एहिबेर जकाँ मोन कहियो ने कचोटलक अछि। मोन कैक बेर दुत्कारैत अछि—हम एत' अयबे किए करैत छी ? मृग-मरीचिका जकाँ अनेरे बौआय !

पत्नी घरसँ समाद पठौने छलीह—पूर्णिमा के हम आयब। पाइ रखने रहब। मुदा हम बड़ उपेक्षासँ बात टारि देने रहिऐक आ पड़ा आयल छी एत्त'—घरसँ दूर, पूर्व छोरपर……।

एहि दूर प्रवासक सेहो एकटा नमहर इतिहास रहलैक अछि। अपन अस्तित्व रक्षा ले' बुढ़बा बेलपर लतरल अमरलत्तीक भ्रम पोसने बौआइत हम—एहने सन एकटा आत्मीय सम्पर्कक क्रममे एत्त' लटकि गेल रही। से आइ धरि गछारने छी एकरा। हमर इएह चतरब बतहपनी भ' गेल अछि। हम बहकि गेलहुँ अछि तेँ होरियोमे एत्त' सड़ि रहल छी।

एत' अयबाक क्रम—एकटा मृग-मरीचिकाक भ्रममे बौआइत शावकक गतिक प्रतीक रहल अछि—से हम जनैत छी आ जानि-जानिक' अपन तकदीर लिखबाक जोखिम किंवा हठधर्मिता निवाहि रहलहुँ अछि। तेँ तँ ने आइ धरि लोक हमरा हमर एहि खोजके ँ बौआयब छोड़ि आर किछु नहि कहि सकल अछि।

आन तँ आन, बाबूके ँ सेहो हमर एत' अयनाइ नहि अरघैत छनि। एखनो जखन हुनका पता लगतनि हम एत्त' छी, ओ बोमिया उठल होयताह—"दुर, जाव जत' मोन होइहै तत्त'। देखै छिऐ' कोना धीया-पूताके ँ पालि लै है। एना बाबू बनलासँ आ गामे-गाम घुमलासँ होइतै त ँ सभ क' लीत....।" आ, हुनका आगाँमे केओ कुर्सीपर, केओ चटाइपर त ँ क्यो इसकुलिया बेंचपर बैसल—गूजन, लक्ष्मी, बीजलाल सन लोक हुनकोसँ एक धाप आगू बढ़ि हमरा उखलैत होयत। हमरासँ कोनो रीस होयतैक से नहि—बाबूके ँ प्रसन्न करबाक एकटा बहाना—एकटा माध्यम। हुनका हँ मे हँ मिला लोक अपन इच्छा-पूर्ति करैत आयल अछि। गामक प्रधान पंच—भेल-गेलमे ..! हम ईहो बुझैत छी, जखन हम गाम जायब तँ

इएह सभ हमरो लग आबि बाजत—'दुत् तोरो बुढ़बा आब सठिया गेलह। बाजक एकोरत्ती ठेकान नै छै। कहू त', आब ई सभ बच्चा छै !—अपन नीक-बेजाय नहि सोचि सकै छै ..!' आ हम मात्र मुस्किया क' रहि जायब। हम ई खेला कैक बेर देखि चुकल छी, तें नीक जकाँ जनैत छी।

मुदा एते धरि जरूर जे एहि बेर हम स्वयं अनुभव करैत छी, हमर ई भोतिअयबाक प्रवृत्ति समयकें सेहो बिसरा देने अछि। तें तँ आइयो—होरियो कें गाम नहि छी।

काल्हिए आयल अछि एत'। अबिते पछबा हवा अनघोल कर' लागल छैक। हम बहैत हवाक विपरीत दिस जाइत-जाइत बहुत दूर अपन गाम चल जाइत छी। क्वाटरक आगाँमे पँघ-पँघ गाछक सुखायल पातक खर-खर स्वर जेना गामक कथा कहि रहल बुझाइत अछि। पत्नी शहर आयलि छथि संगहि दुलरुआ सारि—रामदाइ सेहो। दुमहलाक नीचाँ-उपर लोक करमान लागल छैक। लोकक ई भीड़—फागु पूर्णिमामे घूमल जाइत पंचकोशी परिक्रमामे घुमवाले' आयल होयतैक। जय सीयाराम जय जय सीयाराम—सम्पूर्ण परिक्रमा-पथ आ शहरमे गुंजित छै। नेपाली भाषी छौंड़ा सभ कारी, पीयर, लाल अपन-अपन मुँहमे लेपने हाथमे फुचकारी लेने यात्री सभकें खेहारि-खेहारिक' रंग द' रहल छैक। कैक बेर त' लोक पिटियो दैत छैक। पीटौक कोना ने ! लोक साले-बरीसपर धराउ निकालि क' मेला अबैत अछि—सेहो ई पाजीसभ रंगसँ रंगि दैत छैक। रंग कहूँ एना खेलयलैए। खेलयतै काल्हि। एकटा पुरना धोती आ उघारे देह। हारो जतेक हारतै ततेक। मुदा आइ तँ....।

मोन उड़ैत अछि—डेरापर अनघोल होइत होयतैक। नापल सिदहा हम छोड़ि आयल रहिऐक मुदा आइ खायबला मुँहक कमी नहि। दर-दियाद, कर-कुटुम सभ लगारवला सभ। हो-हल्लामे क्यो खायत क्यो नहि खायत। जे नहि खायत से अनेरे मुँह फुलाओत। सेहो हमरेपर। मेला-ठेलामे घर छोड़ि दैत छैक। नोकरो परेशान-परेशान भेल होयत। ओना छैहो ओ असल धीमड़ कोढ़ि। सात बजे जे खयनाइक ओरिआओन कयने होयत से बारह बजे राति धरि चूल्हिपर बासन चढ़ले होयतैक—एक मुट्ठी दाना खयबाले' एतेक झमेला···।

एहि सभ स्थितिक मध्य कोनो तरहक असुविधापर पत्नी गरजि उठलि होयतीह। ओना हमर एत' अयबे ओकरा त्रिशुलक नोक जकाँ फाड़ने जाइत होयतैक। ताहिमे आइ तँ मायो आयलि होयतैक ओकर। सुना-सुनाक' सभकें गवाही धरैत होयतै- "हम सभ एत' छी आ ओ··· ··।"

आ ओ......माने हम एत' छी। साँचे हम अपन घर-दुआरसँ बेस दूर एत' पड़ल छी। किए ? ओतुक्का अपनेमे बेहाल पँघ जमघट हमर प्रश्नक उत्तर नहि द' सकत, ने दिन-राति जिदियाह नेना जकाँ एक्के बातपर अड़ल हमर पत्नी, आ ने अन्तिम वयसक पुण्य-लाभ करैत ओकर माय। रामदाइ सेहो किछु जवाब नहि द' सकतीह, जनिका अयबाक हम बड़ इच्छापूर्वक निमंत्रण देने छलिऐक आ जे एखन आबि बहिन संगे हमरा फज्झति करैत होयतीह—"तँ ठीके। पाहुन बहसि गेलै आब।" सभक नजरिमे हम एखन अपराधी बनल होयब, सभ क्यो दुर-छिया कयने होयत। सभक एक्के मत होयतैक—हम भठि गेलौं। हमरा कोठलीमे टाँगल हमर फोटो दिस कटुतासँ ताकि बातकें उखलनिहारक कमी नहि होयतैक—"कहु तँ, लोक देश-विदेशसँ पाबनि-तिहारमे गाम आबैए आ फलामा कोनाक' धीया-पूताकें छोड़िक' ओइ (कोनो नीक विशेषण नहि) लग चल गेल है।" आ, हमर फोटो सभक राग-उपराग मुस्किआइत ठोर द' क' पीने चल जाइत होयतैक। ओ तँ फोटो छैक—हमहूँ एहिसँ बेसी की क' सकैत छलिऐक। की हम चिकरिक' महल्ला कें माथपर उठा, कहि सकितिऐ जे हमर ई बौआयब एही बाल-बच्चा आ धन-सम्पत्तिक रक्षार्थ अछि। हम अपन जीबाक आधार खोजि रहल छी। मोनक व्यथा कहि सकबा ले' मनुक्खकें तलासि रहल छी ....।

लोक हमर एहि बातक अर्थ नहि बूझि हमरा बताह बना देत—ओकरा तँ कोनो अर्थे ने लगैत छैक। भरल घर धीयापुता, बाप-माय जीबैत, भाइ कामगरदा पीठपर। खेत-पथार। शहरमे कोठा-सोफा। पढ़ल-लिखल लोक। ताहि पर मनुक्ख खोजबाक गप ! बहसल मोनबला लोक एहिना सोचैत छैक।

हम सभ जनैत छी—ओ सभ हमर बात नहि बूझि सकत। पत्नीक एकभगाह बात सभ पीबि गेल अछि। हम पढ़आ लोक झूठ बेसी बजैत छी—पत्नी

सुधुआ, गमौआ—साँच बाजब तँ उचिते । आ तेँ सभक नजरिमे हम दोषी बनल रहैत छी—"नेतागिरी कर' लागल छै । गेलै आब !"

आ पत्नी शांत बनल रहैत छथि । ओ सभ बुझैत छैक, मुदा अपन आदतिसँ नचार अछि । ओ अधकचाह माँटिक मूरुतसँ बेसी किछु बनि नहि सकलीह । ओ केहनो परिस्थिति होइक, एक्के बातक उपराग हमरा दैत आयलि अछि—अपने छिछिआयल फिरतै से धीयापूताकेँ की कमाक' खोआतैक ? आनक बेटी-पुतहु ले' बेहाल रहैय', तकरा अपन धीयापूता कहूँ नीक लगलैय' । हम त' सराधक' देबै, आबो त' के अबैय' । अपना ले' ल्लल आ जगत्तर ले' दानी ~ ""।

हम कैक बेर बुझा चुकल छियनि । मुदा, से जँ बुझिए गेलीह तँ हमर पत्नी कथीक ? मौका भेटलापर चालू—"अपने छिछिआयल फिरतै... ।"

मोन घोर भ' गेल करैत अछि । कहिओ क्यो सोचने अछि– एहि छिछिअयबाक जिम्मेबार के ?

मुदा तेँ की ? छिछिआइत छी, तेँ दोषी छी । कहाँक लोक कहाँ गेल आ हम......?

—"किओ लक्ष्मी बाबू, एहिबेर ?...." बाहरमे ककरो कहैत ई आबाज पूरा सुनबासँ पूर्वे हम खिड़की चट् द' बन्नक' लैत छी । हम बुझैत छी जे ओ कहबे करतै कि एहिबेर होरीमे गाम नहि गेलिऐ की ? आ जे सुनबाक हमरा आब साहस नहि अछि ।



नोरक बन्न

'चींSSSS ...चींSSSS... क्याँ....' चिकड़ि उठलै अपन खोंतामे छटपटाइत बगरा । नीचामे बैसल रवीन्द्रक दृष्टि सहसा ओकरापर पड़ि गेलैक । ओ देखलक जे एक गोट बगराकेँ ओकरा खोंतामे रहनिहार बगरा सब धकेलि रहल छैक, चारूकात लुधकि रहल छैक ....नोचि रहल छैक आ ओ बगरा छटपटा रहल अछि – चिचिया रहल अछि । केओ नहि देख'बला छैक ओकर दुखकेँ । कात-करोटक बगरा सेहो ओकरापर च्याँ ...च्याँ ...चीं....चीं ...क' रहल छैक, जेना ओहो कहि रहल हो—बेस कयल ...बेस कयल ।

आ ई सब दृश्य देखि रहल छल रवीन्द्र । अपन जीवनसँ निराश ओकरा बुझाइत छलैक जे ओहो ओइ असहाय बगरासँ कोनो कम नहि अछि । ओकरो स्थिति अपन परिवारमे ओहिना छैक । समाज ओकरापर ओहिना हँसि रहल छैक आ ओ एहि पारिवारिक परिस्थितिमे पड़ि छटपटा रहल अछि, चिचिया रहल अछि, ठीक बगरे जकाँ । एह....कतेक मेल खाइत छैक ओकर आ अइ बगराक जीवन ! ओकरा बुझाइछ जे ओकर जीवन जीवन नहि छैक । पारिवारिक वातावरणमे जकरा मेल नहि होइक ओकरा ओहि परिवारमे जीबिक' की होयतैक । आ एहि प्रसंगे ओकरा मोन पड़ि जाइछ किछु मास पूर्वक एक गोट घटना...:

ओकर स्त्रीक पेटमे बड़ दर्द भ' रहल छलैक । ओहि बेचारिक अजीब हाल छलैक मुदा आँगनक केओ घूरिक' नहि देखने रहैक । रवीन्द्र गामेपर छल मुदा की क' सकैत छल ओ माय-बापक आगाँ । कोनो कारणवश ओकरा शहर आब' पड़लैक । तखन ओ भायकेँ ओकरा डाक्टरसँ देखा देबाक हेतु कहि, चल आयल रहय । कहाँदन डाक्टरो अयलैक... सुइ देलकै आ किछु दवाइक नाम लीखि देलकैक । आब' बेरमे बाबूसँ पाइ माँग' गेल रहै अपन फीसक । मुदा नहि जानि किए, नहि देलथिन । उनटे बीसटा बात बाजल रहथिन बाबू । रवीन्द्रकेँ केओ कहने छलैक—एतेक धन-सम्पतिक रहितो चारिगोट टाका फीस नहि जुड़लैक एहि परिवारमे । एहि

ठाम मात्र काजकेँ महत्व देल जाइछ, जानकेँ नहि। किछु नहि फुराइछ रवीन्द्रकेँ। ओकरा बुझाइछ जे ओकरा जीवनमे दुःखे दुःख भरल छैक। आर किछु नहि।

की सोचने छल ओ ! ओकरा मोनमे कतेक रास आशाक महल बनैत रहलैक अछि आइ तक। मुदा सब जेना बालुक भीत जकाँ ढनमना-ढनमनाक' गीड़ि रहलैक अछि आ ओ बैसल ओहिना देखि रहल अछि। की करतैक बेचारा ? ओहो तँ आखिर परिस्थितिक मारल थीक। कतेक वर्ष पूर्वहिसँ ओ सोचने छल जे किछु बनत। ओ दुनियाँकेँ बहुत किछु देखाओत। दुनियाँकेँ अपन अलौकिक प्रतिभासँ दंग क' देतैक। नाचि उठतैक ओकर कृतित्व, मुदा... ओकरा बुझाइत छैक जे सब बात ओकरा अन्तरमे ओहिना छटपटाइत रहि जयतैक। कहिओ ओकरा बुते ई सब पार नहि लगतै आब।

ओकरा अन्तरमे जेना हलचल होब' लगलैक। बुझाय' लगलैक जे ओकरा अन्तरमे सजाओल सपना सब सपने रहि जयतैक। ओ कहियो प्रत्यक्ष नहि देखि सकत, कहिओ ने। ओह...! ओकर हृदय चीत्कारक' उठलैक। आ ओकरा बुझयलैक जे ओकर आँखिसँ नोर बहय लागल छैक.... नोर...। वास्तवमे, नोर मनुक्खक' एक एहन संगी छैक जे विपत्तिमे किछु घड़िक लेल शान्ति प्रदान करैछ। लोक एकरा देखि अपन अन्तरात्मामे नुकायल दुःखकेँ देखबाक प्रयत्न करैछ। सत्ते...हृदयक अनन्त दुःखराशिकेँ व्यक्त करबाक अभिव्यक्ति थीक नोर। आ एएह नोर रवीन्द्रक गालपर खेलाय लगलैक। ओकरा बुझाइछ, इएह ओकर जीवन छैक...जहान छैक। दुःख-तकलीफमे ओकरा इएह नोर त' संग दै छै। आर ओकरा छैहे के जे जटिल परिस्थितिमे सान्त्वना देतैक। तेँ ओकरा विश्वास छैक जे नोरक प्रत्येक बुन्द ओकरा सान्त्वना प्रदान करैछ।

ता केओ बहारसँ केबार ढकढकबैछ। चौंकि उठल ओ—कत' चल गेल छल ? रूमाल ल' आँखि साफ कयलक आ केबार खोल' गेल। जखन केबार खोललक त' देखैत अछि अपना आगाँमे एक गोट छौंड़ाकेँ ठाढ़। उमेर १४-१५ बर्ष भेल हेतैक। अण्डरपेन्टक संग फाटल गंजी पहिरने, केस अस्त-व्यस्त आ आँखिमे गरीबीक एक गोट पेंघ अभिव्यक्ति नुकायल। बुझाइत छलैक जे ओ दुख आ गरीबीक एक गोट साक्षात पुतरा थिक।

'हजूर नोकरी राखबै ?'—ई ओइ छौंड़ाक आवाज छलैक। रवीन्द्रकेँ जेना केओ सूतलसँ जगा देने रहैक। ओ देखलक ओहि छौंड़ा दिस। ओ छौंड़ा निर्निमेष दृष्टियेँ ताकि रहल छल। आस भरल अनुहारसँ रवीन्द्र दिस, रवीन्द्र। बाजल नहि। जेना वज्र-प्रहार भेलैक ओहि छौंड़ापर। ओकर धैर्यक बान्ह जेना टूटि गेलैक आ ओ कान' लागल रवीन्द्रकेँ बड़ अचम्भा लगलैक, ई किए कानि रहल अछि। प्रायः परिस्थितिक मारल थीक बेचारा। रवीन्द्र अपना कोठरीमे बैसि जाइत अछि। नाम पुछलापर ओ छौंड़ा अपन नाम जगदीश बतबैछ। तखन रवीन्द्र ओकरा अपन भेल हालतिक बारेमे पुछैत छैक।

"मालिक ! अपने की कयल जयत जीवन-गाथा सुनिक'। बड़ करुणा छैक। अपने सन सुखी आदमी भला कोन धैर्यसँ सुनि सकतैक ओहन दुखपूर्ण कथा ?"—एकहि निसाँसमे कहि जाइछ जगदीश। मुदा ओ बेचारा की जान' गेलैक जे ओकरा आगाँमे बैसल नवयुवक सेहो ओकरे जकाँ दुखित अछि अपन जीवनसँ। ओकरामे करुण रसास्वादन करबाक जे धैर्य आब भ' गेल छैक, से कह'बला नहि। रवीन्द्र ओकरा समझाक' कहलकै जे कहू, हम जरूर सुनब। ओ छौंडा एक गोट पेंघ निसास लेलक आ कह' लागल अपन जीवन-वृतान्त...

"मालिक ! हम कोनो पाइ-पाइक लेल मर'बला आदमी नइं छलिऐ। हमर बाप जुटगर छैक। हमरा परिवारमे बाप-माय, भाय-भौजाइ सब छैथ। लेकिन हमर कोइ नइं भेलै। मालिक, बिपतिमे कोइ नइं देख'बला छलै हमरा। एकबेर हम बड़ बेमार छलिऐ। देह सीकी जकाँ लक-लक करैक। बैसल तक नइं होइक मुदा हमरा आँगनक एक्को गोटे हमरा लग नइं आबै। माय छोड़ि कोइ हालोचाल नइं पुछै। माये हमर सब किछु छैक। उएह हमरा भरि आँखिसँ देखैत छलि। मुदा ओहो मजबूर छलि...मालिक ! दवाइ-दारुक लेल कोइ एकटा कैंचा नहि निकालै। अन्तमे हमरा बुझायल जे आब हम नइं बाँचब। आ हम निश्चिन्त भ' गेल रही...मालिक, अपन जिनगीसँ। बुझाय जे...जे भगवान करै छै से नीके करै छै। हमहूँ तंग भ' गेल रहिऐ ओइ जिनगीसँ। मुदा भगवानकेँ हमरा आरो दुःख देबक रहैक। मालिक ! हम नइं मरलिऐ। कतेक दिन त' हमरा लागल अपन देह भरैमे। एही बीच एकटा घटना भ' गेलै जे हमरा घरसँ निकलक लेल मजबूर

क' देलक''—चुप्प भ' गेल जगदीश । बुझाइक जेना आगाँक घटना सुनयबाक हेतु साहस बटोरि रहल हो । ओकरा आँखिक कोरसँ डबडबायल नोर फाँड़ बान्हि तड़पबाक उपक्रमक' रहल छल । ओ आगाँ बाजल—''जखन हम बेमारीसँ उठल रहिऐ त' बड़ कमजोर छलिऐ मालिक । ठेंगा ल' क' चलय पड़य । तखन हमर माय गाममे एक गोटेक ओहिठामसँ दूध उठौनाक' देलकै, मुदा घरक लोकसँ चोराक' । ओकरो घरक लोकसँ बड़ डर होइत छैक । हम दूध पीअ, लगलिऐ । आ रसे-रसे हमरामे ताकत आब' लागल । आब हम नीक जकाँ चल' लागल रहिऐ मालिक ! लेकिन हमर दुभग्यिसँ ई पोल खुजि गेलै जे हमरा दूध उठौना आबै छै । हमर बाप बड़े मारलकै हमरा माइके । हम ओही ठाम रहिऐ । हमरा नइं देखल गेल । हम रोक' गेलिऐ त' खजूरक सिसोहल छौंकीसँ एक छौंकी मारलक । हम त' लोहछि गेलौं मालिक । एक त' कमजोर शरीर आ दोसर छौंकीक जोरगर मारि । हम तलमलाक' गिड़ पड़लिऐ ओइठाम । हमरा पीठपर छौंकीक खोंचसँ चमरा छिला गेल रहय आ लेहू छड़-छड़ बह' लागल रहै । हम बेहोस भ' गेल रहिऐ । मुदा कोइ नइं उठयलकैक हमरा । जखन हमरा होस आयल त' हम सोचलौं जे हमरा एहिठाम कोइ नइं छै । हमरे खातिर हमर माय मारि खयने रहैक मालिक । एहीसँ भागि गेलौं हम घरसँ जे ने बाँस रहतै आ ने बँसुरी बजतै ।'' चुप भ' गेल ओ छौंड़ा । ओ देखा देलकै रवीन्द्रके अपन पीठपरक घाव । ओहिना काँचे छलैक । रवीन्द्रक हृदयमे हाहाकार उठि गेलैक । ओकरा आँखिमे नोर सेहो डबडबा आयल छलैक । ओकरा बुझयलैक जे ओ छौंड़ा वास्तवमे बड़ अभागा अछि । ओकर फूल सन कायापर एहि उमेरमे दुःखक पहाड़ टूटि गेल । ओ भागि आयल अपन घरसँ, नहि जानि कहिया धरिक लेल ।

जगदीश उठल ओहिठामसँ । आ अनुनयपूर्ण आवाजसँ बाजल—''मालिक ! नै रखबै हमरा त' हम जाइत छी दोसर दूरा ।'' की बजितय रवीन्द्र ? ओकरा बुझयलैक जे ओकरो स्थिति एहि परिवारमे सामान्य रहितैक त' ओ जरूर ओहि छौंड़ाकेँ राखि लितैक । अपने संग रखितैक सब दिन, हर घड़ी । लेकिन··· लेकिन की करओ ओ । ओहो त' अपन परिवारमे निर्वासिते जकाँ अछि । तैओ ओ ओहि छौंड़ाकेँ समझयलकै—''जगदीश । तों घर चलि जो ओहीठाम कोनहुना रहिहें । की करबीहिक ? दुनियाँ एहिना चलैत रहतै ।'' ओना कह'लेल कहि देने छलैक रवीन्द्र,

मुदा ओकरो जीवनक नाह त एहने स्थितिमे छैक । ओकरो मोन कहि रहल छलैक जे भागि जाइ कतहु, एही छौंड़ा जकाँ ।

''नइं मालिक, नइं··· आब हम नइं जयबै । हमरा लेखे ओइठाम कोइ नइं छै आब । ओहिठाम नइं रहि सकबै, हमर जीवन दूभर भ' गेलै । आब हमरा सुख पूर्ण जिनगी जीअक कोनो आस नइं छै । सोचने रहिऐ, कमाक' धन-अर्जन करबैक आ सुखपूर्ण जीवन बितयबै, मुदा कुछ नइं भ' सकलै । सब आस चौपट भ' गेलै । ताहिसँ आब कुत्ता-बिलाइक जीवन जीक' की हेतैक मालिक ? एहिना कतौ कमाइत-खटाइत मरि जयबै । कोइ नामो ने जनतै हमरा सबहक । हमरा सब संसारमे एकटा तुच्छ कीड़ा छिऐ मालिक····जकर जीवनक कोनो मोल नइं होइ छै''—आ ई कहैत सर्र-स निकलि गेल जगदीश, रवीन्द्रक कोठरीसँ । रवीन्द्र मुँह तकिते रहि गेल । ओकर गेनाइ देखि रहल छल आ बुझा रहल छलैक जेना ओकर जीवनक कोनो हमसफर ओकरा अन्तरमे संसारक बहुत रास दुख-दर्द भरि चल जा रहल हो । जगदीश चल गेल···मुदा रवीन्द्रक अन्तरमे एकगोट हलचल छोड़ि गेलैक । ओकरा बुझाइछ जे ओकर जीवन सेहो नीरस भ' गेल छै आब । मोनक लालसा मोनेमे रहि गेलैक ओकरो । ओकरो बुते आब किछु ने भ' सकतै····किछु ने ।

ता बुझयलैक जे कोनो वस्तु उपरसँ निचा खसल । आ उनटिक' देखलक त' देखिते रहि गेल । ओकरा आगाँमे तड़पि रहल छलैक ओहि बगराक अधमरू काया जे किछु समय पूर्व चिचिया रहल छल । आखिर एकर जाने ल'क' छोड़लकै, सोचैछ रवीन्द्र । ओकरा ओ दृश्य नहि देखल गेलैक । ओ धम्मसँ कुर्सीपर बैसिगेल । ओकर सम्पूर्ण शरीर घामे-पसीने नहा गेल छलैक । ओकरा देहमे एक गोट अज्ञात भय सन्हिया गेलैक ··जे कहूँ ओकरो दुर्गति एहि अभागल बगरा सदृश नहि होइक । बुझाइछ ओकरा ··सत्ते·· ओकरा चारूकातसँ लुधकल लोक सब ओहिना नोचि क' खा जयतैक । आ ओ देखिते रहि जयतैक । की करतैक ? ओकरो आब अपन परिवारसँ कोनो सिनेह नहि रहलैक अछि । ओहो जगदीशे जकाँ पड़ा जायत घरसँ कतहु दूर, बहुत दूर, शान्तिक खोजमे । ओ नहि रहतैक आब अइ परिवार

मे'''समाजमे । मुदा ओ मरत नहि'' एहि बगरा जकाँ ! ओकरा जीबाक छैक । ओ परिस्थितिक संग संघर्ष करत'' दुनियाँक संग संधि करत । ओकरा जे करबाक हेतैक,से करतैक मुदा ओ मोफतमे एहि बेचारा अज्ञान बगरा जकाँ लोकके̐ नोचि-नोचिक' खाय नहि देतैक । ओकरा आँखिमे नोरक कएकटा बुन्न डबडबा अयलैक आ ओकरा बुझयलैक जे ओ नोरक बुन्न ओकरा जीवन भरि संग रहबाक विश्वास द' रहल छैक''' एक गोट पैघ विश्वास । ओ देखि रहल छल ओहि मरल बगराके̐ जे आब शांत छल''' संसारक दुःख-दर्दके̐ बिसारिक' ।



असक्क

"जय सियाराम-जय सियाराम" । थानतर रामरीझक दलानमे कीर्त्तनियाँ सभक भजन बुढ़िया कतेक देरसँ सूनि रहलि अछि । कैकबेर मोन भेलैक जे ओहो ओहि ठाम चल जाय आ भगवानक भजन सुनय, मुदा ओ अपनाके̐ असमर्थ पबैत अछि । बुढ़िया किछु दूर टघरैत अछि त̐ साँसे देह फक-फक कर' लगैत छैक । जाहिसँ ओ ओहिठाम नहि जा सकैत अछि । नहिएँ जा भेलैं त̐ की होयतैक, ओ ओहठामसँ सूनि सकै अछि—बुढ़िया आश्वस्त होइत अछि ।

बाप रे ! बुढ़ियापर टुटलाहा पटियाक दोगमे बैसल उड़ीस लुधकि जाइत छैक । ओ छिलमिला उठैत अछि । कतेक बेर लखनाके̐ ओ भगवानपट्टीस̐ दवाइ आनि छीटि देबाले' कहने छलैक........ मुदाके सुनैए ओइ-बूढ़-असक्कक बात । ककरा पलखति छैक । ओ पटियापर पड़ल-पड़ल कुहरैत अछि । ओ आब सत्ये भार भ' गेल छैक अइ अँगनापर—बुढ़िया माथ पकड़ैत अछि । भगवान बैरी भ' गेल छथि, जल्दिए उठा लितथि त̐ ई दिन देख' नहि पड़ितै । हमरा सभके̐ ई चोला छुटिए गेने आब नीक ! गाममे ओकर बतरिया एक-आध आदमी मात्र बाँचल होयत, सेहो एकरे जकाँ घिघरी कटैत अछि । नहि त̐ कतेक 'सरंग'मे चल गेल—मुदा हमर ई बज्जर शरीर ''''''—बुढ़िया एकटा भरिगर गारि अपना मुँहपर लाधि लैत अछि ।

बुढ़ियाक नजरि सीकापर टाँगल भातक बाटीपर जाइत छैक । भूख पुनः धधकि उठैत छैक । दिन भरि भूखले ओ पटियापर पटोटन देने अछि । क्यो अयबो ने कयलैक जकरा ओ सीकापरस̐ भात उतारि देबाले' कहितैक ।

ई सभ ओकर पुतहुक किरदानी छैक— बुढ़ियाक मोन जहरतीत भ' जाइत छैक । घोकचल मुँह आर घोकचि जाइत अछि । ओ उठि बैसैत अछि । ओकरा आब खाली भूखे लागल बुझाइत छैक । सीकापर टाँगल ओ पाबि नहि सकैत अछि । आ ककरो एखन धरि आँगनमे देखि नहि पौलक अछि !

बुढ़िया अकानैत अछि…… ।

किछु धमधमाइत छैक । प्रायः धनिकक खेतसँ रोपिक' सभ आबि गेलै । बुढ़िया अनुमान लगबैत अछि । आशासँ हल्ला करैत अछि— घहबा छे रे, घहबा !!

बुढ़ियाक क्षीण स्वर आँगनमे चकभाउर मारि पुनः बुढ़िया लग घूमि जाइत छैक । बुढ़िया पुनः एकबेर हल्ला करैत अछि । मुदा क्यो उत्तर नहि दैत छैक । बुढ़िया पुनः एकबेर पिड़ायल मोनसँ पटियापर ओलरि जाइत अछि ।

एह, बाप रे ! एखन तक नहि अयलै ई सभ ! की करैत होयतैक एखनि तक । कोह तँ कोनो कम दूर नहि छैक जे घर-दुआर छोड़ि एतेक निश्चितसँ बैसल जाय……। अबिते-अबिते……बुढ़िया एहिसँ आगाँ किछु नहि सोचि सकैत अछि । ओकर मोन सीकापर टाँगल बाटीक चारूकात नाच' लगैत छैक । आब आे सहाज नहिक' सकत……। भूखे अँतरी ऐंठने जा रहल छैक, की करौ— बुढ़िया गुनधुनमे पड़ि जाइत अछि ।

बुढ़िया एकबेर चेहा उठैत अछि । एह, काल्हिए तँ गामक बजार छलैक । देखने छलिऐक खेलौना माइकेँ अल्हुआ किनने । राति भेलैक आ आरो तँ राखले होयतैक । बुढ़ियाक मुँह हरियर भ' उठैत छैक । जरूर होयतैक—उसनल । मुदा होयतैक कत्त' ?—बुढ़िया विधुआ जाइत अछि । ओ कोन-कोन घरमे खोजने घुरौक । एक तँ ओ चलि नहि सकैत अछि, दोसर घर सभ बन्दोक'क' गेल छैक । बुढ़िया पुनः मोन मारिक' पड़' चाहैत अछि ।

भूख सूत' नहि दैत छैक । ओ उठैत अछि । कोठीक गोरातर हथोड़िया दैत अछि । उहूँ……कहाँ छैक । बुढ़िया गुरकैत-गुरकैत कैकटा गोरा हथोड़ि लैत अछि ।

……"यैह तँ छैक" बुढ़िया खुशीसँ बेहाल भ' जाइत अछि । छोटका भौकीमे राखल अल्हुआ बुढ़ियाकेँ अमृतफल बुझाइत छैक । हब्बर-हब्बर अधखरुए सोहि मसकूरसँ पीस' लगैत अछि । ओहुना गुलगुलाक' घोंटि जाइत अछि । भौकी सुन्न भ' जाइत छैक । गुरकैत-गुरकैत बुढ़िया अपन पटियापर आबि जाइत अछि । आब मोन कनेक हल्लुक सन बुझाइत छैक ।

बुढ़िया पटियापर ओलर' चाहैत अछि कि बुझाइत छैक जेना कंठ कुच-कुचाइ । हुक्काक अमल लग' छैक । नजरि खिरबैत अछि । कनिए दूर हटिक' हुक्का आ चिलम राखल छैक । आ पीनी……? बुढ़िया पुनः सोचमे पड़ि जाइत अछि । कत' खोजौक ? हँ ''बखरिया कोठीके गोरातर तामामे ओ पीनी देखने छल भोरे !…… कहूँ पीने लेने होइक ! ओ गुरकैत अछि । गोरातर अभ्यस्त हाथ दौड़ैत छैक । तामा भेटि जाइत छैक । पीनी तँ छैहे……बुढ़िया पीनी गोलिआक' चीलममे राखि लैत अछि । पुनः ससरैत ओसारापर अबैत अछि । चुल्हि कतौ पझा ने गेल होइक । ……बुढ़िया चिलममे लागल चुट्टासँ आगि कोड़ैत अछि । एह ! आगि तँ बुझाइत छैक । दू चारिटा जीबैत गोइठाक आगि चिलममे रखैत अछि । पुनः गुरकि बिछाओनपर चल अबैत अछि । बुढ़िया एकबेर हुक्काकेँ फूकि पानि कनेक बहार क' दैत छैक आ गुरगुराब' लगैत अछि ।

हुक्का पीबैत काल बुढ़ियाक नजरि बखरिया कोठीपर कयबेर चल जाइत छैक । पचास-साठि मनसँ उपरेबला छैक ई कोठी''। बुढ़िया अपना जुआनीमे एकरा बनौने रहय । बड़ कष्टसँ धन अरजने रहय बुढ़िया । गामक सभसँ नम्हर धनिकने ओकर नाम रहैक । बुढ़िया अपन अतीतमे भसिआ जाइत अछि । कैकटा बखारी छलैक ओकरा दूरापर । जन-बनिहार, नोकर-चाकर । दरबज्जा भरल रहैक । ई बखारी आ कोठी पुरना चाउरसँ उमटाम भेल करैक । कतेक-कतेक सालक पुरान । मुदा जहियासँ एकर पुतहु घरमे अयलैक, सभ बिलाय लगलैक । खेत-पथार सभ बिकाय लगलैक । बड़का अगिलग्गीमे थानतरक बखारी सभ जड़िक' छाउर भ' गेलैक । आ ओ सब दरिद्र भ' गेल । आब बोनियोंपर आफत होइत छैक ।

एहि बखरिया कोठीमे भुस्सो नहि भरि सकैत अछि ओ''। बुढ़ियाकेँ बकौर लागि जाइत छैक । आँखिमे नोर डबडबा अबैत छैक । साड़ीक आँचरसँ नोर पोछैत अछि । आ हुक्कापरसँ चिलम उतारि कनेक हटिक' अधजरुआ झाड़ि दैत छैक । हुक्काकेँ चिलमपर राखि पटियापर ओंघरा जाइत अछि ।

'की भेलैक, एखन तक ककरो सबद नहि पबैत छी'—बुढ़िया अकानैत अछि । धीयापूता सभ कतहु बौआइत होयतैक—अपने सभ निफिक्किर भेल छै । केनाक' भगवान एकरा सभकेँ पारघाट लगओतैक, कहि नहि……।

बुढ़िया पटियातरमे राखल गुदरी-चेथरीक सिरमाकेँ कनेक आर अलगा लैत अछि । ओ आब पड़' चाहैत अछि । क्यो अबौक कि नहि अबौक । ओ तँ आइ पुतहुक राखल अल्हुआ जीवटक'क' खा लेलक अछि । "भरिसक ओकरे लय रखने छलैक होइक । बुढ़िया सोचैत अछि । ओहो तँ एकरा नहि खयने रहै । धुर ! कतेक मनकेँ छिछिऔलक ओ—सत्ते ओकरे ले' राखल छलैक होइक—बुढ़िया आब निश्चिन्त भ' सुतबा लेल मोन मारैत अछि ।

"जै सियाराम-जै जै सियाराम"—थानतरक छौंड़ा सभ एखनो टेरने अछि । बुढ़ियाक आँखि रामधूनि सुनैत कखन लागि जाइत छैक, ओ नहि जनैत अछि ।

जनैत अछि तखन जखन क्यो ओकरा झकझोरिक' जगबैत छैक—"ऐ ! अहाँकेँ भरि दिन खधम्मरि धयने रहैत अछि । ओतेक नीक-बेजाय भरि दिन खाइत छी तैयो ने सन्तोष होइए । देखू, ! ओनाक' लटुआले' । अल्हुआ बचाक' रखने छलिऐक से कोनाक' खा गेली । इह, ! असन्तोषी नहितन !" लखनाक मतारी आर कतेक रास बात ओकरा कहैत छै । ओ गबदी लधने रहैए । की छै सक्क जे ओ बाजओ किछु ! अभ्यस्त जकाँ चुपचाप सुनैत अछि आ करौट फेरि जी-जान जाँति गबदिया दैत अछि ।

□

माटिक दरद

खट्टर मड़र डंटाकेँ जोरसँ तानि दहिना पयरसँ करीनकेँ जँतैत अछि । करीन पानिमे गोँता जाइत छैक । आ ओहिमे हहाक' पानि भरि जाइत छैक । तखन ओ डंटाकेँ बाम हाथसँ पकड़ि दहिन हाथसँ करीनक लोलकेँ पकड़ि ऊपर ठेलि दैछ । पानि हरहराक' आगाँमे बनल पैनमे खसि पड़ैत छैक आ भरल मुँह पानि खेत दिस ससरि जाइछ । ओ पुनः दहिना दिस एकबेर गहीँरगर आँखिसँ तकैत अछि । एह, एखन धरि सुगिया नहि आयलि अछि । दसक अमल होयतै—खट्टर अन्दाजैत अछि । आबि जयबाक चाही । रातिएसँ एत' मरल जा रहल छी, मुदा ···। माथपर आयल बहुत रास घामकेँ आङुरसँ पोछि नदीक किन्हेरमे चल जाइत अछि । माथपर बान्हल चरखानाक गमछाकेँ खोलि पंखा जकाँ घुमब' लगैत अछि । कनेक हवा अबैत छैक—'ह-ह-ह' । ओ कनेक आश्वस्त होइत अछि ।

आब ओकरा घरक चिन्ता होब' लगैत छैक । एहि ठाम तँ सभक जलखै आबि गेलै मुदा ओकर किएक नहि अयलै । ओ त' सभ व्यवस्थाक'क' आयल छल । खट्टरक मोन कनेक कालक हेतु शंकामे पड़ि जाइछ । फाँड़सँ चून-तमाकुल निकालि रगड़' लगैत अछि । ओ किए एहि झरकौआ रौदमे एत' मरैत ? नदीमे बान्ह पहिने बन्हा गेल रहितै तँ सोझे खेतमे पानि एखन खसैत रहितै । मुदा हमरा गामक लोककेँ तँ अन्तमे बुद्धि फुराइ छै । ओकर टटायल ठोरपर कनेक कालक हेतु हँसी दौड़ि जाइछ । ईहो बान्ह सभ तँ कोना ने कोना बन्हायल । बेचारा जनक सहनी, जकरा मुश्किलसँ चारि-पाँच कट्टा जमीन छै पट'बला, से भरिदिन बेतौना बन्हने रहैत अछि एहि ले' । तीन सयबला बान्ह होइक वा मझकोठिया वा नहरिसँ पैनि खुनयबाक होइक, ओ सभसँ गारि सुनैत खुशामद करैत रहैत अछि । अढाइ-तीन सय बिघा जमीन पट'बला ले' ओ चरिकठिया अनेरे बेहाल रहैत अछि—एकटा बड़का छिट्टा लेने, पत्ती असुलैत । ओकरा ओहि मरदेपर हँसी लगैत छैक । ओकरो ताजबरदस्ती बान्हपर ओहि दिन लैये गेलै ।

बान्हे-पैन की करतै। इन्नरे भगवान रीझत तँ दू धार पानि....नहि तँ.. । आ ताहूमे जुलुम होइ छै। बाँकी देब' जाउ तँ पानि-पोत चाहबे करी। चाहे खेत पटौ वा नहि। ओकरा श्रेस्तासँ मतलब। गिरहत जनकपुर दोगैत-दोगैत तंग भ' गेल। ई हरदीनाथ हमरा सभक हेतु कोनो लाभकारी नहि। बरू एखन एकरा रहने पटौ—पानि-पोत दीही पड़ैत छैक। के सूनत ?

खट्टरक नजरि पुनः एकबेर दक्षिण दिस उठैत छैक। दुखरन ककाक पोखरि धरि नजरि गोट-गोटक' समाङके तलाशैत छैक। मुदा सुन्न देखि मुँह विचका हाथपर राखल खैनीके झाड़ि चुटकीसँ ठोरक गहमे राखि लैत अछि।

भूख बड़ जोर लागल छैक। कैक दिनसँ नीक जकाँ खाइयो ने सकल अछि ओ। अरुचि जकाँ भ' गेल छै ओकरा। ओना आन साल समयपर बरखा भ' जाइत छलैक। लोक धान कमैनी करैत छल, रबी-राइ छिटैत छल। मोनसँ काज करैत छल, मोनसँ खाइत छल। अरूचि भेलापर चचरी कोयना खेतमे लगा किछु ने किछु माछ मारि लैत छल। आ ओहि संगे तँ रोटी खाइते बनैत छलै। मड़ुआके रोटी, पोठी मछरिया। मुदा एहि बेर सभ 'लक्षत्र' जेना बाँझ भ' गेलै। एक्को बुन्न पानि नहि पड़लै। धान जरैत छैक। गरै-गरचुन्नीक बाते कोन, डेढ़बा-पोठी के देखब दुर्लभ भ' गेलै। बजारमे तँ युग उनटै छै। छोटकी माछ आठ रुपैए सेर। के खाय ?

ओकरा बुझयलै जे आब ओ पुनः नहि उठि सकत। चानी फोड़ने जाइत रौद आ पेटमे अन्नक लसेरो नहि। ओ खसि पड़त आब। खट्टर सोचैत अछि। एखन ओ गिरहतमे रहैत तँ कीमँ की बाजि गेल रहैत। टैमपर जलखै नै भेटतै तँ हमसभ की काम करबै। हमसभ आदमी छी कि बड़द। एहिना होइ छै जनक कमयनाइ। पिरायल मोने गिरहतके फज्झति करितै—मुदा .... ।

खट्टर हाथक गमछाके ओहि नवगछुलीक छाहरिमे बिछा ओतहि ओलरि जाइत अछि। मुदा ओ सुतैत नहि अछि। ओकरा मगजमे बहुत रास बात अपने मने आब' लगैत छैक। पचास-पचपनक उमेर छै ओकरा। बहुत किछु रंग-हवा ओ देखलक अछि आइ धरि। सातम सालक रौदी, एगारहम सालक रौदी। सभ

ओ भोगने अछि, मुदा ओ ओकरा एतेक नहि मोन दुखयलकै। ओकरा बुझाइ छै जेना आजुक समयमे बरक्कति नहि छैक। कतबो कमाइत अछि, पेट नहि भरैत छैक। पाँच कट्ठा खेतमे धीयो-पूताके नहि पालि पबैत अछि ओ मेहनते कयने की होइत छै।

उपजो तँ कोनो खास नै होइ छै—खटटर गुनैत अछि। एतेकटाक परिवार आ कम उपजा, खयनाइयो ने पुरैत छैक। बीच-बीचमे ओ जनोमे चल जाइत अछि, सेहो सभ गोटे चाटि जाइत अछि। पुरान करजा ओ एखन धरि चुका नहि सकल अछि। फेर, ओहि दिन मनमोहनबाली मालिकसँ एक मन धान भाड़ि आन' कहने छलीह। अनठा देल। कतेक तीरौ वर्खसवाइ। एहिना किछु दिन खेपि लेत। फेर देखल जयतै। छठि एखन आबिए रहल छै—ओहिमे नहि लेने कोनो परकार नहि—खट्टर माथ डोलबैत अछि। मुदा चोट्टे ओकरा बुझाइ छै जेना एकटा मेंही लोलबला सूइ अँतरीमे क्यो भोंकि देलकैक, एकर पीड़ा सौंसे पेटके उनटौने जाइत होइक। ओ पेटके दबा पेटकुनियाँ दैत अछि। कनेक कालक बाद ओकरा ठीक बुझाइत छैक। ओ खूब नीक जकाँ जनैत अछि, ई भुक्खे भेलैक अछि। मुदा आब ओकरा गाम दिस तकबाक साहस नहि होइत छैक। ओ आब कनेक आँखि मून' चाहैत अछि।

कतेक नेंहोरा-मिनतीक'क' गूजन झासँ ओ ई करीन मंगलक अछि। ताहूमे गोरा-छीप, डंटा, लतमारा सभ जोड़बामे आँचर-पाँजर ढील भ' गेलै। सभ तँ आनेसँ माँग' पड़ैत छैक। किछु दिन ढोससँ उपछलक। मुदा ओहिसँ की होउ। पानिक कोन ठेकान। इएह नदी आइ भरल छैक, काल्हि सुखा जयतै। पचासो करीन ठेकायल अछि आ से रातिएसँ। ओहो भिनसरबेमे आयल। ओकरा विश्वास छै जे ओ एको घड़ी आइ आरो चला लेत तँ ओकर खेत पटिए जेतै। तखन किछु आशा छलै।

जनोमे आइ नहि गेल ओ एहि पटौनीक चलते। मालिक पितायले होयतै। मुदा तै सँ की ओ अपन काज छोड़ि देअओ ? खट्टरक मुँह जेना बिचकि जाइत छैक। भरि साल तँ ओ कमाइते रहैत अछि अनकेमे। किछुओ दिन तँ अपन खेतमे

खटओ। आइ-काल्हि गिरहत सभक कोन ठेकान। कनेको 'डिपाइट' भेल कि पुछवो नै करैत छैक। तखन इएह खेत ने जे एको साँझ पेट भरैत अछि। खेत ओकर जीवन छै—माय-बाप छै। एतेक दिन जँ खेपि लेलक तँ आवहु कोहुनाक' खेपिए लेत की। बिसवास रहल ताकै !

ठीके बिसवास बड़ भारी 'बौस' छै। भूमीसुधार अयलैक तँ लोक बाप-बापक' धनीकक खेत मोहियानी लिखा लेलक। कतेक ठाम तँ बटैया नहियो रहने लिखा देलकै। ओकरो खेत ला लोकसभ की कम तंग-पीठ देने रहैक— हाय लरायण लिखाइए ले। मुदा ओ टससँ मस नहि भेल। मालिकपर बिसबास रखने रहल। अनन चारिये-पाँच कट्टा ठीक छैक। अनकापर कोन लोभ ? लोक लड़ल, अखरपना कयलक आ ओ निचैनसँ खेत जोतैत रहल। लोक सभ बरू ओकरा बुड़िबके कहो। से बुड़िबको बनि ओ चारिटा धीया-पूताकेँ गुजर-गुजरान चलबैत त' अयलै आइ धरि। आ ओही ठाम जीबछ कापड़केँ की हाल भेलै से गौंआ नहि देखलकै ? धनिकसँ अखरपना करैत घर-घराड़ी सभ बिला गेलै। धनिककेँ की भेलै। बिलटि गेल बिचारे गरीब।

'बिलटब' शब्द खट्टरक देह घुरघुरा दैत छैक। एह, ओहो आइ लोकक बात कयने रहैत तँ नहि जानि आइ केहन हालतमे रहैत। धीया-पूता बिलटि जैतैक। एतेकमे तँ ई हाल। सभ भगवानक लीला छै।

खट्टरकेँ भगवान मोन पड़िते आँखिक आगाँ जुआन बेटी सुगिआक निश्छल, कचाह, निर्दोष अनुहार नाचि उठैत छैक। साँचे, कखनो-काल भगवानो हृदक' दैत छथि। कतेक मेहनतसँ बियाह कयलक बेटीकेँ। मुदा भगवानकेँ ओकर सुख मंजूर नहि छलै। बड़ धराहक घरमे बियाहि देलक बेटीकेँ। पौस मङने रहै, मड़बापर। गरजे मानि लेने रहैक। सामर्थ्यहीन। परुकाँ एहि बात ल' क' खटपट भ' गेलै आ आइ ओकरा बेटीकेँ छोड़ देने छै। कोनाक' ओ अपने मने पहुँचा अबौक। गरीब भेल तँ ओ इज्जतियो गमा लेलक। नहि, एतेक भार छैहे, एकटा आर !

आब खट्टर आर सोचि नहि सकत। भूखे पेटमे पुन: मरोड़ देब' लगैत

छैक। नहि जानि की भ' गेलै। इसर, लखना, महन्था सभ तँ घरेमे मरैत होतै। अपने हूरि लेने होत आ हम एत' छटपटा रहल छी !'—खट्टर तँ दगधल मोने बेटाकेँ बात-कहिनी कहै छै।

नहि जानि, कखन ओकरा आँखि लागि गेलै। जखन ''बाउ हौ, बाउ !''क आवाज ओ सुनलक तँ धड़फराक' उठल। मोन भेलै, गीड़ि जाइ उठब'बलाकेँ, मुदा आगाँमे सुगियाकेँ देखि मोन मारि लैत अछि। सुगिया बाम हाथसँ पकड़ल रोटी खट्टरकेँ पकड़ा दहिन हाथक लोटा आगाँमे राखि दैत छैक। आ चुपचाप एक कातमे बैसि रहैत अछि। खट्टर नमहर-नमहर रोटीक खण्ड तोड़ि नोनक संग अविचलित गिड़ने जाइत अछि।



मनःस्थितिक दंश

निसबद्ध रातिमे क्यो फटक हड़बड़बै छैक। बहुरियाक कचाह निन्न टुटि जाइत छैक। एखने कनेक काल पूर्व तँ ओ सूति सकल छल। अयना छौ माससँ ऊपर भेल होयतैक, मुदा घरबला एखन धरि नीक जकाँ दू-चारियो राति सूति नै सकल छै। कहांदन सिकरेटीमे कमाइत छैक। से डिपटी के कोनो ठेकान नै। रातियो-बिराति होइत छैक। आइ-काल्हि त' सुकुर छैक—शनिक' घरेपर रहैत देखल करैत आयल छै। से काल्हि ओ जरूरे रहतैक। तखन कल्हुका राति··· ! एहने सन कल्पनाक संग ओ गुनधुन करैत रहलीह। आ किछुए काल पूर्व सूतल छलीह कि फटक खड़खड़ाइत छैक।

ओ चौंकि उठैत अछि। की आइ सिकरेटी नै गेलै ? बहुरिया बिचारैछ—नै, मायकें त' कैक बेर कहने रहैक जे 'खायक बान्हि दे, जनकपुरेमे हम खायब। तखन जरूर गेल होतै।

बहुरियाक सौंसे देह घमा जाइत छैक। कातिक-अगहनक जड़ाओन मासमे बहुरिया जेठ-बैसाखक अनुभव करैत अछि। ओकरा किछु नै फुराइत छै—"ई के हय ?"

'दूत, ओहे होतै।' बहुरियाकें जेना मोन पड़ैत छैक। 'आइ सुक्कर हइ किने। आ सुक्कर के सिकरेटी अदहे होइत छै। आ कैकटा संगी-साथी रहै हइ आब'बला, से चलि आयल होतै।'—बहुरियाक सौंसे देह गुदगुदा जाइत छैक।

मुदा पुनः बहुरियाक मोन गुनधुन कर' लगैत छैक। 'एतेक रातिक' त' कोनो सुक्कर के नहि आयल हइ—आइए कैला अयतै ! दिन कराक' लयला छौ माससँ ऊपर भेल होतै, मुदा घरबला संग निचैनसँ सुतबाक इच्छा मोनेमे रहि गेल छै। देखैत अछि एम्हर, तँ टरि जाइत अछि ओम्हर। दुत्, एहन कमजोर लोक एतेक रातिक' नहि आबि सकैत हइ। तखनी ?'

बहुरिया सर्द भ' जाइत छैक। फटक आब खूजि चुकल छैक। अन्हरिया रातिमे एकटा आकृति मात्र मुहारपर देखैत अछि। फटक पुनः बन्द भ' जाइत छैक। आकृति चिन्हब ओकरा हेतु असंभव छै। घरोबला तँ एहिना चोराक' अबैत छैक। अपने फटक खोलैत छैक आ चुप्पे राति बिता अन्हरोखे घुरि जाइत छैक। माय-बापक लाजे ओ सोझसँ सुतियो ने सकैत अछि।

घरो पूरा अन्हार छैक। डिबियो नहि जानि कखन मिझा गेलै। ओ त' बारिक' सूतल छल। तेले घटि गेल होतै। बहुरियाकें ई अन्हार आर डेरा दैत छै। लया-लया आयलि हइ। घरोबलाकें ठीकसँ ठेकानि नै सकल छै। फेर की करओ ?

किछु नै फुराइ छै ओकरा। आकृति ओकरा हथोरैत-हथोरैत लगमे आबि जाइत छै। बहुरियाक छाती भाथी जकाँ हौंकाय लगैत छै। आकृतिकें ओ नीक जकाँ ठेकानैत अछि—ई निश्चय ओकर घरबला नहि छै। ओकर त' एहिसँ पातर काया छै। ई त' कनेक खरगर आ मोटो बुझाइत अछि।

कहुँ ! नै-नै, ई कोना भ' सकै छै। ऊ नै हइ। छीः। की-की सोचि लेलक ऊ। मुदा जे होय, आन मरदाबा त' जरूरे हइ। बाप रे, आइ ओकर धरम भरस्ट हो रहल छै, आ ऊ चुप हइ ! नै, हल्ला कर' पड़तै। सोर कयने आइ सत्त चल जायत। बहुरियाक छाती भाथी जकाँ उपर-नीचा करैत छैक।

ओकरा मोन करै छै जे ओ आब चिचिया उठय—'दौग' हो, घरमे कोइ पैसल हय !' मुदा आबाज जेना गरदनिमे फँसिक' रहि जाइत छैक।

ओहि आकृतिक हाथ ओकरा देहसँ भीड़ैत छैक। ओ सिहरि जाइत अछि। ओ चिचिया नै सकल त' अनठाक' सूति रहब नीक बुझैत अछि। जे होतै, देखल जयतै।

पटियापर आकृति बैसि जाइत छैक। ओकर दहिन हाथ देहकें हिलबैत छैक—कतहु जागल त' नहि अछि ! मुदा बहुरिया आर अन्ठा दैत अछि—मरल मुर्दा जकाँ।

बाम हाथ ओकरा गालपर ससरैत छैक आ दहिन हाथ पयर दिसि बढ़ैत छैक।

बहुरियाक अन्तर फेर एकबेर हाहाकारक' उठैत छैक—नै-नै, ई अधरम छै । परपुरुख संगे सुतब बड़का पाप छै । माय एकबेर बाजल रहै । ओ नै कर' देतै किछु । आब चिकरही पड़तैक— के हय ? भाग एत'सँ, । मुदा पुनः काँट जेना गरदनिएमे अटकि जाइत छै ।

आकृति ओकर सम्पूर्ण शरीरकेँ हँसोथैत छैक । आ, आ देह उघारि दैत छैक । ओकर भय आब सनसनाहटिमे बदलि जाइत छैक । सौँसे देहमे एकटा सुरसुरी घुरघुराय लागल छैक ।

बेनगन शरीरपर आकृतिक हाथकेँ चलब ओकरा बड़ नीक लाग' लगैत छैक । दू-तीनबेर घरोबला ओकरा संगे सुतल छैक । अबै छै, बगलमे सूति रहैत छै । ओ मलियामे राखल तेल ल' क' सौंदे देह ससारि देल करैत छै आ तखन ओ गाय-महीस जकाँ····!

अइ मरदाबाक हथोरिया बड़ नीक लगैत छै । ओकरा इच्छा होइत छै, ई मरदाबा एहिना करैत रहितै त' नीक ! मुदा से मुँहझौसा बेसीकाल नै करै छै । ओ फानिक' देहपर चढ़ि जाइत छै । ओ शांत पड़ल रहैत अछि ! मुँहसँ एकोटा शब्द बहरायब ओकरा जागले हेबाक संकेत हेतैक, तेँ ओ आर अनठाक' पड़ल रहैत अछि, निढाल भ' जाइत अछि ।

"हे बहुरिया ! बहुरिया !"—बाहरसँ क्यो सोर पाड़ैत छैक । बहुरिया घबराक' उठैत अछि । बात ठेकनबैत अछि । ई सासुक आबाज छैक । नजरि फटकपर चलि जाइत छैक । फटकक दोग द' क' किरिनक इजोत घरमे पैसि रहल छै । मने दिन उठि गेल छैक ।

'दिनमे कहुँ···! —एकटा अज्ञात भयस बहुरियाक देह एकबेर आर सिहरि गेलै । तथापि ओ उठैत अछि—इस्स ···! देह टुटल जाइत छै ।

ओ फाटक खोलैत अछि ।—"एह, एखन धरि सुतले रहतै । घर-दुआर बहार' के बेर टरल जाइत छैक । ओहो छौंड़ा आब अबिते होतै । जलखइ बनाब'के छै । जा, जल्दी कर !"—सासुक अढ़ाओन ओ मोनभरि सुनि लैत अछि । आ बाड़ीमे जाइत अछि तथा बाढ़नि ल' आँगन बहार' लगैत अछि ।

बहारैत काल ओ आंगनमे सभक मुँह तकबाक चेष्टा करैत अछि । क्यो किछु बूझि त' ने सकल अछि ! मनचोर जी उड़ौने छैक । छोटका देओर, ननदि, माइ दाइ सभ अपनेमे बेहाल देखि पड़ैत छैक । ओ कनेक आस्वस्त होइत अछि । बुझाइत छै क्यो ने बुझि सकल अछि ।

ता ओकर नजरि ससुरपर पड़ैत छैक । सौंसे देह जेना सिहरि जाइ छै । रतुका मनसाक चित्र दिमागमे नाचि जाइ छै—नम्हरका काया, भरल देह । कहुँ ! नै नै, फेर ओ की सोच' चाहैत अछि । एना कतहु होइक ! टोल के कोनो मुँहझौंसा छल होतै । ओ आब ककरो दिस तकबाक साहस नै क' पबैत अछि । हाथमे बाढ़नि पकड़ने हबर-हबर आँगनमे चलब' लगैत छैक ।

थरिया-बासन छोटकी ननदि माँजि अनने छैक । ओ आँच पजारैत अछि । गहुँमक चिक्कसकेँ सानि रोटी बनबैत अछि । बाहर बाबूक आबाज ओ सुनैत अछि—जो जलखइ क' ले ग', तैयार छौ !

ओकर करेज जेना धकसँ रहि जाइत छैक । मने ओ आबि गेलै ! केनाक' ओ ओकरा आगाँ जायत ? कहुँ ऊ बूझि ने लै ! नै, हम बड़ अधरम कयलिऐ, एना नै करक चाही । साँचे हम········!

आंगनमे घरबलाकेँ आयल देखि ओ उठैत अछि । आ पूब मुँहक घरक ओसारापर पीढ़ी राखि दैत छैक । घैलसँ पानि ढ़ारि लोटा हाथमे पकड़ा दैत छैक आ छीपामे नून, मिरचाइ, तेल, पिआउज राखि रोटी आँगनमे ध' दैत छैक । थारी आगाँमे राखि कातमे ठाढ़ भ' अपन थाकल घरबलाकेँ निहार' लगैत अछि । सिकरेटीमे कमाइत-कमाइत हड्डी निकलि गेल छैक । बच्चेसँ घर-दुआर के चिन्तामे बेहाल रहल करैत अछि । बाप एहन नोकरी करै छै जे रने-बने बौआयल करैत छै । आ ई··· जुआनेमे बूढ़ भेल जाइत छै । बुझाइ छै जेना देहमे दमे ने होइ । आ ओकरा राति मोन पड़ैत छै । ओ पुनः चौंकि जाइत अछि । ओ कहुँ··· ! नै, नै बुझतै । एकबेर बहिन कहने रहै— जनानी के ई सब भेलो पर नै बुझाइ छै ! ओ आस्वस्त होइत घरबलाक खायल थारी उठा बाड़ीमे माँज' चल जाइत अछि ।

दिन भरि काज करैत बहुरियाक मोन थिर नहि भ' पबैत छैक। कहू बुझि गेलै त' की कहतै लोक !

ससुर बाहर कमाइत छैक। साले-बरीसे अबैत छैक। कतेक इच्छासँ अपन बेटा के बिआह कयने रहै। बाजल रहै—कुलके राख'बाली पुतहु अछि हमर। से जँ ई बुझि गेलै तँ ओ की सोचत ? केहन बिगड़ल आदमी के ल' अनली। नँ, हम विष खाक' मरि जयबै लेकिन बुझ' नै देबै। बहुरिया कोन्टामे ठाढ़ि भेल इएह सभ सोचल करैत अछि आ सोचि-सोचि अहुरिया काटल करैत अछि।

आइ शनि हइ, रहबे करतै। कहूँ सुत'काल बुझि ने लै ! बापरे ! फेर ओकर देह सिहरि उठैत छैक।

"फेर जेबही आइयो कइला ?" माइक प्रश्नक उत्तरमे ओकर आबाज ओ सुनैत अछि—"ओ॰ टी॰ छइ।"

ओ नै बुझैत अछि जे ओ॰ टी॰ माने की होइत छैक। मुदा ओ जयतैक से निश्चय भ' जाइत छैक। ओ कनेक निश्चित भ' जाइत अछि—आइ राति त' टरल।

आइ सबेरे खा-पीबिक' सूति रह' चाहैत अछि। देह टूटि रहल छैक। से दीओ जानिक' नहि बारैत अछि। टूटल देहक पीड़ासँ निन्न लगले आबि जाइत छैक। मुदा रातुक कोनो पहरमे ओ फेर ककरो देहक भार महसूस करैत अछि। मुदा आइ ओकरा आँखियो खोलबाक मोन नै होइत छैक। एकटा नव ढंगक आनन्दक संग दर्दकेँ पीबि निश्चेष्ट पड़ल रहैत अछि।

क्रम एहने सन चल' लगलैक। प्रत्येक राति पतिक नहियों रहलापर पतिक संसर्गक सुख भोग' लागल। कृशकाय कायाक आगाँ भरल देहक सुखानुभूति ओकरा लेल चरमसुखक आधार भ' गेलैक।

ओ आइ धरि ई नहि बूझि सकल अछि जे के ओकरा संगे ओना करैत आबि रहलैक अछि। कहियोकाल उत्सुकतासँ आकृतिकेँ देखबाक मोन करैक जे के अछि आखिर ! मुदा चोट्टे सम्हरि जाय। जँ शंका ठीके भेलैक तँ ? तखन कोनाक' की करत। आइ धरि पबैत आयल स्वर्गानुभूति आत्मग्लानिमे बदलि जयतैक। ओकर तिरपित मोन आर बौआ जयतैक। नँ, ओ किएक देखत ककरो मुँह ! आ तेँ बहुरिया डिबिया मिझा अन्हार घरमे जानिक' आँखि मूनि पड़ल रहैत अछि।

एकदिन भोरेसँ सासुक कननाइ ओ सुनैत अछि। फटक खोलि ओ आँगन बहारैत काल सासुक कानबपर अचरजमे डुबल जाइत अछि। जुआन बेटा-पुतहुकेँ आगाँ एना कानब ! की अर्थ भ' सकैछ ? ओकरा ने चुप करबाक साहस होइत छैक आ ने पुछबाक। ओ आंगन बहार' लगैत अछि। सासुबला घरसँ पितायल ससुरकेँ निकलैत ओ देखने रहैक, से सासुकेँ ससुरे मारने हेतैक, ई बात बुझबामे भाङठ नहि रहलैक। मुदा किए मारलकै से कोना पुछौ ! ककरासँ पुछौ !

दिन भरि सबकेँ सभसँ तनातनी रहैक। खयनाइ-पिनाइ बन्न। ओ कय बेर सासु के खाय लेल कह' गेल रहै मुदा ओ एकरा दिस गुम्हरिक' ताकि हाथ झटकि देने रहैक। तखन सँ ओकरा जाय के साहस नै भेल रहै। दिनभरि ओहो भुखले रहल। घरबला ओहिना सिकरेटी चल गेलै—खालिए। बात बुझ'मे एखन तक नहि आयल रहै।

साँझखन बाहर-भीतरमँ अबैतकाल सरंचिया काकीक ठाट लग अबैत-अबैत ओ ठमकि जाइत अछि। अन्हार छै—से क्यो देखि नहि पबैत छैक। भीतर आंगनमे दू-तीनटा मौगी ओकरे ससुरक नाम ध'क' किछु बाजि रहल छलै। ओ कान टाटसँ अड़ा दैत छैक।

"किसनमा हाकिम भेल ग' त' गाम विनायत ! छी-छी।"—सरंचिया काकीक स्वर बहुरिया स्पष्ट चिन्हैत छैक।

"से की भेलै काकी ?"—कोनो जुआन मौगी टोकैत छैक।

"देखलही नहि, चिकनाबाली के देह फोरने छै ! की, ओ कोनो साँइ-बहु के झगड़ा हइ ?"—सरंचिया बुढ़िआक रहस्यमय स्वर अभरै छै।

"तखन ?"—जुआनि स्वरक उत्सुकता स्पष्ट अछि।

बहुरिया कनेक आर टाट लग ससरि जाइत अछि। ओकर सौंसे देह जेना घुरघुरा रहल छैक—नहि जानि की बजतैक !

"हमरा त' चिकनाबाली कय दिनस' कहैत अछि जे मरदावा भकठि गेल बुझाइ छै। इज्जत-प्रतिष्ठा के कोनो खेयाल नहि हइ !'—सरंचियाक स्वर।

"से की माने ?"—कोनो दोसर आतुर स्वर।

"रातिमे उठिक' ओ कय दिनसँ कतहु चल जाइत छैक। एकबेर पुछबो कयलकै से चुप्पे छल। मुदा आइ राति त' अपन दीठसँ देखि लेलकै !"—रहस्यसँ परदा उठबैत बजैत अछि सरंचिया।

"की देखलकै काकी ?"—उत्सुकता आ रोमांचसँ भरल स्वर बहुरियाक कानसँ टकराइत छै।

"आइ राति बिछाओनपर जखन नै देखलकै किसुनमा के त' चिकनाबाली केबाड़ अलगा आंगनमे आब' चाहलक, कि ओ किसुनमा के चोर जकाँ बहुरियाक घरसँ बहराइत देखि लेलकै। से नै रहल गेलै—पूछि देलकै। ताहीपर देह धुनि देलकै बेचारी के ! ह', एहन चंठ लोक नै देखने छल। जुग उनटि गेल। बेटाकेँ कमाइत-कमाइत हड्डी खिआ गेलै आ ओकर बहु ल' क' बाप मौज करै छै ! हे भगवान !"—सरंचियाक स्वरक संग आन मौगी सभक आश्चर्यमिश्रित चीत्कार बहुरिया सुनैत अछि।

से सुनि टाट लागल बहुरिया एकबेर त' ओतहि खस' चाहैत अछि। आकि टाटकेँ आर मजबूतीसँ पकड़ि लैत अछि।

मने आइ धरि ओकरा घरमे आब'बला ओकर ससुरे छलै ! ओकर अनुमान गलत नै रहै। आ बहुरियाक आगाँ रातुक चित्र नाचि उठै छै।

आकृति अपन मुँह बहुरियाक मुँहपर राखि देने रहै। अन्ठाक' पड़लि बहुरियाकेँ भभाक' महकल रहैक दारू। दाढ़ीक खुट्टी सौंसे मुँहमे सुइया जकाँ गड़ल रहैक आ से सहाजक' सुतलि रहि गेल रहय। मुदा दिमागमे एकटा बात फेर मड़राय लागल रहै—दिनमे ओ अपन ससुरकेँ माछक संग दारू पिबैत देखने रहैक आ देखने रहैक खुटिआयल दाढ़ी सेहो। मुदा फेर वएह बात—नँ, ऊ नै भ' सकै छै। आ सूति रहल रहय। से आइ बात खुजिए गेलै—वएह रहय आइधरि।

दिनक क्रम एहिना बितैत गेलै। एहि बीच ओकर ससुर कयबेर काजपर गेलैक, कय बेर अयलैक। आ जते बेर अबैक, मौका निकालि ओकर कोठलीमे सूतल करैक। ओहो आँखि मुनि अभ्यस्त मनःस्थितिकेँ परतारल करय।

आइ डेढ़ वर्ष सासुर बसलाक बाद बहुरिया अपन कोरामे चिहुँकैत नेनाक अनुहार बापसँ वा बाबासँ मिलयबाक जरूरति नै अनुभव करैत अछि। नेनाकेँ भरि पाँज समेटि छातीसँ सटा, मनःस्थितिमे उपजैत पीड़ाकेँ मेटयबाक प्रयत्न करैत पड़लि रहैत अछि।



टौस

गीता दसम कक्षाक छात्रा छथि। हुनका एना बुझाइत छनि जे एहि साल ओ अबस्से फेल भ' जयतीह। ओ पढ़ैत नहि छथि से बात नहि, ओ पाढ़ नहि पबैत छथि। स्कूल जयबासँ पूर्व भोरे उठिक' चाह-जलखइ बनायब, नहायब, अपने पनपियाइ करब आ तखन स्कूल जायब। बीचेमे आबि खयनाइ खायब। फेर स्कूल सँ अयलाक बाद घरक काजमे अपनाकेँ झोंकि देब।

चारि बजेक बाद चूल्ही जड़ायब, चाह बनायब। जलखइ बना, छोट भाय-बहीनकेँ जलख: करायब। साँझमे भोजन बनायब। आ भानस कयलाक बाद बचल समयमे अपन पाठ्य-पुस्तककेँ उनटायब। ओकरा उनटयबे कहब उचित होयत। एहि चंचलतामे ओ किछु खास पढ़ि नहि पबैत अछि। नहि जानि कखन केओ खयबा ले' कहि देअय। बस, इएह छैक ओकर जिनगी।

गीता एतेक काजक बोझसँ लदायलि छथि त' एकर माने ई नहि जे घरमे ओ एसकरे छथि। छोट भाय-बहिन छैक, जेठ बहिनक संगहि माय-बाप सेहो छथिन। नोकरो छैक घरमे। मुदा ······घरक काज हिनके कर' पड़ैत छनि। बाप-मायक धारणा छैक—बेटी जुआन भ' रहलीह अछि, घरक काज कहिया सिखतीह! तेँ सीखब जरूरी। पढ़ाइ से बात मानतै नहि तेँ। मास्टर साहेब कैक बेर हुनका माय-बापकेँ कहि चुकल छथिन जे जँ एहिना गीता काज करैत रहतीह, पढ़ाइमे लड्डू अनतीह। आरो लोक त' अछि ई सब कर'बला! माय-बाबू आश्वासनो दैत छथिन—'ठीक छै, आब एहि बातक खियाल राखल जायत।'

मुदा गीता बुझैत छथि जे ई सभ एकटा आश्वासनक बात थीक। एहने सन ओ कैक बेर बाजि चुकल छथि। ओहो सूनि चुकलि छथि। तथापि काज ओकरे करय पड़ैत छैक —ओ क' रहलीह अछि।

कैकबेर तँ माँ कहैत छथिन—'छोड़ ई पढ़ब। की होयतैक पढ़िक'!

फेर।' तखन ओकर हृदय कानि उठैत छैक। किएक त' ओ जनैत अछि, मायक एहि कथनमे कतेक दर्द नुकायल छैक!

की होयतैक पढ़िक'? जत्त'सँ ओ आयलि अछि, जाहि सामाजिक वातावरणक ओ फसिल अछि, ओहि ठामक लोकक हेतु बेटीक पढ़ब, नहि पढ़ब—कोनो मानि नै रखैत छैक। ओकरा त' काजक हेतु एकटा मशीन चाही। चप्पल-साड़ीमे लेपटायलि कोनो मेमसाहेब नहि। ई सोचिते आगांमे नाचि उठैत छैक अपन बड़की बहीनक क्लान्त अनुहार। एहि परिवेशक कुपरिणाम भोगि रहलीह अछि बेचारी····

आ कहियो काल सोचि उठैत छथि ओहो—ठीके, की होयतैक पढ़िक'! पुनः हुनका अपन संगी सभक अनुहार मोन पड़ि जाइत छनि। की-की आकांक्षाक संग ओ सभ पढ़ैत अछि। क्यो डाक्टर बनती, क्यो ओकील बनती, क्यो नर्स, तँ क्यो शिक्षिका। क्यो आइ धरि ई नहि बजली जे ओ पढ़िक' मात्र पत्नी बनतीह।

तँ की ओ मात्र पत्नी बनबा ले' ओ पढ़ैत छथि? नहि, ओहो किछु बनि सकैत छथि। पत्नी त' बादक बात भेल। पहिने ओ किछु बनती अथवा बनबायोग्य अपनाकें बनौती। बस, ओ विवाह नहि करती। किएक त' विवाहक कुपरिणामसँ ओ कुपित छथि। हुनका आब डर होब' लागल छनि। आ तेँ अपन मायसँ ओ कैक बेर कहि चुकल छथि जे ओ विवाह नहि करतीह। ओ पढ़तीह, किछु बनबा ले' आ पढ़बा ले'। घरक काजो करब जरूरी। ओ बुझैत छथि—नहि करबाक स्थितिमे हुनका कतहु बान्हि देल जा सकैत छनि। माय-बाप त' कर्त्तव्यक इतिश्री बूझि छुट्टी पाबि लेथिन— मुदा ओ? नहि, ओ सभ किछु करती- पढ़बा लेल।

आ, तखन हुनका सदैव गारिसँ झपने रहैत अपन बड़की दीदीक बातो गरैत नै छनि। ओ ओकरो सहती। हुनका त' कोनो प्रकारे रहबाक छनि—सभ किछु सहियोक'।

ठीके, सभ किछु सहिएक' त' ओ रहैत अयलीह अछि। स्कूलक छात्रा सभक भेष-भूषा हुनका हीनतासँ ग्रसितक' देल करैत छनि। ओ सोचैत छथि— आह, ओहो ओकरे सभ सन बेलबटम, लुंगी-कुर्त्ता आ नहि जानि की-की पहिरतीह! मुदा चोट्टे ओ सम्हरि जाइत छथि। आ, तखन हुनका ओ बात ओतेक नहि सालैत छनि। ओ बूझैत छथि अपन ओकाइत। जत'स' ओ आयलि छथि, ओत' एहिस' बड़

छोट परिवेश छैक। ओत ने एना बॉलसँ जगमगाइत शहर छेक, ने ई अलकतरासँ पोतायल पक्की सड़क छै, ने कोनो सिनेमाहाल छै आ ने कोनो फैशनक प्रतिस्पर्धा। मात्र एकटा सोझ, स्वच्छ ग्रामीण वातावरण। अपनेमे समटल व्यक्तित्व-परिवेश।

ओ सभ तँ गामक परिवेशसँ निकलि एहि खुजल वातावरणमे आबि सकल अछि अपना बापक चलते, जे गामसँ स्कूली शिक्षाक बाद भागिक' एत' नोकरी कर' लागल रहथि। एत' गामक नालीमे रहनिहार जीवकेँ स्वच्छता देयौलनि, नव दुनियामे जीवक प्रेरणा देलनि। आ, आ इएह किरायाक घर हुनका सभक सभ किछु छनि। अपन घर बूझ' लागल छथि सभ क्यो एकरा। गाम बिसरि गेल अछि सभ। सभ किछु बदलि गेल सन लगैत छनि— मुदा ओ ई नहि बिसरि सकल अछि जे एकटा अदना परिवारक बेटी छथि। जएह छनि हुनका लग सएह सन्तोषक बात। तखन हुनका साधारण सन सूती पहिरब खुशी प्रदान करैत छनि। हल्लुक लगैत छनि हुनक शरीर।

ओ छथियो बड़ अन्तर्मुखी किसीमक लोक। पप्पू, हुनक संगी, इएह कहैत रहैत छनि। कहियो काल पप्पू केहुनीसँ मारैत बाजल करैछ—दुत, दिन भरि घर में घोसिआयल रहैत छें। किछु बाहरो देखल करही— दुनियाँ बड़ आगाँ बढ़ि चुकल छैक रे। आ, ई कहैत ओ बाम आँखि दबा देल करैत अछि। ओ बुझैत छथि पप्पूक आशय। मुदा हुनका बाहरी दुनियाँसँ घृणा भ' गेल छनि।

तहिआसँ आर, जहियासँ हुनक पापाक आर्थिक हालति रद्दी भ' गेलनि अछि। आमदनीक पदपर रहैत मित्र सभक हेँजसँ पीड़ित रहनिहार हुनक घर आब सुन्न रहैत अछि। अपने लोक हुनक बापक पोस्टपर बदली भ' क' अयलैक अछि। मुदा ओ आब अपन नहि, बड़ दूर भ' गेल छैक।

पहिनेक वातावरण आब घरमे बनबो करतैक कि नहि, गीता नहि सोचि पबैत छथि। एहन कठिनाह क्षणमे हुनका सभ वस्तुक प्रयोजन होइत छनि—मुदा बाबूजीक दुखसँ भीजल अनुहार सभ इच्छाकेँ मोनमे राखि लेबापर बाध्यक' दैत छनि। बापक हालति हुनकासँ देखल नहि जाइत छनि। बड़की बहीनक फरमाइस

आ दिन भरि घरमे कच-कच करब हुनका अखरैत रहैत छनि, मुदा ओ की करथु! ओ तँ घरमे प्रत्येक घटनाक क्रममे मात्र बापक अनुहार निहारैत रहैत छथि, जाहिमे हुनका डर लाग'बला शांति व्याप्त रहैत देखाइ पड़ैत छनि।

बाप हुनक टूटि चुकल छथिन, एहन हुनका बुझाइत छनि। किएक तँ ओ भगवानक पक्का भक्त भ' गेल छथिन। एकटा सम्बन्धक लोक जहिया-कहियो एत' आबैत छथि तँ ओ कहल करैत छथि—'साधारणतः भगवानक भजनमे लीन टुटल लोक होइत अछि।' आइ जखन ओ मंगल भवन अमंगलहारी ‥ आ जय हनुमान ज्ञान गुण सागर कहैत अपन बापकेँ देखैत छथि तँ हुनक आत्मा भोकासी पाड़' लगैत छनि।

की इएह छथि ओ बाबू, जे दिन भरि साहस आ धैर्यक बात करैत रहैत छलाह? जे केहनो आफत अयलापर हिम्मति नहि हारलनि, आब ओ घंटो रामायणक पंक्ति गुनगुनबैत रहैत छथि। आ, पापाक इएह मजबूरी त' हुनका गलाक दरद उघबाले' बाध्यक' देने छनि।

दरद मोन पड़िते साँचे हुनका दाढ़ीक नीचाँ दरदक टीस अभरि जाइत छनि। गिल्टी छनि बच्चेसँ। कैकटा डाक्टर देखलकनि। एक्स-रे कराओल गेलनि, दवाइ खयलनि, मुदा कोनो लाभ नहि। आपरेशन कराब' पड़तनि। मुदा… …! बाबूजी अपन हालतसँ मजबूर छथि।

कखनो काल तँ हुनका अपन जीवनसँ बड़ क्षोभ होइत छनि। सभ सपना जेना टुटैत सन लगैत छनि। किछुओ नहिक' सकती! गला नीचाँ दिस लटकैत बुझाइत छनि—ओ दर्दसँ चिचिया उठैत छथि। मुदा बापक हालति दर्द पीबा पर बाध्य करैत रहलनि अछि। भगवानक दिस ओहो जेना आब अनेरे ताक' लगलीह अछि।

ओना, हुनका भगवानपर विश्वास बच्चेसँ छनि, जखन ओ मायकेँ भगवान पूजैत देखैत छलीह। माँटिक भगवान माँक देखाउँससँ बनाक' पूजैत छलीह। आ आब तँ ओ साँचे पुजैत छथि। तेँ भगवानक आस छनि, जे ओ कोनो तरहेँ पार जरूरे निकालताह।

आ, फेर हुनका हँसी लगैत छनि अपनेपर । भगवानो की करथिन एहामे । पूरा परिवेश तँ घेरायल छैक एहने सन झंझटिसँ । अनेको परेशानी छनि । ककरा-ककरा देखथिन भगवान । सभ तँ अपने सम्हार' पड़तनि ।

हुनका बुझाइत छनि, चारूकात कतेको टीस छै जे हुनका बेदम कयने जाइत छनि । गिल्टीक अपरेशन जकाँ ओकरो निकालिक' फेक' पड़तनि हुनका, आ ई करबाले' हुनका पढ़' पड़तनि । कमसँ कम मैट्रिक । तखन देखल जयतैक ।

बापक भार ओ नहि बन' चाहैत छथि । बाबूक जीवनमे आबि गेल टीसकेँ आर ओ नहि बढ़ौती । अपन बाट स्वयं बनौती । निकालि फेंकती टीसकेँ । अपना भीतर जेना एकटा विश्वासक जन्म होइत बुझाइत छनि । कमैत जाइत दरदकेँ बुझैत ओ सीरक तानि पलंगपर सुत' चलि जाइत छथि ।



मौसी

आइ मौसी जा रहलीह अछि । मौसी, मने केसरी बाबूक छोटकी सारि । रीता माइक छोट आ दुलारी बहिन । अठारह-उन्नैसक बयस मुदा नेनपन ओहिना वर्तमान । एकटा बेस सोझमतिया व्यक्तित्व । घरसँ बहिनक संगे भतिजीक ऑपरेशन मे एत' आयल छलीह । से भतिजी तँ चल गेलीह, हिनका बहिन घेरि लेलकनि । आ एहिना आइ दू मास भ' गेल छनि । एतेक दिनसँ ओ एहि घरमे रहि रहलीह अछि मुदा कोनो परिवर्त्तन नहि । वएह बकर-बकर मुँह तकैत अनुहार, देह-हाथ पटकि छिड़िअयबाक प्रक्रिया, ककरोसँ दू शब्द बजबाक अपन लालसा—सब ओहिना छलनि । एहि दू मासक परिवर्तित वातावरण हुनक मौलिक चरित्रकेँ कुसो-कलेप नहि लगा सकल । आ ओ ओहिना सत्रहम-अठारहम शताब्दीक बनल रहलीह ।

मौसीक सभसँ प्रिय 'सखी' छलथिन रीता, केसरी बाबूक मँझिली बेटी । बारह-तेरह वर्षक उमेर, किछु लजकोटर, आ तेँ मौसीक रहस्यक भागीदार । कतहु बहराथि तँ दुनू गप्प करथि घंटाक घंटा । उठा-पटक, घमाचौकड़ी, हँसी-मजाक, गप्प-छड़ाका, सभ एक-दोसरकेँ जेना मिला देने होइक । खयबा-पीबासँ सुतबाधरि संग ।

से रीताक डबडबायलो आँखि मौसीकेँ आइ रोकि नहि सकैत छैक । मौसा मौसीकेँ आखिर सभसँ छीनि ल' जा रहलैक अछि··· । सब स्तब्ध ।

मौसीकेँ ल' जयबाले' मौसाक कएकटा डेट फेल भ' गेल छलनि मुदा एहि बेर ठीक टैमपर आबि गेलाह । जहियासँ मौसाजी अयलाह तहियासँ मौसीक चंचलतामे बड़ परिवर्तन भ' गेलनि' । हम मार्क कयने रहिऐक । गम्भीर बनबाक बेसी प्रयत्न करथि । ई दोसर बात जे हुनक नेनपन जयबाक नाम नहि लेनि । बरु जोरसँ बाजब-भूकब बन्दक' लेलनि । सोरो पाड़थि एतेक जोरसँ जे जकरो सोर पाड़थि सेहो नहि सुनैक । मौसाजीक आगा निकलब जेना बड़ पैघ अपराध छलैक । महाप्रलयक समान । कतेकोबेर नेना सभ हुनका मौसाजीक अगाड़ी ल' जयबाक

असफल प्रयास करैक। कहियोकाल थपड़ी बजा किछु कहि दैक। तखन मौसी कठौत भ' जायल करथि। तथाकथित मर्यादाक बन्न छहरदेबालीक बीच छटपटाइत अजोह नारीक हास्यास्पद प्रतीक भ' जाथि मौसी…।

मौसीकेँ कतहु बाहर जयबाक होनि आ दरबज्जापर मौसाजी बैसल होथि तँ लीअ' ने ! आफन तोड़' लागथि। सौंसे घर खुरछाही कटने घुरथि। बाहर निकलब महासमस्या। केओ जोर-जबर्दस्ती बाहर ल' जानि त' दोसर बात।

मौसाजीसँ हुनका बड़ लाज होनि। आ एक दिन ई लाज तँ आर अपन सीमासँ बढ़ि गेल, जखन जयबासँ दू-चारि दिन पहिने फोटो खिचयबाक गप्प अयलैक। फोटो खिचायब तँ दूर, हुनक समस्या छलनि मौसाजीक संगे स्टूडियो धरि जयतीह कोना ? लोक हँसतनि। मोनमे लाज होनि। बेस घीचातानीक बाद दूटा रिक्सा आयल। तखन समस्या आयल, कोनपर के चढ़थि। मौसी अपन गमैया भाइकेँ अपना संगे चढ़यबापर तैयार, मुदा मौसाक संगे कनेक… । सब कहलकनि तँ बैसलीह संगे, मुदा जेना एक बाकुटक भ' गेल होथि। सर्द भ' गेल रहनि काया जेना। आ तकरा बाद ओ कतेक दिन धरि एहि एक रिक्साचढ़ीकेँ पश्चातापक रूपमे बजैत रहलीह। बेस क्षोभ भेल रहनि हुनका। फोटो खिचयबा कालक तँ कथा विचित्रे। मौसा-मौसी एकठाम फोटो खिचाबथि से सभक इच्छा। मौसाजीक सेहो। मुदा मौसी एहिले' तैयार नहि। ओ ग्रुपमे फोटो खिचयबाले' तैयार छलीह। जाहिसँ एसकर ओ मौसाजीक लग नहि बैसि सकथि। बादमे कहि-सुनि ग्रुप आ जोड़िया फोटो खिचाओल गेल। सेहो कतेक निगेटिभ जिआन भेलाक बाद फोटो सुतरलैक।

पहिल राति सुतबाक झंझटि भ' गेलनि। मौसाजी बिचला कोठरीमे सुततीह से निश्चित आ ओहिमे ओ सुतबो कयलनि, मुदा मौसी लेल ई पहाड़क बात जे ओ मौसाजीक संगे कोना सुततीह ! बेस काल धरि दछिनबरिया कोठरीमे मालाक संग घींचातानी भेल रहनि मौसीकेँ। अन्तमे माला कहाँदन जबर्दस्ती मौसीकेँ कोठरीमे धकेलि देने छलीह। से तखन जाक' सुतलीह। से की सुतलीह, मुरदे भ' गेलीह प्रायः। एहन परिवारमे जाहिठाम बजबा-भुकबाक पर्याप्त स्वतंत्रता छैक, पति-पत्नी जाहिठाम कॉमन वस्तु छिऐक, बेटा-बेटीक बीच खुजल प्रेमपूर्ण सम्बन्ध रहैछ, ताहिठाम एतेक दिनसँ रहियोक, मौसी अपनाकेँ बदलि नहि सकलीह अछि।

अपनो घरबला लग सुतबामे एतेक लाज ! ओतबे नहि सुतबोकाल सत्ते मुर्दा भ' गेल छलीह मौसी। केओ गोटे हुनका दुनूक बीचक सम्भाषण नहि सुनने होयत। हम प्रायः बरामदामे सभसँ नजदीक सुतल छलहुँ से एक्कोटा बात श्रवण नहिक' सकलहुँ। तेँ विस्वस्त छी जे केओ गोटे मौसीक बात नहि सुनने होयत। बजबे नहि कयने होइतीह, तँ को सुनतैक केओ !

उठबामे मौसी कमालक' देलथिन। कखन उठि गेलीह, किनकहु खबरि नहि। घरमे सभसँ पहिने उठबाक दाबा रखनिहारि रीताक माय मौसीक उठौलापर उठल छलीह। घर भरिमे सभकेँ अन्हरोखे मौसी उठा देने छलीह। एतेक तक जे सात बजे भोरतक सुतनिहार हम, से मौसी हमरो जगा देलनि। की करितिऐक, उठही पड़ल।

मौसाजी एत्त' छओ दिन पूरा रहलाह आ ओतबे राति। मुदा ककर मजाल भेलैक आँगनमे जे हुनका संगे मौसीक एकटा बातो सुनि सकल हो ! सभक इच्छा जेना हीयेमे रहि गेलैक। मुदा हमरा एकर सौभाग्य भेटल छल।

दछिनबारी घरमे हम कपड़ा पहिरैत रही। ता मौसीक आवाज सुनलिऐक तँ चौंकि उठलहुँ। मौसी कतहु मौसाजीसँ बाजथु ! मुदा ई छलैक सत्य आ हमरे आगामे घटि रहल छलैक। हम अपन नजरि दोसर दिस घुमा देलिऐक। मौसाजी अपन बेटी शशी द्वाराक देल गेल गन्दाकेँ मौसीसँ साफक' देबाले' कहैत छलाह। हम सुनलिऐक जे बड़ मेंही बोलीमे मौसी हुनकासँ बजैत छलीह। हमरा संगे एकटा आर केओ आश्चर्यित छल— केसरी बाबूक आठ वर्षक बेटा पप्पू। मने ओकरो लेल अजूबे छल ओ दृश्य। मौसी ओकरापर ध्यान नहि देलथिन। मौसाक तँ बाते नहि। ओ शहरमे रहैत छथि। हुनका एहि घोघ-लाजसँ अश्रद्धा छनि। मुदा करताह की… सहि रहल छथि। ओहि साँझ आँगनमे रीता, माँ, माला, केशरीबाबू, मौसी, हम आ बच्चा, सभ बैसल रहिऐक। पहिलुका खिचायल फोटो बिगरि गेलाक कारणे दोसर फोटो खिचायब अनिवार्य भ' गेल रहैक। आ ताहि सम्बन्धमे गपसप भ' रहल छलैक। मौसी फेर फसादमे पड़ल छलीह। माला जयबाले' तैयार नहि। रीताकेँ सेहो रोकल जा रहल छलैक। तखन ओ मौसाजीक संगे कोना जयतीह। पुनः बाजल छलीह जे हमरा बड़ लाज होइत अछि। पप्पूकेँ प्रायः सुनल नहि

गेलैक । पटसँ बाजि उठल—"एह, आइ मौसी मौसाजीसँ फुसुर-फुसुर बजैत छलीह तखन लाजे ने होइत छलनि !" हमरा बुझायल जेना मौसी धरतीमे समा जयतीह । रीता मायक क्रोधित अनुहार पप्पूके सिहरा देलकैक—ओ बेचारा अबोध की जानय गेलैक ई घर-दुआरक बात । केसरी बाबू भौंचक्क छलाह । ओतेक नीक जकाँ बातकेँ बूझि नहि सकलाह । मौसीक तँ कथे अजब । सौसे मुँह उज्जर भ' गेल रहनि । रंगले हाथ पकड़ल गेल होथि, ताही सदृश ओ स्तब्ध भ' गेल छलीह । हम सभ स्थितिकेँ देखि बात बदलि देलिऐक तँ गम्भीरता समाप्त भेल रहय ।

मौसी जाधरि आंगनमे रहलीह, घर-दुआर गुंजयने रहैत छलीह । कमसँ कम एहिठाम जतेक दिन धरि हम हुनका संगे रहलहुँ, तँ इएह अनुभव कएलहुँ । हुनक चंचलता, आ बचकानी हाव-भावक बीच हुनक वास्तविक व्यक्तित्व जखन कहियोक' नुका जाइक तखन मौसीकेँ बूझब बड़ दुर्लभ भ' जाइक ।

हम आइ धरि मौसीक अनुहारकेँ नीक जकाँ कहियो ने देखलिऐक । मोनमे एकटा अगाध श्रद्धा आ अपनत्वक भाव हुनक सौन्दर्यकेँ देख' नहि दैत रहय । मुदा एक दिन जखनि ओ फोटो खिचयबाले' तैयार छलीह तखन सभ केओ हुनक सौन्दर्यक प्रशंसा करैत छल । तखन हमहूँ कनेक नीक जकाँ हुनका देखलियनि आ बुझायल जे प्रकृति हिनका संग सांचे न्याय कयने छनि । सत्ते, ओ बेस सुन्नरि छलीह । बड़ दीब लगैत छलीह ओहिकाल । मौसी एतेक सुन्नरियो भ' सकैत छथि, ओहन पहिलबेर अनुभव कयने रहिऐक । आइ मौसी जयबापर अछि !

जयबासँ एक-दू-दिन पहिने मौसीक सब चंचलता, नेनपन, जेना हेरा गेल रहैक । मौसीक सौन्दर्य मलीन भ' गेल रहैक । ककरो सूरतिकेँ आँखिमे भरि लेबाक उत्सुकता मौसीक विशेषता भ' गेल रहैक । हम नीक जकाँ मार्क कयने रहिऐक आ सोचने रहिऐक जे की सत्ते विछोह एतेक कष्टदायक होइत छैक ? एतेक दुष्ट होइत छैक ? फूलसन कोमल कायाबाली मौसी जेना दुइए दिनमे सुखा गेल छलीह ! नोरसँ कखनो भीजि जाइत लाल मुखमण्डल जेना आर करिआ भेल जा रहल छलैक, ई सभ केओ अनुभव करैक ।

हम सीरकक तरसँ मौसीक जयबाक तैयारीक स्वर सुनि रहल छी । हमर ई स्वाभाविक दुर्बलता रहल अछि जे ककरो विदाक दृश्य हम देखि नहि सकै छी ।

ओकरा सभक कानब हमरा हिलाक' राखि दैत अछि । आ तेँ आइ हम जानिक' किछु अबेरक' सुतबाक निश्चय कयने छी । मोन जाँतिक' पड़ल छी । मुदा ओह ! मोन मानैत नहि अछि । निवृत भ' अबैत छी, तँ मौसी नोरसँ अपन अनुहार डुबौने मौसाक संग रिक्सापर बैसि चुकल छलीह । एसकरियो रिक्सामे मौसाजीक संग बैसबामे लाज कयनिहारि मौसी पूरा मोहल्लाबलाक अगाड़ी बेहाल भेल रिक्सा पर बैसल अछि—ने कोनो लाज, ने कोनो अन्ध-मर्यादाक खियाल । सब जेना स्वाभाविक भ' गेल रहैक । रिक्सा बढ़ि जाइत अछि । जाइत-जाइत मौसीक नजरि हमरापर पड़ि जाइत छनि । अभिवादनमे हाथ उठैत छनि—हमरा ठकमुरगी लागि जाइत अछि । की जबाव दिऔक ! हम मात्र माथ डोला रहि जाइत छी । एहि घरक चंचलता, मौसीक मुक्त हँसी, घरक फुलायल वातावरण सभ पक्की सड़कपर दौड़ैत मौसीक रिक्साक चक्की संगे भागल जा रहल छैक । आ हम सभ आंखिमे डबडबा आयल नोरकेँ पीबाक असफल प्रयास करैत देखि रहल छी । रिक्सा नजरिसँ कात भ' जाइत अछि आ हमर आत्मा चीत्कारक' उठैछ—'प्रणाम मौसी ! फेर कहिया भेंट होयत, कहिया ने !"



आँचर

बाहर बड़ जोड़ वर्षा भ' रहल छैक। रातिएसँ सौंसे शहरकेँ गनगनयने छैक। कतेक दिनसँ लोक पानिकेँ चातक जकाँ तकैत छलैक। आ से पानि अयबो कयलै तँ बाप रे··बाप ! सौंसे खेत-पथार ठेहुन धरि पानिसँ भरि गेलैक अछि। आ····आब लोक उबेर चाहैत अछि।

ई पानि मोनकेँ भारीक' देने अछि। बरसातक समय लोककेँ कोढ़िया बना दैछै ने ! हमहूँ रातिसँ एखन धरि सुतले छी। दिनक एगारह बाजि रहल अछि मुदा उठबाक मोन नहि करैत अछि। उठियोक' की करू ? ओना आब निन्नो ने होइत अछि। कतेक सुतले जाए। कतबा बेर करोटपर करोट फेरि सुतलहुँ अछि मुदा निन्न नहि आबि रहल अछि। मोन जेना एहि बर्षाक बुन्नक टपटपीक संगे उधियाय लगैत अछि। भसिया जाइत छी·······। बहुत रास आगत-विगतक बात मोन पड़' लगैत अछि···। किए ने हो·····बैसल जे छी। बेस मोन पड़ैत अछि एकटा प्रवासक संस्मरण···। हम उड़' लगैत छी··· ओत'···ओत्तहि !

·······एकरा पत्रक बजाय तार बुझबै—बड़ाबाबूक पत्र आयल छल। बड़ाबाबू··· मने हमर आत्मीय। चालिसक लगभग उमेर। माथपर मुट्ठी भरि सीटल करिया केस····। हाफसर्ट, ढील पेंट, बस ! साधारणे रहैत छथि। एक दशकसँ उपर भ' गेल छनि ओत' नोकरी कयला ! गोट दशेक प्राणी छनि ओतुक्का प्रवासी परिवारमे ··सबकेँ एकटा नीक स्टैण्डर्डसँ राखि रहल छथि। बेस बुझक्कर, सौम्य, गम्भीर, नव प्रगतिक पक्षधर, आधुनिक विचारक पोषक आ सबसँ बेसी एकटा स्वच्छ इन्सान। हिनकासँ एकाएक आइसँ अढ़ाइ बरिस पहिने एतहि भेंट भेल छल। मात्र एक घंटाक भेंट··· आ फेर हम सभ अप्पन बनि गेल रही। चिट्ठी-पत्रीक सिलसिला चलैत अछि आ तेँ सम्बन्ध ओहिना प्रगाढ़सँ प्रगाढ़तर होइत जा रहल अछि। आ एहि सिलसिलामे एकटा पत्र पठौलनि अयबाले'। बेस उत्सुकतापूर्ण पत्र·······।

कतेको खेप ओइ पत्रकेँ घोंकि गेलहुँ ! अन्तमे ई निष्कर्ष निकाल' पड़ल जे हमरा ओत' जयबाक अछि। तँ एक दिन अपन मित्र झाजीक संग जूमि गेलहुँ हुनका लग....। बेस आत्मीयताक संग बड़ाबाबू अपना डेरापर ल' गेल छलाह। एक गोट नव दुनियासँ संपर्कक झिझक········कोनादन लगैत छल। बैसकमे पहुँचिते बहुत रास नेना सभक सम्मिलित स्वर गुंजि उठल— भाइजी प्रणाम··· ! हम स्तब्धे रहि गेलहुँ। आह ! कतेक प्रेम····कतेक आत्मीय ! केहन श्रद्धा ! बौक भ' गेल रही। एकटा आत्मीताय भरल वातावरण हमरा जेना पहिनहि वशीभूतक' लेलक।

निन्न नहि भ' रहल अछि। हम करोटपर करोट फेरि रहल छी ! हम नहि सोचब ओतुक्का बात। जे सम्भव नहि, तकरा सोचब व्यर्थ। कहाँ पाबी हम ओ परिवेश, ओ मनुक्ख ··ओ अप्पन ··उहुँ ! हम बरू कहुनाक' सूतब।

मुदा आह ! बात हमरा दिमागमे चक्कर काटि रहल अछि। बाहर बिजलीक चमकबक संग ठनकैत ठनकाक भयंकर चीत्कारसँ बेसी जोरसँ घनघना उठैत अछि नरेश, देवेन्द्र, राकेश, सुनीता, मुकेशक सम्मिलित आबाज··· ··· भाइजी प्रणाम ! आ हम एखनो बौक भ' जाइत छी।

हमरा बकौर लागि जाइत अछि। हम ओकरा सभक प्रणामक उत्तर नहि द' सकबैक। हम योग्य नहि। हम किछु नहि ··। एकटा गन्हाइत नालीक निरीह कीड़ा··· ··जकर समयसँ पूर्व विचार कुंठित भ' जाइछ— जे बहुत किछु चाहियोक' किछुक' नहि पबैछ ···। तेँ बाउ सभ जुनि अभिवादन करू। हम एहि योग्य नहि। हमर अन्तरमे भरल अछि आगि आ पानि। कहूँ आँखिसँ खुशीक बदला नोरक टघार आ मुँहसँ नीक वचनक बदला किछु अनसोहाँत ने बहरा जाय। डर होइत अछि। हम असम्पृक्त छी ने ···। दूर, सभसँ दूर, रह'बला प्राणी। तेँ आचार-विचार नहि जनैत छी। से····

सिल्केनक चादरि तानि लैत छी। नीक जकाँ मुँह-हाथ झांपि सुतबाक उपक्रम करैत छी। ने जागल रहब, आ ने ई फजूल सोचब। बीते ताहि बिसारि दे बला बातकेँ सोचि हम निन्ने पड़ब नीक बुझैत छी। मुदा········गीताक भाय प्रथमे बैसकीमे बहुत किछु कहैत छथि। पंडितजी हमराले' पान लाब' चल गेल छथि। ओ कहाँदन अपन गीताक बारे मे हमरा····ओह छोड़ू। की बाज' लागल छी। जे संभव नहि, ताहिले' सोचबे व्यर्थ। हम···अभिशप्त। पुनः गीताक भायक बड़ नम्र

स्वर कानसँ टकराइत अछि—'हे गीताक लड़का अहीं खोजि दियौक !' सत्ते हम जेना दबि गेल रही। एकटा अज्ञात भार····दायित्व हमर कमजोर कान्हकेँ तड़मड़ा देलक। हम स्वीकृतिमे मात्र माथ हिला दैत छियनि। ओ सरस्वतीजीक फोटोक एलबम देखबैत छथि···हम बड़ गौरसँ देखैत छी··· विभिन्न दृष्टिकोणसँ··· आ पबै छी, एकटा नव गप्प, नव अस्तित्व।

सरस्वती, मने बड़ाबाबूक जेठकी बेटी। किछुए दिन पूर्व सासुर गेलीह अछि। बड्ड सुभग···सुसस्कृत····चंचला··· वाचाल आ आर सभ गुणसँ भरलि। अनजानमे वियाह अनफिट परिवेशमे भ' गेलनि। हर आ कोदारिक परिवेशमे रहनिहार व्यक्ति हिनक कोमलताकेँ की बुझतैक ? केओ दुनूक वियाहसँ आब प्रसन्न नहि अछि। मुदा आब भइये की सकैछ ! कहाँदन पत्रो आयल छलैक बड़ दुखपूर्ण···बन्न कोठरीक औनाइत धूआँ सदृश रहैछ ओ···।

भगवानक केहन विडंबना छनि, जकर पति नीक से अपने कुरूप आ जे अपने सुन्नरि तकर घरबला बेछप। प्रकृतिक ई विचित्र मिलान सरिपोँ हास्यास्पद अछि।

बड़ाबाबू आ सीतूक माय कयबेर बाजि चुकल छथि जे कहाँदन गीता बजैत छथि जे ओ बियाह नहि करतीह। बरू, बाबू हुनका पढ़ाबथि, जतेक होइत छनि ततेक। ओ सीतूक स्थिति देखि बियाहसँ त्रस्त भ' गेलीह अछि। डेरायब कोनो अनर्गल नहि, उचिते छनि। जे संस्कार, जे परिवेश सीतूक जीवनकेँ रूढ़िक वेदीपर उत्सर्गक' देलकैक अछि···· ····ताहिसँ बुझनुक लोक डेराओ नहि तँ की करओ। गीतो तँ आखिर ओहि संस्कारक देन थिक। सीतू···! सत्ते अहाँ दयाक पात्र थिकहुँ, एक गोट तथाकथित निम्नवर्गीय परिवारक एकटा आदर्श दयनीय पात्र··· आ हम····हम।

····ओह ! क्षमा करब सीतू। अहाँक बारेमे हम सोच'बला के ? कहाँदन शादी-बिआह भाग्यक बात होइत छै। विधना हाथ पकड़ि करा दैछ। से हमरा सोचबाक मतलब ? हम गलती कयलहुँ सीतू ! अहाँ कतौ रही, खुशी रही। आर हम कहिये की सकब···दइए की सकब ? बड़ छोट पहिचान अछि ने ! नहि तँ किछु जरूर दितहुँ··· किछु ठोस···। मुदा··· आह ! हम फेर बहकि गेलहुँ। ई वर्षा

हमरा मारि देत। ई कछमछी हमरसभ चिंतन-क्रमकेँ गड़बड़ा देने अछि। अनर्थ सोचि लैत छी। की दितहुँ हम अहाँ के··· ? हमरा संगमे अछिये की ? दुनियाँक भिखारी हम···अहाँकेँ नहि सीतू··· हम नहि किछु छी···हमरासँ किछु नइं भ' सकैत अछि। हम पूर्ण दयाक पात्र अपने छी··· दू मुट्ठी प्रेम आ स्नेहक भूखल दरिद्र।

इस्सऽऽऽ ! उड़ीस लोहछा देलक। कए दिनसँ डाल्फ छिटबाक ओरिऔन करैत छी। छीटि नहि पाबि रहल छी। बेस सुस्त भ' गेल छी आइ-काल्हि। ओत'सँ अयलाक बाद तँ आर···।

····गीताक माय अपन पेटी खोलि अपन आ सीतूक बूनल स्वेटरक अम्बार देखबैत छथि। हम मंत्रमुग्ध भ' देखि रहल छी। हमरा बुझाइछ, स्वेटर आ कार्डिगनक प्रत्येक फान हमर नियतिक क्रूरतापर हंसि रहल होअय। हम छटपटा उठै छी। हमरा ओ कोठली काट' छुटैत अछि। हम पड़ाय चाहैत छी। ताबत गीताक माय लारि दैत छथि घर-दुआरक बात। हमरा नहि नीक लगैत अछि। हमरा घर-दुआरमे राखले की अछि जे हुनका कहिऔन। एकटा ध्वस्त··· अपूर्ण खंडहर। पानि ल' केँ गीता अबैत छथि। चोर नजरिए हम देखैत छियनि। हमरा सँ लजाइत छथि। आ तैं हमरो साक्षात् देखबाक साहस नहि होइत अछि। बारह बर्षक उमेर···सतमामे पढ़ैत छथि। गीताक माय बजैत छलीह जँ आइ सीतू रहितैक तँ सौंसे मोहल्लाक सखी सभकेँ बजा अनने रहितैक जे "चलते चलो, मेरे भाईजी आये हैं !" सभक संगे बैसितय। गप्प-सप्प करितय। मुदा गीतामे से नहि····। कनेक लजकोटर छथि। नाच' जनैत छथि, गाब' अबैत छनि कसरतो नीकक' लैत छथि···मुदा लजकोटर··· लाज···उँह···! एह, आब हमरा उठहि पड़त। नीचा उड़ीस, उपर मच्छर। तबाहक' देने अछि। वर्षा एखनो धुरझार भ' रहल छैक। छुटबाक नाम नहि। हम देह-हाथ झाड़ि पुनः शान्त भ' जाइत छी।···ध्यान फेर बटि जाइत अछि।

·····"चलिये, भैया आइ० वी० तरफ !"—देवेन्द्र बड़ जिद्द कयने रहय। हम संग पूरि देलिऐक। बाटमे हम बच्चा सभक सामान्य-ज्ञानपर बेस ध्यान देने रहिऐक। केहन दीब संस्कार छैक ओकरा सभक। ओहो त' हमरे परंपराक

एकटा कड़ी अछि। मुदा फरक आकाश-पतालक। ओकर संस्कार, ओकर शिक्षा ओकरा हमरा सभक बच्चाक शिक्षा संस्कारसँ बेस उपर उठा देने छैक। ओ आदर्श भ' गेल अछि। अनुकरणीय। हमरा आब बुझाइत छल, ई आइ० बी० दस कोस दूर भ' जइतैक, जाहिसँ एकरा सभक संग हम घुमैत रहितहुँ दूर-दूर धरि। हमरा एकरा सभक सम्पर्कसँ आनन्द होइत अछि—सन्तोष होइत अछि।

सुनीता आ मुन्नूकेँ टॉफी लेल बजार चलबाक जिद्द, नरेश, देवेन्द्र आ राकेशकेँ गेन सिया लेबाक अनुरोध, गीता भाइक किछु नाश्ताक' लेबा लेल कहैत अपनत्वपूर्ण आग्रह आ खिड़कीक दोग द' तकैत ककरो दू जोड़ नेत्रक लालसा—हमरा बताह बना दैत अछि। सब चित्रपट जकाँ मष्तिष्कपर स्पष्ट देखा रहल अछि। हमर मोन आउल-बाउल कर' लगैत अछि।

हम चादरिसँ मुँह उघारि बाहर देखैत छी। एह, बापरे! वर्षा होइते छैक। बुझाइ छै अड़ियानघानक देतैक। लोकके' बीओ ने पाड़ल छैक नीक जकाँ। भाग्ये-भरोसे जे किछु पाड़ि लेने अछि, तकरे काजो देतैक। बाँकी त' बीओक जोगाड़ भिड़ाब'मे लागल होयत। आब मेघोकेँ कोनो ठीक नहि। सत्ते, 'भरठ जुग' आबि गेलैक। हम घोकरिया जाइत छी। किछु काल आब सुतबाक चाही।

···अयबासँ एक दिन पूर्व सुनीता बाजल छलीह—"कल चल जइबहू हौ! न जा, परसू जइह"—हम की जबाब दितिऐक! कोना कहितिऐक जे बाउ! अहाँ सभक घर-आँगन हमरा अपनो घरसँ नीक लगैत अछि। एहि ठाम हमरा मोनकेँ शान्ति भेटल अछि। अपनत्व भेटैत अछि। अपन घरक शुष्क वातावरणसँ दगधल काया ककरो प्रेम, ककरो स्नेह पयबा ले' बेहाल रहैत अछि···। एहिठाम सभ प्रेम देब' जनैत अछि । मुदा ···सुनीता, हम अहाँक बात नहि राखि सकब। हम परदेशी—आन छी ने! हमरा अहाँक ई प्रेम, ई श्रद्धा जीबाक आस दिअबैत अछि ··जीवन नहि। हमरा जीवन चाही। आ एहि ले' हमरा एखन बड़ छिछिआय पड़त। एक गोट निस्सन मंजिल पयबा धरि। ई त' प्रथम पड़ाव थिक हमर···अर्ध मंजिल, ई जे बड़ाबाबूकेँ हम कयबेर कहि चुकल छियनि तेँ

हमरा जाय पड़त कोनो हालतिमे। हम पछुआ गेल छी। ओना पछुआयब हमर नियति भ' गेल अछि। आ इएह हमर जीवनक सभसँ पैघ ट्रेजडी थिक।

दोसर दिन भेने अयबाकाल··! एखनो मोन अछि ओ दृश्य, ओहिना··· बड़ कारुणिक, हृदयग्राही। गीताक मायकेँ हम भरिआयल मोने कहने रहिअनि—'झूलामे अबस्स आयब!' ओ भरल आँखिए अयबाक अश्वासन देलनि। नजरि खिरबैत छी। सुनीता सुतल छलीह। भेंट नहि भेल, बड़ दुख भेल छल। देवेन्द्र, नरेश, राकेश, मुकेश सभ जेना हतप्रभ ठाढ़ अछि। सदैव चंचल, बकबक बजैत ई नेना सभकेँ जेना बकौर लागि गेल होइक, चुपचाप सभ हमरा देखि रहल अछि। आ हम अपन आँखिमे डबडबा आयल नोरक बुन्नकेँ करिक्का चश्मासँ झाँपि लैत छी। गीता पुबरिया कोठलीक खिड़कीसँ देखि रहलि छथि··· उदास-उदास।

ओह! आब चलबाक चाही। सड़कपर चढ़ैत-चढ़ैत एक गोट बिदाक नजरि हम चौदह नम्बर क्वाटरपर दैत छी। मुदा··आह! हमरा जेना चकचोन्ही लागि जाइत अछि। हमरा बुझाइत अछि जे उपस्थित सभ लोकक अस्तित्वसँ फराक एकटा आर ककरो अस्तित्व हमरा बिदाक' रहल अछि। अपन नोरसँ भीजल आँचर हमरा आगा पसारने। बलिदानी कोनो आत्माक ओ भीजल आँचर···· हमरासँ किछु माँगि रहल अछि···हमरा स्तब्धक' देने अछि। हमर माथ घुम' लगैत अछि····। की, हमक' सकबै' बलिदान?·· द' सकबै किछु ओइ रक्त-रंजित आँचरमे? उहुँऽऽऽ! हम असक्क छी। हम दरिद्र छी। हमरा बुते किछु नहि देल पार लगतै। सत्ते कहै छलाह झाजी, हम बजै छी सएह, किछुक' नहि पबै छी। हम असमर्थ··· आह। हँ-हँ···हँ···जेना वायुमण्डलमे एकटा शोषित, जर्जर नारीक भयानक अट्टहास गुँजि उठैत अछि। ओ हमरा पुरुषार्थपर मने हँसि रहल अछि···। हम ओह! सते, किछु नहि। ओकर ओ हँसी जेना हमरा नस-नसमे घोसिया गेल अछि। आब हमर माथक नस फाटि जायत···हम निष्क्रिय भ' जायब ··हम आब बेसीकाल धरि एना नहि टिकि सकब। हम···आब···।

···बस ओना खुजि जयतै!—बड़ाबाबू टोकैत छथि। हम जेना आकाशसँ खसलहुँ। सते, भावनामे कत्त' उधिया गेलहुँ। बस चौकपर लागल हेतैक·· फेर

गाड़ियो पकड़बाक अछि । आब ओहि ठाम ठाढ़ रहब हमरा बुते असह्य भ' जाइत अछि । हम आगाँ बढ़ि जाइत छी ।

बड़ाबाबूक जोड़ल हाथक प्रत्युत्तर थरथराइत हाथें दैत छियनि । माथपर एकटा बड़ पैघ बोझ अछि । जाहिसँ हम अपन सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ दबायल बुझैत छी । एकटा बड़ पैघ दायित्व, जकर निर्णय की हमक' सकबै ? सुनीताक देल वचन, गीता माइक आस भरल आग्रह, शिव प्रसादजीक याचना… एक जोड़ा आँखिक अभिलाषा…आ' " आ ककरो भीजल रक्ताभ आँचरक चुनौती …???

एह, प्रायः बुनछेक भ' गेलै आब ! उँह, आब उठहि पड़त । नहि तँ हमर दिमाग फाटि जायत । नहयबो-खयबाक अछि ।

'रे छौड़ा पानि ला ? -नोकरबाकेँ हाक दैत हम धरफराक' उठि जाइत छी।



पांक

ट्रींग-ट्रींग, ट्रींग-ट्रींग, ट्रींग-ट्रींग… !

हम टेलिफोनक चोंगा दहिन हाथसँ पकड़ि मुँहसँ सटा लैत छी—'हैलो !'

'चन्दरजी छथि ?'— रिसीभरमे प्रश्न अभरैत अछि ।

'हँ, हम बाजि रहल छी । अहाँ कत'सँ बजै छी ?'—हम पुछैत छियनि ।

'जी, हम होटल एभरेस्टसँ बाजि रहल छी । रूम नं० ३०२मे एकटा यात्री टिकल छथि । ओ अपनेसँ बात कर' चाहै छथि'—रिसीभर बातकेँ फरिछबैत अछि ।

'होटल एभरेस्टमे यात्री !'- हम सोचैत छी आ किछु स्मरणक' सिहरि जाइत छी । ई यात्री कहीं "!'

'ठीक छै', हम 'होल्ड ऑन' कयने छी, बजा दिऔन ।'— हम चोंगा पकड़ने कहैत छियनि ।

ओ जयबेर अबैए, एही होटलमे टिकैत अछि । पछिलो बेर जखनि ओ काठमाण्डूसँ आयलि छलीह तँ एतहि टिकल छलीह । आ से रंगताल भेलैक जे"। हमर देह ठीके एखनो सिहरि जाइत अछि " ।

…साँझ छओ बजे हमरा घरमे फोन आयल रहय—'होटल एभरेस्टमे आउ । हम प्रतिक्षामे छी ।' हम घरसँ धरफरायल पहुँचल रही ओतऽ' । पहिचान कोनो तेहन नमहर नहि भेल रहय । ओकरा प्रति एकटा अज्ञात आकर्षण मता देने रहय । काठमाण्डूमे बसनिहारि अत्याधुनिका कोनो मौगीक सम्पर्क " । काउण्टरपर जाइते मैनेजर सिंहजीक मुस्की मोनकेँ आर गद्-गद्क' देने रहय । मने ओहो बुझैत रहैक जे हम भाग्यशाली लोक रही"। आ सिंहजी स्लीप द' नाम टीपि पठा देने रहथि । ऊपर ।

हम बैसल अनेरे की सँ की गुनधुन कयने जाइत रही । आ अपनाकेँ ओकरासँ बात करबाले' फिट बनबैत रही । हम गाम-देहातक लोक आ ओ

आधुनिक संस्कृतिमे पललि कन्या "। सुनने रहिऐ काठमाण्डूमे कहाँदन एकरा लेल लोक सब मरैत अछि। एकबेर जकरा दिस ताकि दैक ओ पछोड़ धयने बिना नहि रहय। छोट खुट भरल देह, ललहोन गाल (जे बेसीकाल रूज लगा बनबैत छलीह), गोल-गोल कारी आँखि। आ परिधान एक रहय तखन ने। दिनमे कयबेर बदलैत अछि। जाहिमे सभसँ प्रिय पेंट आ शर्ट। टाइटसँ। जाहिसँ छातीक उभार स्पष्ट देखि पड़ैक। नितम्ब आ छाती, दुइएटा त' ओकर विशेषता बुझाय हमरा "।

पटर-पटर ध्वनि सूनि पड़ल रहय। निश्चय सौण्डिलक आवाज रहैक। हरियर रंगक साड़ीमे लेपटायलि रेखा देखि पड़ल रहय। हपसिक' लग आयल रहय 'हेलो चन्दर! कयबेर डेरामे टेलिफोन करबयलहुँ मुदा लापता रहैत छी। बुझाइए कतहु चक्कर चलबैत रहैत छी की?' ओ ठठाक' हँसि पड़ल रहय। हम की उत्तर दितिऐक, ओकरा! परबाहि नहि रहैक। ओ हमर बाँहि पकड़ने ऊपर लेने चलि गेल रहय। हम जाइत-जाइत सिहजीक रहस्यमय मुस्किक पाछाँ बेहाल भेल जाइत रही। कहूँ इहो हमरा बारेमे ""।

रूममे हम प्रवेश कयने रही। डबल बेडक रूम। रेखा रहैक एसकरे आ बेड दू? किएक पुछितियैक। हम पुबारी कातक बेडपर बैसि गेल रही चुपचाप। किछु बाजू तँ की?

रेखे बातकेँ बढ़ौने रहय—'हम अहाँ ला काठमाण्डूसँ सनेस लयने छी। लेब?' हम छक्क पड़ल जाइत रही। ई की लाओत हमरा ले'। सभदिन अनकर लेनिहारि हमरा लेल की लओलक अछि।

'की अछि?'- हम पुछने रहियनि।

ओ अपन खाटसँ दुनू पयर नीचां खसा तरमे निहुरल रहय। आ एकटा हाथ बढ़ा निचाँसँ गिलास आ वीयरक आधा खाली कयल बोतल बहार कयने रहय। ता ओकरा किछु मोन पड़ल रहै, हमरा दिस ताकि हँसल रहय—'एह, अहूँ बुद्धुए रहि गेलहुँ। अहाँ कोनो लड़कीक कोठलीमे छी! गेट बन्दक' देबाक चाही अहाँकेँ!'

ठीके, गेट तँ खुजले रहै। ओना हम एकरा बन्न करब जरूरियो नहि बुझने रहिऐ। भेंटक'क' चल जायब। ई बन्न-तन्न के करओ। अनेरे लोक किछु सोचि लेत "। मुदा आब तँ बन्न करही पड़त। हम उठल रही। आ सिटकिनी लगा देने रहिऐक। फेर आबिक' पलंगपर बैसि गेल रही। आ उत्सुकतासँ रेखा दिस देख' लागल रही "।

रेखा गिलासमे वीयर ढारि गिलास हमरा दिस बढ़बैत बाजलि— 'हे लीअ'! इएह सनेस अछि अहाँ लेल। काठमाण्डूसँ खासक' अहीँलय अनने छी। संगे पीअब से बिचारि ""।'

'ई हमर सनेस?'—हम मनाक' देने रहिऐक—'नहि, हम नहि पीबैत छी।'

रेखा हमरा दिस आश्चर्यसँ ताक' लागल रहय—'दुत्, मजाक नहि। अहाँ नहि पीबैत होयब से हमरा बिसबास नइं अछि। पिबू ने !'

'ठीके रेखा, हम नहि पिबैत छी। कहिओ ने आइधरि मुँह लगओलहुँ अछि। पीबू अहीं!'—हम दृढ़ताक संग मनाक' देने रहिऐक। आइधरि जकरा देखैत देरी हमर सम्पूर्ण व्यक्तित्व पंगु भ' जाइत अछि से जहर हमरा देखबैत अछि रेखा ""। कहांदन 'सनेस' छै ओकर । थु:। मोन घृणासँ भरि जाइत अछि। रेखापर नहि, उच्चताक आग्रहसँ जीबैत लोकपर—जकरा लेल इएह सभ किछु छै।

रेखा अकबका गेल रहय। ओकरा विश्वासे ने भेल रहै जे हम नहि पीबि सकैत छी। हम स्पष्ट देखने रहिऐक, ओकर मुँह बिधुआ गेल रहै। तखन बड़ दुख भेल रहय ""आइ जँ हम पीबैत रहितहुँ!

ओ गिलासकेँ दहिन हाथसँ पकड़ि गटागट वीयर पीबि गेल रहय। मुँह कनेक कालक लेल कड़ुआयल रहै। फेर प्रकृतस्थ भ' 'आधीरात' पढ़' लागलि रहय।

हम यंत्रवत् बैसल रही। रातिक नओसँ उपर भेल चल जाइत रहैक। ओकर मूड देखि ओहिठामसँ चल आयबे ठीक बुझाइत रहय। बरू भिनसरे बात क' लेब। से कहने रहिऐक—'रेखा, एखन आब हम जाइत छी! बरू भोरे आयब "।'—'नहि, एखन बैसू। कनेक काल! भोजन कयलहुँ?'—ओ आदेशक संग प्रश्न कयने रहय।

हम तँ मारबाड़ी बासामे खाना खा लेने रही। नोकर नहि रहने सबेरे होटलमे भ' गेल रहै। से कहने रहिऐक—'हँ, हम तँ खयलहुँ !'

'तखन चिन्ता कथीक। एही ठाम सुति रहू। दूटा बेड त छैहे !'

हम सर्द भ' गेल रही। घाम छुटि गेल रहय ओहि राति हमरा। हम, आ एहि कोठरीमे सुतू ! जनकपुरक लोक काल्हिसँ सड़कपर चल' नहि देत।

'नहि, आब रातियो भ' गेलैक। हमरा आन ठाम निन्नो ने होइत अछि। तेँ जायबे उचित।' हम सफाइ देने रहिऐक।

'हँ-हँ, हम बुझैत छी। अहाँ बदनामीक डरसँ एत्त' सूत' नहि चाहैत छी। खैर, नहि सूतब। कनेक काल तँ थम्हू !' ओ दुखी होइत बाजलि रहय।

हम कनेक देर आर रुकि जायब उचित बुझने रही। पुनः यंत्रवत् बैसि गेल रही। दोसर खाटपर सुतलि रेखा बेहोश होयबाक स्थितिमे आबि गेल रहय। मने दारू लागि गेल रहै। ओकर अस्त-व्यस्त हालति हमरा तँ आर डेरा देने रहय। कहीं····!

नहि, आब हमरा रहब ठीक नहि। हम ओकरा लगमे जाक' जयबाक अनुमति लेब' चाहने रही। ओकरासँ गप करबाक आ बात करबाक सभ उत्कंठा रातिक करिछाओन सिआहमे डुबि गेल रहय। रहि गेल रहय मात्र भय—सामाजिक मर्यादाक। तेँ पड़ायब जरूरी···।

'रेखा ! हे, दस बाजि गेलै। आब हमरा जायब उचित !'—आ ओ हमर बातकेँ अनसुनाक' हाथ पकड़ि बैसा लेने रहय। आब हमरा बाध्य भ' ओकरे बिछाओन पर बैस' पड़ल रहय। छातीक धड़कन एक्सप्रेस भ' गेल रहय। आ रहि-रहिक' नजरि दरबाजापर चल जाय। कहूँ केओ केवार नहि खटखटबै—'के छी ?' हम इहो जनैत रही, एना होटलमे होइत नै छै मुदा मोन मानय नहि···। घमा आयल देहकेँ पंखाक हवा नहि सुखा सकैत रहय। हमर जान अवग्रहमे पड़ि गेल रहय। की करु ? रेखा अस्त-व्यस्त रहय। हम देखने रहिऐक जे ओ जानि-बूझिक' अथवा दारूक प्रभावसँ कपड़ाक ख्रिआल छोड़ि देने रहय। मैक्सीक उपर द' क' छातीक

चमकब हम अनुभव तँ कयने रही, मुदा भसिआयबाक स्थितिकेँ धरि रोकने रही। मनुक्खसँ पाथर भ' गेल रही ।

दससँ बहुत उपर भ' गेल होयतैक। बाट आब जाम भ' गेलै होयत। आ डेरा सुदूर उत्तर जयबाक रहय। हम धरफराक' उठल रही। हमर मोन कहने रहय, आँखि मुनने रेखाकेँ ओहिना पड़ल छोड़ि दी आ उठिक' भागि जाइ। ने उठायब, आने···!

मुदा हम तखनो बड़ असमंजसमे पड़ल रही। जाहि रेखासँ गप करबाले', एकर सान्निध्य पयबाले' पाइ आ प्रतिष्ठा सभ किछु गमबयबला लोक तैयार बैसल रहैत अछि, आ जे देखिक', तड़पाक' आनन्दित होइत रहैत अछि, उएह रेखा एहन अवस्थामे हमरा लग ! एकदम हालक जान पहिचान···! तखन····? की ई हमरा जाँचि तँ ने रहलि अछि ? देखी, इहो तँ मरदे अछि, की करैए ?

नहि, आब हम किन्नहु नहि रहब। हम उठल रही। दरबाजापर जाइत की फ़ुरायल रहय, घूरिक' फेर पलंग लग ठाढ़ भ' गेल रही। भयंकर बिड़रो उठल रहय। किदन-कहाँदन सोचने रही। उटपटांग सभ···।

'हम जाइत छी !'—हम रेखाकेँ सुगबुगाइतो ने देखने रही। लात लगाक' दरबाजा खोलि बाहर आबि गेल रही। भक द' जेना साँस पलटल रहय। बाहर ठंढा हवाक झोंक मोनकेँ परतारने रहय। आ हम सीढ़ी दिस डेग बढ़ा देने रहिऐक। सीढ़ीपर अबैत-अबैत हम रेखाक दरबाजा भीतरसँ बन्न होइत स्पष्ट सुनने रही। मने रेखा जागल छल—होसमे छल। तखन ई ढाढ़स··?

उतरैत काल काउण्टरक आगु-पाछु हम कय गोटेकेँ देखने रहिऐक। स्थानीय आफिसक हाकिम सभकेँ। ई सभ मरल गायपर उतरैबला गिद्धक हेंज बुझायल रहय। हमर डेग नमहर भ' गेल रहय। डेरापर अयलाक बादो हमर शंका कम नहि भेल रहय। नहि जानि रातिमे की सभ भेल होयतैक !

भोरे जखन टीसनपर गेल रही हम तँ सेकेण्ड क्लासक गेटपर ललका फ'ड़क कोट पहिरने रेखा हमरे तकैत बुझायल। देखिते चिकड़ि उठल रहय—'ओह चन्दर ! कत' छलहुँ ? जल्दी आउ !'

हम अनुमान कयने रही जे ई बेसी उताहुल अछि। किछु कह' चाहैत अछि। मुदा एत' भीड़ छै तेँ कहि नहि पाबि रहल अछि। एकरा एकान्त चाही। हम भावनाकेँ बुझैत कहने रहिऐक—फस्ट क्लासमे चल। ओतहि बैसा दैत छियौक।

'हँ, एकदम ठीक। ओतहि ठीक रहत।' रेखा अपन छोटका सूटकेश हाथमे लेने सेकेण्ड क्लाससँ उतरि गेल रहय। ओकर व्यग्रता अनेरे प्लेटफार्मपर लोकक नजरिमे चढ़ल जा रहल छलै। ओहुना ओ जतहि जाइत अछि, मधुमाछी जकाँ लोक काते-कात भनभनाय लगैत छैक।

डिब्बामे स्थिरसँ बैसल रहय। मोनकेँ थीरक' बाजल रहय रेखा—'राति अहाँके अयलाक बादतँ बड़ गजब भ' गेलै !'

'अँय, की भेलै ?'—हमर शंका ठीक बैसल रहय भरिसक।

'अहाँक गेलाक एक घंटाक बाद दरबाजा पीटल गेल रहय। तखन हम पुछने रहिऐ जे के अछि ? मालिक रहय होटलक। खोलब तँ जरूरीए। ओ आबि किछु एम्हर-ओम्हरक बात पुछि चल गेल रहय। हम बन्नक' देने रहिऐ केबाड़ आ पलंगपर सूति रहबाक प्रयास कर' लागलि रही !'

'तखन ?' उत्सुकता बढ़ले जाइत छल।

'फेर उएह मालिक अबैत अछि। मुदा एहिबेर ओकरा संगे टाइ पहिरने एकटा अपटूडेट छौंड़ा सेहो रहैत अछि। मालिकक व्यवहारसँ बुझायल, ओ कोनो हाकिम रहल होयत। आ तखन जे ओ हाकिम सन छौंड़ा बाजल से की कहू !'—रेखाक मुँह जहर भ' गेलै। कनेक काल गुम्म भ' अपने आगाँ बाजलि ओ—'ओ आदमी हमरा संगे राति बितब' चाहैत रहय !'

'अँय, राति बितब' !'—हम अचंभित भ' गेल रही। हम नीचा उतरैत काल ओहि 'हाकिम'केँ देखने रहिऐ आ खूब नीक जकाँ चिन्हैत रहिऐ। मुदा ओ एहन भ' सकैत अछि—नहि बुझने रहिऐ।'

'हँ ! आ से खूब जोड़ द' क'। हम कतबो मना केलिऐ, ओ मानिते ने रहय। कहय, चन्दर जहन आबि सकैत अछि त' हम किए नहि !'

'सार, पाजी !'—हमरा मुँहसँ अनायास गारि निकलि जाइत अछि।

'हम कहने रहिये चन्दरक संग हमर सम्बन्ध किछु दोसर अछि। अपन लोकक सम्बन्धसँ वीरानक सम्बन्धकेँ तुलना नहि कयल जा सकैत छैक। आ ई तँ हमर खुशी अछि ने जे ककरा संगे हम रही—ककरा संगे नहि। ताहिसँ तोरा की ? नीक चाहैत छी तँ चल जाउ!'—आ खूब डंटने रहिऐ तँ ओतसँ गेल रहय। रेखाक आँखि जेना पनिआ गेल रहैक। नारीक विवशताक एकटा रूप देखने रही हम। नोर तँ ओकर निरीह व्यक्तित्व किंवा सहज आ पवित्रताक प्रमाणपत्र होइछ ने ! कहने रहय ओ जे आब आयब तँ हम होटलमे नहि रहब अहींक ओहिठाम रहब। से···। आ फेर एकबेर ओकरा प्रतिक सहानुभूति भय आ रोमांचमे बदलि गेल रहय तहिया····। गाड़ी सीटी बजओने रहैक—हम हाथ हिलबैत डिब्बासँ उतरि गेल रही····।

आ आइ टेलिफोन आयल अछि फेर होटल एभरेस्टसँ। के अछि तकर ठेकान तँ नहि अछि, मुदा होटल एभरेस्ट आ रातिक आठ बजे·····! ककर फोन भ' सकैत अछि। फेर ओ त' कहने रहय, होटलमे नहि टिकब···! कहीं ओ नहि तँ अछि। अथवा हमरासँ झूठ बाजल रहय····!

आध घंटासँ उपर भ' गेल अछि रिसीभर उठौला। की करैत अछि एखन धरि। ता रिसीभरमे किछु घुरघुराइत अछि। हम कानसँ सटा लैत छी—"हेलौ; चन्दर जी छथि ? ओ बाथरूममे छथि। अहाँकेँ कहलनि अछि तुरत एतहि अयबा ले'।" नारी बोलीक सुमधुर स्वर सुनबाले' पाथल कानमे ई मोटका मैनेजरी बोली गरम तेल ढारि देल सन बुझि पड़ैत अछि। रिसीभर फोनपर पटकि दैत छी। फेर रहस्य बनले रहि गेल। गुन-धुन छुटल नहि।

हमर रिक्सा होटल एभरेस्टक आगां रुकैत अछि। रिक्सावलाक पाइ फारिछा हम भीतर प्रवेश करैत छी। काउण्टरक ड्यूटी प्रायः बदलि गेल छलैक। ड्यूटीपर सिंहजी छथि। ओ हमरा देखि अनेरे मुस्किया दैत छथि। हम आब पूर्ण आश्वस्त भ' जाइत छी—रेखे अछि। हम इशारा करैत छियनि। ओ मुस्किआइत बजैत छथि—"अरे अपने लेल ! जायल जाओ, उपरे छथि। रूम नं० ३०२।"

हम सरासर उपर चढ़' लगैत छी। पछिला बेरक घटना बेर-बेर मोनमे

अबैत अछि । आइयो राति आठेसँ शुरू छैक । एहूबेर एसकरे अछि । कतौ फेर जँ बबाल उठओलक तँ ‥।

रूम नं० ३०२ । हम दरबाजा खटखटबैत छिऐक ।

'के अछि ?'—भीतरसँ मधुमे बोरल शब्द बहराइत अछि ।

हम नेहाल होइत उत्तर दैत छिऐक—'हम छी ।'

'ओह, चन्दर ! आउ-आउ । हम कनेक फ्रेस होइत छी ।'—रेखाक आज्ञाक संग हम भीतर प्रवेशक' चुकल छी । रेखा‥ ! कोठरीमे नहि ! ओह बाथरूममे फोहारा चलैत छैक । मोनसँ नहा रहलीह अछि । बाप रे, कतेक काल एकरा नहायमे लगैत छैक…। ताबत बैसहि पड़त ।

रूममे एकटा छोटकी सूटकेश, हैन्ड ब्याग, बड़का पर्स, उचकी एँड़ीक चट्टी । खुट्टीमे शर्ट आ पेंट टाँगल । हम ओछाओनपर राखल 'सत्यकथा'क प्रेम व हत्या अंक उठा पढ़' लगैत छी ।

बाथरूमक केबाड़ चड़मड़ाइत छैक आ ओहि द'क' द्वितीयाक चान हुलकी दैत छैक । शीघ्रहि एकटा खुशीक सिसकारीक संग कोठलीमे पूर्णिमाक प्रवेश होइछ । ट्यूबलाइट जेना तरेगन भ' गेल हो ।

'कहू, ठीके छी ने !'—रेखा भीजल केसकेँ तौलियासँ रगड़ैत हमरासँ पुछैत अछि ।—'हँ, ठीके छी । तोँ कखन अयलेँ ?'—हम ओकरे पुछैत छिऐक ।

'अयलहुँ तँ दिनेमे । साढ़े तीन बजे प्लेनसँ । जयनगरबला गाड़ी छुटि गेल तँ अहाँकेँ फोन कयलहुँ, मुदा अहूँ नहि छलहुँ, तँ हारिक' आइ फेर हमरा एतहि रह' पड़ल ।'—रेखाक सफाइ हमरा सन्तुष्टक' दैत अछि ।

तखने बिजली गुम्म भ' जाइत छैक । अन्हार गुजगुज कोठली आ ओहिमे दूटा विपरीत लिंगी मनुक्ख…। किछु भ' सकैत छैक । मुदा से होइत छैक किछु नहि । रेखा हमरा धकिअबैत टेबुलक निचका तहपर राखल मोमबत्तीकेँ सलाइसँ लेसैत अछि । एकटा मद्धिम प्रकाश कोठलीमे छिड़िआ जाइत छैक ।

गर्मीत' खूबे छैक एहिबेर । देह पसीनासँ ठीके नहा जाइत अछि । बिना खिड़कीक एहि घरमे तँ आर प्राण चल जायत । हमरा हँसी लगैत अछि अपने

मोने । आइ रेखा प्रायः एहि कोठलीमे जानिक' रहलीह अछि । बिना खिड़कीक कोठरी । ओइ बेर कहाँदन खिड़की द' क' केओ पैसैत रहैक तँ चिचिआयल रहय—'ईऽऽऽ …हे पड़यलै ‥!'

हम घसकबाक बहाना बनब' चाहैत छी—'राति अन्हरिया छैक । हमरा जाय पड़त फेर ओतहि । तोँ अयलेँ, हम भोरे भेंटक' लेब । आब…!'

'नहि, भोरे हम गाम जायब । ट्रेनसँ । अहाँसँ भेंट भ' सकत कि नहि । ठहरू, कनेक लाइन अबैत छैक तँ चल जायब । गर्मी तँ ठीके बड़ छैक ।' रेखा केसमे ककबा फेरैत बाजलि ।

हमरा फेर एकटा भय सतब' लागल । राति भ' गेने परेशानी तँ होयबे करतै, कहीं… !

बड़ीकाल धरि गुमसुम पड़ल रह' पड़ल । किछु फुराइत नहि अछि । रातुक एहि अवस्थामे आबि सभ आकर्षण हमर खत्म भ' जाइत अछि, रेखा लग ।

'हमरा तँ एत्त' मजबूरीमे रह' पड़ल ने ! एसकरि ठहरबामे डर लगैत अछि आब । कोन ठेकान…!' केस झाड़ैत रेखा सहज रूपेँ बजैत अछि ।

हम एहिसँ आगाँक इच्छा बुझबाक स्थितिमे आबि गेल छी । ओ कोनो बेर कहि सकैत अछि –'डर लगैत अछि । अहूँ सुति रहू ने एत्त' !' से हम पहिने समझा देब' चाहैत छी—'एह, होटलमे डर कथीक । हम ओकरा आबिक' खूब डंटने रहिऐ । ओ क्षमा-तमा मांगि लेने रहय ‥ । तेँ आब कोनो तरहक डर नहि ।'

रेखा चुप अछि । केस किछु रुक्ख भेलैक । ओ हाथसँ केसकेँ पाछांमे घुमाक' जूड़ा जकाँ बान्हि लेलक । हम घड़ी देखैत छी—दस भ' गेलैक, आब चलक चाही । हम उठैत बजैत छी—'लाइन नहि अओतौक । एहि भरोसे हम राति भरि एत्तहि बैसल रहि जायब …। तोरा तँ एत्तहि रहबाक छौ—हम तँ दूर जायब ने !'

रेखा फेर चुप भ' जाइत अछि । एकटक नीचाँ देख' लगैत अछि । जेना किछु गुनधुन कर' लागलि हो । हम ठाढ़ छी । ने हमरा बैस' कहैत अछि' ने जाय । जेना भीतर कोनो झंझावात चलि रहल हो । हमरा ओत' प्रत्येक क्षण खतरासँ खाली नहि बूझाइछ । कहीं…… !

'नहि, हम एत्त' एकसरि नहि रहब। लाइन नहि छैक। की तँ अहाँ एत्तहि सुतू, नहि तँ हम अहींक घरपर जायब… !' रेखा छातीकेँ मजबूत करैत बाजलि। ओकर बातक दृढ़ताकेँ देखि हम तँ अवाक भ' गेलहुँ।

एत्त' तँ हम सूति नहि सकैत छी। आ घरपर कोना ल' जैबैक ! बड़ धर्म-संकटमे पड़ि गेलहुँ। जाहि लोकलज्जा आ बदनामीक डरें होटलमे नहि सूति रहल छी—वएह बदनामी तँ घरोपर गेने भ' सकैछ। हम साफ मनाक' दैत छिऐक—'नहि, ने हम एत्त' सूतब आने तोँ हमरा ओत्त' जयबेँ। लोक की कहत !'

'ओह, तँ अहाँ अपन बदनामीक डरसँ हमरा एहिठाम एकसरि गिद्धक हेंजमे छोड़ि जाय चाहैत छी ? बेर-बेर हम कतेक प्रतिकार करबैक ! अहूँक इएह इच्छा अछि तँ… जाउ। हम नहि, रोकब'—सिसकैत रेखा बजैत अछि।

'हम बड़ अचंभामे पड़ल छी। जाहि खतराक डरें सानिध्यसँ बच' चाहैत छी—तकरे बेर-बेर सामना अजीब अनुभूति दैत अछि। रेखाकेँ खूबे नीक जकाँ बूझल छैक—हमरा घरमे सुत'बला एक्केटा रूम अछि। ओत' गेने एकरो ओहिमे सुत' पड़तैक। मुदा जिद्द कयने अछि। नहि ल' गेने आब दोसरे बदनामी होयत। रेखाक बाप ओकरासँ परिचय करबैतकाल हमरा कहने रहय—'ई हमर बेटी अछि ! काठमाण्डूमे रहैत अछि। जहिया कहियो ओत'सँ आब' वा जाय बेरमे जनकपुरमे रहैक तँ अपना जकाँ देखबैक। अहींक आसपर… !' हमरा दिस आशा-भावसँ देखने रहय रेखा। तकरा बाद कयबेर अयलैक जनकपुर। मौका-कुमौका आर्थिक सहयोग धरि हमक' दैत रहलिऐ। आ बेर-बेर ओ कृतज्ञतासँ भरल आँखि हमरा दिस तकैत रहल। जेना विश्वासे ने होइ हमरापर' जे हम ई सहयोग बिना कोनो प्रतिदानकेँ क' रहल छलिऐ। कहबो करैक ओ— अहाँक सब उपकारक बदला हमरा चुकयबाक अछि। जरूर चुकायब…। हम बातकेँ हँसिक' टारि दैत रहलिऐ। हम जनैत रहिऐ—ई औपचारिकता लेल मात्र बजैत छल। जनकपुरमे ओ की हमरा उपकृत करत…। एत' हमरे जरूरति छैक ओकरा। आ आइ हमरा आगाँमे बैसलि रेखा पुनः सहायताक भीख माँगि रहलि अछि। हम की करू !

नहि, ओकरा ल' जाय पड़त अपने ओत'। रहल हमर बात, तँ देखल जयतैक…।

हम रेखाकेँ नजरि गड़बैत कहैत छिऐक—'अच्छा चल, डेरे पर चल।'

रेखा प्रशन्न होइत हमरा दिस देखैत अछि। जेना हमर बोलीपर विश्वासे ने भेल होइक। सब समानकेँ यथावत राखि दैछ। टेबुलपर राखल ताला उठा बाहर अबैत अछि। हम ताला केबाड़मे लगा दैत छिऐक। ओ साड़ीक पल्ला ठीक करैत अछि। हम दृढ़ताक संग सीढ़ी उतर' लगैत छी—पाछाँसँ रेखाक चट्टीक आवाज हमर संग दैत अछि !

□

तोरा संगे जयबौ रे कुजबा

आकाशमे कारी मेघक टिक्कड़ि मटिआ तेल जकाँ पसरि रहल छैक। मेघ फेर औतैक, तकर संभावना पूरा छैक। कुमार एकबेर चारूभर आकाशमे नजरि फिरबैत छैक। ओ हाथमे राखल चाइनीज छाताकेँ निहारि आड़िपर बैसि जाइत अछि।

'एक तँ ऊ गाम नै अबै है। जनकपुरमे टंडैली करैत फिरै है। आ दोसर अयबो करै है तँ खेतो-पथार नै जाइ है। गिरहत छी, खेत-पथार गेली-देखली। जन-बनिहारपर कोन बिसबास !'— गुड्डू माइक उपराग सुनैत रहैत अछि। आइ ओकरे मोन शांत करबा लेल ओ खेत आयल अछि।

खेत अबिते ओ चारू कित्ता घूमि गेल अछि। पानिक कोनो ठेकान नै। आड़ि बन्हने कतेक दिन चलतै। गजारिक' खेत तैयारक' देने छैक ज'न सभ। आब लगातार रोपनी चाही। गोट पचासेक ज'न आइ ओकरा रोपनीमे छैक। बड़का कित्तामे ह'र बहै छै। गाछी लग बीया उखारल जा रहल छै आ एत' पोखरि कातमे ज'न सभ रोपि रहल अछि। ओ एतहि अँटकि गेल अछि। गिरहत देखने कनेक जल्दी ·······।

हमरा संगे जयबे गे मेघनियाँ
बड़ दुख होयतौ—
रौदे-बसाते देहबा होतौ झामर·········

आड़िपर बैसल कुमार चौंकि उठैत अछि। ई गीत जेना ओकर मर्मकेँ छूबि देत छैक। ओकरा बुझाइत छैक –ज'न सभ जेना ओकरे देखिक' ई गीत गायब' शुरूक' देने होइक।

अपन प्रियतमाकेँ अपना संगमे नहि ल' जा सकबाक भयंकर मजबूरी ढोइत एहि लोकनायकक आर्त्तनाद आजुक समस्त प्रेमी-हृदयक दर्दकेँ अभिव्यक्त करैत अछि।

कुमार छटपटा जाइत अछि। एहि लोक-नायिकाक अनुनय ओकर सम्पूर्ण बिसरल घाओकेँ हरिया दैत छक—'हमरा संग रहिक' अहाँकेँ दुख होयत। हम ·······।' बहुत दिन पूर्व कुमार लक्ष्मीकेँ कहने रहैक। लक्ष्मीक प्रति कुमारक निश्छल सिनेहकेँ ओ प्रेम बूझि लेने छलीह— आ अपन जरूरति ओ कुमारमे देख' लागल छलीह। ओकर ओही जिज्ञासाकेँ देखि कुमार ओकरा समझबैत बात घुरा देने रहैक— 'नहि लक्ष्मी ! हमरा संगे रहिक' अहाँकेँ दुःख होयत। हम तँ बसल परिवारक लोक छी ने ! नाना जंजालसँ घेरायल·· । अहाँक चित्त शांत नहि रहत हमरा लग···।'

मुदा लक्ष्मी बात नहि मानने रहैक। ओकर बचकानी बुद्धिपर ओकरा तरस आयल रहै—छओ-पाँच किछु बुझनिहारि नै अछि लक्ष्मी। आ ओकर जिद्दकेँ देखि ओ बोल-भरोस द' देने रहैक—समयपर ल' आओत ओ।

बात मुँहसँ भरोस देबा ले' निकालि देने रहय कुमार, मुदा लक्ष्मी ओकरा गीरह बान्हि लेने छलीह। ओकर प्रत्येक पत्रमे समयक प्रतीक्षाक बात तँ अबस्स रहल करैक। कैक वर्ष भ' गेलैक ओकरा सभक एहि वात्तकि। कैक बेर भेटो-घाँट भेलैक—मोनक बात एक-दोसराकेँ कहने-सुनने रहय। आ तखन कुमारोकेँ लक्ष्मीक हेतु विचार भेल रहैक—घरमे रहने बेजाय नै। देखल जयतै····।

एम्हर निम्न सामाजिक वातावरणमे मनुक्ख जकाँ जीबाक कुमारक लालसा कुमारकेँ किछु बेसी उठापटक करबौलकैक। ओ व्यस्त होइत गेल। एतेक व्यस्त जे ओ अपन जिनगीक आगाँ सभ किछु बिसरि जयबा ले' बाध्य भ' गेल। एतेक धरि जे लक्ष्मीक पत्रक उत्तरो नहि देब' लागल ओ····।

नारीक प्रति ओकर धारणामे बरोबरि एक बात धरि थोपाइत रहलै—ओ पुरुषकेँ बरोबरि मूर्ख बनबैत रहलि अछि। एकटा आकर्षक झूठ···!

घरमे सभ किछु होइतो पारिवारिक सिनेहसँ उपजल व्यवस्थित बासक अभावक समस्या ओकरा यायावर बना देने रहैक। ओ बरोबरि छिछिआइत रहल। एहि क्रममे भेटल रहै कैक गोट सहयात्री, जे ओकर दर्दकेँ बूझि संग देबाले' वचन देने रहैक। मुदा कालान्तरमे सभ धोखा द' देने रहैक।

से, एहने सन कोनो घटना कुमारकेँ कहियोकाल झकझोड़ि देल करै आ तखन लक्ष्मीक अनुहार नाचि जाइ ओकरा आगामे—ईहो तँ नारी आछ····!

फेर मोन पड़ै निर्बोध लक्ष्मीक निश्छल जिज्ञासासँ भरल नेत्र आ अनुनय—'हम अहीं संगे रहब······।'

नहि लक्ष्मी, एहन नहि भ' सकैत अछि। लक्ष्मीक इएह पवित्रता तँ कुमारकेँ मोन बहटारने रहैक, जे बादमे बुझलकै ओ। आ तेँ चिट्ठीयोमे लिखि देने रहैक—समयक प्रतीक्षा अछि···।

समय बितैत गेलै—ओ व्यस्त होइत गेल। सांसारिक बाध्यताक हाथेँ ओ मजबूर भ' लक्ष्मीकेँ पत्र धरि लिखब छोड़ि देने रहय···। ओकरा बुझाइक, सामाजिक प्रतिष्ठा आ व्यक्तिगत सुविधाक लेल आब ओ एहिना रहत तँ नीक। लक्ष्मी कतहु जबूरा ने भ' जाइक ओकरा !

आ तखन लक्ष्मीक चिट्ठीकेँ पढ़ि चिर्री-चिर्रीक' फाड़ि फेंकि देबाक मोन होइक कुमारकेँ। कोनो नवीन गप पढ़बा लेल मोन तरसि गेलै ओकर—लक्ष्मीक पत्रमे।

टेप कयल वक्तव्य जकाँ लक्ष्मीक चिट्ठीमे एक्केटा बात लिखल रहैछ—'हम तंग छी। एहि नरकसँ अहींटा निकालि सकैत छी, नहि तँ हम तड़पिक' मरि जायब एत'····।'

'मरि जायब तँ हम की करू····?' कहियो काल कुमारकेँ खिसियाक' लीखि देबाक मोन होइक, मुदा··· फेर वएह निश्छल अनुनय—'हम अहीं संगे रहब····!' ओकरा आत्माकेँ झकझोड़ि दैक आ ओ पुनः बोल-भरोस लीखि देल करैक ··। कुमार बुझैत अछि, लक्ष्मी निर्दोष अछि। ओ चाहियोक' किछुक' नहि सकत। बापक उदास-उदास अनुहार ओकरा अपन गलाक दर्दकेँ एखन धरि ढोयबापर बाध्य करैत रहैत छलैक। आ कुमारक संग रहबामे लक्ष्मीक ई दर्द बड़ पैघ बाधक रहलैक अछि। दर्द—सामाजिक मार्यादा, लक्ष्मीक उधियाइत भविष्यक आ रिटायर होइत जाइत प्रौढ़ बाप ।

ओकर बाप···छओ-सात सयक नोकरीपर आठ-दस गोटेक परिवारकेँ शहर

मे पेट पोसनिहार एकटा क्लर्क। पारिवारिक अर्थ-तन्त्रक जालमे कुहरैत किरानीक दर्द भलेँ ओकर बेटी नहि बुझौक, कुमार खूबे बुझैत अछि।

जहियासँ बाहरी आमदनीबला टेबुलसँ ओकर बदली भ' गेलै, तहियासँ ओ पाइ-पाइक लेल मोहताज भ' गेल अछि। दू कौड़ी उपार्जन करबा लेल आफिसक समयक बादो ठीका-पट्टाक फेरमे 'साइट'पर दौड़ल फिरैत अछि। ओकर एहि छिछिऐनीक दर्दकेँ लक्ष्मीक माय नहि बूझि चालि-ढालि बिगड़ब कहैत छथि। बात-कहिनी कहैत छनि। आ तखन कुमार कएक बेर देखने रहय, लक्ष्मी मायक बात सूनि डबडबायल नोरकेँ आँखिक कोरमे जबर्दस्ती नुका, कएक सालक रंग उड़ल पेंट आ कुमारेक आनल विदेशी हाफशर्ट पहिरि घरसँ बाहर भ' जाइक—चुपचाप।

कुमारके बुझाइक, एहि परिवारकेँ ओकर बेसी जरूरति छैक। आ ओ तखन सिलसिलाकेँ बनल रह' दैक। से आइ धरि, जखन ओ कनेक बिसरहु चाहैत अछि तँ किछुओ संस्मरणसँ रोमांचित भ' जाइत अछि—दूर, बहुत दूर, लक्ष्मीक अनुहार चमकि उठैत छैक ओकरा आगाँ····।

मेघ हड़हड़ाइत छैक। कुमारक तन्द्रा जेना एकाएक टुटैत छैक। ओह ! ओ तँ अतीतमे चलि गेल छल···। पानि तँ अयबे करतै आब। आब ओ········!

बीयाक भार कान्हपर लदने चलितरा खतबे कोलामे अबैत छैक। ज'नसभ खूजा बनाक' पाहिपर छीटि देबाले' कहैत छैक—जे जल्दी खेत उसरै। चलितरा खूजा पाहिपर छीटि लाठी लेने कुमारक बगलमे ठाढ़ भ' जाइत छैक।

'चलितरा ?' कुमार टोकैत छैक।

'जी मालिक !' चलितरा नीचाँ तकैत बजैत अछि।

'बीया कतेक जोड़ा हेतौ रे ?'

'एह, एखनू होतै मालिक ! सौंसे कित्ता देख लेतै।'

कुमार चुप्प भ' जाइत अछि। चलितरा बगलमे ठाढ़े रहैछ। कुमारकेँ बुझाइत छै जे कोनो काज होतै ओकरा हमरासँ।

पुछैत छैक—'की बात छै रे ! जेबहि नहि बिराड़मे ?'

'जयबै मालिक की !' कनेक चुप्पीक बाद—'कनीटा के काम रहलै !'

'की छौ ?'

'कनी रुपैया चाही मालिक !'—जेना कोनो अपराधक' रहल हो ।

'कैला रे, एखन तँ लोक बोनि कमाइत अछि, खाइत अछि । ओहूमे तो दुइए प्राणी····!'

'कहाँ दू प्राणी मालिक ! अखनू तँ असगरिए छिऐ । सगाइ करबै । बात पक्का भ' गेलै । ताही ला····।'

'सगाइ ?' आश्चर्य होइत छैक कुमारकेँ—'तोरा तँ बियाह भेल रहौ रे ?'

'जी, भेल तँ रहै । बिलगा देलिऐ ।'

'कथीले' रे ! बड़े मानौ तोरा कहाँदन····!

'दुत्, की मानत मालिक । अपनेसँ कोन····। जहिया बियाह भेल रहय तहिये कहि देने रहिऐ—हमरा किछु नै है । मालिकमे कमाइ छी त खाइत छी । मालिके चारि कट्ठा जनौरी देने है—सेहे एकटा अन्नक आधार । तकरे उपजाक' साग-क'न खाइ छी । जेहे खाइ छी—सेहे खिअयबौ ।'

'तखन ?'

'तखनू तँ बात मानि गेल रहय मालिक । तोँ जहाँ रहब', तहीँ रहब । जे खिअयब', सेहे खायब'—कहने रहय । किछु दिन तँ ठीके रहलै । लेकिन····।'

'लेकिन की ?'

'जिउ के बड़ पातर रहै ऊ । जेहे दूटा नीक-नुकुत दै, तकरे ला बेहाल । नीक-नुकुत खाइमे बहादुर । खूब खाइ, खूब मोटाइ आ खूब····।' चलितरा जेना अतीतमे भसिया जाइत अछि । मुँह तीत भ' गेलै ।

'तखन की भेलौ रे ?'—कुमारक जिज्ञासा बढ़ि जाइत छैक ।

'तखन की होतै मालिक । इज्जतोपर खेल गेल । भठि गेल ऊ । हम अपना आँखिसँ एक दिन बकरीबला घरमे ...कहल जाओ जे ओहन भरछूही के कोना रखितिऐ ?'—चलितराक ग'र मोटा जाइत छैक । ओ कुमारक स्वीकृति सुनबाले'

ओत' ठाढ़ नहि रहैत अछि । बिराड़ दिस पड़ायल चल जाइत अछि ।

कुमार हतप्रभ अछि···। पुनः एकबेर ओकरा मस्तिष्कमे नारीक चित्र नाचि उठैत छैक—आकर्षक झूठ । सोनाक मृगा जकाँ आकर्षक झूठ, जकरा पाछाँ नहियो चाहिक' लोककेँ जाय पड़ैत छैक । लोक जाइत रहल अछि आ पछताइत रहल अछि ।

मेघक बुन्न झहर' लगैत छैक । कुमार छाताकेँ खोलि लैत अछि । बड़का-बड़का बुन्न छातापर खस' लागल छैक—ढब-ढब, ढब···।

जनो सभक गीतक बोलमे आर मिठास भरि जाइत छैक :

तोरा संगे जयबौ रे कुजबा
बड़ सुख होयतै—
हथिया चढ़ि घुमबै जहान रे····।

ओकरा बुझाइत छैक—लक्ष्मी ज'न सभक मध्य ठाढ़ भ' गेलीह अछि । आ ओकरा सभक स्वरक संग स्वर मिला कुमारकेँ पुनः एकबेर निश्छल अनुनय करैत छैक—"तोरा संगे जयबौ रे कुजबा !"

कुमार तिलमिला जाइत अछि । ओ नीक जकाँ जनैत अछि । लोकनायकक मजबूरी' जे प्रियतमाक अनुनयकेँ अन्तमे स्वीकारबापर बाध्य होइत रहल-ए । आ ओ अपनाकेँ आड़िपर बैसल 'कुजबा' बूझ' लागल अछि ।

